॥ श्री ॥

नरनारी समुत्पन्ना सा स्त्री देहविवर्जिता
अनुत्पन्ना कुरुते शब्दम् जातमात्रा विनश्यति

<u>चुटकी है</u>

मानधाता स महीपतिः कृतयुगेऽलंकारभूतो गतः
सेतुर्येन महोदधौ विरचितः क्वासौ दशास्यान्तकः ;
अन्ये चापि युधिष्ठिरः प्रभृतयो : याता दिवं भूपते
नैकेनापि समं गता वसुमती मुञ्ज त्वया यास्यति




गोवर्धनलीला
बन्सीलीला
रासलीला
अरी अर
अबटे
दानलील


हिंडोला झुलनलीला.
होरीलीला
मथुरा गमन लीला
रघुनाथ लीला.

श्रीः ।

रागरत्नाकर ।

अक्षरोंके क्रमसे पदोंका सूचीपत्र ।

पद.	पृष्ठांक.
(अ-आ)	
अब मेरी खेलन जात बलैया	१७
अब घर काहूके जनि जाहु	३१
अबकी राखि लेहु गोपाल	४३
अब आये प्रात क्यों मेरे धाम	६८
अलबेली लख लटक मुकुटकी	७५
अब पौढ़न को समयो भयो	८१
अपनी डगर चल्योजा रे ब्रजवासी	८४
अटपटी पाय सुधे बाबा कैसे रहौ	८८
अच्छा लेहु ब्रजबासी कन्हैया	९३
अपने गृहसे निकसीं अबला	११४
अँखियां लागीं सामलिया प्यारेसों	१२१
अँखियन यह टेव परी	१२२
अब तो प्रगट भई जगजानी	१२५
अब तुम सांची बात कही	९०
आदि सनातन हरि अविनाशी	७
आज बधाइयां वे बाबानंददे दरबार	९
आज श्रीगोकुलमें बजत बधावरारी	१०
आज नंदजू तुमरे घरमें पुत्रजन्म सुनि आयो	११
[illegible]ाउ गुपाल शृंगार बनाऊँ	१६
[illegible]ज सखी मणि खंभ निकट वीरजहँ....	२३
आयाकर सांवरे इन गलियों में रूमझूम....	२४
आज कौनेधौं बन चरावत गाय	३८
आवरी बावरी ऊजरी पागपै	६४
आलीरी रास मंडल मध्य निर्तत	६४
आज़ बनवारी बन्यो है मुरारी	६६
आज हरि रैनि उनींदे आये	६९
आय क्यों न देखो लाल	८२
आज कछु कुंजन में बरसासी	९३
आई बदरिया बर्सन हारी	९४
आयीहै मास सावन इक मान कह्यो प्यारी	”
[illegible]ाज बन्यो रस रंग हिंडोला कदमतरे....	९५
आज हिंडोरे झूलें झूलन	९८
आज दोउ झूलत रंग भरे	९९
आलीरी तू क्यों रही मुर्झाय	१०९
आज ब्रजराज की देख शोभा नई	१११
आज नंदलाल मुखचंद नयननिरख	”
आंखन में दुराय प्यारी	१२२
अब नंद गैया लेहु सँभार	१४९
अँखिया हरि दर्शन की प्यासी	१५८
अब विलंब जिन करो लाडिली	१६३
अब हौं नाच्यो बहुत गोपाल	१७०
अब देखो रामध्वजा फहरानी	२३७
अवध आनंद भये घर आये हैं	२३८
अँखियां लागीं थारे रूप रँगीले रामा	२४०
अवध नगर सुंदर समाज लिये	२४८
अस कछु समझ परै रघुराया	२४९
अपनी ओर निबाहिये	२५०
अँखियाँ राम रूप अनुरागीं	”
अरी अरी एरी माई	१५४
अबतो जाग मुसाफर प्यारे	१५५
अपने संग रलाई वे मैंनू	१५५
	”
अनुसार स्तुति युगल	१५६
अविगति गति जानी न परै	२०६
अपने विरद की लाज वि[illegible]	१९४
अनोखा लाडला खेलन म[illegible]	४२१
अपने लालको जिमा[illegible] [illegible]ाना	४३०
अफसोस भरी ना[illegible] रहगया थोड़ा	५०४
अकेली मत जैयो[illegible] नहीं	५५७
अबके माधो मोहि[illegible] सोई	४४९
[illegible] जाय	५२६
अपने न दोष देरै जहाँ हरि खेलतहोरी	”
आनन की छ[illegible]	
(ऋ)	
अ[illegible]पनो रूप उँधारि कियो शठ केवट	३५

अक्षरोंके क्रमसे पदोंका सूची पत्र

पद.	पृष्ठांक.
आये कहांते कहो तुम	.... २७९
आरती सदाही होत संतन घट माहीं	.... २९२
आयो आयो भयो ऊधो	.... १५३
आप सभ नेरे और दूर की	.... १६६
आनंद कंद सुखनिधान	.... १७३
आये आयेजी महाराज	.... १७९
आचारज ललिता सखी	.... १८६
आरती लीजो श्रीनंदकेलाला	.... १९१
आरती युगल किशोर कि कीजे	.... ”
आज नीकी बनी श्रीराधिकानागरी	.... १९८
आज उज्यारी भई लेरात....	.... ”
आज वन राजत युगलकिशोर	.... ”
आगे प्रहलाद बाबा तेरो नृप ऐसो रह्यो	२०७
आदि मणि ब्रह्म	.... २१०
आज सुदिन शुभ घरी सुहाई	.... २२२
आज तो निहार रामचन्द्रको	.... २२५
आली सियावर कैसा सलोना	.... २२९
आगम वेद पुराण बखानत	.... २४८
आनंद वन गिरिजापति नगरी	.... २२२
आरती कीजे श्यामसुन्दरकी	.... १९१
...रती कीजे सुंदरवरकी	.... ”
... अति राजत दंपतिभार	.... १९८
... इन दोउअन पै बलिजैये	.... १९८
... कि लाज समूह में	.... ३१६
...ई खिरक	.... ३१७
... करूंरीवीर	.... ३२८
...में चलोरी वीर	.... ”
...सकारे गई....	.... ३४१
...यो है पाँव सभा	.... ३४९
...नते	.... ३५१
...ुनी	.... ३६६
आ...त है	.... ३७१
आ ...नों	.... ३७२
...	.... ३७८
...	.... ”
...	....
...	.... ३८४
...	.... ४८९
...	.... ३९०

पद.	पृष्ठांक
अब मैं कौन उपाव करूं	.... ३९९
अब हम गुमहुये	.... ४०८
अजब तेरा कानून देखा	.... ४१२
अय चिहरये	.... ४१०
आज गई हुती भोरहि हौं	.... ३१५
आज सखी नंद नंदनरी	.... ३१६
आज अली इक गोपलली भई	.... ३१९
आयो हुतो नियरे रसखान	.... ३२०
आज सखी इक गोपकुमार ने	.... ३२०
आज री नंदलला निकसो	.... ३२१
आवत हैं वन ते मनमोहन....	.... ३२२
आज अचानक राधिका रूप	.... ३२४
आज महरिघर देउरीवधाई....	.... ३२६
आज सखी प्रातकाल	.... ”
आप भले गुणवान् बनो	.... ३२७
आज सखी प्रातकाल	.... ३२९
आवोरी यह शोभा निहारें....	.... ३३२
आज बंशी बट बरसत रंग	.... ”
आज श्याम मग धूम मचाई	.... ३३...
आज सखी प्रीतम जो पाऊं	.... ३३...
आज रचो रस रास बिहारी	.... ३३...
आज सखी सुपनो मैं देख्यो रैन	.... ”
आई सबै ब्रज गोपलली	.... ३३...
आपनो सो ढोटा हम	.... ३३...
आंगे सोहै साँवरो	.... ३४...
आय हनुमान प्राण	.... ३४...
आगे परे पाहन	.... ३५...
आरत पाल कृपाल	.... ३६...
आज महा मंगल कोशलपुर	.... ३७...
आज अनरसे हैं भोरके	.... ३७...
आज बनी छबि भारी श्री रावो जूकी	३८...
आज बनी छबि भारी श्री रावो जूकी	३८...
अब मोहिं जलत राम जल पाया	.... ४२...
अवर मूए क्या सोग करीजै	.... ४२...
अह निशि एक नाम	.... ४२...
मोको भये राजा राम सहाई	.... ४२...
अग्नि नद है	.... ४२...
अब हम चली ठाकुर पहि हार	....



पद.	पृष्ठांक.
अविनाशी जीवन को दाता	४३७
अवतर आय कहा तुम कीना	४४८
अमल सिरानो लेखा देना	"
अचरज कथा महा अनूप	४५३
अश्वमेध जगने	४५४
अब मैं कहा करूंरी माई	४६०
अच्युत पारब्रह्म परमेश्वर अन्तर्यामी	"
अपने जनका परदा ढाकै	४८९
अज्जदा कम्म न घत्तीं	५०१
अब मैं अपने रामको रिझाऊं	५१४
अपने हित त्याग करे परको	५३२
अबके राखलेहु भगवान्	५५७
अपनो आप मैंने जो विसरचो	५६७
आपे पावक आपे पवना	४२५
आस पास घन तुलसी क बिरवा	४२८
आठ पहर निकट कर जानै	४३०
आपे सेवा लांयदा प्यारा	४३४
आनीले कागज	४५७
आउ कलंदर केशवा	४७३
आदि अंत जो राखन हार	४८६
आप कथै आप सुनने हार	४९१
आज नीकी बनी श्रीराधिकानागरी	४९५
आली मोहिं लागत वृंदावन नीको	५२०
आज अति बाढ्यो है अनुराग	५२१
आज माई गोकुल भयोरी आनंद	५२२
आनंद मंगल गावो मेरी सजनी	५२३
आपनी ओरकी चाहें लिखी	५२५
आपे खेल खिलारी सतगुरु	५३२
आपन चालिये महराज	५४३
आशिक हुआ हूं उसपै जो	५५१
आली दशरथ सुत सुखदैना	५५८

(इ-ई)

पद.	पृष्ठांक.
इस नंदके फरजंदने बाँकी अदाधरी	१७
इक अरज हमारी सुन भानुकी दुलारी	७२
इतनो न मान कीजे वृषभानुकी दुलारी	७७
इत मत निकसै तू	८४
इस सागालिया की लटकचाल	१२३
इस दुनिया पर रोज मुसाफिर	२८४
इंद्रियोंके भोग सारे	२७२
इंद्रियजीत करै वश अपने	२७८
इंद्रिन को सुख मानतहै शठ	२६५
इंद्राणी शृंगार कर	२७०
इक ओर क्रीट लसै दुसरी दिशि	३३९
इक दिन होगा कूच जरूर	३९२
इशक दी नवी ओ नवी बहार	४०९
ईश न गणेश	३५८
ईशन के ईश	३६५
इंद्रलोक शिवलोकहि जैबो	४४३
इस तन मन मध्ये मदन चोर	४७६
इक रामे नूं नहीं संभालदा	५२२
इक देवहिं वदतहौं	५३४
इह धन मेरे हरिको नाउँ....	४६८

(उ-ऊ)

पद.	पृष्ठांक.
उठो अब मान तजो गोरी	७३
उलट पग कैसे दीनो नंद....	१५०
उर में माखन चोर गडे	१५५
उरझ्यो नीलांबर पीतांबर महियां	१९८
उपजे निपजे निपज समाई	२८८
उठ चले ग्वांढों यार	१३९
ऊधो मोहिं ब्रज विसरत नाहीं	१५०
ऊधो ब्रजको गमन करो	"
ऊधो धनि तुमरो व्यवहार	१५४
ऊधो कर्मन की गति न्यारी	१५५
ऊधो सो मूरत हम देखी	१५५
ऊधो प्यारे कारे सबै बुरे	"
ऊधो माधो सों कहियो जाय	१५६
ऊधो चलो बिदुर घर जैये	२०६
ऊधो हौं दासनको दास	१९४
उबरत राजारामकी शरण	४२१
उक्ति सयानप कछू न जाना	४३०
उड़रे पखेरू दिन तौ रहगया थोड़ा	५०४
उठजाग बुराडे मार नहीं	५५७
ऊंचे मंदिर साल रसोई	४४९
ऊधो इतनी कहियो जाय	५२६
ऊंचो गोकुल ग्राम जहाँ हरि खेलतहोरी	"

(ऋ)

पद.	पृष्ठांक.
ऋषि नारि उधारि कियो शठ केवट	३५

पद.	पृष्ठांक.
(ए-ऐ)	
एक उठ दौरी एक भूल गई पौरी	५८
एजी अब तो जान नदूंगी शकुनभले जी	६७
एतो श्रम नाहिन तबहुँ भयो	७२
एक समय ब्रज कुंजन मेरी	७४
एरी यह को है री याहे दान देत	८९
एहो लाल झूलिये तनक धीरे धीरे	९९
एक गाम को वास धीरज कैसे के धरों	१२५
एरी मैं तो सहज स्वभाव गई	११३
एक रज रेणुका पै चिंतामणि वारिडारों	१६३
ऐसी है कोइ सखी हमारी....	१५९
ऐसे बसिये ब्रज की बीथन....	१६४
ऐसो कब करिहे मन मेरो	”
ऐसी कब करिहो गोपाल	१७३
ऐसी मूढता या मनकी	२४९
ऐसे राम दीन हितकारी	२५१
ऐसी हरि करत दासपर प्रीति	२५२
ऐसी कौन प्रभुकी रीति	”
ऐसो को उदार जगमाहीं	”
ऐसे जन्म समूह सिराने	२६१
ऐसी चतुरता पर छार	२९४
ऐसो श्रीरघुबीर भरोसो	२५३
एक ते एक अनेरे रहे	३१५
एक दिना मुरली धुनिमें	३१७
ए सजनी वह नंदको सौंवरो	३१९
एरी आज काल्ह	३२५
एक समै यमुना जलमें	”
एक सखी उठ बड़े भोरहीं....	३२९
एक समै इक सुंदरीको	३३७
ऐसी आरति राम रघुवीरकी	३७३
ऐसे हूं साहिबकी सेवा सों होत चोररे	३७५
ऐन ऐन ही है	३८७
ऐसो है रे भाई....	४०१
ऐसा नाम रत्न निर्मोलक	४०५
ऐसो नाम तुमारो निर्मोलक	४०५
एक ज्योति एका मिली	४२६
एक अनेक व्यापक पूरक	४३२
एक भरोस जानकी वरको....	४९३
एह जुवानी तेरी मस्त दिवानी	५०१
एक घड़ी मैं नाम न जप्या	५०४
एक ब्रह्म मुखसों	५३४
एकनके बचन सुनत	५३५
एक तो श्रवण ज्ञान	५३७
ऐसी लाल तुझबिन कौनकरै	४६२
ऐसी मोसों कीनीरी	४९६
ऐसी तो व्याकुल बाजी	४९७
ऐसो बालक खेले नंदद्वार....	५४५
ऐसो नाम तुम्हारो सुकुर	४०८
(ओ-औ)	
ओल्हे बहबह	२८
और कोई समझो तो समझो	१८६
और कौन मांगिये को मांगिवो	२४९
औचक दीठ परे कहुँ कान्हजू	३२२
और तो वचन ऐसे	५३५
(अं)	
अंगुरी मेरी मरोर डारी छीन दधिलीना सौंवरो	३
अंत ते न आयो याही गौंवरेको जायो	९
अंत तो मलीन दीन	२७
अंगी अरधंगी....	२७९
अंग ही अंग जराव जरी	३२१
अंतर्यामि हुते बड़ बाहिर	३६५
अंतर्मल निर्मल नहिं कीनी	४०५
अंतर की गति तुमहीं जानी	४२०
अंधकार सुख कभू न सोइ है	४२१
अंतर मैल जो तीरथ न्हावै	४३
अंतर मल निर्मल नहिं कीना	४३
अंतकाल जो लक्ष्मी सुमरै....	४३
अंगुरी पै गिरिधारयो	५१
(क)	
कर पग गहि अंगुठा मुख मेलत	१३
कहन लागे मोहन मैया मैया	१६
कर विचार वृषभानु दुलारी	५
कहो क्यों न मानत मेरो	७
कर नेह नयन लगायके	८
कहत श्याम श्यामाजू मोको दर्शन देत	९

पद.	पृष्ठांक.
कमल सी अँखियाँ लाल तिहारी	११९
कभी गली हमारी आवरे	१२३
कहा करते मुंदरिया डारी	१३७
कृष्णनामरसना रटत सोई	१३४
काहू जोगिया की लागी नजर	१२
कान्ह नित नये उरहनो लावे	२९
काली के फनन ऊपर निर्तत गोपाल लाल	४१
काल्ह सखी यहि ठौर बाँसुरी भूल बिसारी	५१
कान्हारे बंसुरिया वारे रे तू ऐसेजिनबतराय	८४
कांकडली ना वालो म्हारी फूटे गागडली	८९
काहेको वैद बुलावत हो मोहिं	१०९
कान्हर कारो नंद दुलारो	१३२
किन लई देहु बताय मुरलिया	५०
कित श्वास उसास भई सजनी	८२
किया बिसमिल मुझे उसकी	१३१
कीरति महारानी वृषभानु आदि गोप गोपी	४६
कुंजन पधारो राधे रंग भरी नैन	८१
कैसे रास रसहि में गाऊं	६०
कैसे झूलों हिंडोरे बतियां मानेनाहिं हरी	१००
कोई कहे मेरे आगे नेकतूनाच लाला	२५
को माता को पिता हमारे	९१
कोऊ कहो कुलटा कुलीन अकुलीन कोई	१०९
कोई माई लैहेरी गोपालहि	१२८
कोई दिलवर की डगर बतायदेरे	१३२
कौन परी नँदलालहिं वानि	१४
कौन बसत या वृंदावन में मों मुरलीको चोर	५०
कौन समय रूठन को प्यारी झूलो ललित हिंडोरे	१०१
कौन चढ़े पहिले सुरंग हिंडोरे	१०३
कौन रूप कौन रंग	१३८
कहीं देखेरी घनश्याम	१५८
कृपाकर दर्शन दीजो हरी	१५९
कबलग तरसाए रहिये पलक	१६०
कहा करूं बैकुंठहिं जाय	१६४
कबहूं नाहिंन गहर कियो	१६९
कहोजी कैसे तारोग	१७२
करुणानिधान सुनियोजी कछु	२४५
कबके बांधे ऊखल दाम	२१४

पद.	पृष्ठांक.
कब ढुरहो रघुनाथ हमारे	२४८
कभी भूमि आसन	२७४
कामरी लकुट मोहिं भूलत न एकपल	१५१
कामिनी निहारचो काम	२०६
काहेको बांधे तीर कमनियां	२४१
क्या बुलाक अधरन पर सोहै	”
क्या देख दिवाना हूआरे	२९०
कालीके नथन काज कालीनाथ	२१९
काहेको बिसारीरे जपाकर माला	२९२
काल निहारत काल सदा	२८३
काशी गंगा के किनारे	२७३
काहूसों न रोष तोष	२६३
कान के गयेते कहा	२६५
काहेको दौरत है दशहूं दिशि	२६८
कामिनीको अंग अति	२६८
काक अरु रासभ	२७०
किन तेरो गोबिंद नाम धरचो	१८०
किहिं मिस यशुमति के जाउँ	२१३
कदम कुंज ह्वै हों कबै	१६२
किन्हीं राहीं जानगे	२८५
कीजे गवन भवन में वृषभानुकी दुलारी	२००
क्रीट मुकुट शीश धरे	२३०
कुब्जाने जादू डारा	१५४
कुंवर दशरथके रंग भरे	२३०
कुटुंब तज शरण राम तोरी आयो	२३६
कुम्हारी मनमें अति शोच चली	२०८
करुणानिधान सुनियोजी कछु	२४५
केशव कहि न जाय का कहिये	२५५
केते दिन हरि सुमिरण बिन खोये	२९३
केती हजारां आलम हैं	२८३
कैसे तुम गणिका के	१७९
कै यह देह जरायके छार	२६६
कोइ फुलवा लेहुरी फुलवा	२०३
क्यों सोया गफलत का माता	२५९
कोयलिया बोलन लागीरे	२०३
क्यों वे बीबा मान भरया	२८७
कोऊ देत पुत्रधन	२६४
कोउक निंदत कोउक वंदत	२०७

अक्षरोंके क्रमसे पदोंका सूचीपत्र।

पद.	पृष्ठांक.
कोई मोड़ो दिलां दिया	.... २८०
कौन विधि पावे यह कर्म बलवान उदय	१५१
कौशल्या मैया चिरजीवो तेरो छौना	२२३
कौन यतन विनतीं करिये....	.... २४७
कंचन सिंहासन रत्न जटित	.... १९२
कंदराते कंदमूल कहा निर्मूल भये	.... २७५
कमला निवास निज दासनकी	.... ३१०
कबको पुकारत हों	.... ३११
करत अपराध भोर	.... ३१३
कर मन नंद नंदन को ध्यान	.... ३२६
कहा रसखान सुख संपति....	.... ३४०
कबहूं शशि मांगत आरि करैं	.... ३४१
कनक गिरि श्रृंग चढ देख....	.... ३४९
कह्यो मत मातुल	.... ३५०
कृपा जिहिं की कछु काज नहीं	.... ३५५
कस न दीन पर द्रवहु उमावर	.... ३६९
कबहुंक अंब अवसर पाय	.... ३७२
कबहुं समय सुध द्यायवी	.... ३७३
कह्यो शुक श्रीभागवत विचार	.... ३८१
कृपा सो कहां बिसारी राम	.... ३८३
कत्तक किसमत	.... ३९०
काहूके आधार सेवा	.... ३१०
कानन दै अंगुरी रहि हों	.... ३१७
कानन कुंडल मोर पखा शिर	.... ३१८
काल्ह पर्‍यो मुरली धुनिमें....	.... ३२२
काहूको माई कहा कहिये	.... ३३८
काल कराल नृपालनेके	.... ३४३
कीरके कागर ज्यों	.... ३४३
कानन वास दशानन सों रिपु	.... ३५०
कानन भूधर बारि बयारि....	.... ३५५
काल ही तरुण तन	.... ३६२
काढ कृपान कृपा न कहूं	.... ३६५
काहेते हरि मोहिं बिसारो....	.... ३८३
काफ कौन जाने	.... ३८८
काया हरिके काम न आई	.... ४०३
काफरे दशकम	.... ४०९
कागर कीर ज्यों	.... ३४३
कीजे कहा जीजे	.... ३४४

पद.	पृष्ठांक.
कीवे को विशोक लोंक लोक	.... ३५२
कीवे कहा पढ़वेको	.... ३६०
केऊ कर्म वादी	.... ३१०
केऊ प्रेम लक्षणा	.... ”
केऊ ध्यान धारना	.... ३११
कैसे जांऊरी वीर घटभरवे नीर	.... ३२६
को रिझवारिन सों रसखान....	.... ३३६
क्योंरे छैल मोरी मटुकिया पटकी	.... ३२७
कोऊ माई भूल्यो मन समुझावै	.... ३८०
क्यों सोयाहै जाग मुसाफर	.... ३९६
कोई एक पंडित हो	.... ४०६
क्यों मन भूलाहै संसारा	.... ४११
कोऊ हरि समान नहिं राजा	.... ४००
कोऊ कहे करत	.... ३६१
को न क्रोध निरदह्यो	.... ३६२
को याचिये शम्भु तज आन	.... ३६८
कौन को लाल सलोना सखी	.... ३१६
कौन ठगौरी करी हरि आज....	.... ३१९
कौशलराजके काजहौं	.... ३४९
कौशिक विप्र बधू	.... ३५१
कंस के कोप की फैलगई	.... ३३७
कंचन मंदिर ऊंचे बनायके....	.... ३३९
कंचन के मंदिरन	.... ३४१
कंसकरी ब्रजवासिनपै	.... ३६५
करों विनती	.... ४१७
कहा श्वान को सिमृतकहाये	.... ४३२
कहौं कहा अपनी अधमाई....	.... ४४५
कवन काज माया बढ़ि आई	.... ४४७
कवन काज सिरजे जगभीतर	.... ४५७
कबहूं खीर खांड घिव न भावै	.... ४७१
कहा भूल्योरे झूठेलेभलाग	.... ४७५
कत जाइये रे घर लागोरंग	.... ४७६
कहा मन विषयनसों लपटाई	.... ४७८
कहा नर अपनो जन्मगवाँवै	.... ”
कहा नर गर्बत थोरी बात	.... ४७८
कई कोटि राजस तामस सात्विक	.... ४८८
करीहै गरीबी तो	.... ४९३
कल्ह हवस इसतरहसे	.... ५०३

पद.	पृष्ठांक.
कहां लगाई एती देर	.... ५१५
काहि नजाय छवि राधावरकी	.... ५१८
कथा यथा शुकदेवकी	.... ५२९
कदम चढ़ लाल बुलावत गैयां	.... ५४१
कब आवेंगे मम ऊपरते	.... ५५०
काहेरे मन खोजन जाई	.... ४४२
कालबूतकी हस्तिनी	.... ४२७
क्या पढिये क्या सुनिये	.... ४३९
काहेरे मन	.... ४१६
कायो देवा	.... ४४४
काम क्रोध तृष्णाके लीने	.... ४६४
काहेरे मन विषयावन जाय	.... ४७८
करी रैन दुखदैन	.... ४९६
क्या कहें आलम में हम	.... ५१९
क्या करनाहै संतति संपाति....	.... ५२४
काहूको पूछत रंक धन	.... ५३८
कारे मोहन कारे सोहन	.... ५४२
किते प्रकार न तूटो प्रीति....	.... ४२०
कियो श्रृंगार मिलनेकताई....	.... ४३२
किनहीं वनज्या कांसीतांबा....	.... ४६३
किरपा देह अभ्यास की	.... ५३०
कीता लोडिये	.... ४१९
की कुछ भेट सुदामा आंदी....	.... ५१४
कीच पीछले धोयके	.... ५२९
कुंचित हैं अलकां श्रुति ऊपर	.... ५५०
कूड़ राजा कूड परजा कूड सब संसार....	४३१
कैसे करूं कछु कह नहिं आवत	.... ५५४
कैसी बँसिया वजाय जादूडारारे	.... ५१५
कैसे होरी खेलों पियासंग	.... ५६४
क्यों लीजै गढलंका भाई	.... ४६९
कोटि सूर जाके परकाश	.... ४७०
कोई असां नाल चल्ले	.... ५२२
कोई सफा	.... ५५२
कोई सुष्टमस्त कोइ तुष्टमस्त	.... ५६५
कोई ऊर्द्धमस्त कोइ अधःमस्त	.... ”
कोई साक	.... ५६७
कोइ दमदा यहां गुजारा रे....	.... ५५५
कोइ हालमस्त कोइ मालमस्त	.... ५६४
कोइ अकलमस्त कोइ शकलमस्त	.... ५६५
कोइ पाठमस्त कोइ ठाटमस्त	.... ५६५
कोइ हाटमस्त कोइ घाटमस्त	.... ”
कोइ राजमस्त गजवाजिमस्त	.... ”
कौन को पूत पिता को काको	.... ४२५
कौड़ी बदले त्यागै रतन	.... ४५६
कंचन सों पाइये नहीं तोल	.... ४२३
(ख)	
खेलन में को काको गुसैयां....	.... ३७
खेलन के मिस कुँवरि राधिका	.... ४६
खेलत वसंत राजाधिराज	.... २४३
खेलत रघुराज आज रंगभरीहोरी	.... ”
खोलोजी किंवार कोहै एतीवार	.... २२०
खाक आपको समझना	.... ३८९
खे खबर ना आपणी	.... ३८५
खंजन नैन फंदे छविपिंजरा....	.... ३६१
खान मिला अरु पान मिला	.... ५३१
खेलत विपिन वसंत लाडिले	.... ५६१
खोजत खोजत खोज विचारयो	... ४३५
(ग)	
गये श्याम तिहिं ग्वालिनिके घर	२२
गली वे हमारी क्योंनहीं आमदा	.... १२४
गहनो चुरायो तैंने तो	.... १३७
गली गली में कहत फिरत	.... १४२
गले तौक पहिरावो पावँवेरीलैभरावो	११०
ग्वालिन घर गये श्याम साँझकी अँधेरी....	२३
गारी मत दीजो मो गरीबिनी को जायोहै	२९
गागर ना भरनदेत तेरो कान्हमाइ	३४
गावें देदे तारियां होब्रजकीनारियां सुकुमार	४६
ग्वालिन दान हमारोदे	.... ८७
गाय चरायके गिरिधारयो	.... १०३
ग्वालिन क्यों ठाढी नंदपौरी	.... १२९
गिरिधर लोरी लै मथुराके वासी	.... १०
गिरिवर धरयो आपने करते	.... ९०
गुण सुन बृषभानु कुवँरिके	.... ५६
गूंजेंगे भ्रमरा विराग भरे वन	.... ८०
गेंदके संग कूद बालक	.... ४०
गोपी गोपाल लाल रासमंडलमाहीं	.... ६५
गोपी प्रेमकी धुजा	.... १३६
गौर श्याम वदनारविंदपर....	.... १३३

अक्षरोंके क्रमसे पदोंका सूचीपत्र ।

पद.	पृष्ठांक.
गजकी वाणी सुनके	१७४
गाइये गणपति जगवंदन	२२१
गाऊँरे गोविंद गुणारे	२५९
गायो न गोपाल मन	२९४
गज वाजी मिला बहु ताजी मिला	५३१
गावो वसंत वसंत पञ्चमी	२४२
गिरि कांजे गोधन मयूर नवकुंजन को....	१६२
गुरु बिन ज्ञान नाहिं	२६४
गोबिंद के किये जीव	”
ग्रंथन के ज्ञात मात	२७१
गंगा तीर पर हिम गिरि शिलापर	२७३
गज वाजिवटा भलेभूरिभटा	३५५
ग्वालन के संग जबै एबो औ....	३३८
गाफ गुजर गुमान	३८८
गिरिको उठाय व्रज गोपको बचाय लियो....	३०९
गैन गम्मन मार	३८७
गोरज विराजै भाल	३१७
गोरी कुंजन में आज होरीमची	३३३
गोकुलको ग्वाल एक	३३६
गौतमकी नारी तारकी	३१२
गुंज गरे शिरमोर पखा	३१४
गगन मय थाल	४१७
गहरी करके नीबखुदाई	४४३
गृह तज वनखंड जाइये	४५०
गऊको चारे शारदूल	४५६
गही दाम श्याम मथन देत	४९७
गर्वते मुलखजाय	५४१
गह तंदुल ब्राह्मणके करसे	५४९
गगनके मंडल में चन्द्रमा	५६१
गाइये महारानी श्रीराधे	४९८
ग्वारन जान उराहनोंदय	५६२
गुण गावो पूरण अविनाशी	४३६
गुरुकी मूरत मनमें ध्यान....	४५२
गुरु सेवा ते भक्ति कमाई	४६९
गुण गावत मन होय आनंद	४८२
गुरु की मति त लेह अयाने	४९०
गुणके गाहक सहसनर	५२७
गुण थोरहिते प्रभु रीझरहो	५४९
गोविंदजी तू मेरे प्राणअधार	४७७
गिरिको उठाय ब्रजगोपको बचाय लियो	३०९
गोविंदा नहीं गाया तैंने	५०७
गोविंद लीना मोल	५१९
गंगाके संग सरिता बिगरी....	४६८
गंग गुसाँइन	४७०
(घ)	
घर तजों वन तजों नागर नगर तजों	११०
घर घर ते बनिता जो वन	२१८
घरी घरी घटत छीजत जात छिन २....	२६५
घरकी नारि त्यागै अंधा	४७१
घूंघट चक्र सज्जना	५१६
(च)	
चलरे योगी नंदभवनमें	१२
चले आतेहै मोहन वनसे धेनु चराये हुये	३९
चलो तो बताऊं विहारी जी	६७
चलोरी क्यों ना मानिनी कुंज कुटीर	७५
चलोरी ऐसो मान न करिये मानिनी	७९
चल परे हटरे काहेको इतरावे	९२
चल झूलिये हिंडोरे श्रीवृषभानुकी लली	९५
चलो इकेले झूलें वनमें प्यारी मेरे प्रान	”
चलो पिया वाही कदमतरे झूलें	९६
चकोरी चख हमारे हैं	१२२
चढे गजराज चतुरंगिनी समाज सह	१३४
चारों ही वेद पुराण अठारहों....	”
चाहे तू योगकर	”
चोराकी चटक औ लटक नथ कुंडलकी	२४
चैन नहीं दिन रैनपरै	५३
चोरो सखी बंसी आज दांव भलो पायोहै	६०
चंद्र खिलौना लेहौं मैया मेरी	१९
चंदा सो बदन जामें चंदनको विंदादियें	६४
चले गये दिलके दामनगीर	१५६
चल वृषभानु कुमारी बाग	२०१
चले गये छांड	२८२
चार बीस अवतार धर	१८७
चाहे जितो चित	२७९
चितहिराम दीन ओर कोरकी कटाक्षहि	२४५
चूके कबहुँ न चुगुल नर	५२७
चंचल दृग रतनारे तेरे	२२९

पद.	पृष्ठांक.
चुनरी मेरी रंग डारी	४०१
चेचानणा कुझ	३८५
चेतरे चित विच	३८९
चरण कमल की आश प्यारे	४३०
चरण शरण गोपाल तेरी	४८१
चले गये सब अजलके मुँहमें	५०२
चल हरि तोहिं बुलावे श्रीराधे	५४२
चलरी नई कुंज बुलाइ राधे	५४४
चलोरी आली वंशीबटतीरे	५४९
चार पुकारें ना तू मानहिं	४५५
चार मुक्ति चारे सिद्धि	४६२
चार दिन अपनी नौबत चले बजाय	४६४
चार वर्णमें सोई बड़ा जिन राधाकृष्ण रटा	५६४
चूके कबहुं न चुगुल नर	५२७
चेतना है	४४५
चोआ चंदन मरदन अंगा	४२३

(छ)

पद.	पृष्ठांक.
छबि अच्छी बनी बनवारीकी	११२
छबि आगरी कोविद राग....	१४४
छांडो मेरी गैल नातो गारी में सुनाऊंगी	३१
छांडदे माननी श्याम संग रूठिवो	७६
छांडो लंगर मोरी बहियां गहो ना	३२
छैल गैल मत रोकै तू हमारीरे	”
छैल रंग डार गयो मोरी वीर	१०७
छतियां लेहु लगाय	१५९
छबि रघुवीर की चित चोरन	२४०
छबीले बंसी नेक बजाओ	२१७
छांडो कृष्ण युगल वैयां	१९९
छोटी सी धनुहियाँ	२२६
छोड़के आश सभी	२८३
छार ते सँवारके....	३५६
छोड़ बिस्तरा उठरे गाफल....	३९४
छबि पर वारियां प्यारे	५१३
छिनमें नीच कीटको राज....	४८८
छली मोको यमुना जान न देइ	५२५

(ज)

पद.	पृष्ठांक.
जबाहें श्याम तनु अति विस्तारयो	४२
जब हरि मुरली नाद प्रकाश्यो	५७
जब ते मोहिं नंदनंदन दृष्टि परो माई....	११८
जहां ब्रजराज कलह पाये	१३१
जागिये गोपाल लाल जननी वलिजाई	१३
जागिये ब्रजराज कुंवर कमलकोशफूले	”
जागो बंसीवारे ललना जागो मेरे प्यारे....	१४
जागो हो मोरे जगत उज्यारे	”
जागो जागो हो गोपाल	”
जाके पद परसन को तरसतहैं विश्वव्रज....	२५
जामा बन्यो जरीतास	६३
जागत जागत रैनि विहानी....	६८
जाके दरशको जग तरसतहै	७५
जादूगर रे थारे नैन	१२०
जाको मन लाग्यो गोपाल सों	१३३
जादूगर नयन नयन बड़े विशाल	१२०
जानि जाओरी आज कोउ पनियां भरन....	१०६
जिन जानो वेद तेतो पादकी विदितहोय	११०
जैसी है मृदु पद पटकन	६३
जयति नव नागरी सकलगुण सागरी	७८
जो तुम सुनो यशोदा गोरी....	२६
जोबन की मदमाती डोलैरी गुजरिया	८८
जब पट गह्यो दुशासन करसों	१७६
जगके रुसे ते क्या भया	२५४
जगमें देखतहूं सब चोर	२१४
जननी विष मोहिं दे पिलाय	२०९
जहां देखों वहां मौजूद	१८०
जरा कर श्वेतबार	२७६
जाकी कोख जायो ताको	१५३
जाजारे भँवरा दूर दूर	१५७
जानत प्रीति रीति रघुराई	२५०
जादिनते वंशी अवतंशी	४९
जागिये कृपानिधान जान राय रामचंद्र	२२५
जालम नयन मेरे नाहिं रहिंदे	२३०
जाऊं कहां तजि चरण तिहारे	२४५
जाही हाथ धनुष चढ़ायो है सीतापति....	२४८
जानत प्रीति रीति यदुराई	१८८
जानकी नाथ सहाय करें जब	२५४

अक्षरोंके क्रमसे पदोंका सूचीपत्र।

पद.	पृष्ठांक.
जाग जाग जीव जड	.... २५९
जाको प्रिय न राम वैदेही	.... २६०
जाको लगन रामकी नाहीं	.... "
जाहि मात पिताते मैं भयो....	.... २७३
जाके बामे दाहिने सुमंत चक्र	.... "
जाको जाको चाहे	.... २७९
जित देखों तित श्याम मई है	.... १५४
जिन प्रेम रस चाखा नहीं	.... २८७
जिनको नित मैं चितमों चितमों	.... २७१
जे जन शरण गये ते तारे	.... १६९
जैसे तुम दीनो तन मन धन प्राण मोहिं	....१५१
जै मनमोहन श्याम मुरारी	.... १८८
जै नारायण ब्रह्म परायण	.... "
जैति श्रीराधिके....	.... १९५
जै भगीरथ नंदिनी	.... २२१
जै जै जै रघुबंश दुलारे	.... २३८
जै श्री जानकी वल्लभ लालहिं	.... २४१
जै जै युगल किशोर विहारी	.... २९६
जो हरि मथुरा जाय बसे	.... १५३
जो कोउ बृंदाबन रस चाखै	.... १६३
ज्यों भावै त्यों राख गुसाँई	.... १८५
जो जन ऊधो मोहिं न विसारे	.... १९४
जो मैं हरी न शस्त्र गहाऊं....	.... २०६
जो मैं पारथ नाम कहाऊं	.... २०७
जोई कछु देखिये सो सकल विनाशवंत	.... २६४
जो दशबीस पचास भये	.... २६८
जो मन नारीकी ओर निहारत	.... २६९
जौन हाथ बामन हो	.... १६७
जन्में श्रीकृष्ण मुरारि भक्तहित कारने	.... ३१३
जलकी न घट भरें	.... ३१४
जब कान्ह भये वश बाँसुरीके	.... ३२०
जलको गये लक्ष्मण हैं लरिका	.... ३४५
जलज नैन जलजानन	.... "
जनम्यो जिहिं योनि अनेक क्रिया	.... ३५४
जबै यमराज रजायसु ते	.... ३५६
जहां यम जातन घोर नदी....	.... "
जहां हित स्वामि न संग सखा	.... "
जप योग विराग महामख साधन	.... ३५६
जप की न तप खप	.... ३५८
जगत में झूठी देखी प्रीति	.... ३६३
जब नैनन प्रीति गई ठग श्यामसों	.... ३६६
जहां बाल्मीकि भये	.... ३६७
जहां वन पावनो सुहावने विहंग	.... ३६७
जगत सब गैर है लोको	.... ३९५
जप जाप मन हरि नामका	.... ३९६
जबलग मेरी मेरी करै	.... ४०१
जलवए हक जहां	.... ४१२
जा दिन ते निरख्यो नँदनंदन	.... ३१५
जा दिन ते मुसकान चुभी....	.... ३१६
जात हुती यमुना जलको	.... ३२५
जाहि लगन लगै घन श्यामकी	.... ३२८
जानतहीं न कछू हम ह्यां....	.... ३३८
जानैं कहा हम सबै	.... "
जाके बिलोकत लोकप होत	.... ३५३
जातिके सुजातिके	.... ३५८
जागिये न सोइये	.... ३५९
जागे योगी जंगम	.... ३६१
जाय सो सुभट समर्थ	.... ३६२
जासे जरे सब लोक विलोक	.... ३६८
जाके गति है हनुमानकी	.... ३७२
जानकी जीवनकी वलिजैहौं	.... ३८४
जाल जग भी	.... ३८६
ज्वाद जिकर अरु	.... ३८७
जिन मग रोको नंदकिशोर	.... ३२७
जिनको पुनीत वारि	.... ३४४
जिहिं मरने ते सभ जग त्रासा	.... ४०२
जिहिं तनु ना हरि भजन कियो	.... ४०३
जीम जीवणा भला	.... ३८५
जीवन सार बिसारा क्यों मन	.... ४०७
जे जावणा आवणा	.... ३८६
जेठ मायादा मान न करिये	.... ३९०
जैसे खग बालक को	.... ३१०
जय जानकी नाथा जै श्री रघुनाथा	.... ३१३
जय ताड़का सुबाहु	.... ३६१

पद.	पृष्ठांक.
जय जय जग जननि देवि	.... ३६९
जयति जय सुरसरी जगदखिल पावनी	.... ३७०
जैसे भूखे प्रीति अनाज	.... ४०३
जो रसना रस ना बिलसै	.... ३४०
जोय जुदा नहीं	.... ३८७
जत्त पहारा	.... ४१५
जब हम एको एक कर जाना	.... ४२२
जम ते उलट भये हैं राम	.... ४२३
जबलग तेल	.... ३४१
जब जरिये तब होय भस्मतन	.... ४३९
जब हम होते तब तू नाहीं	.... ४४०
जहिं मात पिता सुत मीत न भाई	.... ४८५
जरा टुक सोच अय गाफिल	.... ५००
जन्म तेरो बातों में बीतगयो	.... ५११
जब पलाश फूलन पर आवें	.... ५१४
जन्म गँवायो ऊआबाई	.... ५१८
जग मानव देह मिलै न सदा	.... ५३८
जग रूखन सूखन भोजन कै	.... ”
जबकि श्याम तैं बंशी बजाई	.... ५६०
जगदाता सोइ भक्त	.... ४९१
जबहीं जिज्ञासा होय	.... ५३८
जप मन रामनाम पढ सार	.... ४७७
जय जगदीश हरे	.... ५६७
जाका मुशकल	.... ४१८
जाके वश खान सुलतान	.... ४१९
जाके हरिसा ठाकुर भाई	.... ४२४
जामें भजन रामको नाहीं	.... ४५०
जप तप ज्ञान सब ध्यान....	.... ४८५
जाकी लीला की मिति नाहिं	.... ४८९
जात पात न्यारी करी	.... ४९४
जाग जानी कछु मसलत	.... ५१६
जानु भुजा कटि केहरि के	.... ५३२
जाहि के विवेक ज्ञान	.... ५३७
जा दिन मन पक्षी उड़ जैहै	.... ५४६
जा जल को विधि पालकरचो	.... ५५०
जिहिं मरने सब जगत् त्रासा	.... ४२४
जिहिं कुल पूत न ज्ञान विचारी	.... ”
जिहिं मुख पांचो अमृतखाये	.... ४२४
जिहिं शिर रच रच बांधतपाग	.... ४२५
जिस नीच को कोई न जानै	.... ४३०
जिहिं कुल साधु वैष्णव होइ	.... ४५१
जिन गढ कोट किये कंचन के	.... ४६२
जिहिं मारग के गिने जाहिं न कोश	.... ४८५
जिहिं प्रसाद घर ऊपर सुखवसाहिं	.... ४८६
जिसके अंतर राज अभिमान	.... ४८८
जिनके रथ नेमि	.... ५३०
जिन पायो ऊधो प्रेमहींसे पायोरे	.... ५४८
जिन्हांनू शौक साईदा	.... ५५९
जिन्हां नू लग्गे प्रेम तमाचे	.... ५६२
जीव जंतु सब ताके हाथ	.... ४९१
जे युग चारे आरजा	.... ४१५
जेते यतन करत ते डूबे	.... ४२६
जेती सामग्री देखहुरे	.... ४३६
जे ओह अडसठ तीरथ न्हावे	.... ४५५
जै चतुराननके सुतचार	.... ५३४
जो जन परमित परम न जाना	.... ४२२
जैसारंग कुसुंमका	.... ४२७
जिन तन मन प्राण	.... ५३६
जो जन लेहिं खसमका नाउँ	.... ४२४
ज्यों कपि के कर मुष्टि चननकी	.... ४२७
जो राज देहिं तो कवन बड़ाई	.... ४३३
जो नर दुख में दुख नहिं माने	.... ४३८
जो हम बांधे	.... ४४०
जो जन भाव भक्ति कछु जानै	.... ४४३
जो दिन आवें सो दिन जाहीं	.... ४४८
जो गुरुदेव तो मिलै मुरार....	.... ४७३
जो तू राम नाम चित धरतो	.... ५०५
जो सुख है सतसंगति में	.... ५३२
जो परब्रह्म मिल्यो कोउ चाहत	.... ५३६
जौलौं भाव अभाव यह मानै	.... ४३५
जंगल में अब रमते हैं	.... ५२५
जंगलमें मंगल तुझे	.... ५२९

(झ)

पद.	पृष्ठांक.
झूलो प्यारी आज निकुंजहिंडोलना	.... ९५

पद.	पृष्ठांक.
झूलन चलो हिंडोलने वृषभानु नंदिनी	९६
झूलो मेरी राधाप्यारी रंगीलो हिंडोरना	”
झूलन युगल किशोर की दिलमें मेरे बसी	९७
झूलत तेरे नयन हिंडोरे	”
झूलत श्याम श्यामा संग	९८
झोका दीजो सम्हार के मेरी सारी न लटके	९९
झूलनहार नई कौन है	१०२
झूलत को श्यामाके संग सखी सामरी प्यारीहै	१०२
झूलो तो सुरंग हिंडोरे झुलाऊँ	१०४
झूलत सीताराम अवध पुर	२४२
झूठो है झूठो है झूठो सदा....	३५५
झटक्यो मोरा चीर मुरारी	५१२
झगड़ा तैंने पाइया	५२९

(ट)

पद.	पृष्ठांक.
टेढे सुंदर नयन टेढेमुख कहत वैन	१२०
टेढी कला चंद्रकी सकल जग....	”
टुक नजर मिहरदी देख	१७१
टुक बंगलामें बैठो बागकी बहारहै	२००
टेर सुनो ब्रजराज दुलारे	१९३
टुक देई ग्वारन मक्खन कुडे	४९५
टुक बूझ कवन छिपआया है	५०१
टूटी गांठनहार गोपाला	४८८
टेढीपाग टेढे चले लागे वीर खान	४६४

(ठ)

पद.	पृष्ठांक.
ठाढी रहरी लाड गहेली मैं माला सुरझाऊं....	६१
ठाढी रहरी गूजरी तू देजा मेरोदान	८८
ठुमक गति चलत अनोखी चाल	३८
ठुमक ठुमक चलत चाल जनकनंदिनी	२२६
ठुमक चलत रामचन्द्र बाजत पैजनियां	२२४
ठाढे हैं नव द्रुम डारगहे	३४५
ठाकुर तुम शरणाई आया	४७७

(ड)

पद.	पृष्ठांक.
डगर मोरी छांडो श्याम	१०६
डरपै धरती अकाश	४५९
डरदा डरदा अर्जइक करदा	५४०
डगर में प्यारी आजमिले कहीं श्याम....	५४२

(ढ)

पद.	पृष्ठांक.
ढाढन चल दशरथ घर जाइये	२२३
ढिग बैठ धनी नरकेहरिजी	५३४

(त)

पद.	पृष्ठांक.
तनक हँस हेरो मेरी ओर	७४
तनक हरि चितवो मेरी ओर	८४
तांडव गति मुंडन पर नितत वनमाली....	४२
तालन पै ताल पै तमालनपै मालन पै	६१
तुम जाओजी जाओ जाके रहे हो रात....	७०
तुम सुनो राधिका विनय कान	७३
तुम काहेको लाडली मान करत	७६
तुम टेढा म्हारी ठेढी गगरिया	८९
तुम का जानोरी गूजर दधिकी बेचनहार....	९१
तुम्हें कोउ टेरत हेरे कान्ह....	१२९
तुम या ग्राम कहां रहो आली	१३८
तुम कहुँ देखी रे इतजात	५५
तूहै मुख कमल नयन अलि मेरे	५३
तूतो मोहिं प्राणन हूंते प्यारी	८०
तू मेरा मनमोहा समलिया	१३०
तूहै सखी बडभागभरी	७९
तेरोरी कन्हैया बल	२६
तेरो मुख नीको कि मेरो राधाप्यारी	५३
तेरी झमक झूलन कटि लचकजात	९६
तेरो मुखचन्द्र री चकोर मेरे नयना	५३
तेरी झूलन अतिरस सानी सुखदानी	१०३
तेरी हँसन बोलन लाल मेरेमन वसिया	१२३
तैंने वर्सामें जो गाया मेरा जी जानता है	११६
तोसी त्रिया नहीं भवन भटूरी	७६
तोसी नहीं कोउ देखीरी हठीली	७७
तोहिं डगर चलत का भयोरी वीर	१०८
तोरेजी नैना कारे अनियारे मतवारेप्यारे	१२०
तजोमन हरि विमुखनको संग	२९३
तन मन रंग बनाय पिया सँग	२७८

पद.	पृष्ठांक.
तजे दुराराध्य स्वामी	.... २७४
तनु वृद्ध भये ते....	.... २७६
तारो पतित जानके	.... १६६
तातको शोच न मात कि शोचरु	.... २३७
तात मिलै पुनि मात मिलै....	.... २७०
तीर्थानके माहिं समान	.... २७७
तुम्हारे आगे हैं बहुत नच्यो	.... १७०
तुम गोपाल मोसों बहुत करी	.... १७१
तुम बिन श्रीकृष्णदेव और कौन मेरो	.... १७८
तुम झूलो मेरे प्यारे दशरथ राजदुलारे	२४१
तुंग भोग इंद्रलोक	.... २७५
तूदयालु दीन हौं तू दानि हौं भिखारी	.... २४६
तु खुश भर नींद क्यों सोया	.... २८४
तू ममता मद माहिं	.... २८३
तू कछु और विचारत है नर	.... २६७
तेरे रतनारे नयन लगे	.... २३०
तेरी नज़रोंकी	.... ”
तेरी होरीकी झलक	.... २४४
तेरा राम बसताहै	.... २८१
तोसों कहा धुताई करिहौं	.... २१९
तब तो भगतन सहायकाज	.... ३११
तनु की द्युति श्याम सरोरुह	.... ३४१
तिनते खर शूकर	.... ३५५
तुम्हें धन्यबाद है ईश्वर	.... ३९४
तुम मेरी राखो लाज हरी	.... ४०२
तुम बिन कौन हमारो प्रभुजी	.... ४०७
तुझसे मैंने दिलको लगाया	.... ४१०
तू रजनीचर नाथ महा	.... ३४९
तू गोविंद है और तू गोपालहै	.... ३९८
तू बात चलन दी करे	.... ४१०
तूही एक मेरा मददगारहै	.... ४१४
तेरी गलीन में जादिन ते	.... ३२१
त तनक छिद्र....	.... ३८५
तैं शोह मनमें कियारोस	.... ४०५
तोसों कहौं दशकंधररे	.... ३४९
तोय तौर महबूब	.... ३८७
तौलौं लोभ लोलुप	.... ३६४
तबलौं मलीन हीन दीन सुख सपने न....	३६५
तन संतन का धन संतन का	.... ४३५
तन मन धन वारों सांवरी सूरत	.... ५६०
तर तीव्र भयो वैरागतो	.... ५६६
तत्पद त्वंपद	.... ”
ताती बाउ न लागई	.... ४४९
तातको आयसुमान चले	.... ५३४
तिहिं योगी को जुगत नजानो	.... ४४२
तिन करते इक चरित उपाया	.... ४६७
तिल तेल के संग लेह दुखको	.... ५३०
तुझहिं सुझंता कछु नाहिं	.... ४७६
तुम ठाकुर	.... ४८६
तू न भयो अपनोरे लोभी मन	.... ५४७
तू घट घट	.... ४१६
तू मेरा पिता तूही मेरी माता	.... ४६५
तेरी खातर श्यामां वे मैं	.... ५२५
तैं नर क्या पुराण सुन कीना	.... ४७९
तेरीखाक फकीरी दिल से चाह न	.... ५५२
तुम सुनिये हो बलि राजा....	.... ५५३

(थ)

पद.	पृष्ठांक.
थारे करूंगी कपोलन लालजी	.... १०६
थिर घर बैसो हरिजनप्यारे....	.... ४२०
थिर संतन सुहाग मरे नजावेहे	.... ४३१

(द)

पद.	पृष्ठांक.
दर्श तो दिखाजा छैला दर्श तो दिखाजा	१२
दधिके मतवारे कान्ह खोलो प्यारे पलकैं	१५
दर्शन देना प्राणप्यारे	.... १०८
दधि पीगयो रीझाई आज....	.... २८
द्वारके द्वारिया पौरिके पौरिया	.... ६८
द्वार पौरियाको रूप राधे को बनायलाई	८९
दिल लेगयो हमारो नँदलाल हँसते २....	११५
दिलदार यार प्यारे गलियों में मेरे आजा	१२४
दीनहू के बंधु द्याल मोचो दुःखतत्काल	२५
देखोरे अद्भुत अविगतिकी गति	७
देखोरी यह कैसो बालक रानी यशोमति	८

पद.	पृष्ठांक.
देख चरित मोहिं अचरज आवै	३०
देखोरी मथनियां कैसे फोरीनँदलालेन	३४
देखन दे मोरी बैरन पलकैं....	२९
देखो माई बादर की बरियाई	४३
देखी कहूं गलिन में मो प्राण जीवनी	५४
देखोरी या मुकुट की लटकन	६६
देजा गुजरिये दधि माखन....	८६
देखत की मुख ऊजरी गूजरी	८८
देख युगल छबि सावन लाजै	९४
देखोरी यह नंदका छोरा बरछीमारजाताहै	१२१
देखियत गुणन गरूर	१४३
देखरी आज नव नागरी वेष धर	७८
दंपति दर्पण हाथ लिये	१३०
दर्माद ठाढे दर्वार	१८५
दशरथ राज छबीलो छैलहारी	२४३
द्वारे मेरे बंसी कौन बजावे	२०४
दाताऊ महीप मान्धाता दिलीप	२८२
दास अनन्य मेरो निज रूप	१९४
दीनबंधु दीनानाथ	१६२
दीनानाथ दयासिंधु	१६६
दीनदयालु सुने जबते	१६७
दीनन दुख हरण देव संतन हितकारी....	१७०
दीन हित बिरद पुराणनगायो	२३६
दीनको दयालु दानि दूसरो नकोई	२४६
दीनभयो गजराज	१७४
दीजै दरश मोहिं	१७८
दीपमें पतंग परे	२७२
दुर्जन दुशासन दुकूल गह्यो....	१७६
दुनियाके परपंचोंमें	५२४
दूर खेलन जिन जाहु ललन मेरे	२१३
देखा देखी रसिक न होइहै	२०६
देख सखी शिरपाग रामके	२४९
देखोरी छबि राम वदनकी	२२९
देखोरी यह नैनन भर भर	२३२
देख सखी आज रघुनाथ शोभा बनी	२३९
देख सखि आज वन्योश्री	२०२
देवदृग तारे	१६८

पद.	पृष्ठांक.
देव एक महादेव	२७४
देखतके नर दीखतहैं	२६६
देहतो स्वरूप तौलों	२६७
देखवेको दौरेतो	२६९
देवहूं भयेते कहा	२७०
दैने दई फल फूल अनेक औ	२७९
द्रौपदी धारयो ध्यान	१७४
दृग दूने खिंचे रहैं कानन लौं	३२४
दम दुर्मद दान दया	३६०
दास सुदामा को संपति दै....	२१२
दानी भये नये मांगत दान	३२६
दानि जो चार पदारथको	३६८
दानी कहुं शंकरसे नाहीं	३६८
दाल दिलगीरना होय भूले....	३२६
दिलों मुहब्बत जिन्हों	४०५
दीनबंधु दयासिंधु	३११
दीनदयालु दिवाकर देवा	३६८
दूध दुह्यो सीरो परयो	३१८
दूर ते आय दुरेही दिखाय	३३७
दोउ भैया मैया सों मांगत....	२२
दूब दधि रोचना कनकथार....	३४२
दूलह श्रीरघुनाथ बने	"
दूषण विराध खर	३४८
दूध पिये सिद्ध	३८९
देखन को सखी नैन भये	३१५
देख सखी नव छैल छबीलो....	३२९
देख सखी वृषभानु किशोरी	३३३
देश विदेशके देखे नरेश	३४०
देख ज्वाला जाल	३४७
देवधुनि पास मुनिवास	३६७
देखोरे मेरी मति बैरानी	४०७
द्रौपदी औ गणिका गज गीध	३४०
दरश अपना जो तुम रघुवर	५०६
दशचार सो भवन रचे	५३२
दस्सीयो मोहन किस दानी....	५१८
दया चट्ट होगई	५२८
दारिद देख सबको यहँसे....	४५१

पद.	पृष्ठांक.
दासतो तिहारेजी	.... ५१७
द्वारकाके बीच पासा खेलत हरि	.... ५६३
दिनते पहर	.... ४४२
दिला यकदम नहो गाफिल....	.... ४९९
दीन बिसारचो दिवाने तेंने....	.... ४६२
दीजिये दर्श मोहिं चतुर भुजनकर	.... १७८
दीनानाथ अब वार तुम्हारी	.... ५१५
दीन मलीन दुखी अंग हीन	.... ५५६
दीनबंधु दीनोंकी हरतेथे पीर	.... ४९३
दुख हरता हरिनाम पछानो....	.... ४४९
दुनिया झूठी तें साँई सच्चा	.... ५००
दुनिया झूठी ते लोकभी झूठे	.... ५०१
दुनियाको दौरनाहै	.... २६६
दुर्लभजन्म पुण्य फल पायो....	.... ४४१
दूध तो बछेरे थनों विटारचो	.... ४३३
दूध कटोरी गडेव पानी	.... ४७१
दूर रहो रघुवीर खेरे मम	.... ५१२
देबापाहन तारी पले	.... ४२८
दीजिये दर्शन मुझे वंशीके बजानेवाले....	५०७
देखो आली ठाढे कदमकी छैयां	.... ४९९
देखके जाना फाग मोहन	.... ”
देह सों ममत्व पुनि	.... ५३५
देखें तो विचारकर	.... ५३५
देखो देखो ब्रजवासिनके भाग	.... ५४४
देखो वृंदावनके कैसे भाग	.... ५४५
देखोरी या वेनी गूँथी नंदकेकुमार	.... ५४५
दौलत पाय न कीजिये	.... ५२७

(ध)

पद.	पृष्ठांक.
धन मेरे भागकी शुभघरी	.... ८२
धवल महल चढ़ रत्न बंगला	.... ९६
धूर भरे अंग खेलत मोहन	.... १६
धेनुके चरैया प्यारे भैया बलभद्रजूके	.... २४
धनि धनि श्रीवृंदावन धाम....	.... १६४
धनि यह राधिकाके चरण	.... १९५
धर्म मणिमीन मर्य्यादमणि रामचन्द्र	.... २११
धन धन धन मातगंग	.... २२१
धरे टेढी पाग टेढी चन्द्रिका	.... २१८
धर धीर कहैं चल देखियजाय	.... ३४७
धर्म को सेतु जग	.... ६६४
धूर भरे आति शोभित श्यामजू	.... ३१४
धन धन्य रामवेणु बाजै	.... ४५९
धनवंता होय कर गर्वावे	.... ४८८
धृग धृग नर नारी नाम विना	.... ५०४
धन ईश दियो जग भीतर जो	.... ५३२
धन धन केशवा कटत कलेशवा	.... ५३३
धन्य भई तिनकी जननी	.... ५३९
धायोरे मन दुहुँ दिशि धायो	.... ४४४
धूप दीप घृत साज आरती....	.... ४४३
धूत कहो अवधूत कहो	.... ५२३
धूळ जैसो धन जाके	.... ५३६
धीरे मोहन धीरे सोहन	.... ५४२

(न)

पद.	पृष्ठांक.
नट नागर चित चोर गेंदतक मारी सँवलिया	३५
नहिं बिसरत सखी श्यामकी सुरतिया	११९
न्यारी करो प्रभु अपनी गैयां	३८
नाचत छैल छबीलो नंदका कुमारहै	६६
नारी हूं न जानै बैदा निपट अनारीरे	१०९
निशि काहेको वन उठधाई	५९
निर्तत गोपाल संग राधिका बनी	६५
निरख सखी चार चंद्र इक ठौर	१३०
नींद तोहिं बेचूंगी आली जो कोइगाहकहोय	८२
नीको लगे राधावर प्यारो	१२९
नेक मेरे बारे कान्ह छाँडि दे मथनियां....	२२
नैनों की मारी कटारी मेरे	३५
नैनन चकोर मुख चन्द्रहूको वारिडारों	६४
नैनन की चंचलता कहा कीने	६९
नैनोंरे चितचोर बताओ	११९
नैनन की कोरें को लेहै	१२८
नैना मान अपमान सह्यो	१२१
नंदनंदन वृंदावन चंद	१५
नंद भुवनको भूषण माई	१८
नंद बुलावत हैं गोपाल	२०
नंदलाल निठुर होय बैठ रहे	८३

पद.	पृष्ठांक.
नमो नमो वृंदावनचंद	.... १६६
नव कुँवर चकचूड़ा नृपति	.... १९६
नई बहार आई मनभाई	.... २०२
नृपति कुँवर राजत मगजात	.... २३४
नंदके आनंद हो मुकुंद परमानंद	.... १६६
नवल रघुनाथ नव नवल श्रीजानकी	.... २४२
नहीं छोडूंरे बाबा रामनाम	.... २१०
नमामि भक्त वत्सलं कृपालुशीलकोमलं	२६२
नाहिन रह्यो मनमें ठौर	.... १५७
नाथ अनाथनकी सुध लीजे....	.... १५८
नामकी पैज राखो धनी	.... १७३
नाथ मोहिं अबकी बेर उबारो	.... १८०
नाथ तुम दीनन हितकारी....	.... १८९
नाजानूं मेरा राम कैसा है	.... २८८
निरखत रूप सिया रघुवर को	.... २३३
निरख श्याम हलधर मुसकाने	.... २१५
निशिदिन बर्षत नयन हमारे	.... १५७
नैननकी पलही पलमें	.... २६८
नंदराय के नवनिधि आई	.... २१२
नंदजू मेरे मन आनंद	.... ”
नवरंग अनंग भरी छविसों....	.... ३२२
नर नारि उघारि सभा महँ होत	.... ३५१
न मिटे भव संकट दुर्घट है....	.... ३५९
नर अचेत पाप से डररे	.... ३९८
नागर छैल है गोकुलमें	.... ३२५
नाम अजामिलसे खलकोटि	.... ३४४
नाम लिये पूत को पुनीत कियो	.... ३५२
नाम महाराज के	.... ३६४
नाचतही निशि दिवस मरचो	.... ३८२
नारि के विकार सब	.... ४०६
नाम जपन क्यों छोंडदिया....	.... ४१३
नाहीं मेरे जाति पाँति	.... ३६०
नून नाम अरु रूप	.... ३८८
नैन लख्यो जब कुंजनते	.... ३१७
नैनन बंक बिशाल के बाणन	.... ३१८
नंदनंदन के ऐसे नैन	.... ३३४
नृप कन्या के कारणे	.... ४५१

पद.	पृष्ठांक.
नरू मरै नर काम न आवे	.... ४५३
नहिं कछु जन्मै नहिं कछु मरै	.... ४८८
नहीं ऐसो जन्म वारंवार	.... ५१८
नभमें सुरलोक रचे हरिजी....	.... ५३१
नवल वसंत नवल श्रीवृंदावन	.... ५४४
नहीं हम वेदके वादी	.... ५५०
ना मैं योग ध्यान चित लाया	.... ४२५
नाथ कछुअ न जानौं	.... ४४४
ना इह मानस ना इह देह....	.... ४५४
नाद भ्रमे जैसे मिरगाये	.... ४५४
नाम लेत कछु विघ्न न लागै....	.... ४६६
नांगे आवन नांग जाना	.... ४६८
नागर जनां मेरी जाति	.... ४८१
नाना रूप नाना जाके रंग....	.... ४८९
नाम को आधार तेरे	.... ५०७
नाचत दे दे तारी ग्वाल	.... ५१२
नाद के लोभ तजे मृग प्राण सो	.... ५३०
नाहिं फले जगमाहिं निशेश....	.... ५३३
नित उठ कोरी गाजर आनै	.... ४५१
निमाने को जो देतो मान	.... ४५२
निर्धन को धन तेरो नांउ	.... ४८५
निर्धन आदर कोइ न देय....	.... ४६८
निर्गुण आप सगुण भी ओही	.... ४८९
निरख सखी शोभा श्री रामकी	.... ५२०
निपट बंकट छबि अटके मेरे नैना	.... ५६१
नीच जाति	.... ४४६
नीकी कीरी मेंकल राखै	.... ४८९
नीर बिन मीन दुखी	.... ५३१
नीर भरे नैन	.... ५५६
नेह जुरचो नंद नंदनसों	.... ५५८
नैनो नीर बहै तनुक्षीना	.... ४४१
नैना की नोकें बुरी	.... ५२८

(प)

पद.	पृष्ठांक.
प्रथम सनेह दोउअन मन मान्यो	४५
परम धन राधानाम अधार	६०
पहिले तो देखो आय माननीकी शोभा लाल	८०
पहिले मेरो दान चुकारी	.... ८७

पद.	पृष्ठांक.
प्रभुके ऊंच नीच नहिं कोई....	१३५
पांडे भोग न लागन पावे	१९
प्यारे जिन मेरी बांह गहो	३२
प्यारीको शृंगार करत नँदलाला	५२
प्यारी मैं ऐसे देखे श्याम	५९
प्यारे तेरे जीयाकी न जानी जात वातरे	६८
प्यारे मेरे गरवामें जिनडारो बैयां	७०
प्यारीजी तिहारे बिन कल ना परत है....	७१
प्यारी प्रीतमके संग झूलें रंग हिंडोरना	९८
प्यारे तेरे बैन अमीरस बोरे....	११९
प्यारी नैना लगाय छिपजामदा	१३२
प्यारी इक मालिन पीर तिहारी	१३८
प्यारो पैये केवल प्रेममें	१३६
प्यारी पिया दोउ खेलत होरी	१०४
प्रीतम तुम मो दृगन वसतहौ....	५३
प्रीतम रहे प्रिया मनलीये प्रियारहे मनपीको	६१
पूत सपूत जन्यो यशुदा	९
पौढे श्याम जननि गुणगावत	४०
परम पवित्र तुम मित्रहो हमारे ऊधो	१५१
पतित पावन हरिनाम तिहारो	१८०
परम पुनीत प्रीति नँदनंदन....	१९३
पगिया शिर लाल हरी कँलगीं	२२६
प्रथमे गुरुजीके चरण वंदों	१९०
पति राखो मोरी श्याम विहारी	१७५
परिपूरण पापके कारणते	२८२
परिवारके सनेहको	२७२
प्रतिकानन बिरछनते मन वाछत	२७५
प्यारीजी मोतन हूं टुक हेरो....	१६३
पाती मोरी द्वारका लेजाय....	१७९
प्यारीजी तेरे अंगमें फूलनकी बहारहै....	२०१
प्यारी तुम कौन होरी फुलवा बीननहारी	२०३
प्यारी मैंतो तिहारी मालिनियां	”
प्रात समय रघुवीर जगावे....	२२४
प्रात समय उठ जनकनंदिनी....	२३९
पारब्रह्म परमेश्वर	२१५
पांच बरसके भये कुमरजी....	२०८
पंडिजी मैं नहिं रखता प्यार....	२०९
प्यारेजी गिनती कई हजार पढे	२०९
प्यारेजी फूलों कीसी सेज	”
पाती सखि मधुवन से आई	१५२
पिया बिन नागिन कालडी रात	१५८
पिया तोरी नजरिया जादूभरी	२३०
प्रीतम नूपुर मति न उतारो	१९९
प्रीतिकी रीति रंगीलोई जानै	२००
पांडेजी मोहिं रामनाम लिखदेह	२०९
प्रीतिकी रीति रघुनाथ जानै	२४९
पीलेरे अवधू हो मतवारा प्याला	२९०
प्रीतम जान लेहु मनमाहीं....	२८९
पुण्यनके वशते सुभोग चिर	२७३
पूतना बिषदे अमृत पायो	१८४
पूंछत ग्राम बधू मृदुवानी	२३५
पूर्ण ब्रह्म बताय दियो जिन....	२६३
पेटते बाहर होतहीं बालक....	२६६
पग नूपुर औ पहुंची कर कंजन	३४१
पद पंकज मंजु बनी पनहीं....	”
प्रभु रुख पाय कै	३४५
पद कोमल श्यामल गौर कलेवर	३४७
प्रभु सत्य करी प्रह्लादगिरा	३५१
पठयो है छपद छबीले कान्ह	३६६
पगन कब चलिहौ चारो भैया	३७६
प्रभु हौं सभ पतितनको टीको	३७९
प्रभु तेरी लीला अपरंपार अगमअपार....	३९२
प्रभु मेरी नाव उतारो पार	”
प्रभु प्रेम एक शरबतेदिलकशाहै	४१२
प्राण यही जुरहें रिझवापर....	३३९
पात भरी सहरी	३४४
पाप हरे परिताप हरे	३५६
पाय सुदेह विमोह नदी	३६०
प्राणीको हरि यश मन नहिं आवै	३७९
प्यारे गम छोड़ दुनियाका....	४०९
पिय प्यारी आज होरी खेलतयमुनातीर....	३३३
पीरे बन बाग अनुराग भरे	३२३
प्रीतम तुम मोहिं प्राणते प्यारो	३२७
पूर्व पुण्यनते चितई जिन	३२१

अक्षरोंके क्रमसे पदोंका सूचीपत्र।

पद.	पृष्ठांक.
प्रेम पगे जुरंगे रँगसाँवेरे	.... ३२२
पीह प्यारा याद	.... ३९१
पंचवटी बर पर्ण कुटी तर	.... ३४७
पवन गुरु पानी पिता	.... ४१५
भुर्जी तू मेरे प्राण अधारे	.... ४४९
प्रभु एही मनोरथ मेरा	.... ४३४
पढें वेद सारे जप तप व्रत धारे	.... ५०६
पढ़िये गुनिये	.... ४५८
पवन उपाय धरी सब धरंती	.... ४२९
प्रथमे छोडी पराई निंदा	.... ४६५
परधन परदारा परहरी	.... ४७०
प्रभुकी सेवा जनकी शोभा	.... ४८२
प्राण पुत्र दोऊ बड़े	.... ५२७
प्रभुका सुमिरै सो पर उपकारी	.... ४८४
प्रभुके सुमरण	.... ,,
प्रभुको सुमिरण सुमिर मन मेरे	.... ४१३
प्रभु बखशिंद दीनदयाल	.... ४९०
पढले इशक किताब	.... ५०३
प्रभु हो कब लौं नाच नचैहो	.... ५२६
प्रथम हिये विचार	.... ५३५
पढो भैयारे कृष्ण गोविंद मुरार	.... ५६१
पारब्रह्म अपरंपर देवा	.... ४१९
प्राणी कौन	.... ४३७
पार परोसन पूछ ले नामा....	.... ४४०
प्राणी नारायण सुधलेहु	.... ४५७
पांच वर्ष को	.... ४६०
पापी हिये मे काम बसाय	.... ४७४
प्यारी लाल तेरेरी आधीन	.... ५४३
प्यारी लाल	.... ,,
प्यारी नेक निरखो नवरंग लालहि	.... ५४३
प्यारी हौं कैसे करमान रचाऊं	.... ५५३
प्रातकाल नंदलाल खेलतहैं होरी	.... ५५८
पारब्रह्म परमेश्वर पुरुषोत्तम....	.... ५६२
पिया प्रेम नगरमें	.... ५१२
पिया ते मैं क्यों कीनो मान	.... ५५३
पीत वसन कुंद दशन	.... ४८४
प्रीति की रीति कछू नहिं राखत	.... ५३६
पीरो कुंडल पीरो नूपुर	.... ५४२

पद.	पृष्ठांक.
प्राण पुत्र दोऊ बड़े	.... ५२७
पूरे गुरु का सुन उपदेश	.... ४९१
पूंछ पूंछ वदन	.... ५३०
पूरी न परत प्रह्लादकी	.... ५४१
प्रेम लग्यो परमेश्वरसों	.... ५३१
पंडित जन माते पढ़ पुराण....	.... ४७५
पंजे मेरे वीर प्यारे नांउ पंजांदाछेया	.... ५३३

(फ)

पद.	पृष्ठांक.
फूल गये गोप गृह गोपिकन भूलगये	१०
फूलनके खंभा पाट पटरी सुफूलनकी....	१०
फूलनकी चंद्रकला शीशफूल फूलनको....	,,
फूलन चंदोआ तने फूलन फरशबिछे	१०१
फूलनके बंगलेमें राजैं पियाप्यारीहो	१०
फिर फिर राम क्षियातन हेरत	.... २३५
फागुन पकड़चो	.... ३९१
फूल फूल फूलनके	.... ३२३
फे फिकर गिया	.... ३८८
फरजिंद नंद जूका मन बीचभामदा	५१८
फूली बनराई बेलरियां	.... ५६१

(ब)

पद.	पृष्ठांक.
बलि बलि जाउँ मधुर सुर गावो	१५
बलि बलि जाउँ छबीले लालके	,,
ब्रह्माहूके ध्यानमें न आवें कभू एक क्षण	२५
ब्रजकी अहीरनीके भाग्य भले देखो मैया	२६
बर्जे लेरी महरी मोहनको	२९
बरजो नहिं मानत बार बार	३२
बडो ढोटा खोटा नंदको आली	,,
ब्रजबासिन पटतर कोउ नाहीं	३८
बन ते आये बनवारी	३९
वृषभानु कुँवारि जब देखों	५४
बनत बनाऊं कछु बन नहिं आवे	८१
ब्रज पर नीकी आज घटा	९३
बलिबलि जांदियां झूलनपर	९८
बटतर सांवरो ठाढो	११८
बसे मेरे नैननमें नंदलाल	१२७
बसे मेरे नैननमें दोउ वीर	१२८

पद.	पृष्ठांक.
बँसुरिया विषभरी बाजी	४८
बांसुरी बजे तो ब्रज हम न बसेंगी वीर	४९
बाधा दे राधा कितगई	५५
बाजी बर आई वाजी देखवेको धाई	५८
बांसुरी बजाई आज रंगसों मुरारी	”
बांकी छबिसों झूलत प्यारी	१०३
बिलंब तज माखन देरी माई	२१
बिनती कुँवरि किशोरी मेरी मान ३	७१
बिन देखे मन मान न मेरो	११९
बूझत श्याम कौन तू गोरी	४५
बेनी गूंथ कहा कोइ जाने	५२
बेसर कौन की अति नीकी	५३
बेदरदी तोहि दरद न आवे	११९
बोलता क्यों नहीं रे मिजाजी	१२
बंदों श्री हरिपद सुखदाई	६
बंसीवारे तू मेरा गली आजारे	२४
बंदौं मैं चरण सरोज तिहारे	४२
बँसुरी तू कौन गुमान भरी	४९
बंसी मेरी प्यारी दीजे प्रान प्रान प्रान	५१
बंसी यमुना पै बाज रही	५८
बृंदावन सघनकुंज माधुरीलतानतरे	५८
वृंदावन कुंज धाम विचरतप्रियप्यारी	५९
बृंदावन धामनीकोब्रजकोविश्रामनीको	६२
बरदंतकी पंगत कुंदकली	२२३
बतादे सखी कौन गली गये श्याम	१५८
बहुत दिनानमें विदेशह्वे आये	१६१
ब्रज रज मोहनी हम जानी	१६४
ब्रह्म मैं ढूँढ्यो पुराणन वेदन	१९६
ब्रज नव तरुणि	१९७
बन्यो सिया प्यारीको बनरा	२२८
बन्यो सखी दूलह अवध रँगीलो	२२९
बरज यशोदे तु अपनो बाल	२१६
बजावे मुरलीकी तान सुनावे	,,
बांको हमारो यार सँवलिया	२४१
बार बार समुझाय रहीमैं	२९०
बात चलनदी करहो	२८५
बार बार कह्यो तोहिं	२६५
बिलग जिन मानो ऊधो प्यारे	१५५
बिन गोपाल बैरन भई कुंजैं	१५७
बिहरत बागवा में देखे कुल भानवा	२२७
बिना रघुनाथके देखे	२३४
बिरहों ने नोकां झोकां वेलाइयां	१६०
बिद्या पढने गये गुरुकि चटशाला	२०९
बीत गये पिछले सबहींदिन	२६७
बैठरे मन सबरके हुजरे	२८५
बैरी घर माहिं तेरे	२६५
बोलत अवनिप कुमार	२२५
बंधन काट मुरारी हमरे	१७८
बृंदावनके राजाहैं	१९७
वेदों रघुपति करुणानिधान	२४४
बृंदाबन विपिन सघन वशीवट	१६५
बड़ो विकरालवेष	३४८
बजी है बजी रसखानबजी	३१९
बसीरहै शशि छबि ज्यों	३२६
बलकल वसन	३४६
बनिता वनि श्यामल गोरेके बीच	”
बचन विकार करतबहु	३५७
बरण धरम गयो	३५९
बबुर बहेरको बनाय	३६०
ब्रह्म जो व्यापक वेदकहैं गम	३६७
बडी है राम नाम की ओट	३८१
बस्स करजी हुनबस्सकरजी	४०८
बस अब मेरे दिलमें	४११
ब्रह्मा महेश शेष नारद गणेश	३१२
बांकी विलोकन रंगभरी	३१५
ब्याही अन ब्याही	३१८
बांकी कटाक्ष चितैवो सिख्यो	३२१
बारहीं गोरस बेंच री आज तू	३२४
बालि दल कालि	३५०
ब्याल कराल महाविष पावक	३५५
बालक बोल दियो बलि काल	३६५
बावरो रावरो नाह भवानी	३६९
ब्राह्मण वैश्य शूद्र	४०४
विश्व जयी भृगुनायक से विन	३४८
बिसाख बिसारयो	३९०
बिथा कहों कौन सों मनकी	३९८

पद.	पृष्ठांक.
बेर बेर टेर टेर	.... ३१२
वेद औ पुराणन में	.... "
वेणु बजावत गोधन गावत....	.... ३१९
बेद न पुराण गान	.... ३५७
बे बन्द अँखो	.... ३८५
बैरिन तें बरजी मरहे	.... ३२१
बैदकी औषध खात कछू न....	.... ३३९
बंक विलोकन है दुखमोचन	.... ३१६
बंसी बजावत आन कढ्योरी	.... ३२२
बंसीबट यमुना तट निरतत बनवारी....	३३५
बडे बड़े जो दीसहिं लोग....	.... ४२०
बहौं गर्व किया नहिं जाना	.... ४२१
बहु प्रपंच कर परधन ल्यावे....	.... ४४०
बडे बड़े राजम अरु	.... ४४१
बंदो क्यों ना होड माधो मोसों	.... ४७९
व्रजबासी कन्हैयालाल	.... ४९५
व्रजराज के सखि	.... ५०८
बसोजी म्हारे नयननमें सियराम	.... ५०९
बदियां नाकर गाफिल	.... ५१३
व्रजमोहन आयेरे	.... ५२०
बरकौन भँगो तुमते हारजी	.... ५३१
बलि बासव	.... ५४५
बहुत तुम कहत सब	.... ५४८
बन पड़े तो नेकी करना	.... ५५१
बाजीगर जैसे बाजी पाई	.... ४४६
बानारसी तप करे उलट तीर्थ मरे	.... ४५८
बांके सांवरिया ने वेरी मोहिं आनके	.... ४९५
बांकीयां पग्गां ते	.... ५०१
बाएनी तूं वग्ग सवेले	.... ५६०
बागों नाजारे तेरी कायामें....	.... ५०९
बाणी बहुत प्रकारहै	.... ५३१
बादल दौरे जातहैं	.... ५३९
बांको छैल गुमानी मैया तेरा	.... ५४७
बिन सत सती होय कैसे नारि	.... ४२४
विषया व्याप्या सकल संसार	.... "
विसरत नाहिं मनते हरी	.... ४६३
बिरथी शाकत की आरजा....	.... ४८७
बिना विचारे जो करै	.... ५२८
बीतजैहे बीतजैहे जन्म अकाजरे	.... ४८३
बीती ताहि बिसारदे	.... ५२८
बीर यह पीर न जानेरी	.... ५५८
बुरे कामको	.... ४४७
बेटा बेटी भार्या भाई सुत संसार	.... ५२९
वेद विरुद्ध महामुनि सिद्ध	.... ५५६
बैठे हरि राधासंग	.... ५५१
बैठिये ना जहाँ तहाँ	.... ५०९

(भ)

पद.	पृष्ठांक.
भ्रुकुटी तनीको नकबेसर बनीको	.... ६३
भक्त हेतु अवतार धरोंमैं	.... ९१
भलारे रँगीले छैला तैं जादूमोपै डारा	.... ११५
भयो जयकार जन्मे मुरारी....	.... ६
भवन ते निकसे नंदकुमार....	.... ११३
भाग्यवान वृषभानुसुता सी को	.... ६२
भीगत कब देखूं इन नयना	.... १०४
भीगत कुंजनमें दौड आवत	.... "
भूषण अपने लैरी मैया	.... ४७
भोर भये उठ आये मोहन....	.... ६९
भजन भावना हियना परसी	.... २०५
भरत कपिसे उऋण हम नाहीं	.... २३९
भजमन रामचरण सुखदाई	.... २५७
भजमन रामचरण दिन राती	.... २५८
भजमन श्रीराधा गोपाल	.... २९५
भरोसो कृष्णको भारी	.... १८६
भजो मन वृंदावन सुखदाई	.... १६५
भावीके भाव अभाव यथा न	.... २७१
भाजन आप गह्यो जिनने	.... २६८
भुजन पर जननी वार फेर डारी	.... २३२
भूमि सेज मूल फल	.... २७२
भूमि हूं की रेणुकी तो	.... २६४
भेजा तुम योग हम लीया धर शीशपर	.... १५१
भेडिन में जिमि सिंहको सावक	.... २७८
भोगन में रोग भय	.... २७७
भोरभयो जागो रघुनंदन	.... २२४
भोरभयो जागोमनमोहन	.... १९९

पद.	पृष्ठांक.
भले भूप कहत भले भदेश भूपनसों	३४२
भल भारत भूमि भले कुल जन्म	३५४
भलो भलों भांति है जो मेरे कहे लागिहै	३७५
भले बुरे तो तेरे	४०३
भयो नति काल तिहूं	३६३
भादों मार पिया	३९०
भ्रातृगण यह उपदेश हमारा	३९७
भिक्षुक तिहारो कहां	३१४
भूमिपाल व्याल पाल	३५३
भूल्यो मन माया उरझायो	३९९
भेष सुबनाय भले वचन	३६२
भोग में रोग वियोग संयोगमें	४०६
भौंह भरी बरुनी सुथरी	३१५
भौंह कमान सँधान सुठान जे	३६२
भई प्राप्त मानुष्य देहुरिया	४१७
भक्त वत्सल	४३१
भली सुहावी छापरी जामें गुण गाये	४४७
भला जाग रे सारीरैन विहानी	५२३
भव हारक के चित नेम कहे	५३८
भरोसो दृढ़ इन चरणन केरो	५६३
भाई तैंने सितम गुजारारे....	५०५
भुजा बांध मिलाकर डारयो	४५३
भूखे भक्ति न कीजे	४४०
भूर भाग्य भाजन भई	५०६
भोजनकी बात सुन	५३७
भाई बंधु संबंधी सारे	५००

(म)

पद.	पृष्ठांक.
महराने ते पांडे आयो	१८
महारानी श्रीराधे रानी	६०
मनावत हार परी मेरी माई	७९
मन मोहनी मनमोहना मन मोहिबो करो....	८०
मृदु मुसकन कीजे थोरी थोरी	८४
मनभावन हर्षावन आवन सावन	९८
मची है आज वंसीवट पै होली	१०७
मन हर लियो है मेरो वा नंदके दुलारे....	११४
मन मोह लिया श्यामने	१३२
मन माने की बात नहीं कछु जातिको	१३६
मनमोहन लाल बड़ो छलिया	१३८
मन अटक्या बेपरवाहे नाल	१२७
मानो बात लालन मोरी	१८
माखन तनक देरी माय	२१
माखन चोर री हैं पायो	२३
माखनकी चोरीरे	२६
माई विधि हूं ते परमप्रवीन	४८
माथे पै मुकुट देख चन्द्रिका चटकदेख....	६२
मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधूनिचयेन	७४
मान तज चल सजनी ब्रजचंदा बुलावेरी	७६
माईरी आज और काल्ह	११२
माईरी आजको शृंगार सुभग	"
माथे पै मुकुट श्रुति कुंडल....	१३७
मालिन मधुभरे नैन रसीले....	१३८
माधव केवल प्रेम पियारा	१३६
मिलना वे महबूब विहारी	१२४
मिलना वे दिलदार सांवरे....	१२५
मिठ बोलनी नवल मनिहारी	१३९
मुरलिया जो पाऊं तो मैं तेरोही गुणगाऊं	५०
मुकुटके रंगनपै इन्द्रको धनुषवारों	६४
मुकुट माथे धरे खौरचन्दनकेरे	११२
मेरी भरी मटुकिया लैगयोरी	२७
मेरी सुधि आन लियो प्यारी राधा	५५
मेरा तो जीवन राधा विन देखे नहिं चैन	५५
मेरे कर महिंदी	८२
मेरा छांडदे अँचरवा	१०१
मेरे नैनों का तारा है	१२५
मेरे जिया ऐसी आन बसी	१२६
मेरे गिरिधर गुपाल दूसरो न कोई	"
मैं योगी यश गायारी बाला....	११
मैया मोहिं बड़ो करलैरी	१६
मैया मेरी कब बाढ़ैगी चोटी	१७
मैया मोहिं दाऊने वहुत खिझायो	१७
मैयारी मोहिं माखन भावै....	२२
मैया मेरी मैं नहिं माखन खायो	२९
मैया मैं गाय चरावन जैहों	३७
मैया मोरी कमरी चोरलई	४०
मैया मोहिं ऐसी दुलहिनि भावै	४७
मैं तो थांपै वारी हो विहारी जी	८५

पद.	पृष्ठांक.
मैंही तो हूं नंदको लाला	९१
में श्याम दिवानी मेरा दरद न जाने कोय	१०९
मैंने देखीरी आज मोहनकी हँसन	१११
में गिरिधर सँग राती ग्वैयां	१२६
मैंनू हरदम रहिंदा	१२७
मैंनू वरज ना भोलडीमाँ	”
मोको रंगमें बोर डारीरे	१०७
मोहिं नंद घर लै चलो ढाढिनियां मचलरही	९
मोहन जाग हौं वलिगई	१४
मोहिं दधि मथनदे वलिगई....	२२
मोको डगर चलत दीन्हीं गारीरे	३३
मोहि मत रोकैरी तू एरी ब्रजनागरी	६७
मोहन में गूजर वरसानेदी....	८७
मोर पखा मुरली वनमाल	११०
मोर मुकुट वंसीवारेने	११४
मोहनी रूप बनायो हरिने बाना	१३७
मोसों बात सुनो ब्रजनारी....	९०
मंडल रास विलास महा रस	६३
मधुकर श्याम हमारे चोर....	१५७
मनमें मंजु मनोरथ हारी	२२८
मन पछतैहै औसर बीते	२९०
मनरे प्रभुकी शरण विचारो	२८९
मतले त रामको नाम	२०८
मदनगुपाल हमारे राम	२११
महलन चलो नवल अलबेली	२०१
मतले रामको नाम मौत जिन वेरी कुम्हारी	२०८
मनही के भ्रमते	२६९
मानस हूं तो वही	१६२
माधो जू जो जनते विगरे	१६८
माने पार उतारो जी	१७२
म्हारी सुधलीजो हो त्रिभुवन धनी	१७७
म्हारो काँई विगरेगो	१७९
मालक कुल आलमके हौ तुम	१८३
माधव गति तेरी ना जानी	१८४
माई नित उठ	२१७
मात पिता हितबंधु	२८३
माटी खुंदी करेदीयार	२८६
मास ग्रंथि कुचनको	२७५
मान लियो तात भ्रात	२८०
मात पिता युवती सुत बंधव	२६७
मिलजाना हो प्यारे नंद किशोर	१६०
मिलजाना राम प्यारे	२३४
मुकुट पर वारी जाऊं नागरनंदा	२१०
मुरलीकी टेर सुनावैरी माईको	२०४
मूरख छांड वृथा अभिमान....	२९५
मूठीएक माटीकी	२७८
मूएते मोक्ष कहैं सब पंडित....	२७०
मेरीतो विहारीजी प्यारे तोहिं लाज	१६८
मेरी सुध लीजो श्रीनंदकुमार	१७१
मेरी सुध लीजो श्रीब्रजराज	”
मेरे माधोजी आयो हौं सेरे	१७६
मेरी मति राधिका चरण रजमें रहो	१९५
मेरे गिरिधारीजी सों कौन लरी	२०४
मेरीसुध आनलियो रघुराया	२३३
मेरीसुध आनलियो सियाप्यारी	२३५
माताजी दूंगा द्रव्य अथाय....	२०८
मेरी प्रीति गोबिंदसों ना घटे	२६१
मेरो दग लाग्यो जाय सुन रामा	२४०
मेरी अँखि दया हो लाज	२८६
मेरो देह मेरो गेह	२६७
मैंतो हूं पतित आप	१६७
भैया मोको वैरन धनुष भयोरी	२२७
मैं किहिं कहों विपति अति भारी	२४६
मैं कौन वन ढूंढ़ौंरी	२३४
मैंतो पतित उधारो श्री रामा	२४७
मैंनू तारीं वे रब्बा वंदी अवगुण हारी	१८३
मोर मुकुट वारो धरे	१६७
मोसम कौन कुटिल खल कामी	१७०
मोसम कौन अधम जगमाहीं	”
मोमन बसो श्यामा श्याम	१७७
मोह जनित मल लाग विविध विध	२६१
मोहन जानी तिहारी बात	२१९
मंगल रूप यशोदा नंद	२१०
मंगल आरती गोपालकी	१९

पद.	पृष्ठांक.	पद.	पृष्ठांक.
मकराकृत कुंडल गुंज कि माल	३१८	मोंपै कैसी यह मोहनी डारी	३३१
मन मोहन जाकी दृष्टि परत	३२९	मोहन बसगये मेरे मनमें	३३१
मतमारो पिचकारी श्याम अब देउँगी....	३३३	मोर पखा शिर ऊपर राखिके	३३६
मन मोहन सम सुंदर कौहै	३३४	मोहनजूके वियोगकी ताप	३३८
मख राखवेके काज	३४३	मंगल मूरति मारुतनंदन	३७२
महा बलि बालि दलि	३५२	मंडन है ऐश्वर्यको सज्जनता सन्मान....	४०६
महाराज बलि जांउ	३६१	मनरे गह्यो न गुरु उपदेश	४३८
मनकी मनहीं माहिरही	३६३	मनरे सांचा गहो विचार	४४४
मनरे कौन कुमति तैं लीन्ही	३६४	मनमें सिंचो हरि हरि नाम	४४९
मर्कत बरन परन	३६७	मन कहा बिसाऱ्यो रामनाम	४७५
मन इतनोई या तनुको परमफल	३७४	मन कर कबहुँ न हरिगुण गायो	४७८
मनरे कहा भयो तैं बौरा	३८०	मनमें क्रोध महा अहंकारा	४८२
मन माधवको नेक निहारहि	३८२	मन मूरख काहे विललाइये	४८९
मगहर मस्त होया	३९१	महाराज धन धन कुबरी	४९७
मन राम सुमिर पछतायगा	४००	माई मैं मनको मान न त्यागों	४६४
मन मेरो गज जिहवा कार्ता	४०३	माथ तिलक हथ माला बाना	४६८
मणि की औधि है आधी घरी	३३५	माई मैं धन पायो हरि नाम	४७४
मांगिये गिरिजापति काशी	३६९	माई मोहिं प्रीतम देहु मिलाई	४७९
माथे हाथ जब	३७९	मनमोहन रिझवार री तेरे नयन सलोने....	५०६
मातु सकल कुल गुरुवधू	३७८	मन मस्ताइयाँ छडहो यारा	५१६
मुरली मुकुट दुरायके	२२०	माथे हाथ जब दियो	३७७
माधोजू मोसम मंद न कोऊ	३८२	मायनी सुन मेरिये माएर्की	५६०
माघ मान ना	३९१	मान मनायो राधा प्यारी	४३६
माणि मृग खंजन	३२३	माधो हरि हरि मुख कहिये	४२१
मीत पुनीत किये कपि भालुको	३५१	माल जिन्होंने जमाकिया	५००
मीम मौजूद हरजाय	३८८	माधो जलकी प्यास न जाय	४२२
मुख पंकज कंज विलोचन मंजु	३४७	माये खेलन दे दिन चारनी	५०५
मुकुंद मुकुंद जपो संसार	४०४	माया मोह मगन अँधियारे....	४३७
मेरो सुभाव चितैबोको माईरी	३२०	मानती ना प्यारी सखियां	५४०
मेरो भलो कियो राम आपनी भलाई	३७५	माई मैं किहि विधि लखों गुसाँई	४३८
मेरे मन रामको नाम अधारा	३९७	माये नी मैं रहां कुआंरी	५५९
मेरे रानाजी मैं गोंविदके गुण गाना	४०२	माई मन मेरो वश नाहिं	४३८
मैन मनोहर वेणु बजै	३१७	माये नी सुन मेरिये	५५९
मैं मन तेरी टेक प्यारे	४०८	मांगोदान ठाकुरनाम	४४५
मोहनकी मुरली सुनिकै	३१९	मिथ्या श्रवण परनिंदा सुनहिं	४८७
मो मनमोहन सों मिलिकै	३२२	मिल लेहु नी	५०२
मोरकी चंद्रिका मोर लसैं	३२४	मिथ्या तन धन कुटुंब सवाया	४८७
मोहनके मन भाय गयो	३२५	मिथ्यानाहीं रसना परश	४८७

पद.	पृष्ठांक.
मुखड़ा क्या देखे दर्पणमें	.... ५०८
मुसमुस रोवे कबीरकी माई	.... ४३३
मुनि मख राख्यो मार	.... ५२५
मुखसों राधाकृष्ण बोल तेरा क्या	.... ५५२
मेरेही आंगन बरसे	.... ४९४
मेरे सर्बस नाम निधान	.... ४५९
मेरे मन बसगयो सीताराम....	.... ४९५
मेरो बाप माधो तु	.... ४५९
मेरो यासों लागा	.... ४९६
मेरी पट्टीयाँ लिखहु	.... ४६५
मेरी फरियाद है महाराज	.... ५०४
मेरी कौन गति ब्रजनाथ	.... ५२५
मेरे प्रीतम प्राणपियारे	.... ४७९
मेरीगति जानकी जीवन राम	.... ४९६
मैं तुमरी शरणागत प्यारे....	.... ४९९
मैं अंधलेकी टेक	.... ४४६
मैंने थारा काई विगारयो काज	.... ५२१
मैं बहुरी मेरा राम भरतार....	.... ४७१
मैंतो तुमसों होरी खेलों	.... ५४०
मैंतो थारे दामन लगी जुगपाल	.... ५४८
मैंनू अयानी सँदेशा श्यामदा	.... "
मैं विरागन श्यामदी लाल....	.... ५५९
मैं न जाऊं हरि पासरी	.... ५४४
मोहनाचलो चलो कदमकी छैयां	.... ४९७
मोती तां	.... ४१७
मोहिं बिसरत नहिं सुध सनम	.... ५१०
मोकों तार ले रामा तारले....	.... ४५४
मोहन छबीला मनभामदा	.... ५४५
मोको तूं न बिसार तू न बिसार	.... ४८१
मोहिं लगेरी श्यामके नयन बाण	.... ४९८

(य)

पद.	पृष्ठांक.
यहांलों नेकचलो नँदरानी जू	.... २७
यशोदा तू बड़ी कृपणरी माई	.... ३०
यमुना न जानपावें भरने न देत पानी....	३४
यशोदा तेरो कठिन हियेरे माई	.... ३०
यशोदाने कारी अँधेरीमें जायो	.... ४७
युगल छबि आज अनूपबनी	.... ८३
यगल बर झूलत दे गलबाहीं	.... ९७
युगल बर झूलत डार गलबाहीं	.... ९८
यह कहके प्रिय धामगई	.... ५४
यह कमरी कमरी कर जानत	.... ९०
यह सुनिकै हलधर तहँ आये	.... ३१
यह रस रीति	.... १४७
यह जानत तुम नंद महासुत	.... ३०
याही मेरा प्यारा रे दान मांगे	.... ८७
या ऋतु रूस रहनकी नाहीं	.... १०२
या ब्रजमें कैसी धूम मचाई....	.... १०५
या मोहना मोहिं आन ठग्योरी	.... १०८
या सांवरे सों मैं प्रीति लगाई	.... १२५
या ब्रजमें कछु देख्योरी टोना	.... १२८
योगियाधर ध्यान रहैं जिनको	.... २४
यह दोऊ चंद बसे उर मेरे	.... २४१
यह जगदर्शन मेला है	.... २९१
यह मन भूल रह्यो है कहा	.... २८३
यह रसरीत प्रिया प्रानमकी	.... १४७
यह श्रुति ज्ञान सुजाननके....	.... २७२
ये मेरे देश विलायतहैं गज	.... २६६
याही कुंज कुंजन तर	.... १५३
या जग मीत ना देख्यो कोई	.... २८९
याद करेगा इस जीवननू....	.... २८४
या शरीर माहिं तू	.... २६८
योगी तजे जगत हम जगत योग	.... १५३
यशोदा कान्ह हूंते दधि प्यारो	.... ३०
याद आता है वही बंसी क बजाना तेरा	११६
यशुमति बार बार यह भाषै....	.... १४९
यमुना पुलिन कुंज गहवर की	.... १६३
योग देन गयो हौं	.... १६१
यह नैना रिझवार नयेरी	.... ३२८
यही मोहम जिन मोहीं ब्रजवाला	.... ३२९
यह देख धतूरे के पात चबात	.... ६३९
यह मन नेक न कह्यो करे	.... ३६३
यही घडी यह बेला साधो....	.... ४०२
यहि घाटते थोरिकदूर अहै	.... ३४४
या शिशुके गुण	.... ३७८
यातुधान भालु कपि केवट विहंग जो जो....	३५१
ये दोऊ झूलें री मनकी मोहनहार	.... ३३१

पद.	पृष्ठांक.
ये यार पाया	३८९
योगकथा पठई ब्रजको	३६६
यक अर्ज	४४५
या मोहन के मैं रूप लुभानी....	५४७
यह दोऊ झूलत रंग हिंडोरे....	५५८
यह लौकिक मस्त	५६६
यशोदा जी के द्वारे पर	५२१
यह मन	५३३
योग न विराग	३५८
यशोदा ढीठ है तेरो किशोरी	५४९

(र)

पद.	पृष्ठांक.
रच्यो श्रीवृंदावन रास गोविंद	६०
रहरी माननी मान न कीजै....	७८
राजधानी तुमरे चित नीकी....	९२
रसियाको नारि बनाओरी....	१०५
रानीजू लीजिये यह गाम	२७
राखि लेहु गोकुलके नायक	४३
राधा प्यारी रूप उजारी मोतन नेक हेरो	५३
राधाजू की सहज अटपटी बोलन	७०
राधा प्यारी तोहिं मनावन आयो	७१
राधा प्यारी बात सुनो इकमेरी	७१
राधा सों माखन हरि मांगत	९३
राधा नंद किशोररी सजनी	११६
राधा रमण मनोहर सुंदर	१३३
रानाजी तैं जहर दीनी मैं जानी	१२६
री वंसी कौन तप तैं कियो	४९
रीहीं तो या मग निकसी आय	११३
रंगनभीग गई हो मोहन सारी सुरखनई	१०७
रंग होरी में प्रीतम पाया मेरा दांव लगा	१०८
रूप रसिक मोहन मनोज मन हरण	२०
रैन गईरी प्यारी छांडो हठेरी	७६
रैन मोहिं जागत विहानी	८१
रोके मोरी गैलवा मैं कैसे जाऊँ पानिया	३४
रंग रहे लाल उनहीं त्रियन संग	६९
रघुवर आज रहो मेरे प्यारे	२३३
रघुवर तुमको मेरी लाज	२४४
रचके सँवारे नाहिं	२९४
रहुवे बीबा रहुवे	२८६
रटत रटत राधा मनमोहन	२९४
रविको प्रकाश जैसे	२७८
राधा रमण चरण जो पाऊं	१७३
राधाजी सुहागन रोध रानी	१९६
राजत निकुंज धाम ठकुरानी	१९६
राम कुमार लाल दशरथके....	२३१
राम जप राम जप राम जप बावरे	२५५
राम नाम जप जिया सदा सानुरागरे	”
राम सुमर राम सुमर यही तेरो काजहै....	२५६
राम सुमरले सुमरन करले कोजाने कलकी	२५६
रामचरण अभिराम कामप्रद	२५७
राम ज्यों राखै त्यों रहिये	२६०
रामकृष्ण उठि कहिये भोर....	२६२
राधाकृष्ण क्यों नहिं बोले पीछे पछतावोगे	२९३
राम रंग लागा हरी रंग लागा	२८८
राम सुमर राम सुमर राम सुमर भाई....	२५७
रुचत सुमेरु मों न आवै	२७४
रतिरमोहा छवि दर्शाय जा....	१६०
रेमन क्यों न भजो रघुवीर	२५८
रेमन रामसोंकर प्रीत	”
रेमन समझ सोच विचार....	५११
रेमन राम भरोसो भारी	२५३
रहहि न कोई यहां	४०६
रावरे दोष न	३४४
रानी मैं जानी अयानी महा	३४६
राम है मातु पिता सुत बंधु	३५४
रावरो कहावों गुण गावों	३५७
राग को न साज	३५७
राम विहाय मरा जपते	३६०
राम मात पितु बंधु सुजन	३६१
राम राम रम राम राम रट....	३७४
राम शिशु गोद महामोद भरे	३७७
राम बिना तेरा कोई ना सहाई	३९८
राम जपो जिया ऐसे ऐसे	४०२
रूप शील सिंधु गुण	३५२
रे नीच मारीच	३४९

पद.	पृष्ठांक.
रे रंग जहान दे	.... ३८६
रे प्राणी क्या मेरा क्या तेरा	.... ४०४
रोषो रण रावण	.... ३५०
रंग भरो मुसकात लला	.... ३२०
रघुभूप दिलीप तर्जी	.... ५३४
रघुवर तेरोही दास कहाऊं	.... ५४०
रत्नछांड कौडी सँग लागे....	.... ४३६
रत्नत्याग कौडी सँगरचे	.... ४८६
रहत अवर कछु अवर कमावत	.... ४८७
रघुनाथ नाथ मेरे	.... ४९८
रघुवर चरण शरण सुखदायक	.... ५२१
रही न रानी कैकयी	.... ५२७
रकम भुलाई बदनखत	.... ५२९
रास फकीरी उन्हांदी	.... ५३३
राजत राम जानकी जोरी	.... ५४६
राम नाम परमधाम	.... ४८४
राम प्रताप न जाने पिता तू	.... ५५४
राख लेहु हमंत विगरी	.... ४५१
राजमिलक जोबन गृह शोभा	.... ४२९
रामदास सरोवर न्हाते	.... ४३७
राख लेहु भगवान अबकी	.... ५५५
राम राम सँग कर व्यवहार....	.... ४५२
राम भज राम भज जन्म सिरातहै	.... ४८३
राम नाम परम	.... ४८४
राम नाम इक सार	.... ५५४
राजन कौन तुम्हारे आवे....	.... ४६२
राम हौं क्या जाना क्या भावे	.... ४५८
रावोजू महाराज सँावल वनरा	.... ४९६
राम भज गूजरिये ऐसा दही वरोल	.... ५०२
राधावर खेलत होरी	.... ५२४
रूठे क्यों न राजा	.... ५५७
रूखडी ना खाइयो स्वामी	.... ४९२
रेमन जन्म पदारथ जात	.... ५६६
रे जीव निलज लाज तोहिं नाहीं	.... ४२५
रे नर यह सांची जिय धार....	.... ४३८
रे मन कौन गति होय है तेरी	.... ४८३
रे मन ओट लेहु हरि नामा	.... ४५६
रे जिह्वा करों शतखंड	.... ४७०
रे मन मूरख जन्म गँवायो....	.... ५१५
रंगीली रघुवरकी होरी	.... ५१२
रे मन समझ ऐसी बात	.... २९२
रोना तेरा तब मिटै	.... ५३०
राम कृष्ण रस रसिक	.... ५६८

(ल)

पद.	पृष्ठांक.
लटक लटक चलत चाल मोहन आवै....	३९
लटकत चलत युवति सुखदानी	४०
ललिता राधा नेक मनायदे....	७५
लगाहै इश्क तुमसेती निबाहोगे	१३०
ललित छबि निरख अघात न नयन....	१२१
लालको नाचन शिखवत प्यारी	६५
लालन मेरेही आये आज सुहावनी रात....	६७
लाल तुम कहांसे आये जगे....	७०
लागगई तब लाज कहारी	१११
लागी रे लागनियां मोहनासों	”
लाल तेरे चपल नयन अनियारे	११९
लिये फिरत सँग सँग सखियनको	३७
लोचन भये श्यामके चेरे	१२१
लँगर मोको गारियां देदे जारी	३४
लँगर मोरी गागर फोर गयो	३५
लज्जा मोरी राखो श्याम हरी	१७५
लटकत आवत कुंज भवनते	१९९
ललित लवंग लता परिशीलन	२०२
लाज न लागत दास कहावत	२४७
लाल गुलाल जिन डारो	२४३
लाज मूल न आईया नाम धरायो फकीर	२८६
लेहुरी लोचननको लाहु	२२८
लैल्योहुरी लोचन भर लाहू....	२३२
लोहको ज्यों पारस	२६३
लगन नहीं छूटे एरी वीर	३३१
लाडली लाल लसैं लखिये आलि	३२४
लाजके लेप चढायकै अंग	३३७
लाम लग्ग आखे	३८८
लीला अगाध ब्रजवासिनके	३११

पद.	पृष्ठांक.
लीने अबीर भरे पिचका	.... ३३६
लोक कि लाज तजी तबहीं....	.... ३१५
लोग कहैं ब्रजके रसखान	.... ३३७
लोचनाभिराम घन	.... ३४२
लोक कहैं अरु हौं हूं कहौं....	.... ३५६
लख चौरासी जीव योनिमें	.... ४२८
लाज मरे जो नाम न लेवे	.... ४६६
ल्यावो मैया मोहिं चन्द्र खिलौना	.... ४९२
लालन प्यारो झूलत वट संकेत	.... ४९४
लाय समाधि रहे ब्रह्मादिक	.... ५१५
लाजको जहाज डूब्यो	.... ५२४
लालही लालके	.... ५४२
लाडली प्यारी दर्शनदेहु	.... ५४३
लाल तोहिं हौंहीं आज मनाऊं	.... ५५३
लीजिये करुणानिधान	.... ५५५
लंकासा कोट समुद्रसी खाई....	.... ४३२
लाल तेरे जादू भरे दोउ नैन	.... ३३०

(व)

पद.	पृष्ठांक.
वार डारों शरद इंदु मुख छबि गोविंदपर....	६४
वारियां वे लाल वारियां	.... ६७
वह नाथ अपनी दयालुता	.... १८१
वह गोधन गावत गोधनमें....	.... ३२१
वह सांवरो नंदको छैल अली	.... ३३६
वह लकुटी अरु कामरियापर	.... ३४०
वा पट पीतकी फहरानि	.... २०७
विविध प्रकार वेद अर्थ	.... २७६
वेदहूं पुराण कही	.... ३५८
वेद पुराण विहाय सुपंथ	.... ३५९
वीतरागको	.... ५६६
वचन ते आन मिले	.... ५३५
विधि एक अनीति रची जगमें	.... ५३१
विश्वपतीके ध्यानमें	.... ५६७
विद्या न पढ़ी वाद नहिं जानो	.... ४५०
वेद पुराण सभीमत सुनके	.... ४३९
वाउ बखत इह	.... ३८९
वाहि गुरू वाहि गुरू	.... ४८३
वह झलक जो मोर मुकुट कीथी	.... ५०९
वेल विरागको	.... ३६६

(श)

पद.	पृष्ठांक.
शरद निशि देख हरि हर्ष पायो	.... ५७
श्याम कमल पद नखकी शोभा	.... ४३
श्याम तिहारी मदन मुरलिया	.... ४९
श्यामकी बंसी वन पाई	.... ५२
श्याम तेरी बंसी नेकबजाऊं....	.... ८३
श्याम श्याम श्याम रटत प्यारी	.... "
श्याम सुन नियरेही आयो मेह	.... ९४
श्यामा जी झूलें पीरी पोखर पार	.... १०२
श्याम मोसे खेलो न होरी पालागों करजोरी	१०६
श्याम मोरा आंखन बीचबसो	.... १२२
श्याम भुजाकी सुंदरताई	.... १३२
श्यामा श्याम सों होरी खेलत	.... १०५
शीश मुकुट मणि विराज	.... ३७
श्रीराधा प्यारी देखी है चितकी चोर....	५५
श्रीवृंदाविपिन सुहावनो	.... ८५
श्रीवृंदावन रज दरशावै	.... १२९
श्रीकृष्णजीको ध्यान मेरे निशि दिनानारी माई	११७
शूकर होय कब रासरच्यो....	.... ६१
शोभित कर नवनीत लिये....	.... १३
शरण गहु शरण गहु	.... २३७
शरण गये प्रभु कौन	.... १६९
श्रवण लैजाय कर	.... २६५
श्याम का संदेशा ऊधो पाती लैके आयोरे	१५२
शांत निजांतर किंनगहे	.... २७१
श्याम तनु श्याम मन	.... १५३
श्याम घन तम पर	.... १६७
श्याम सुंदर मनमोहनी मूरत	.... १६८
श्वासके भरोसे	.... २८२
श्रितकमला कुचमंडल धृत कुंडलये	.... १९२
श्रीयमुना तिहारो दरश मोहिं भावे	.... २०४
श्रीरघुवीर की यह वानि	.... २५०
श्रीरामचंद्र कृपालु भजुमन....	.... २६२
श्यामा मोरी आंखिनवीच बसो	.... १२२
शिरधर मटकी जानीयां लटकी	.... ५६०
श्वासो श्वासीं कर गुजारा	.... ५३३
शालग्राम वियपूज	.... ४७४
शिला शाप पाप गुह	.... ३५३
शूर शिरताज महाराजनके महाराज	.... ३५२
शेष सुरेश दिनेश गणेश	.... ३४०

अक्षरोंके क्रमसे पदोंका सूचीपत्र।

पद. .... पृष्ठांक.

श्रीकृष्णजीके कमल नेत्र १९०
श्रीराधे देडारो ना बँसुरी २२०
शुचि वनके निवासी २७४
शुचि गंग तरंगकी.... .... २७५
शुभ शत संवत २७६
शर चारिक चारु बनायकसे ३४७
श्याम दृगनकी चोट बुरीरी ३३०
श्याम बलराम गुण सदा गाऊँ ३८१
शीन शुबा नहीं.... .... ३८६
शीश जटा उर वाहु विशाल ३४६
शेश महेश गणेश दिनेश ३१४
शोक समुद्र निमज्जन काढि ३५०
श्रीकृष्णचन्द्र महाराज ने ४९४
श्रीवृन्दावनवास दीजिये ४९८
श्रीरामचंद्र दशरथसुतनंदन.... .... ५०८
श्रीराधे नामकी वलिहारी.... .... ५४३
श्रीराधे राधे हो श्रीराधे राधे .... ”
श्यामकी वंसी ना देऊँगी.... .... ५०५
श्यामा तेरी वंशी सितम करेंदी ५२०
श्यामकी ऊधो जुदाई अब सही जाती नहीं ५१७
शोभा सदन वदन दोउ देख ५५८
शेश धरे धरणी शिरमें ५३४
शैल शिला तल सेज करे.... .... ५३९
शैल कपीचर पार परे यहि भाँति ५४९

(ष)

षटकर्म ४६४

(स)

सखी मोहिं हरि दर्शनको चाव २४
सखी याकी बंशी लीजै चोर ५०
सखा तुम बोलो न वात विचारी ५७
सखीरी मैं हूं नंदकिशोर .... ”
सखी नंदलाल आवन नहिं पावें ६७
सखी मोहिं मोहन लाल मिलावे ५२
सखी कैसे करूं मैं हाय न कछु वश मेरा ११८
सखी राधावर कैसा सजीला १२९
सभसे ऊंचो प्रेम सगाई १३३
सफल जन्म मेरो आज भयो १९
सांवरे शरणागत तेरी ४४

पद. .... पृष्ठांक

सानूं मुड़ घर वंजन कह्यों वे श्यामा ६०
सारी सम्हारी है ६३
सांची कहो रँगीले लाल.... .... [illegible]
सांची कहो किधों हाँसी करोजी ७१
सांची कहो कि प्यारी हाँसी ७३
सांवरे सों ध्यान मेरो निशि दिनारी माई ११७
सांवरे दी भालन माये सानू प्रेमदी कटारिया १२[illegible]
साख मुनि जन भरें .... [illegible]
सांवरे की जिन निरखी मुसकान .... १३[illegible]
सीखेहो छल बल नट नागर ७०
सुन सुत एक कथा कहौं प्यारी .... २[illegible]
सुनिये यशोदारानी छोडें ये ब्रज तिहारो २[illegible]
सुनो यशोदारानी तेरे गिरिधारीने .... ३[illegible]
सुनरी गुण कान्ह कुँवरके.... .... [illegible]
सुनले यशोदारानी तू लालकी बड़ाई .... ३[illegible]
सुनिये यशोदा कानदे अरजी यही हमारी [illegible]
सुन धुन मुरली वैनवाजै हरिरासरच्यो ६[illegible]
सुंदर सुजान कान्ह सुंदरही पगियाशीश.... ६[illegible]
सुहावन सावन राधा सुखतिहारे वाटपरचो [illegible]
सुन सखी आज झूलन नहिंजैहों .... [illegible]
सुंदर मूरति दृष्टि परी .... ११[illegible]
सुंदर मुख सुख सदन श्यामको .... ११[illegible]
सुंदर अनूप जोरी अति मनकी भावती ११[illegible]
सुंदर सांवरे सलोने ढोटा .... १२[illegible]
सुपने में दरश दिखाय मोहन मन .... ११[illegible]
सो तू राखलैरी झूटा तरल भये .... १०[illegible]
सौनजुहीकी बनी पगिया .... ६[illegible]
संग चलीं ब्रजबाल लाल करतालन लै लै जोरी ६[illegible]
सजन मुखडा दिखला जारे .... १५[illegible]
सखी सुपनेमें घबरानी .... २[illegible]
सखीरी मुनि संग बालक कोके .... २२[illegible]
सखी रंग भीने दोउ राजकुमार .... २२[illegible]
सखी लखन चलो नृपकुँवर.... .... २३[illegible]
सत्य कहौं मेरो सहज स्वभाव .... २३[illegible]
सखी वह देखो रघुराई .... २३[illegible]
सब मतको मत यह उपदेश .... २५[illegible]
सब दिन गये विषयके हेत.... .... २९[illegible]
सभ दिन होत न एक समान .... २९[illegible]
समता गहै सचको जाने .... २७[illegible]

पद.	पृष्ठांक.
सर्प डसे सो नहीं	.... २६९
सतगुरु पूरा पाया भला मैं	.... २८१
सुभग सेज सोहत कौशल्या	.... ३७६
सावन घन गरजें घूम घूम	.... २४२
सांझ परी घर आये न कन्हैया	.... १५०
सांवरे सों कहियो मोरी	.... १५२
सांवरो जग तारन आयो	.... १८७
साचि श्रीराधारमण झूठो सब संसार	.... २०५
सुमिरणकर श्रीराम नाम	.... २९१
सिया राम बिना बीतेजात दिना	.... २६१
सुरतिया रे लाग रही हरिसों	.... १६१
सुन लीजे विनती मोरी	.... १७२
सुन अलकांवाले कृष्णजी	.... १७७
सुन मन मूढ शिखावन मेरा	.... २५८
सुमिर सनेह सों तू नाम राम रायको	.... २५६
सुनलेहु बात हमारी नगर सब	.... २०७
सुपने में सती यती	.... २७८
सुंदर श्याम देखन दी आशा	.... १५९
सूरज बंसी नमो	.... २२३
साम नाम विप्र वर	.... २७१
सोय रह्यो कहाँ गाफिल ह्वैकर	.... २६७
संकट काट मुरारी हमरे	.... १७८
संतन प्रतिपाल राखो लाज हरि मेरी	.... १७७
संत सदा उपदेश	.... २८३
संतनकी गहो रीत	.... २८२
समझी न कछू अजहूं हरिसों	.... ३२१
सखी जबसों नँदलाल निहारे	.... ३२८
सखी मेरे मनकी को जाने	.... ३२९
सखी तबसों चैन नहिं आवै	.... ३३०
सखी यह दृग वा रूप लुभाने	.... ”
सखीरी यह मेरो चित चोर	.... ३३१
सखीरी यह सावन मनभावन	.... ३३२
सघन बन झूलें दोउ सुकुमार	.... ३३२
सरयूवर तीरहिं तीर फिरें	.... ३४२
सभ अंगहीन	.... ३५८
सब कछु जीवत को व्यवहार	.... ३६३
सब सोच विमोचन चित्रकूट	.... ३७१
सब सुख राम नाम लव भाई	.... ४००
स्वारथको साज न समाज	.... ३५७
स्वारथ सयानप	.... ३५९
साधो यह मन गह्यो न जाई	.... ३७९
संतनको यह परमधन	.... २९६
साँवरे क्यों मोसों रिसमानी	.... ३३०
सुंदर श्याम सजे तनु मोहन	.... ३१८
साधो गोविंदके गुणगावो	.... ३८०
साधो राम शरण विश्राम	.... ३८०
स्वाद सबर करना	.... ३८७
सावन शौक माया दा	.... ३९०
सांची प्रीति हम तुम संग जोड़ी	.... ४०४
सांवरे क्यों मोसों रिसमानी	.... ३३०
सारकी सारी सोभारी लगै....	.... ३३८
सांवरे गोरे सलोने सुभाव	.... ३४६
सिथिल सनेह कहैं कौशल्या	.... ३४३
सिय राम स्वरूप	.... ३५४
सीन सितम करना	.... ३८६
सुंदर श्याम सजे तनु मोहन	.... ३१८
सुनरी पिय मोहन की बतियां	.... ३२०
सुंदर पलाश और सुंदर अंध्यारे वन	.... ३२३
सुनिये सबकी कहिये न कछू	.... ३३९
सुंदर बदन सरसीरुह सोहाये नैन	.... ३४६
सुन सुंदर बैन सुधारस साने	.... ३४६
सुन कानदिये नित नेम लिये	.... ३५३
सुत दार अगार सखा परिवार	.... ३५४
सुरराजसों राज समाज समृद्ध	.... ३५५
सुनोरे भाइयो तुमको	.... ४११
सुन सुन जीवां सोहले	.... ४०८
सेइये सहित सनेह देहभर	.... ३७०
से समझ हिसाब कर बैठ अंदर	.... ३८५
सोहत हैं चंदवा शिर मोरके	.... ३१५
सोई है रासमें नेसुक नाचिकै	.... ३२४
सो सुकृती शुचि मंत सुमंत	.... ३५४
सो जननी सो पिता सोइ भ्रात	.... ”
सोई बड़ो जो हरिगुण गावै	... ३८२
संपति सों सकुचावे कुबेरहिं	.... ३३९
संतो ऐसा धुंध पसारा	.... ४०१
स्वर्ग वास नहिं बांछिये	.... ४२८

पद.	पृष्ठांक.
सतयुग सत त्रेता	.... ४२९
सकल वनस्पति में वैसंदर	.... ४३७
सुभग सेज सोहत कौशल्या	.... ३७६
साधो मनका गान त्यागो	.... ४१३
समझ बूझ दिल खोज पियारे	.... ४१३
साधो रचना राम बनाई	.... ४१४
सेवाले गोपाल राय अकुळ निरंजन	.... ४८०
सभ कोई चलन कहतहै वहां	.... ४६९
सकल पुरुष में पुरुष प्रधान	.... ४८५
सर्व धर्म में श्रेष्ठ धर्म	.... ४८६
सर्व वैकुंठ मुक्ति मोक्ष पांये	.... ४९०
सखीरी मोहन मुसकाने	.... ५१३
सभ कोऊ ऐसे कहैं	.... ५३९
सखीरी मुझे आज मिला नंदलाल	.... ५४१
सब मति हूं ते यह मति भावे	.... ५६२
स्थावर जंगम कीट पतंग	.... ४२३
साधो यह जग भर्म भुलाना	.... ४४२
साधो कौन जुगत अब कीजे	.... ४५७
साधो एह तनु मिथ्या जानो	.... ४७४
साई पैर न कीजिये	.... ५२७
साई अपने चित्तकी भूल न	.... ५२८
साई अमर उजार में	.... "
साजन संत करो यह काम....	.... ४९०
सुमर सुमर	.... ४८४
सुमरो सुमर	.... ४४७
सुख सागर सुरतरु चिंतामणि	.... ४४१
सुखसागर सुरतरु चिंतामणि	.... ४६३
सुख नाहीं बहुत धनखाटे	.... ४६६
सुलतान पूछे सुनवे नामा	.... ४७२
सुन साखी मन जप प्यार	.... ४७८
सुरहिं की जैसी तेरी चाल....	.... ४७६
सुदामातन हेरे तो रंकहूते रावकीने	.... ५१७
सुन मैया मेरी तू	.... ५४६
सुवा चल वा वनको रसलीजे	.... ५६३
सूरके तेजते सूरज दीखत	.... ५३७
सुमर मन गोपाललाल	.... ५६३
सेवा थोरी मांगन बहुता	.... ४४७
सेवाले गोपाल	.... ४८०
सेवक गणी जनके	.... ५२३

पद.	पृष्ठांक
सोदर तेरा	.... ४१
सोचकर चलना मुसाफिर यां	.... ५४
सोजन मस्ताना....	.... ५१
सोलाहूं शृंगार वारों	५१
सोइजन रामको भावेहो	.... ५३
स्तुति निंदा दोउ विवर्जित	.... ४६
सांचे उपदेश देत	.... ५३
संतनके सहाई सदा	.... ५६
संग न चाले तेरे धना	.... ४९
संभलके नेह लगावे	.... ५०
संग सहाई सो आवे न चीत	.... ४८
संडा मर्का जाय पुकारे	.... ४७
संत मिले कछु सुनिये	.... ४५
संतो के कारज आप	.... ४४

(ह)

पद.	पृष्ठांक
हमसे रूठ रहत क्यों प्यारी	७
हमते न प्राणप्यारी मुख मोरिबो करो....	७
हमसे न बोलो सँवलिया तू मतवारोर	८
हमारो दान देहु ब्रजनारी....	९
हर्ष झुलाइये मनभावन	९
हम तेरे इश्क में श्याम बहुत दिन भटके	१२
हमींको प्यारे दरश दिखायदे	१२
हमरे गोरस दान नहोय	८
हर हर जिनके मुख सों निकले	१२
हर हर हर हर हर हर हरे....	[illegible]
हाहा लेहु एको कोर	[illegible]
हिंडोरे आजु झूलत रंगरयो	९
हिंडोला में काईळें झूलो राज	१०
हो प्यारी लागे ब्रजकी डगर	४
होरी रे मोहन होरी रंग होरी	१०८
हौं इक नई वात सुनि आई	८
हौं लालको मुख देखन आई	११
हों गई यमुना जल लेन माई	११४
हँसके मारी मेरो मन लेगयो	११
हरिके संग में क्यों न गई....	१६
हरिमें सनेह तर	२७६
हरि नाम लाहा लेतरे	२८
हलधरसों कह ग्वालि सुनायो	२१
हम रघुनाथ गुणनके गवैया....	२४



खेमराज श्रीकृष्णदास,

“श्रीवेङ्कटेश्वर” (स्टीम्) यन्त्रालय–बंबई.

पद.	पृष्ठांक.
हरि परदेश बहुत दिन लाये	.... १५८
हमारे श्रीवृंदावन उर ओर....	.... १६४
हरि हौं बडी बेर को ठाढो	.... १८०
हरि हरि हरि हरि सुमिरण करो	.... २१२
हरिकी लीला कहत न आवै....	.... २१९
हरिकी गति नहिं कोऊ जानै	.... १८५
हमरी फेंट छोंड श्रीदामा	.... २१९
हरि अब बनि है नाहिं बिसारे	.... १८५
हमारे प्रभु अवगुण चित न धरो	.... १७२
हमरी आँखनके दोउ तारे	.... १८६
हम नंदनंदन मोल लिये	.... १८७
हरि संतनकी पैज राखत....	.... "
हम भक्तनके भक्त हमारे	.... १९४
हमारे माई श्यामाजीको राज	.... १९५
हम श्रीश्यामाजीके बल अभिमानी	.... १९६
हरएक तरफ चमन में कैसी बहार छाई	२००
हरिजू मेरो मन हठ न तजै....	.... २४९
हिंसा नाहिं करें....	.... २७४
हे हरि कस न हरौ भ्रम भारी	.... २१६
हे प्यारी नाहिं फोरी गागरिया	.... २१७
हे अच्युत ह पारब्रह्म	...., १८९
हैं हम रसिक अनन्य..	.... १८६
होगये श्याम दूजके चंदा	.... १५६
हौं हरि पतित पावन सुने	.... २४४
हौं तो रघुवंशिनको ढाढी	.... २२३
हँसि पूँछैं जनकपुरकी नारी	.... २३१
हँसके गुजार दम	.... २८६
हनुमान ह्वै कृपालु	.... ३६६
हरत सब आरति आरती रामकी	.... ३७३
हरि हौं सब पतितनको राऊ	.... ३८०
हरि हौं सब पतितनको नायक	.... ३८१
हरि नाम कभी न पुकारा	.... ३९३
हरिसेभी मन प्रीति लगायरे	.... ३९५
हमें इक दिन फिर आखरको	.... ३९७
हरियश रेमन गायले जो संगीहै तेरो	.... ३९९
हरिजू राखि लेहु पति मेरी	.... "
हाट बाट कोट ओट	.... ३४८
हरिसे लाग रहोरे भाई	.... ४००
हाथिन सों हाथा मारे	.... ३५०
हाड़ होशकर	.... ३९०
हेरत बारहिं बार उतै	.... ३२०
हे हिरस हैरान वार	.... ३८५
हे होय हरतरां	.... ३८९
ह्वैहो लाल कबहिं बड़े बलि मैया	.... ३६७

पद.	पृष्ठांक.
है कोई दमकी बात जगतमें	.... ३९१
होरी हो ब्रजराज दुलारे	.... ३३४
हौं तो पतित शिरोमणि माधो	.... ३७९
हौं कुरबाने जांऊ प्यारे	.... ४०७
हरि नामते सुख ऊपजै	.... ५३९
हरिके पद पंकज प्रेमकरे	.... ५५०
हरि नाम भजे जग भीतर जो	.... "
हरिसों लागा रहुरे भाई	.... ५५२
हरि बिन को राखे पति मेरी	.... ५५५
हटडी छोड चल्या वनजारा	.... ५६०
हरिके नाम विना दुख पावे	.... ४४९
हरिको नाम सदा सुखदाई	.... ४६०
हरि यश सुनहि न हरि गुण गावे	.... ४२६
हज्ज हमारी गोमती तीर	.... ४३४
हरि राम नाम जप लाहा	.... ४३४
हरि एक	.... ४४२
हमसर दीनदयालु न तुमसर	.... ४४६
हले यारां	.... ४४६
हरि हरि करत मिटे सब भर्म	.... ४५५
हरि बिन जन्म अकारथ जात	.... ४६३
हँसत खेलत तेरे दहु रे आया	.... ४७१
हरि बिन तेरो कौन सहाई	.... ४७५
हरि बिन कौन सहायक मनका	.... ४७९
हरिके भजन कौन कौन न तारे	.... ४८०
हरि जपत तेऊ जनां	.... ४८१
हरि हरिजनके माल खजीना....	.... ४८५
हम होरहीं अधीन सखी श्याम नहीं आये	४९४
हमनहैं इश्कके माते	.... ५१०
हमनसे मत मिलो लोगो	.... ५२०
हमरी प्रणाम बाँके बिहारी....	.... ५२२
हर हर हर	.... "
हृदय कपट मुख ज्ञानी	.... ४३१
हे माता मन शोच न कीजै....	.... ५५४
हे गोविंद हे गोपाल हे दयाललाल	.... ४८१
है दिलमें दिलदार सही	.... ५३१
होरी नंदनंदन खेलें अब	.... ५४१
हायरी त्यार वसंत खेलनको	.... ५४६
हारीको छैल मोहिं ढूँढत डोलै	.... ५४७
होत सो जो रघुनाथ ठटी	.... ५६६
(क्ष)	
क्षीर जु चाहत चीरगहे अजू	.... ३२५

इति रागरत्नाकर विषयसूची समाप्ता ।

श्रीः

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः।

रागरत्नाकर।

मङ्गलाचरणश्लोकाः।

अंसालंबितवामकुंडलधरंमंदोन्नतभ्रूलतं
किंचित्कुंचितकोमलाधरपुटंसाचिप्रसारेक्षणम् ॥
आलोलांगुलिपल्लवैर्मुरलिकामापूरयंतंमुदा
मूलेकल्पतरोस्त्रिभंगललितंध्यायेजगन्मोहनम् ॥ १ ॥
जातुप्रार्थयतेनपार्थिवपदंनैन्द्रेपदेमोदते
संधत्तेनवयोगसिद्धिषुधियंमोक्षंचनाकांक्षति ॥
कालिंदीवनसीमनिस्थिरतडिन्मेघद्युतौकेवलं
शुद्धेब्रह्मणिवल्लवीभुजलताबद्धेमनोधावति ॥ २ ॥
ज्ञातंकाणभुजंमतंपरिचितैवान्वीक्षिकीशिक्षिता
मीमांसाविदितैवसांख्यसरणिर्योगेवितीर्णामतिः ॥
वेदांतःपरिशीलितःसरभसंकिंतुस्फुरन्माधुरी-
धाराकाचननंदसूनुमुरलीमच्चित्तमाकर्षति ॥ ३ ॥
काषायान्नचभोजनादिनियमान्नोवावनेवासतो
व्याख्यानादथवामुनिव्रतभराच्चित्तोद्भवःक्षीयते ॥
किंतुस्फीतकलिंदशैलतनयातीरेषुविक्रीडतो
गोविंदस्यपदारविंदभजनारंभस्यलेशादपि ॥ ४ ॥
मेघैर्मेदुरमंबरंवनभुवःश्यामास्तमालद्रुमै-
र्नक्तंभीरुरयंत्वमेवतादिमंराधेगृहंप्रापय ॥
इत्थंनंदनिदेशतश्चलितयोःप्रत्यध्वकुंजद्रुमं
राधामाधवयोर्जयंतियमुनाकूलेरहःकेलयः ॥ ५ ॥

फुल्लेंदीवरकांतिमिंदुवदनं बर्हावतंसप्रियं
श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरंपीतांबरंसुंदरम् ॥
गोपीनांनयनोत्पलार्चिततनुंगोगोपसंघावृतं
गोविंदंकलवेणुवादनपरंदिव्यांगभूषंभजे ॥ ६ ॥

वंशीविभूषितकरान्नवनीरदाभात्
पीतांबरादरुणबिंबफलाधरोष्ठात् ॥
पूर्णेंदुसुंदरमुखादरविंदनेत्रात्
कृष्णात्परंकिमपितत्त्वमहंनजाने ॥ ७ ॥

ध्यानाभ्यासवशीकृतेनमनसायन्निर्गुणंनिष्क्रियं
ज्योतिःकिंचनयोगिनोयदिपरंपश्यंतिपश्यंतुते ॥
अस्माकंतुतदेवलोचनचमत्कारायभूयाच्चिरं
कालिंदीपुलिनेषुयत्किमपितन्नीलंमहोधावति ॥ ८ ॥

कुर्वंतिकेपिकृतिनःक्वचिदप्यनंते
स्वांतंविधायविषयांतरशांतिमेव ॥
त्वत्पादपद्मविगलन्मकरंदबिंदु-
मास्वाद्यमाद्यतिमुहुर्मधुलिण्मनोमे ॥ ९ ॥

केचिन्निगृह्यकरणानिविसृज्यभोग-
मास्थाययोगममलात्मधियोयतंते ॥
नारायणस्यमहिमानमनंतपार-
मास्वादयन्नमृतसारमहंतुमुक्तः ॥ १० ॥

दोहा—श्रीगुरु श्रीगोविंदपद, मंगलहित करूँध्यान ।
मंगल श्रीब्रज़राज घर, जो पाऊँ सन्मान ॥ १ ॥
गोपी ओपी जगतमें, जिनकी उलटी रीति ।
तिनकेपगवंदनकरूं, करीकृष्णसोंप्रीति ॥ २ ॥
हाथ जोरि विनती करों, सुनो गरीबनिवाज ।
अपनोही करि जानिये, बाँहगहेकी लाज ॥ ३ ॥
नंदरायके लाड़िले, भक्तन प्राणअधार ।

भक्तरामके उरबसो, पहिरे फूलनहार ॥ ४ ॥
भक्ति भक्त भगवंत गुरु, चतुर नाम वपु एक।
तिनके पगवंदन किये, नाशत विघ्न अनेक ॥ ५ ॥
तिनपर भ्रमर समान नित, अटकि रहै मन मोर।
भक्तराम कबहूँ नहीं, चितवै काहू ओर ॥ ६ ॥
हर्षि देहु वर मांगहूँ, यशुमति जीवनमूर।
निज दासनके पगनकी, भक्तरामको धूर ॥ ७ ॥

समाजी वचन।

श्रीब्रजराजकुमारबरगाइये, आनंदकीनिधिबरगाइये ॥
भक्तनकोमनभावतोगाइये,श्रीलाड़िलीललनबरगाइये ॥
दोहा—नवरसमें कवियन कह्यो, सरस अधिकशृंगार।
ताहूमें अतिसरस पुनि, सो यह रासविहार ॥ १ ॥
नवहि अंग शृंगारके, होरी चोरी दान।
छलहिकरनवनऋतुगमन, विरहमिलनअरुमान ॥ २ ॥
नागरिया नवनागरी, खेलत रास विलास।
पल पल वारों हेसखी, नित नव नागरिदास ॥ ३ ॥
चंद्रमिटै दिनकर मिटै, मिटै त्रिगुण विस्तार।
दृढव्रत श्रीहरिवंशको, मिटै न नित्य विहार ॥ ४ ॥
काहूके बल भजनको, काहूके आचार।
व्यास भरोसे कुँवरके, सोवत पाँव पसार ॥ ५ ॥
मुरली मदनगुपालकी, बाजत गहर गँभीर।
कृष्णदास बाजतसुनी, कालिंदीके तीर ॥ ६ ॥
सुख मन रूप अनूपहै, कह वरणें कविवृंद।
अब वृंदावन वरणिहों, जहँ बृंदावनचंद ॥ ७ ॥
वृंदावन आनंदघन, कछु छवि वरणि न जाय।
कृष्णललितलीलाकरण, धारिरह्योजड़ताय ॥ ८ ॥
मुक्ति कहै गोपाल सों, मेरी मुक्ति बताय।

ब्रज रज उड़ मस्तक लगै, मुक्ति मुक्त ह्वै जाय ॥ ९ ॥
नारायण ब्रज भूमिको, सुरपति नावैं माथ।
जहाँ आय गोपी भये, श्रीगोपेश्वर नाथ ॥ १० ॥
धनि बृंदावन धाम है, धनि बृंदावन नाम।
धनि बृंदावन रसिक जो, सुमिरैं राधाश्याम ॥ ११ ॥

श्रीठाकुरजीको वचन।

दोहा—राधे मेरी लाड़िली, मेरी ओर तु देख।
मैं तोहिं राखों नयनमें, काजरकीसी रेख ॥ १२ ॥
राधे आधे नयनसों, तिरछी चितवन चाय।
जो निशान आगेचलै, पाछेको फहराय ॥ १३ ॥
लटसम्हारु प्रियनागरी, कहा भयोहै तोहिं।
तेरीलट नागिनि भई, डसा चहतहै मोहिं ॥ १४ ॥
राधेजूके वदनपै, बेंदी अति छवि देय।
मानो फूली केतकी, भ्रमर वासना लेय ॥ १५ ॥
प्यारीजूके वदनपै, बसत चालिसौ चोर।
दशसारस दशहंसहैं, दशचातक दशमोर ॥ १६ ॥
गोरे मुखपै तिल बन्यो, ताहिं करूं परणाम।
मानो चंद्र बिछायकै, पौढे शालिग्राम ॥ १७ ॥
लट छूटी तियशीशते, रहि कपोल लपटाय।
मानो छौना नागको, पीपी अमी अघाय ॥ १८ ॥
ब्रजवासी वल्लभ सदा, मेरे जीवन प्रान।
इन्हैं न नेक बिसारिहौं, मोहिं नंदकीआन ॥ १९ ॥
ब्रज तज अनत न जाइ हौं, मेरं है यह टेक।
भूतल भार उतारिहौं, धरिहौं रूप अनेक ॥ २० ॥

श्रीप्रियाजीको वचन।

मैं बेटी वृषभानुकी, राधा मेरो नाम।
तीनलोकमें गाइये, बरसानो नँदगाम ॥ २१ ॥

वंशीवारे मोहना, वंशी नेक बजाय।
तेरी वंशी मन हरचो, घर अँगना न सुहाय॥ २२॥
आउ पियारे मोहना, पलक झाँप तोहिं लेवँ॥
ना मैं देखौं औरको, ना त्वहिं देखन देवँ॥ २३॥

सखियनको वचन।

एरे कठिन अहीरके, नेक पीर पहिचान।
तव मुख दर्शन कारणे, छाँडि दई कुलकान॥ २४॥
मोर मुकुट कटि काछनी, पीतांबर वनमाल।
यह मूरति मम मनबसो, सदा विहारीलाल॥ २५॥
करमुरली लकुटी गहे, घूँघरवारे केश।
यह वानिक नयनन बसो, श्याम मनोहर वेश॥ २६॥
मोहनि मूरति श्यामकी, मोमन रही समाय।
ज्यों मेहँदीके पातपै, लाली लखी नजाय॥ २७॥
मनमोहन मनमोहना, मनमोहन मनमाहिं।
या मोहन ते सोहना, तीनलोकमें नाहिं॥ २८॥
चलो सखी तहँ जाइये, जहाँ बसैं ब्रजराज।
गोरस बेचन प्रेमरस, एक पंथ द्वै काज॥ २९॥
मोरमुकुटकी लटक पर, अटकरहे दृग मोर।
कान्हकुँवर सखि यमुनतट, नटवर नंदकिशोर॥ ३०॥
जिन मोरनके पंख हरि, राखत अपने शीश।
तिनके भागनकी सखी, कौन करसकै रीश॥ ३१॥
वृंदावनके वृक्ष को, मर्म न जानै कोय।
डार पात फल फूलमें, राधे राधे होय॥ ३२॥
वृंदावन वानिक बन्यो, भ्रमर करत गुंजार।
दुलहिनिप्यारीराधिका, दूलहनंदकुमार॥ ३३॥
ब्रज चौरासी कोशमें, चार गाम निज धाम।
वृंदावन औ मधुपुरी, वरसानो नँद गाम॥ ३४॥

नँद नंदीश्वर राजहीं, बरसाने बृषभान ।
दोनों कुलदीपक भये, गावत वेद पुरान ॥ ३५ ॥
ब्रजसमुद्र मथुरा कमल, वृंदावन मकरंद ।
ब्रज वनिता सम पुष्प हैं, मधुकर गोकुलचंद ॥ ३६ ॥
उत उरझी कुंडल अलक, इत बेसर वनमाल ।
गौर श्याम उरझे दोऊ, मंडल रास रसाल ॥ ३७ ॥
प्रेम सरोवर प्रेमको, भरयो रहे दिन रैन ।
जहँ पिय प्यारी पग धरैं, लाल धरैं दोउ नैन ॥ ३८ ॥
मोर मुकुट की निरखि छबि, लाजत मदन करोर ।
चंद्र बदन सुख सदन पै, भावक नैन चकोर ॥ ३९ ॥
कमलन को रवि एक है, रवि को कमल अनेक ।
हमसे तुमको बहुत हैं, तुमसे हमको एक ॥ ४० ॥
जल में बसै कुमोदनी, चंदा बसै अकाश ।
जो जाके मन में बसै, बसै सु ताके पास ॥ ४१ ॥
बाहँ छुड़ाये जात हो, निबल जानिकै मोहिं ।
हिरदै ते जब जाउगे, सबल सराहौं तोहिं ॥ ४२ ॥
जो मोसों मोसी करो, तो नहिं कहौं कठोर ।
तुमहो तैसी कीजिये, सुनो रसिक शिरमौर ॥ ४३ ॥
पाग बनो पटुका बनो, बनो लाल को भेख ।
श्रीराधावल्लभ लालकी, चल दौर आरती देख ॥ ४४ ॥

अथ बाललीलाके पद ।

राग भैरव ।

बंदों श्रीहरिपद सुखदाई । जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अँधरेको सब कछु दरशाई । बहिरो सुनै गूंग पुनि बोलै रंक चलै शिर छत्र धराई । सूरदास स्वामी करुणामय वारंवार नमो तिहिं पाई ॥ १ ॥

राग रामकली ।

भयो जयकार जन्मे मुरारी ॥ शीश वसुदेव लै चले हैं

कृष्णको शूपमें खेलत विहारी । लालके शीशपर मुकुट सिहरा बन्यो हार हमेल छबि ललित पियारी । सूरके प्रभु अवतार लियो भक्तहित बढ्यो आनंद गोकुल मँझारी ॥ २ ॥

रागआसावरी ।

देखोरे अद्भुत अविगतिकी गति कैसो रूप धरचो है । तीनलोक जाके उदर भवनमें शूपके कोन परचो है ॥ जामुख दरश काज सनकादिक चतुराई सब ठानी है ॥ सो मुख चूमत मात यशोदा दूध धार लपटानी है ॥ जिन कानन मजकी विपदा सुनि गरुडासन बिसरायोहै । तिन काननके निकट यशोदा हुलरायो गुणगायो है ॥ जिन्हीं भुजा प्रहलाद उबारचो प्रगटहोय खँभ फारचो है ॥ सो भुज पकर ग्वाल अरु गोपी ठाढे होय दुलारचोहै ॥ जाके काज रुद्र ब्रह्मादिक कठिन योग व्रत साध्यो है ॥ ताको धाय नंदकी रानी ऊखल सों गहि बांध्यो है ॥ जाको मुनिजन ध्यान धरत हैं शंभु समाधि न टारी है ॥ सो ठाकुर है सूरदासको गोकुल गोप विहारी है ॥ ३ ॥

रागबिलावल ।

आदि सनातन हरि अविनासी । सदा निरंतर घट घट बासी ॥ पूरणब्रह्म पुराण बखाने । चतुरानन शिव अंत न जाने ॥ महिमा अगम निगम जिहि गावे । सो यशुदा लिये गोद खिलावै ॥ एक निरंतर ध्यावै ज्ञानी । पुरुष पुरातन है निर्वानी ॥ शुक शारदको नाम अधारा । नारद शेष न पावैं पारा ॥ जप तप संयम ध्यान न आवे । सोइ नंदके आँगन धावे ॥ लोचन श्रवण न रसना नाशा । बिन पद पाणि करै परकाशा ॥ अरुण असित सित वरण न धारे । मुनि मनसामें कहा विचारे ॥ विश्वंभर निज नाम कहावे । घर घर गोरस जाय चुरावे ॥ जरा मरण ते रहित अमाया । मात पिता सुत बंधु न जाया ॥ आदि अनंत रहे जलसाई । परमानंद सदा सुखदाई ॥ ज्ञानरूप हिरदेमें बोलै । सो बछरनके पाछे डोलै ॥

जलथल अनल अनिल नभ छाया । पांच तत्त्वमें जग उपजाया ॥ लोक रचै पालै अरु मारै । चौदह भुवन पलकमें धारै ॥ कालडरै जाके डरभारी । सो ऊखल बाँध्यो महतारी ॥ माया प्रकट सकल जगमोहै । करण अकरण करै सोइ सोहै ॥ जाकी माया लखै न कोई । निर्गुण सगुण धरै वपु दोई ॥ शिव सनकादिक अंत न पावै । सो गोपनकी गाय चरावै ॥ गुण अनंत अविगतिहिं जनावै । यश अपार श्रुति पार न पावै ॥ चरण कमल नित रमा पलोवै । चाहत नेक नयनभर जोवै ॥ अगम अगोचर लीला धारी । सो राधा वश कुंजविहारी ॥ जो रस ब्रह्मादिक नहिं पायो । सो रस गोकुल गलिन बहायो ॥ बड़भागी यह सब ब्रजबासी । जिनके सँग खेलें अविनाशी ॥ सूर सुयश कहि कहा बखानै । गोविंद की गति गोविंद जानै ॥ ४ ॥

साख मुनिजन भेरैं देव अस्तुतिकरैं स्मृति पुराण गुण वेद गावैं। तुम प्रभु एक अनेक ह्वै रमि रहे अमित जग जंतु नहिं अंत पावैं ॥ शेष महेश गंधर्व किन्नर थके व्यास ब्रह्मादि नहिं पार पावैं। चरण पाताल औ शीश आकाश में चंद्र सूरज दोउ दृग सुहावैं ॥ यही परतीत तेरी चहुँ युगन में भक्तके हेतु धरि देह धावैं । कहत मिहर दास नीवास लियो नंदगृह कान्ह सुत जान यशुमति खिलावैं॥५॥

राग रामकली ।

हौं इक नई बात सुनि आई ॥ महरि यशोदा ढोटा जायो घर घर बजत बधाई । द्वारे भीर गोप गोपिन की महिमा वरणि न जाई। अति आनंद होत गोकुल में रत्न भूमि निधि छाई । नाचत तरुण वृद्ध अरु बालक गोरस कीच मचाई । सूरदास स्वामी सुखसागर सुंदर श्याम कन्हाई ॥ ६ ॥

राग भैरव ।

देखो री यह कैसो बालक रानी यशोमति जायाहै । सुंदर वरण

कमलदललोचन देखत चंद्र लजाया है ॥ पूरण ब्रह्म अलख अविनाशी प्रगट नंद घर आयाहै । मोर मुकुट पीतांबर सोहै केसर तिलक लगाया है ॥ कानन कुंडल गल विच माला कोटि भानु छवि छाया है । शंख चक्र गदा पद्म विराजै चतुर्भुज रूप बनायाहै ॥ परमेश्वर पुरुषोत्तम स्वामी यशुमति सुत कहलायाहै । मच्छ कच्छ वाराह औ वावन राम रूप दरशायाहै ॥ खंभ फारि प्रगटे नरहरि वपु जन प्रहलाद छुडायाहै । परशुराम बुध निहकलंक है भुविका भार मिटाया है ॥ कालियमर्दन कंसनिकंदन गोपीनाथ कहाया है । मधुसूदन माधव मुकुंद प्रभु भक्तवछल पद पायाहै । शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहसमुख गायाहै ॥ सो परब्रह्म प्रगट है व्रज में लूट लूट दधि खाया है ॥ परमानंद कृष्ण मन मोहन चरण कमल चित लायाहै ॥ ७ ॥

राग बड़हंस ।

मोहिं नंदघर लै चलो ढाढ़िनियाँ मचल रही ॥ पुत्र भयो सब जगने जान्यो मोते क्यों न कही ॥ मोहिं मिलै नख शिखलौं गहनो लाऊं तो बात सही ॥ जरदोजीके वस्त्र मिलैंगे फरिया चोलीनई । कृष्ण कृपा बिन को या जगमें जिन मेरी बाहँ गही ॥ ८ ॥

राग आसावरी ।

आज वधाइयाँवे बाबानंद दे दर्बार ॥ हुआ सुत सोहना वे मनदा मोहना सुकुमार ॥ आईमिल गोपियां वे गावें हर्ष मंगलचार । गुणीजन गावँदे वे नाचें देदे करतार ॥ ९ ॥

सवैया ।

पूत सुपूत जन्यो यशुदा इतनी सुनिकै वसुधा सब दौरी ।
देवन को आनंद भयो सुन धावत गावत मंगल गौरी ।
नंद कछू इतनो जो दियो घनश्याम कुबेरहुंकी मति बौरी ॥
मोहिं देखत व्रजहिं लुटाय दियो न बची बछिया छछिया न पिछौरी १०

घनाक्षरी ।

फूल गये गोप गृह गोपिकन भूल गये हुलसी मचाई माते प्रेम सरसाईमें। कीच मची दधिकी अधिक गैल गैलनमें कीकन दै सबै पगे आनँद बधाईमें ॥ छोटी सी चोटी कछोटी कटि मोटी भई फैल गई थौन बडे स्वेद की अवाईमें ॥ राजी दिलमोदन विनोदन जो विहँसिनंद नाचे आज आँगन कन्हाई की बधाई में ॥ ११ ॥

राग प्रभाती ।

गिरिधर लोरी लै मथुराके बासी ॥ चिरजीवो वसुदेवके नंदन बलि बलि माता घोरी। भूपर भार भयो अति भारी सुर समूह सब जाय पुकारी जगतपिता जगनायक स्वामी धर्म्म कथा जग थोरी ॥ गगन गिरा सों यों हरि भाषो असुर मार संतन पतिराखो आदिपुरुष तेरो अंत न पायो धरहु भक्त हित खोरी। वसुदेव देवकि अति हर्षाने पूरणब्रह्म जान सन्माने स्तुति करत बहोर बहोरी कंसके भय चित चोरी ॥ नंद यशोदा हर्ष निरख मन पायो निर्द्धन मनहुँ परमधन आदि युगादि धरणिधर माधव लखि न जात गति तोरी। ब्रजवधुआं मिल नँद गृह आई भाग भले हरि दर्शन पाई हिल मिल पलना देत झुलाई हाथ गहे पट डोरी ॥ दैत्यानी इक कंस पठाई कर छल विष स्तन पर लाई बनि वरांगना अति छवि सुंदर ब्रज बधुआं चितचोरी। पलना सों हरि जाय उठाये चूमि नयन स्तन मुख लाये ऐसी चूस करी मेरे ललना लीने प्राण निचो री ॥ यमलार्जुनको दर्शन दीनो नारद वचन सफल करलीनो ऊखल सों प्रभु आप बँधाये विमल वृक्ष दोउ जाय गिराये शब्दभयो घन घोरी। तृणावर्त अघासुर मारे और दैत्य कइ कोटि सँहारे कहा कहों अगणित गुण तोरे इक रसना प्रभु मोरी ॥ १२ ॥

राग पीलो ।

आज श्रीगोकुलमें बजत बधावरारी। यशुमति नँदलाल पाये कंसराज कालपायो गोपनने ग्वालपायो वनको शृंगाररी ॥ गौअ

गोपाल पायो याचकन भाग पायो सखियन सुहाग पायो प्रिया वर साँवरारी। देवनने प्रान पायो गुणियन ने गान पायो भक्तन भगवान पायो सूर सुखदावरारी॥ १३॥

राग आसावरी।

आज नंदजू तुम्हरे घरमें पुत्र जन्म सुनि आयो। लग्नशोधि ज्योतिषको गिनिकै चाहत तुम्हैं सुनायो॥ संवत् सरस भाद्रपद मासे आठैं तिथि बुधवार। कृष्णपक्ष रोहिणी अर्द्धनिशि हर्षण योग उदार॥ वृष है लग्न उच्चके निशिपति तनय बहुत सुखदेहै। चौथे सिंह राशिके दिनपति जीति सकल में ह्वैहै॥ पाँचें बुध कन्याके जो है पुत्रन बहुत बढैहै। छठेहैं शुक्र तुलाके बलयुत शत्रुरहन नहिंपैहै॥ ऊंच नीच युवती बहु करिहै सातें राहु परेहैं। भागभवनमें मकर महीसुत पूर्णैश्वर्य करेहैं। कर्म भवन में ईश शनीचर श्याम वर्ण तनु ह्वैहै॥ लाभभवन में मीन बृहस्पति नौनिधि घरमें ऐहै॥ आदि सनातन हरि अविनाशी घट घट अंतर्यामी। सो तुम्हरे गृह आय प्रगट भये सूरदासके स्वामी॥ १४॥

राग भैरव।

मैं योगी यश गाया री बाला मैं योगी यश गाया॥ तेरे सुतके दर्शन कारण मैं काशी तजि धाया॥ परब्रह्म पूरण पुरुषोत्तम सकल लोक जामाया। अलख निरंजन देखन कारण सकल लोक फिरिआया॥ धनि तेरो भाग यशोदा रानी जिन ऐसो सुत जाया। गुणन बड़े छोटे मतभूलो अलख रूप धरआया॥ जो भावे सो लीजिय रावल करो आपनी दाया। देहु अशीश मेरे बालकको अविचल बाढै काया॥ नामैं लेहौं पाटपटंबर नामैं कंचन माया। मुख देखों तेरे बालकको यह मेरे गुरुने बताया॥ कर जोरे विनवै नँदरानी सुन योगिनके राया। मुख देखन नहिं देहौं रावल बालक जात डराया॥ जाकी दृष्टि सकल जग ऊपर सो क्यों जात डराया। तीन लोकका साहब मेरा तेरे

भवन छिपाया ॥ कृष्णलालको लाई यशोदा कर अंचर मुख छाया । गोद पसार चरणरज वंदी अति आनंद बढाया ॥ निरख निरख मुख पंकज लोचन नयनन नीर बहाया । सूरश्याम परिकर्मा करके शृंगीनाद बजाया ॥ १५ ॥

दर्श तो दिखाजा छैला दर्शतो दिखाजा ॥ दिलदा महरम साँवरा यार ॥ जांघनि काछनि कटि पीतांबर श्रवणन कुंडल शीश मुकुट अरु घूँघरवारी अलकैं झलकैं नयनोंमें समाजा ॥ बंशीधुन यमुना तीरे नाचत गावत गोपन संग नंदजूके किशोर मेरी तपन बुझाजा । जानकीदास भये निराश निकसत नाहीं पापी श्वास स्वप्नहूं में दर्श देके सकल दुख मिटाजा ॥ १६ ॥

रागभूपाली ।

बोलता क्यों नहीं रे मिजाजी बोलता क्यों नहीं रे ॥ शिर तेरे ककरेजी चीरा गल मोतियन की मालरे । हाथमें दुधारा खांडा मारता क्यों नहीं रे ॥ १७ ॥

रागविलावल ।

काहू जोगिया की लागी नजर मेरो बारो कन्हैया रोवैरी । मेरी गली जिन आउरे जोगिया अलख अलख कर बोलैरी ॥ घर घर हाथदिखावे यशोदा बार बार मुख जोवैरी । राई लोन उतारत छिन छिन सूरको प्रभु सुख सोवैरी ॥ १८ ॥

रागभैरव ।

चल रे योगी नंद भवन में यशुमति तोहिं बुलावै । लटकत लटकत शंकर आवैं मन में मोद बढ़ावै ॥ नंद भवन में आयो योगी राइ लोन कर लीनो । वार फेर लालाके ऊपर हाथ शीशपै दीनो ॥ व्यथा भई सब दूर बदनकी किलकि उठे नँदलाला । खुशी भई नँदजू की रानी दीनी मोतिन माला ॥ रहुरे योगी नंद भवन में ब्रज में बासो कीजै । जब जब मेरो लाला रोवे तब तब दर्शन दीजे ।

तुम तो योगी परम मनोहर तुमको वेद बखानै। बूढो बाबू नाम हमारो सूरश्याम मोहिं जानै ॥ १९ ॥

रागविलावल।

कर पग गहि अँगुठा मुख मेलत। प्रभु पौढे पालने अकेले हर्षि हर्षि अपने रँग खेलत ॥ शिव शोचत विधि बुद्धि विचारत बटु बाढ्यो सागर जल झेलत। विडरि चले युग प्रलय जानकर दिगपति दिग दंतौ न सकेलत ॥ मुनि मन भीत भये भू कंपत शेष सकुच सहसौं फण पेलत। सो सुख सूर भयो सब गोकुल किलकत कान्ह शकट पग ठेलत ॥ २० ॥

शोभित कर नवनीत लिये। घुटुरनचलत रेणु तनु मंडित मुख दधि लेप किये ॥ चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक दिये। लट लटकन मनु मत्त मधुपगण मादक मधुहिं पिये ॥ कठुला कंठ वज्रकेहरि नख राजत रुचिर हिये। धन्य सूर एको पल यह सुख का शतकल्प जिये ॥ २१ ॥

राग भैरव।

जागिये गोपाल लाल जननी बलिजाई। उठो तात भयो प्रात रजनीको तिमिर गयो खेलत सब ग्वाल बाल मोहन कन्हाई ॥ उठो मेरे आनँदकंद किरणचंद मंद २ प्रकट्यो आकाश भानु कमलन सुखदाई। संगी सब पुरत वेनु तुम बिना न छुटे धेनु उठो लाल तजो सेज सुंदर बर राई ॥ मुख ते पट दूर कियो यशुदाको दर्श दियो माखन दधि माँगि लियो विविध रस मिठाई। जेंवत दोउ राम श्याम सकल मँगल गुणनिधान जूठनि रहिथारमें सो मानदास पाई ॥ २२ ॥

जागिये ब्रजराज कुँवर कमल कोश फूले। कुमुद वृंद सकुच भये भृंग लता झूले ॥ तमचर खग शोर सुनो बोलत बनराई। राँभत गौ क्षीर देन बछरा हित धाई ॥ विधु मलीन रवि प्रकाश गावत ब्रज नारी। सूरश्याम प्रात उठे अंबुज कर धारी ॥ २३ ॥

रागरामकली ।

मोहन जाग हौं बलि गई । ग्वाल बाल सब द्वार ठाढे वेर बन को भई । पीतपट कर दूर मुखते छाँड दे अलसई ॥ अति अनंदित होत यशुमति देख द्युति नित नई । सूरके प्रभु दरश दीजै अरुण कीरण छई ॥ २४ ॥

रागभैरव ।

जागो बंशीवारे ललना जागो मोरे प्यारे ॥ रजनी बीती भोर भयोहै घर घर खुले किंवारे । गोपी दही मथत सुनियत हैं कँगनाके झनकारे ॥ उठो लालजी भोर भयो है सुर नर ठाढे द्वारे । ग्वाल बाल सब करत कुलाहल जय जय शब्द उचारे ॥ माखन रोटी हाथमें लीन्हीं गैाअनके रखवारे । मीराके प्रभु गिरिधर नागर शरण आयाँको तारे ॥ २५ ॥

जागो हो मोरे जगत उज्यारे । कोटि मदन मुसुकुन पर वारत कमल नयन अँखियनके तारे ॥ ग्वाल बच्छ सबरे सँगलैकै यमुन तीर वन जाउ सवारे । परमानंद कहत नँदरानी दूर जिन जाउ मेरे ब्रजके रखवारे ॥ २६ ॥

रागललित ।

जागो जागो हो गोपाल । नाहिन अति सोइयतहै प्रात परम शुचिकाल ॥ फिर फिर जात निरखि मुख छिन छिन सब गोपनके बाल । बिन बिकसे मनो कमल कोश ते ते मधुकर की माल ॥ जो तुम मोहिं पतियाउ न सूर प्रभु सुंदर श्याम तमाल । तो उठिये आपन अवलोकिये तजि निद्रा नयन विशाल ॥ २७ ॥

रागबिलावल ।

कौन परी नँदलालहिं बानि । प्रात समय जागन की बिरियाँ सोवत है पीतांबर तानि ॥ मात यशोदा कब की ठाढी दधि ओदन भोजन घृत सानि । उठो श्याम कछु करो कलेऊ सुंदर बदन

दिखावो आनि ॥ संग सखा सब द्वारे ठाढे मधुबन धेनु चरावन जानि । सूरश्याम सुंदर अलसाने सोवत हैं अजहूं निशि मानि॥२८॥

राग भैरव ।

दधिके मतवारे कान्ह खोलो प्यारे पलकें । शीश मुकुट लटें छुटीं और छुटीं अलकें ॥ सुर नर मुनि द्वार ठाढे दरश कारण किलकें । नासिका को मोति सोहे बीच लाल ललकें ॥ कटि पीतांबर मुरली कर श्रवण कुँडल झलकें । सूरदास मदनमोहन दरश देहु भलकें ॥ २९ ॥

राग बिलावल ।

नंदनँदन वृंदावनचंद । यह कहि जननि जमावत लालन जागो मेरे आनँदकंद ॥ आलस भरे उठे मनमोहन चलत चाल ठुमकत अतिमंद । पोंछि बदन अंचलसों यशुमति उरलगाय उपज्यो आनंद। सब ब्रजयुवती आईं देखनको दर्शन होत मिट्यो दुख द्वंद । ब्रजपति श्रीगोपाल परिपूरण जाको यश गावत श्रुतिछंद ॥ ३० ॥

बलि बलि जाउँ मधुर सुर गावो । अबकी बेर मेरे कुँवर कन्हैया नंदहि नाच दिखावो ॥ तारी दैदै अपने करकी परम प्रीति उपजावो । आन जंतु धुनि सुनि डरपत कत मो भुज कंठ लगावो ॥ जिन शंका जिय करो लाल मेरे काहेको शर्मावो । बाँह उठाय काल्हकी नाईं धौरी धेनु बुलावो ॥ नाचो नेक जाउँ बलि तेरी मेरी साध पुरावो । रत्न जटित किंकिणि पग नूपुर अपने रंग बजावो ॥ कनक खंभ प्रतिबिंब आपनो नव नवनीत खवावो । परमदयालु सूरके उरते टार नेक न जावो ॥ ३१ ॥

राग बिलावल ।

बलि बलि जाउँ छबीले लालके । धूसर धूर घुटरुवन डोलन बोलन वचन रसालके ॥ छिटकरहीं चहुँ दिशि जो लटुरियां लटकनि लटकन भालके । मोतिन सहित नासिका नथुनी कंठ कमल दल मालके । कछु इक हाथ कछुक मुख माखन चितवन नयन विशालके।सूरदास प्रभु प्रेम मगनह्वै ढिग न तजत ब्रजबालके॥३२॥

आउ गुपाल शृँगार बनाऊँ । अति सुगंध को करूं उबटनो उष्णोदक नहवाऊँ ॥ अँगअँगोछि गुहों तेरी बेनी फूलन रचि रचि भाल बनाऊँ । सुरँगलाल जतोरी चीरा रत्न खचित शिर पेंच बनाऊं ॥ बागो लाल सुनहरी छापा हरी इजार चरण चरचाऊं । पटुका सरस बैंगनी रँगको हसुली हेम हमेल धराऊं । गज मोतिनके हार मनोहर वनमालाले उर पहिराऊं । लै दर्पण देखो मेरे बारे निरखि निरखि छबि नयन सिराऊं ॥ मधु मेवा पकवान मिठाई अपने कर ले तुम्हें खवाऊं । विष्णुदासको यही कृपाफल बालचरित्र हौं निशि दिन गाऊं ॥ ३३ ॥

राग देस ।

धूर भरे अँग खेलत मोहन आछी बनी शिर सुंदर चोटी । देखोरी कागके भाग भले हैं हाथ सों ले गयो माखन रोटी । खात पियत कूदत भये अँगना पाइन पाइन पर्त कछोटी । सूरदास प्रभु या छबि निरखत वार डारों शिर रवि शशि कोटी ॥ ३४ ॥

रागगौरी ।

कहन लागे मोहन मैया मैया । नंदराय सों बाबा बाबा अरु हलधर सों भैया ॥ खेलत फिरत सकल गोकुलमें घर घर बजत बधैया । परमानंद दास को ठाकुर ब्रजजन केलि करैया ॥ ३५ ॥

राग रामकली ।

हौं लालको मुख देखन आई । कल्ह मुख देख गई दधि बेचन जातहि गयो बिकाई ॥ दिन सों दूनो लाभ भयो घर काजर बछिया जाई । आईहों धाय थमाय संगकी मोहन देहु जगाई ॥ इतनी सुनत बिहँसि उठ बैठे नागरि निकट बुलाई । सूरदास प्रभु चतुर ग्वालिनी सैन सँकेत बताई ॥ ३६ ॥

राग बिलावल ।

मैया मोहिं बड़ो करलैरी । दूध दही घृत माखन मेवा जब मांगों तब दैरी । कछू हौस राखे जिन मेरी जोइ जोइ मोहिं रुचैरी । होउँ

सबल सबहिनमें जैसे सदा रहौं निर्भयरी। सूर कंस गहि केश पछारों करिहौं मथुरा जयरी॥ ३७॥

राग रामकली।

मैया मेरी कब बाढ़ैगी चोटी। किती बेर मोहिं दूध पियत भइ यह अजहूं है छोटी॥ तू जो कहत बलकी बेनी ज्यों हो है लांबी मोटी। काढ़त गुहत न्हवावत जैहै नागिन सी भुइँ लोटी॥ काचो दूध पियावत मोहन देती माखन रोटी। सूर मैया याही रस रिझ-यो हरि हलधरकी जोटी॥ ३८॥

अब मेरी खेलन जात बलैया। जबहिं मोहिं देखत लरिकन सँग तबहिं खिझत बल भैया॥ मोको कहत तात वसुदेव है देवकी तेरी मैया। मोललियो कछु दे वसुदेवहिं कर कर यतन बडैया॥ पाछे नंद सुनत हैं ठाढे तब हँस हँस उर लैया। सूर नंद बलरामहिं हटक्यो सुन मन हर्ष कन्हैया॥ ३९॥

सारंग।

मैया मोहिं दाऊ ने बहुत खिझायो। मोसों कहत मोलको लीनो कब यशुमति ने जायो॥ कहा करूं या रिसके मारे खेलन हौं नहिं जात। पुनि पुनि कहत कौन है माता कौन है तेरा तात॥ गोरे नंद यशोदा गोरी तुम कत श्याम शरीर। तारी दै दै ग्वाल हँसत हैं सीख देत बलवीर॥ तू मोहींको मारन सीखी दाउहिं कभू न खीझै। मोहनको मुख रिस समेत लखि सुनि सुनि यशुमति रीझै॥ सुनो कान्ह बलभद्र चवाई जन्महिको वह धूत। सूरदास मोहिं गोधन की सौं हौं जननी तू पूत॥ ४०॥

राग सोरठ।

इस नंदके फरजंदने बांकी अदा धरी। भौंहैं कमान झुकरही गोशे से आ मिली॥ तिरछा मुकुट धर शीशपर मुरली अधर धरी। कानों में कुंडल झलकते गल मोतियोंकी लरी॥ चितवन जो तेरी भाला जिन घायल मुझे करी। शिर मुकट सोहै मोर का और

पाग जरकरी ॥ इमि सूर कहै श्याम सों धान आज की घरी ॥४१॥

राग बिलावल ।

नंदभवनको भूषण माई । यशुदाको लाल वीर हलधरको राधारमण परम सुखदाई ॥ शिवको धन संतनको सर्वस महिमा वेद पुराणन गाई । इंद्रको इंद्र देव देवनको ब्रह्मको ब्रह्म अधिक अधिकाई ॥ कालको काल ईश ईशनको अतिहि अतुल तोल्यो नहिं जाई । नंददासको जीवन गिरिधर गोकुल गामको कुँवर कन्हाई ॥ ४२ ॥

राग रामकली ।

हाहा लेहु एको कोर । बहुत बेर भई है भूखे देख मेरी ओर ॥ मेल मिश्री दूध औट्यो पीउ हैहै जोर । अबहिं खेलन टेरि हैं तुव ग्वाल भयो अति भोर ॥ जगे पक्षी द्रुम द्रुमन प्रति करन लागे शोर । खेलवेको उठि भजोगे मान मोर निहोर ॥ लेहुँ ललन बलाय तेरी जोर अंचल ओर । वदन चंद्र विलोकि शीतल होत हृदयो मोर ॥ बैठ जननी गोद जेवन लगे गोविंद थोर । रसिक बालक सहज लीला करत माखन चोर ॥ ४३ ॥

मानो बात लालन मोरी । करो भोजन रोष भूलो हौं जो मैया तोरी ॥ दूध दधि नवनीत घृतपक परसि राख्यो थार । कहा लोटत धरणि में मेरे लाल होत अबार । गोद बैठो हौं जिवाऊं गाऊं तेरे गीत । खेलबेको तोहिं बोलत ग्वाल तेरे मीत ॥ कहो जाको ताहि टेरूं बैठें तेरे पास । करों दधि मंथान उदयो सूर कमल विकास॥ मायके सुनि वचन हँसिउर आय लगे गुपाल । कियो भोजन दियो अति सुख रसिक नयन विशाल ॥ ४४ ॥

राग धनाश्री ।

महराने ते पाँडे आयो । ब्रज घर घर बूझत नँदरावर पुत्र भयो सुनिकै उठधायो ॥ पहुँच्यो आय नंदके द्वार यशुमति देखि अनंद बढ़ायो । पांव धोय भीतर बैठायो भोजनको निज भवन लिपायो ॥

जो भावै सो भोजन कीजै विप्र मनहिं अति हर्ष बढायो । बडी वैस विधि भयो दाहिनो धनि यशुदा ऐसो सुत जायो ॥ धेनु दुहाय दूध लै आई पांडे रुचिकर खीर चढायो ॥घृत मिष्टान्न खीर मिश्रित करि परसि कृष्ण हित ध्यान लगायो ॥ नयन उघार विप्र जो देखे खात कन्हैया देखन पायो । देखो आय यशोदा सुतकृत सिद्ध पाक यह आन जुँठायो ॥ महरि विनयकरि दोउ कर जोरचो घृत मधु पय फिर बहुत मँगायो । सूरश्याम कत करत अचगरी बार बार ब्राह्मणहिं खिझायो ॥ ४५ ॥

राग रामकली ।

पांडे भोग न लागन पावै । कर कर पाक जभी अर्पत है तभी ताहि छुइ आवै ॥ इच्छा कर मैं ब्राह्मण नोत्यो ताको श्याम खिझावै । वह अपने ठाकुरहिं जिमावत तू तबहीं छुइ आवै ॥ जननी दोष देत कत मोको विधि विधान कर ध्यावै । नयन मूंदि कर जोर नाम लै वारंवार बुलावै ॥ यह अंतर नहिं होत भक्त सों क्यों मेरे मन भावै । सूरदास बलि बलि विलास पर जन्म पाय यश गावै ॥ ४६ ॥

राग बिलावल ।

सफल जन्म मेरो आज भयो । धनि गोकुल धनि नंद यशोदा जिनके हरि अवतार लियो ॥ प्रगट भयो अब पुण्य सुकृत फल दीनबंधु मोहिं दर्श दियो । वारंवार नंदके आँगन लोटत द्विज आनंद भयो ॥ मैं अपराध कियो बिन जाने को जाने किहिं वेष जियो । सूरदास प्रभु भक्त हेतु वश यशुमतिके अवतार लियो ॥४७॥

राग झँझोटी ।

चंद्र खिलौना लेहौं मैया मेरी चंद्र खिलौना लेहौं ॥ धौरीको पय पान न करिहौं वेणी शिर न गुथैहौं । मोतिन माल न धरिहौं उरपर झँगुली कंठ न लैहौं ॥ जैहौं लोट अभी धरणी पर तेरी गोद न ऐहौं । लाल कहैहौं नंद बबाको तेरो सुत न कहैहौं ॥ कान लाय कछु कहत यशोदा दाउहि नाहिं सुनैहौं । चंदाहू ते अति सुंदर तोहिं नवल

दुलहिया ल्यैहौं ॥ तेरी सौंह मेरी सुन मैया अबहीं ब्याहन जैहौं । सूरदास सब सखा बराती नूतन मंगल गैहौं ॥ ४८ ॥

राग बिलावल ।

सुन सुत एक कथा कहुँ प्यारी । कमलनयन मन आनँद उपज्यो रसिक शिरोमणि देत हुँकारी ॥ दशरथ नृपति हुते रघुवंशी तिनके प्रगट भये सुत चारी । तिनमें राम एक व्रतधारी जनकसुता ताकी वर नारी ॥ तात वचन सुनि राज्य तज्योहै भ्राता सहित भये वनचारी । तहँ तिन जाय कनक मृग मारचो राजिवलोचन गर्व प्रहारी ॥ रावण हरण सियाको कीन्हों सुनत श्यामघन नींद बिसारी । सूरश्याम प्रभु रटत चापको लक्ष्मण देहु जननि भ्रमभारी ॥ ४९ ॥

राग सारंग ।

नंद बुलावत हैं गोपाल ॥ आवो वेगि बलैया लेहौं मोहन श्याम तमाल । परस्यो थार धरचो मग जोवत क्यों न चलो ततकाल ॥ हौं वारी इन प्रति पाँयन पर दौर दिखावो चाल । छांड देहु तुम लाल लटपटी यह गति मंद मराल ॥ सो राजा जो पहिले पहुँचै सूर सो भवन उताल । जो जैहै बलराम अगमने तो हँसिहैं सब ग्वाल ॥ ५० ॥

लावनी ।

रूप रसिक मोहन मनोज मनहरण सकल गुण गर्बीले । छैल छबीले, चपल लोचन चकोर चित चटकीले ॥ रत्नजटित शिर मुकुट लटक रहि सिमट श्याम लट घुँघुरारी । बाल बिहारी, कन्हैया लाल चतुर तेरी बलिहारी । लोलक मोती कान कपोलन झलकबनी निर्मल प्यारी । ज्योति उज्यारी, हमैं हरबार दर्शदे गिरिधारी ॥ दंत छटा सी बिज्जु घटा मुख देख शरद शशि सरमीले ॥ छैल० ॥ मंद हँसन मृदु वचन तोतरे वय किशोर भोली भाली । करत चोचले, अमोलिक अधर पीक रच रहि लाली ॥ फूल गुलाब चिबुक सुंदरता रुचिर कंठ छबि वनमाली ।

करसरोजमें, बुंद मेहँदी अमंद है बहु प्रतिपाली ॥ फूल छरी सी नरम कमर करधनी शब्द भये तुरसीले ॥ छैल० ॥ झँगुली झीन जरीपट कछनी श्यामल गात सुहात भले । चाल निराली, चरण कोमल पंकजके पात भले ॥ पग नूपुर झंकार परम उत्तम यशुमतिके तात भले । संग सखनके, निकट यमुना बछरान चरात भले ॥ ब्रज युवतिनके प्रेम भोर भये घर घर माखन गटकीले ॥ छैल० ॥ गावैं बाग विलास चरित हरि शरद रैनि रसरास करैं । मुनिजन मोहे, कृष्ण कंसादिक खल दल नास करैं ॥ गिरिधारी महराज सदा श्रीब्रज वृंदावन बास करैं । हरिचरित्र को, श्रवण सुन सुन कर मन अभिलास करैं ॥ हाथ जोर कर करैं बीनती नारायण दिलदर्दीले ॥ छैल० ॥ ८१ ॥

माखनचोरीलीला ।

राग रामकली ।

माखन तनक देरीमाय । तनक कर पर तनक रोटी माँगत चरण चलाय ॥ कनक भूपर तनक रेखा करन पकरयो धाय । कंपियो गिरि शेष शंक्यो उदधि अति अकुलाय ॥ मेरे मनके तनक मोहन लागे मोहिं बलाय । तनक मुखपर तनक बतियां बोलत हैं तुतराय ॥ यशोमतिके प्राण जीवन धन लियो उरमें लाय । नंद कुँवर गिरिधरन ऊपर सूर बलि बलि जाय ॥ ८२ ॥

राग भैरव ।

बिलँब तजि माखन देरी माई । बछरे हमरे दूर निकस गये दधि मथती देर लाई ॥ जो न देय तोरे बछरे न चारूं हौं नहिं विपिन को जाई । यह लै अपनी कारी कमरिया मुरली औ लकुटाई ॥ इतनी कह हरि अतिहि रिसाने लोटत भूमि कन्हाई । धूर सहित सब अँग लिपटाने मैया लेत उठाई ॥ गोदी बीच बिठाय यशोदा मुख चूम दूध पिलाई । धनि धनि भाग सूर जननी जाके कृष्ण करत लरिकाई ॥ ८३ ॥

राग भैरवी ।

दोउ भैया मैया सों माँगत दे मा माखन रोटी ॥ बलदाऊ गही नासिका मोती कान्ह गही कर चोटी । मानो हंस मोर भखु लीन्हों कवि कृत उपमा छोटी ॥ यह छबि निरखि नंद आनंदे प्रेम मगन गये लोटी । सूरदास धनि धन्य यशोदा भाग भले कर्मन की मोटी ॥ ९४ ॥

राग रामकली ।

मोहिं दधि मथन दे बलिगई । जाउँ बलि बलि बदन ऊपर छांड मथनी रई ॥ देहुँ त्वहिं नवनीत लौंदा आर कित यह ठई । सुतसनेह विलोकि यशुमति प्रेम पुलकित भई ॥ लै उछंग लगाय उर सों प्राणजीवन जई । बालकेलि गुपाल की ब्रज आसकर नित नई ॥ ९५ ॥

राग विलावल ।

नेक मेरे बारे कान्ह छाँड़िदे मथनियां ॥ कंठमें बघनहा सोहे नाक में नथुनियां । नयननते नीर मानो मोतिनकी मनियां ॥ नेक रहो देहों माखन मेरे प्राण धनियां । आर जिन करो मेरे छगन मग-नियां ॥ सुर नर मुनि काहूके ध्यान न अवनियां । सूर सुत देख सुख लेत नंदरनियां ॥ ९६ ॥

राग गौरी ।

मैयारी मोहिं माखन भावे । जो मेवा पकवान कहत तू मोहिं नहीं रुचि आवे ॥ ब्रज युवती इक पाछे ठाढी सुनत श्यामकी बात । मन में कहत कभूं अपने घर देखौं माखन खात ॥ बैठे जाय मथनियांकि ढिग तब मैं रहों छिपानी । सूरदास प्रभु अंतर्यामी ग्वालिन मनकी जानी ॥ ९७॥

गये श्याम तिहिं ग्वालिनिके घर । देख्यो जाय द्वार नहिं कोऊ इत उत चितै चले तब भीतर ॥ हरि आवत गोपी जब जान्यो आपन रही छिपाई । सूने सदन मथनियांके ढिग बैठि गये

अरगाई ॥ माखन भरी कमोरी देखी लै लै लागे खात । चितै रहे मणि खंभ छाँह तन तासों करैं सयान ॥ प्रथम आज मैं चोरी आयो भलो बन्यो है संग । आप खात प्रतिबिंब खवावत गिरत कहतका रंग ॥ जो चाहो सब देहुँ कमोरी अति मीठो कत डारत । तुम्हैं देख मैं अति सुख पायो तुम जिय कहा विचारत ॥ सुन सुन बात श्यामके मुख की उमँग हँसी सुकुमारी । सूरदास प्रभु निरखि ग्वालि मुख तब भजि चले मुरारी ॥ ५८ ॥

राग बिलावल ।

आज सखी मणि खंभ निकट वीर जहँ गोरसकी खोरी । निज प्रतिबिंब शिखावत या शिशु प्रगट करै जिन चोरी ॥ अर्द्ध विभाग आजते हम तुम भली बनी है जोरी । माखन खाउ कतहिं डारतहो छाँड़ि देहु मति भोरी ॥ हिस्सा न लेहो सभी चाहतहो यही बात है थोरी । मीठो परम अधिक रुचि लागै देहों काढ़ि कमोरी ॥ प्रेम उमँग धीरज न रह्यो तब प्रगट हँसी मुख मोरी । सूरदास प्रभु सकुचि निरखि मुख चले कुंजकी ओरी ॥ ५९ ॥

ग्वालिन घर गये श्याम सांझकी अँधेरी ॥ मंदिर में गये समाय श्यामल तनु लखि न जाय देह मेहरूप कहो को करै निबेरी । दीपक गृह दान करयो भुजा चार प्रगट धरयो देखत भइ चकित ग्वालि इत उतको हेरी ॥ श्याम हृदय अति विशाल माखन दधि बिंदु जाल मन मोह्यो नंदलाल बालकही वेरी । युवती अति भइ निहाल भुज भरदे अंकमाल सूरदास प्रभु कृपालु डारयो तनु फेरी ॥ ६० ॥

राग रामकली ।

माखन चोर री हौं पायो ॥ जावत कहाँ जान कैसे पावत बहुत दिननही खायो । श्रीमुखते उबरी द्वै दतियां तब हँसि कंठ लगायो ॥ परमानंद प्रभु प्राण जीवन धन वेद विमल यश गायो ॥ ६१ ॥

सखि मोहिं हरि दर्शनको चाव॥साँवरे सों प्रीति बाढ़ी लाख लोग रिसाव । श्याम सुंदर कमल लोचन अंग अंग नित भाव॥ सूर हरिके रूप राची लाज रहो चाहे जाव ॥ ६२ ॥

कवित्त ।

धेनुके चरैया प्यारे भैया बलभद्रजूके नंदके ललैया मेरे अँगनामें आउरे । दही दूध बहुत प्याऊं माखन घनो सो लाऊं मीठी मीठी तान नेक गायके सुनाउरे । नंद जूके किशोर मेरे चित्तहूके चोर नेकतो अधर धर बाँसुरी बजाउरे । या छबि ऊपर कोटि काम वारि डारों दयासखी प्रेम वश हिय में समाउरे ॥ ६३ ॥

आया कर साँवरे इन गलियोंमें झूम झूम साँझ औ सबेरे कभी दर्श तो दिखाया कर । जायाकर यमुनाके तट रोज रोज प्यारे बांसुरी अनोखी इक लहजातो सुनाया कर । कादर कहै छाया कर नयनों बिच मेरे आय रूखा सूखा थार हम गरीबोंका पायाकर ॥ खायाकर माखन मलाई दधि लूट लूट कर हाव भाव मेरे हिय में समाया कर ॥ ६४ ॥

चीरा की चटक औ लटक नव कुंडल की भौंहकी मटक मोहि आँखि न दिखाउरे । जादिना सुजान गुण रूप के निधान कान्ह बांसुरी बजाय तनु तपन सिराउरे । एहो बनवारी बलिहारी जाउँ तेरी आज मेरी कुंज आय नेक मीठी तान गाउरे ॥ नंदके किशोर चित्त चोर मोर पंखवारे बंशीवारे साँवरे पियारे इत आउरे ॥ ६५ ॥

राग पीलू ।

बंशीवारे तु मेरी गली आजारे । तेरे बिन देखे कलना परतहै टुक मुखडा दिखलाजारे ॥ रैनि दिना मोहि ध्यान तिहारो बंशी की टेर सुनाजारे । चरणदास सुखदेव पियारे मेरोहि माखन खाजारे ॥ ६६ ॥

सवैया ।

योगिया धर ध्यान रहैं जिनको तपसी तनु गारके खाक रमावें ।
चारहु वेद न पावत भेद बड़े तिवेंदी नहीं गति पावें ॥

स्वर्ग मृत्यु पातालहूमें जाको नाम लिये ते सभी शिरनावैं।
चरणदास कहै ताहि गोपसुता करमाखन दे दे नाच नचावैं ॥६७॥
शंकर से मुनि जाहि रटैं चतुरानन चारिहु आनन गावैं।
जो हिय नेसुक आवतही रसखान महाजन मूढ़ कहावैं॥
जापर देव अदेव भुजंगम वारत प्राणन वार न लावैं॥
ताहि अहीरकि छोहरियां छछिया भरि छाँछ पै नाच नचावैं ॥६८॥

कवित्त।

ब्रह्माहूके ध्यानमें न आवें कभूं एकक्षण शंकर समाधिलाय ध्यान धरत गाढ़ेहै॥ ऋषि और मुनि जाको रैनि दिन धरैं ध्यान ध्यानमें न आवैं कभूं तासों हेत बाढ़ेहै॥ सोई है निरंजन जाकी माया को न आवै अंत ध्यानी ध्यान लाय रहत सहत धूप जाड़ो है॥ देखोरी भाग्य ब्रजवानितनके आज आली ह्वैके अनंत नवनीत माँगै ठाढो है॥ ६९॥ जाके पद परसनको तरसत हैं विश्व ब्रज ग्वालनको खेल माँझ कंधन चढाये हैं॥ जाकी यह माया सुर नर मुनि बांधि राखे सोई गर यशुदा पै ऊखल बँधाये हैं॥ जाको देव यज्ञ में बुलावें नाहिं आवें सोतो नंद एक थार माँझ जेमके सिहायेहैं॥ जाने लै नचाये सब दारुमयी पूतरी ज्यों प्रेमवश गोपिन के हीय में समाये हैं॥ ७०॥ दीनहूं के बंधु ग्वाल मोचो दुःख तत्काल अविनाशी नंदलाल वेदनमें गाये हैं॥ गावत हैं नेति नेति नेति कहि पुकारें वेद शेषके सहस्र मुख पार नहीं पाये हैं॥ ब्रह्माते आदि सनकादि जाको धरैं ध्यान शंकर समाधि लाय हीय में बसायेहैं॥ कहत मयाराम देखो भाग्य ब्रजग्वालिनिके ऐसे घनश्याम दै दै माखन नचाये हैं॥ ७१॥ कोऊ कहै मेरे आगे नेक तू नाच लाला लोन मिली छाँछ दूंगी आछी सी धुंगारके। भोर भयो वाके गयो वासों मेरो वैर भयो धींगसी गुजरियाने आन लियो धायके॥ खिरका सब तोर डारे बासन सब फोर डारे दूध ढकाय दियो बंदरा बुलायके। नंदरानी मुसकानी कछु कछु सकुचानी सूरश्याम उलँभा लियो शीश पै चढायके॥ ७२॥

राग कल्याण।

ब्रजकी अहीरनाके भागभले देखो भैया देवनाको देव कैसी सेवना कर पायो है॥शिव औ विरंचि जाको पार नहीं पावें ताहि गोकुलाकी नारी करतारी दें नचायो है॥ नारद मुनीसे तुंबरूसे पढ़ि पचिहारे व्यास जूकी वाणीसों विमल यश गायो है॥ कहै रणधीर भाग्य भले हैं अहीरनीके प्रेमको पयोधि ब्रज बीथिन बहायोहै॥ ७३॥

उराहनो लीला।

दोहा–योग ध्यान आवें नहीं, यज्ञ भाग ना लेयँ।
ताको ब्रजकी गोपिका, हँसि हँसि माखनदेयँ॥

राग कान्हरो।

माखनकी चोरी रे, तुम सीखे हो करन, जब लागे करन चितचोरीरे। जब ते दृष्टि परे नँदनंदन पाछे फिरों दौरा दौरीरे॥ लोक लाज मर्यादा तोरी वन वन विहरत नवल किशोरीरे॥ आशकरण प्रभु मोहन नागर निगम शृंखला तोरीरे॥ ७४॥

राग देवगंधार।

जो तुम सुनो यशोदा गोरी। नंदनँदन मेरे मंदिर में आज करत हैं चोरी॥ हौं भइ आन अचानक ठाढी कह्यो भवन में कोरी। रहे छिपाय सकुच रंचक ह्वै मनोभई मति भोरी॥ मोहिं भयो माखन पछतावो रीती देख कमोरी। जब गहि बाहिं कुलाहल कीन्हों तब गहि चरण निहोरी॥ लागे लेन नयन जल भर भर में हरि कान न तोरी। सूरदास प्रभु देत निशा दिन ऐसे अल्प सलोरी॥ ७५॥

राग ठुमरी।

तेरारी कन्हैया बलको भैया री यशोदा मैया आज मेरे घर आयो। दधि मेरो खायो मटुकिया फोरी रह्यो सह्यो ढरकायो॥ जो पकरूं तो हाथ न आवे ढूंढ फिरी नहिं पायो। जानकी दास याहि बरजो क्यों ना पूत अनोखो जायो॥ ७६॥

राग मल्हार ।

यहां लो नेक चलो नँदरानीजू ।अपने सुतकेकौतुक देखो कियो दूध में पानी जू ॥ मेरे शिरकी चटक चूनरी लै गोरस में सानीजू । हमरो तुमरो वैर कहाहै फोरी दधि कि मथानी जू ॥ या ब्रजको वसिबो हम छाँड़ैं यह निश्चय कर जानी जू । परमानंद दास को ठाकुर गोकुल कियो रजधानी जू ॥ ७७ ॥

राग ईमन ।

रानीजू लीजिये यह गाम ॥ दीजिये हमको बिदा राम राम है जु हमारी । बसि हैं अनतहिं जाय बात लखि लई है तुम्हारी ॥ आपन तो नाहीं करत री सुतको देत पठाय । तीस दिना की बात हैं यह कापै सहियो जाय ॥ रानी० ॥ मेरे शिर पर बसो गाम काहेको छोरो । श्याम आपनो जान मानले मेरो निहोरो ॥ जो कछु तुम ते सुन कहीं मोहिं कहो समुझाय । मैं तो यह जानो नहीं तुम लीजो सौंह धराय ॥ ग्वालिन गामको मत छोरै ॥ काल्ह तीसरे पहर श्याम गयो भवनन माहीं । वाने कियो जो जियान आवत मुखते कहि नाहीं ॥ बछरा छोरे खरिक ते बांधन को ना जाय । सखा भीर लै द्वारे पैठे दूध दही ढरकाय ॥ रानी० ॥ जेतो खायो दही दूध करलेयो मोते लेखो । दुगनो चौगुनो नौगुनो सौगुनो लेहु विशेखो ॥ माट भरे दधि दूध के घर में चाखत नाय ॥ मोहिं यही अचरज बड़ो पावत तुम घर जाय ॥ ग्वालिन० ॥ काहेको घरको छुये जोलौं कहुँ मिलत परायो । अपनो सुंदर माल काहू पै नजात लुटायो ॥ आप खाय तौहूं सहें मर्कट देत खवाय । जो वे भी चाखत नहीं देत भूमि ढरकाय ॥ रानी० ॥ ७८ ॥

राग भैरवी ।

मेरी भरी मटुकिया लै गयोरी । कछु खायो कछु ग्वालन खवायो रीती कर मोहिं दै गयोरी ॥ वृंदावनकी कुंजगलिन में

ऊंची नीची मोते कहि गयोरी । परमानंद ब्रजवासी साँवरो अंगुठ दिखाय रस लै गयोरी ॥ ७९ ॥

राग जंगलाकाफी ।

दधि पीगयोरी माई आज ॥ तेरो नट खट करगयो चट पट ॥ यह कहा सीख तैं दई कृष्णको ब्रजनारियोंके पट खोलनकी री॥ चला जाय नट खट पीगयो गट गट फिर दिखतारी नहीं ॥ एक रोज गूजरीका दांव जो लगा लहँगे में पकर वाको दाब लाई री॥ तू जो कहे थी मेरो नट नहीं चोर अब याहि लेरी माई ॥ ब्रजकी सखी सब देखनको धाईं आज पकरे गये हैं यादव राईरी ॥ खोलके दिखाओ इतवार नहीं आवे जाने किसको पकर लाईरी ॥ भीतर प्रभूने ऐसो रूप लियो धार गूजरी को पति-भर्तार बनोरी ॥ गूजर जैसी पगडी और तगडी गूजर जैसी डाढी गोडों लौं लटकाईरी॥ बोली ब्रजनारी ऐसी बावरी भई तू आपनी तो ताली तैंने बजवाईरी ॥ तूतो कहेथी तेरो नट पकरो ले गूजर को पकर लाईरी॥ छल कृत रूप देख गूजरी बिहाल भई काढके घुंवट बड़ी शर्माईरी ॥ दूसरी कोठरी में आप रहे बोले मैं तो यहां बैठा माईरी॥ एक बोली ब्रजनारी तू तो बावरी भई आपनी तो हाँसी तैंने करवाईरी ॥ कहे जियारम यह तो पूर्ण ब्रह्म गति ऋषियोंने नहीं पाईरी ॥ ८० ॥

राग रेखता ।

सुनिये यशोदा रानी छोडैं ये ब्रज तिहारो । कहिं जायके बसैंगी अतिही करैं किनारो ॥ नित कहाँ तलक सहिये नुकसान तेरे सुतको । घर जायके हमारे माखन चुरावे सारो ॥ तेरेही पास बालक यह बनके आय बैठे । जब जाय घर सखिनके सुंदर तरुण निहारो ॥ छीके पै हो कमोरी लठिया ते फोरडारे दधिकी मथनियां तोरके माखन सभी बिगारो ॥ नित की हानि हमरी रंगीनयाहि बरजो । ऐसो चपल यह ढीठ यशुदाजी सुत तिहारो ॥ ८१ ॥

राग देस ।

गारी मत दीजो मो गरीबिनीको जायो है । तेरा जो बिगारचो सो तो मोसों आन कहौ बीर मैं तो काहू बातको नहीं तरसायो है ॥ दधि की मट्टुकिया भरी अँगनामें आनिधरी तोल २ लीजो बीर जेतो जाको खायोहै । सूरदास प्रभु प्यारे नेकहू न हूजे न्यारे कान्हरा सो पूत मैंने बड़े पुण्य पायो है ॥ ८२ ॥

राग रामकली ।

मैया मेरी मैं नहिं माखन खायो ॥ भोर भयो गैयनके पाछे मधुबन मोहिं पठायो । चार पहर बंशीबट भटक्यो सांझ परी घर आयो ॥ मैं बालक बैंयनको छोटो छीको किस विधि पायो । ग्वाल बाल सब बैर पड़ेहैं बरबश मुख लपटायो ॥ तू जननी मनकी अति भोरी इनके कहे पतियायो । जिय तेरे कछु भेद उपज है जान परायो जायो ॥ यह ले अपनी लकुट कमरिया बहुतहिं नाच नचायो । सूरदास तब हँसी यशोदा लै उर कंठ लगायो ॥ ८३ ॥

राग काफी ।

बरजो माई मोहनको चंचल चोर चतुर सुत तेरो ॥ आंगन आवै गोरस लेवै दधि मटकी भूपर पटकावै बाल रुआवै धूम मचावै ऐसो नित उठ करत बखेरो ॥ पलनापर ऊखलहिं टिकावै तापर चढकर माखन लावै कपि बालनको टेर खिलावै देखत दुखित भयो मनमेरो ॥ छिप कर भीतर जाय निकासै अंधकार में मणी प्रकाशै ना पावै तो गारी देवै आग लगो उजरो घर तेरो ॥ सांझहिं धेनु वत्स लैआवै यशुदाजू दुख सह्यो न जावै राख गाम अपनो हम जावैं केशव जन मन प्रेम घनेरो ॥ ८४ ॥

राग भैरवी ।

कान्ह नित नये उरहना लावै । दूध दही घर काहू की कमी नहिं नाहक धूम मचावै ॥ तनक दहीके कारण मोहन माखनचोर कहावै । सूर श्याम को यशुमति मैया वारंवार सिखावै ॥ ८५ ॥

राग सहानो ।

देख चरित मोहिं अचरज आवै । जो करता जग पालक हरता सो अव नंद को लाल कहावै ॥ विन कर चरण श्रवण नासा दृग नेति नेति जाको श्रुति गावै । ताको पकर महरि अँगुरी ते आंगनमें चलिबो सिखरावै ॥ ब्रह्म अनादि अलक्ष अगोचर ज्योति अजन्म अनंत कहावै । सो शशि वदन सदन शोभाको नँदरानी निज गोद खिलावै ॥ जाके डर डोलत नभ धरणी काल कराल सदा भय पावै । सो ब्रजराज आज जननी की भौंह चढीको निरखि डरावै ॥ जाके सुमिरण ते जीवनको भव बंधन छनमें छुटजावै । सोई आज बँध्यो ऊखल ते निरखन को सगरो ब्रज धावै ॥ पूरण काम क्षीरसागर पति माँग माँग दधि माखन खावै । भक्ताधीन सदा नारायण प्रेम कि महिमा प्रगट दिखावै ॥ ८६ ॥

राग रामकली ।

यशोदा तू बडी कृपण री माई । दूध दही सब विधि को दीन्हीं सुतडर धरत छिपाई ॥ बालक बहुत नहीं री तेरे एकै कुँवर कन्हाई । सोऊ तो घरही घर डोलै माखन खात चुराई ॥ बृद्ध बैस पूरे पुण्यन ते तैं बैठी निधि पाई । ताहूके खइबे पीबेको कहा इती चतुराई ॥ सुनोन वचन चतुर नागरके यशुमति नंद सुनाई । सूर श्यामको चोरीके मिस देखनको यह आई ॥ ८७ ॥

राग गूजरी ।

यशोदा कान्ह हूं ते दधि प्यारो । डार देहु कर मथत मथानी तरसत नंददुलारो ॥ दूध दही माखन ले वौरें जाहि करत ... गारो । कुम्हिलानो मुख चंद्र देख छबि काहे न नेक निहारो ॥ ब्रह्म सनक शिव ध्यान न पावत सो ब्रज गैयन चारो । सूर श्याम ... बलि बलि जैयै जीवन प्राण हमारो ॥ ८८ ॥

राग धनाश्री ।

यशोदा तेरो कठिन हियोरी माई । कमल नयन माखनके

कारण बांधे ऊखल लाई ॥ जो संपदा देव मुनि दुर्लभ सुपनेहुँ दे न दिखाई । याही ते तू गर्व भरी है घर बैठे निधि पाई ॥ तब काहूको सुत रोवत सुनि दौरि लेत हिय लाई । अब काहे घर के लरिका सों करत इती जडताई ॥ वारंवार सजल लोचन भरि जोवत कुँवर कन्हाई । कहा करूं बलि जाउँ छोरती तेरी सौंह दिवाई ॥ जो मूरत जल थल में व्यापक निगमन खोजि न पाई । सो यशुमति अपने आँगन में दे करतार नचाई ॥ सुरपालक प्रभु असुर सँहारक त्रिभुवन जाहि डराई । सूरदास स्वामीकी लीला निगम नेति नित गाई ॥ ८९ ॥

राग सारंग।

यह सुनिकै हलधर तहँ आये । देखि श्याम ऊखल सों बांधे तबहिं दोउ लोचन भर आये ॥ मैं बरज्यो कइ बेर कन्हैया भली करी दोउ हाथ बँधाये । अजहूं छाँडोगे लँगराई दोउ कर जोर जननि पै आये ॥ श्यामहि छोर मोहिं बरु बांधो निकसत शकुन भले नहिं पाये । मेरो प्राण जिवन धन माधो तिनकर भुज मोहिं बँधे दिखाये । माता सों कह करो ढिठाई शेष रूप कहि नाम सुनाये । सूरदास तब कहत यशोदा दोउ भैया तुम इक ह्वै आये ॥ ९० ॥

अब घर काहूके जनि जाहु । तुम्हरे आज कमी काहेकी कत तुम अनतहिं खाहु ॥ जरै जेवरी जिन तुम बांधे बरै हाथ महराय । नंद मोहिं अति त्रास करैगो बांधे कुँवर कन्हाय ॥ बलि जाऊं अपने हलधर की छोरत है जो श्याम । सूरदास प्रभु खात फिरो जिन माखन दधि तुम धाम ॥ ९१ ॥

मगरोकन लीला ।

राग आड़ा कालिंगड़ा ।

छाँडो मोरी गैल नातो गारी मैं सुनाऊंगी । औरनके भूले कहुँ मोते जिन अटको अभी यशुमति पै पकर लैजाऊंगी ॥ पहले ही सों अपनी बड़ाई कहा करूं मैं देखियो तो कैसो तुम्हैं नाच नचा-

ऊंगी । जो मैं तुम्हें सखी न बनाऊं नारायण तो मैं निज बाप की न ओजम कहाऊंगी ॥ ९२ ॥

राग दादरा ।

प्यारे जिन मेरी बाहँगहो ॥ मारग में सब लोग देखतहैं दूरी क्यों न रहो । मनमें तुम्हरे कौन बात है सोई क्यों न कहो ॥ कहिहों जाय आज यशुमति सों हमरी बाट रोकत हो । इतने पै नहिं मानत आनँदघन लरकाही तुम हो ॥ ९३ ॥

राग सोरठ ।

छांडो लँगर मोरी बहियाँ गहो ना ॥ मैं तो नारि पराये घर की मेरे भरोसे गुपाल रहो ना । जो तुम मेरी बेहां गहत हो नैन मिलाय मेरे प्राण हरो ना ॥ वृंदावनकी कुंजगली में रीत छोड अनरीत करो ना । मीरा के प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल चित टार टरो ना ॥ ९४ ॥

राग मलार ।

छैल गैल मत रोके तू हमारी रे ॥ चाल कुचाल चलो जिन चंचल चर्चा करैं सब पुर नर नारी रे ॥ हम सुकुमार ठाढी कांपत हैं शिरपर दधि की मटुकिया भारी रे ॥ नारायण ब्रज कौन बसैगो ऐसी अनीति जो करनी विचारी रे ॥ ९५ ॥

राग विहाग ।

बरजो नहीं मानत बार बार ॥ जब मैं जात सखी दधि बेचन भाजत कंकर मार मार । लै लकुटी मटुकी महि पटकत घूंघट देखत टार टार ॥ हरवा तोरत गरवा लगावत करत कंचुकी तार तार ॥ कपटी कुटिल कठोर श्याम घन देखत छवि तरु डार डार । हरि विलास ब्रजराज हठीलो बैठगई मैं हार हार ॥ ९६ ॥

राग झँझोटी ।

बड़ो खोटा ढोटा नँद को आली । जाको नाम कहत बनमाली ॥ मिल्यो यमुन तट हँस हँस मटकत लपट झपट पटकी मटकी च

दधि गट नट खट कठिन हियो मोहिं देत चलो गयो गाली ॥ माथे पै मुकुटधरे कानमें कुँडल पहरे भाल पर तिलक गोरोचन को करे गल बैजंती मुक्तमाल आली मुख तमोल की लाली । कटि पीत वसन मानो घन दामिन नूपुर बजत वरणै छबि को कवि देखतही मन हरचो युगल प्रभु तिरछी चितवनशाली ॥ ९७ ॥

लावनी ।

सुनो यशोदारानी तेरे गिरिधारीने नाहक लूटी । मैं देत दुहाई बबा नँदजूकी हाहाखाके छूटी ॥ मैं दधि बेचन जात वृँदावन शिर धरे गोरस की मटकी । आन अचानक, तेरे कान्हा ने मेरी बैहां झटकी ॥ जब झटकी हिरदै में खटकी लटकी शिर में आ अटकी । मैं व्याकुल है गई, रहीना सुरत मोहि घूँघुट पटकी । ऐसी भई सुध हरन गिरी मैं धरन मेरी मटुकी फूटी ॥ मैं देत० ॥ एक सखी कह चुकी दूसरी कहै सुनो यशुदारानी । आज या ब्रज में, तेरे कान्हा ने धूम ऐसी ठानी ॥ घाट बाट पै रोकत डोलै नहीं भरन देवेपानी । पानी भरत में, दान माँगत ऐसो दधिको दानी ॥ कर की चूरी गई करक मेरी मोहनमाला न्यारी टूटी ॥ मैं देत० ॥ ९८ ॥

राग देस ।

सुनरी गुण कान्ह कुँवरके ॥ तेरो री सुत चपल कहावे यमुनाके तट बंशीबटके निकट नट झटक मटक दधि गटक पियो ॥ बदन की छबि कान्हा मुकुटको शिर धर कदमके तरु तर कुँवर दुरचो ॥ बाँसुरी बजाई मेरी सुध बिसराई कान्हा देख ललाई मेरो कर पकरचो ॥ ९९ ॥

ठुमरी ।

मोको डगर चलत दीन्हीं गारीरे । ऐसो री ढीठ बनवारी री गोइयां विनती सकल कर हारी रे ॥ नीर भरन मैं चलीहूं धामसों बीच मिले पनघटमें कान्हरे । वहतो जाने नंद पनघटको सनद पिया निरखत सगरी पनिहारी रे ॥ १०० ॥

राग भैरव ।

देखो री मथनियां कैसे फोरी नँदलालने ॥ वन में निवासी भयोरी नंदको करत फिरत बरजोरी ॥ नंदलालने० ॥ जित जाऊँ तित आडोइ आवे एरी दैया मोते जोर जनावे री ॥ यह ब्रज कैसे बसेगोरी । सासुरे जाऊं तो सासलरे इत यह घर घाले री । आत्माराम नरसिंहके स्वामी कहा मुख ले घर जाऊं हो कान्हा मोतिनकी लर तोरी ॥ १०१ ॥

रागटोडी ।

गागर ना भरन देत तेरो कान्ह माई । हँस हँस मुख मोर मोर गागर छिटकाई ॥ घूँघटपट खोल खोल साँवरो कन्हाई । यशुमति तैं भली बात लालको सिखाई ॥ अगर बगर झगर करत रार तो मचाई । हौं तो बीर यमुना तीर नीर भरन धाई ॥ गिरिधरके चरण ऊपर मीरा बलिजाई ॥ १०२ ॥

राग भूपाली ।

लंगर मोको गारियां दे दे जारी ॥ यह कलका छोकरा यह ढीठ लंगर ॥ गारीकी गारी टोनेका टोना तुम जीते हम हारी हारी । आवत जावत प्यारा लगत है चलत चाल गति प्यारी प्यारी ॥ मोर मुकुट माथे तिलक बिराजे कुंडलकी छबि न्यारी न्यारी ॥ दोउ कर जोरे विनती करतहों सूर शरणागत तिहारी तिहारी १०३

राग सिंध ।

रोके मोरी गैलवा मैं कैसे जाऊं पनियां ॥ शीश मुकुट कंचनको झलकैं मकर मनोहर कुंडल अलकै माथे खौर चँदनकी राजै उर बैजंती माल विराजै पीतांबर कटि कन्यारी चौतनियां ॥ अधर सुधारस वेणु बजावै ग्वाल बाल लिये सँगकी आवे कहा न माने नंद महरको माखन खात फिरत घर घरका ... री निडर झकझोरी मोरी बोनियां ॥ कर किंकिणियां नूपुर बाजैं रुनुझुनात बहु मुनि मन राजैं पग पैंजनियां सुंदर साजैं दर्श देख अघ दूर ते भाजैं

अति चंचल अलबेली चितवनियां ॥ गागर फोर मोर मुख हँसके करते गह निज उर ते लचके सूरश्याम प्रभु नागर नटको बरज रही मानत नहीं हटको काहेना बरजोरी यशोदा महारानियां १०४

राग रेखता ।

यमुना न जान पावें भरने न देत पानी । ढोटा बड़ा अनोखाहै नंदको गुमानी ॥ लेकर जो गागर गृह से यमुना पै भरने आई । आगे जो ठाढो मग में वह साँवरो कन्हाई ॥ देखी सखी अकेली बैंहां पकर मरोरी । छाती सों कर लगावे गल हीर हार तोरी ॥ निरखी अली नवेली या कुंज बाट पाई । हँस हँसके ललितकिशोरी उर कंठसों लगाई ॥ १०५ ॥

राग छायानट ।

अंगुरी मेरी मरोर डारी छीन दधि लीना साँवरो ॥ हौं जो जात कुंजन दधि बेचन बीच मिले गिरिधारी ॥ अगरसुने मोरी वगर सुनेगी सास सुने देवे गारी ॥ चंद्र सखी भज बालकृष्ण छबि हरि चरणन बलिहारी ॥ १०६ ॥

राग श्यामकल्यान ।

नट नागर चितचोर गेंद तक मारी सँवलिया ॥ भयो निशंक अंक भरलीनी भ्रुकुटी नयन मरोर॥ कहा करूं कछु वश ना मेरो ऐसो जालिमजोर ॥ रसिक हठीलो जिया तरसावे मानत नाहिं निहोर १०७

नयनोंकी मारीरे कटारी मेरे ॥ सुनियोरी मेरी पार परोसन ढीठ भयो गिरिधारी ॥ यमुनाके तट भेट भई मोसों ऐसो छैल बिहारी । सास बुरी घर नंँद हठीली देवर सुनै देय गारी ॥ मधुर अली घर जात बनै ना पीर उठी अति भारी ॥ १०८ ॥

राग भूपाली ।

लंगर मोरी गागर फोर गयो ॥ सखी जाने कहांसों अचक आय लंगर ० ॥ नई चुँदरिया चीर चीर कर निपट निडर पुनि आँख दिखावे देख वीर अति कोमल बैहां दोउ कर पकर मरोर

गयो ॥ मोसों कहे सुन एरी सुंदरी तो समान ब्रज सुघर न कोऊ नख शिख लों छबिपरख निरख मुख सघन कुंज की ओर गयो ॥ कहँ लग कहों कुचाल ढीठ की नाम लेत मेरो जीया कांपे नारायण में घनो बरजरहि मोतियनकी लर तोर गयो ॥ १०९ ॥

राग रेखता ।

सुनले यशोदारानी तू लालकी बड़ाई । सब लोक लाज वान यमुना में धो बहाई ॥ भोरेहि मैं गई जो जल भरवेकाज भयना। पीछे सों आ अचानक उन मूँद मेरे नयना ॥ डरपी मैं हाय को है तब बोले टेढे बैना । हौं तो रही अकेली वा संग ग्वाल सैना ॥ तब सबने हो हो करके तारी मेरी बजाई । सुनले० ॥ हँस हँसके छैल मोसों करवे लगो ठठोली । वह छबि तिहारे मुख की अब कासों जावे तोली ॥ निरखे कबू बदनको कबहूं व छूवे चोली। मैं तो सकुचकी मारी वासों कछू न बोली ॥ पुनि बैहाँ मेरी झटकी गागर धरणि गिराई । सुनले० ॥ कबहू कहे बतारी तू क्यों अकेली आई । कै घर में तेरे पतिकी तोसों भई लराई ॥ तू चल भवन हमारे कर मोसों मित्रताई । विधना ने तेरी मेरी जोरी भली बनाई॥नारायण वाकी बातें सुनके में अति लजाई॥ सुनले०॥११०॥

सुनिये यशोदा कान दे अरजी यही हमारी । हम छांडजाँय ब्रजको मरजी यहीं तुम्हारी ॥ नित घाट बाट नट खट जेहर झडाक पटकै । बैया मरोरे झटपट छातीसों हार झटकै ॥ पुनि कूद कर कन्हाई घूंघट सम्हार खोलै । ठोढी सों कर लगाके रस कीसी बात बोलै । निज दृष्टि बाण करके भौं हैं कमान ताने । चोरी सिवाय रसके वह और कछु न जाने ॥ चोरी करे सो चोरी घरमें डगर में पावे । भाजन को देत फोरी माखन दही लुटावे ॥ कोई सखी इकेली घर में बगर में पावे । हँसके शरीर मसके वाको दया न आवे ॥ हम बार बार तुमपे करती पुकार हारी । तुमने दया हमारी कबहूं नहीं विचारी ॥

कीजे कृपा शिताबी हम गोपकी कुमारी। दीजे निकास देखूं कैसो रसिक विहारी॥ १११॥

राग झूलनाके स्वरमें।

लिये फिरत सँग सँग सखियनको जाने मोहनी डारी है। ढूंढ़त डोलत आप आपको ऐसो खेल खिलारी है॥ आप अमृतघट आपहिंपीवै आपहि प्यावन हारीहै। आपहि दृष्ट अदृष्ट आपही आपहि गोपकुमारी है॥ बंशी बजन दिशा अवलोकन घूँघट ओट निहारी है। सब सखियन में चतुर राधिका श्रीवृषभानु दुलारी है॥ सुनो सखी जाके सँग डोलो सोइ त्रिया वपु धारी है। लीजै पकर निकस कहुँ जाय न यही रसिक वनवारी है॥ ११२॥

गोचारनलीला।

राग रामकली।

मैया मैं गाय चरावन जैहों। तू कह नंद महर बाबा सों बड़ो भयो न डरैहों॥ श्रीदामा आदि सखा सब अपने औ दाऊ सँग लैहों। बंशीवटकी शीतल छैयां खेलत अति सुख पैहों॥ देहु भात कामर भर लैहौं भूख लगै तब खैहों। परमानंद प्रभु तृषा लगे जब यमुनाजलहि अचैहों॥ ११३॥

राग सारंग।

शीश मुकुट मणि विराज कर्ण कुँडल अधिक साज अधर लाल चिवुक सुँदर यशुमतिको प्यारो। कमल नयन कुँवर लाल कुंकुम को तिलक भाल गुंज माल कंठ धार कान्ह कमरी वारो॥ चारन वन धेनु जात मुखमें मुरली सुहात गोपिनको चित चुरात कहियत नँदवारो। अति स्वरूप श्याम गात दरश देखे पाप जात मिहर दास प्रभु प्रवीन पतित तारन हारो॥ ११४॥

राग बिलावल।

खेलन में को काको गुसैयां। हरि हारे जीते श्रीदामा बरबश ही

कत करत रुसैयां ॥ जाति पाँति हम ते बड़ नाहीं ना हम बसत तुम्हारी छैयां । अति अधिकार जनावत ताते जाते अधिक तुम्हारे गैयां ॥ रूठ करै तासों को खेलै हाहाखात परत तब पैयां । सूरदास प्रभु खेल्यो ही चाहें दाँव दियो कर नंद दुहैयाँ ॥ ११५ ॥

राग जंगला सिंध ।

न्यारी करो प्रभु अपनी गैयां । नाहिन बनत लाल हम तुमसों कहा भयो दशगैयां अधिकैयां ॥ ना हम चाकर नंद बबाके ना तुम हमरे नाथ गुसैयां । आपन रहत नींद को माती हम चारत तेरी वन बन गैयां ॥ कबहूं जाय कदम चढ़ बैठे हम गैयन सँग लगत पठैयां । मानी हार सूरके प्रभुने अब नाहिं जाऊं मोहिं नँदकी दुहैयां ॥ ११६ ॥

राग टोडी ।

आज कौने धों बन चरावत गाय कहा धों भई बड़ी बेर । बैठे कहँ सुध लेहुँ कौन विधि ग्वालि करत अवसेर ॥ वृन्दावन आदि सकल बन ढूंढ्यो जहिं गायनकी टेर । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि कैसे दुराए दुरत डुँगरन की ओट सुमेर ॥ ११७ ॥

राग सारंग ।

ब्रज वासिन पटतर कोउ नाहीं । ब्रह्म सनक शिव ध्यान न पावत तिनकी जूठन लै लै खाहीं ॥ धन्य नंद धनि जननि यशोदा धन्य जहां अवतार कन्हाई । धन्य धन्य वृंदावनके तरु जहँ विहरत प्रभु त्रिभुवन राई ॥ हलधर कहत छाक जेंवत सँग मीठो लगत सराहत जाई । सूरदास प्रभु विश्वंभर है ग्वालन कौर अघाई ॥ ११८ ॥

राग अंबीर कल्यान ।

ठुमक गति चलत अनोखी चाल । मोर मुकुट मकराकृत कुंडल केसर बेंदी भाल ॥ आगे गैयां पाछे गैयां सँग सोहैं ब्रजबाल । विष्णुदास मुरलीधरकी छवि देखत भई निहाल ॥ ११९ ॥

राग केदारा ।

बन आये बनवारी। शिर धार चंदन खौरि मोतियनकी गल माला मोर मुकुट पीतांबर सोहै कुंडलकी छबि अति न्यारी ॥ वृंदावन की कुंजगली में चाल चलत गति अति प्यारी । चंद्रसखी भज बालकृष्ण छवि चरण कमल पर बलिहारी ॥ १२० ॥

राग जंगला ।

चले आते हैं मोहन वनसे धेनु चराये हुए। लिये बंशी अधर पर धर मधुर सुर गाये हुए ॥ उडी गोरज परी मुख पै छबीले लाला हूंके। लटकता नाक में मोती कुंडल झलकाये हुए ॥ मुकुट की लटक पै अटकीं मोरी अँखियां यह लाला । लेगई जो मन मेरा जुलफें नागिन बल खाये हुए ॥ नयननकी सैन दे मोही सकल ब्रज हू की बाला । परी वश प्रेमके ऐसी छुटती नहीं छुडाये हुए ॥ अपने कृष्णदास पै कीजिये कृपा नंदजूके लाला । दीजिये दर्शन चरणसों रहूं लिपटाये हुए ॥ १२१ ॥

राग कान्हरो ।

देखन दे मोरी बैरन पलकें । निरख स्वरूप मदन मोहनको बीच परत बज्जर सी सलकें ॥ आगे आगे धेनु पाछे नँदनंदन गोचरणन रज मंडित अलकें । कुंडल कर्ण कोटि रवि पसरे परत कपोलन में कछु झलकें ॥ ऐसो स्वरूप निरख मोरी सजनी कहारी कियो इस पूत कमल के। नंददास जननकी यह गति तरफत मीन भाव बिन जलके ॥ १२२ ॥

राग खम्माच ।

लटक लटक चलत चाल मोहन आवै।भावै मन अधर मुरली मधुर सुर बजावै ॥ चंदन कुंडल चपल डोलन मोरमुकुट चंद्रकलन मंद हँसन जियाकी फँसन मोहनी मूरत राजै । भ्रुकुटी कुटिल चपल नयन अरुण अधर मधुरे बैन गति गयंद चारु तिलक भालपर

विराजै । लछनदास श्याम रूप नख शिख शोभा अनूप रसिक भूप निरखि बदन कोटि मदन लाजै ॥ १२३ ॥

राग गौरी ।

लटकत चलत युवति सुखदानी । संध्या समय सखा मंडल में शोभित तनु गोरज लपटानी ॥ मोर मुकुट गुंजा पियरो पट मुख मुरली बाजत मृदुबानी । चतुर्भुज प्रभु गिरिधारी आये वन ते ले आरती वारत नँदरानी ॥ १२४ ॥

राग गौरी ।

मैया मोरी कमरी चोर लही । मैं वनजात चरावन गैयां सूनी देख गही ॥ एक कहै कान्हा तेरी कामर यमुना में जात बही । एक कहै श्याम तेरी कामर सुरभी खाय गई ॥ एक कहत नाचो मेरे आगे लेदेहों और नई । सूरदास यशुमतिके आगे अँशुअन डार दई॥

राग कान्हरो ।

पौढे श्याम जननि गुणगावत । आज गयो मेरो गाय चरावन यह कहि मन हुलसावत ॥ कौन पुण्य तप ते मैं पायो ऐसो सुंदर बाल । हर्ष हर्षके देत सखनको सूर सुमनकी माल ॥ १२६ ॥

कालीदमनलीला ।

छंद ।

गेंदके संग कूद बालक यमुना जल पैठ धायके । नाग नागिन करत क्रीडा हरि उतरे तहां जायके ॥ कौन दिशा ते आयोरे बालक कहाँ तुम्हारो गामहे । कौन सखीके पुत्र जो कहिये कहा तिहारो नाम हे ॥ पूर्व दिशा ते आयेरी नागिन गोकुल हमरो माम हैं । मात यशोदा पिता नंदजू कृष्ण हमरो नाम है ॥ प्रभुके सन्मुख कहत नागिन जारे बालक भागके । तेरो रूप देखे दया उपजे नाग मारे जागके ॥ भागे कुलको दाग लागे अब भागे कैसे बने । होनी होय सो होय री नागिन नागतो नाथे बनै ॥ असुर राजा दुखी धरणी नृप चोर बन आइयां । कंस सेती द्वंद्व कीनो

नाग नाथन आइयां ॥ कै बालक तुम मग जो भूले कै घर नारि रिसाइयां । कै तुम्हरे मन क्रोध उपज्यो बालक जूझन आइयां ॥ ना नागिन हम मग जो भूले ना घर नारि रिसाइयां । ना हमरे मन क्रोध उपज्यो नाग नाथन आइयां ॥ ले बालक गलहार माला सवा लखकी बोरियां । सो तौ लै घर जाउ रे बालक नागसों देउँ चोरियां ॥ कहा करों गलहार माला सवालखकी बोरियाँ । वृंदावन में गडो हिंडोरा नागकी करों डोरियां ॥ चौंसठ चोप मरोर नागिन नाग जाय जगाइयां । जागो हो बलवंत योधा बालक जूझन आइयां ॥ जब उठ हो जलके राजा इन्द्र जल घहराइयां । प्रभुके मुकुटको झपट कीनो शब्द ताल बजाइयां ॥ दोऊने मिलके द्वंद्व कीनो राग भेद सुहाइयां । सहस फण प्रति निर्त कीनो थेइ थेइ शब्द उचारियां ॥ कर जोर नागिन करत स्तुति कुटुम सहित उठ धाइयां । नाथ अब अपराध क्षमा कर कृपा हम पति पाइयां ॥ बावन बलिके द्वार हरिजू आप रूप बढाइयां । मच्छ कच्छ वाराह नरसिंह राम रूप दिखाइयां ॥ हम दासी प्रभुजू तिहारी मत मारो छोडो नागको । प्राणदान तुम देहु हमको राखो नाथ सुहागको ॥ नंदनँदन तब भये राजी दियो काली छोडके। करि अनुग्रह दास कीनो ताके मदको तोडके ॥ कालीदह में नाग नाथ्यो मथुरा कंस पछारियां । प्रभु मदन मोहन रहस मंगल याहि विधि सों गाइयां ॥ १२७ ॥

राग काफी ।

कालीके फनन ऊपर निर्त्तत गोपाल लाल अद्भुत छबि कहि न जाय त्रिभुवन मन मोहैं । तत्ता थेईथेई करत हरत सबके चित्त जात गात सुर नर मुनिजन चित्र लिखे सोहैं ॥ रुनक झुनक नूपुर धुन उठत उठत पैजनी पग ठुमक ठुमक किंकिणी कटि बाजत चित करखें । विद्याधर किन्नर गंधर्व जहां उघटत गत जय जय जय भाषत सुर बधू पुष्प बरषें ॥ ज्यों ज्यों फण ऊंचे

करत त्यों त्यों कृष्ण मारें लात देत न अवकाश प्रभु नाचत गतिधीमें। तरुण वदन गरल वमन सरल किये या विधि कर लटक लटक पटकत पग ललित रंग भीने ॥ नारदादि शिव विरंचि तज प्रपंच धरत ध्यान ताको पग दुर्लभ सोइ उरग शीश धारें । विद्याधर प्रभु दयाल तज विवाद कियो निहाल काली तेरे धन्य भाग बिसरत न बिसारें ॥ १२८ ॥

तांडव गति मुंडन पर निर्तत वनमाली । पंपंपं पग पटकत फंफंफं फनन ऊपर बिंबिंबिं विनती करत नाग बधूआली ॥ संसंसं सनकादिक नंनंनं नारदादि गंगंगं गंधर्व सभी देत ताली ॥ सूरदास प्रभुकी बानी किंकिंकिं किनहूं न जानी चंचंचं चरण धरत अभय भयो काली ॥ १२९ ॥

राग कान्हरो ।

जबहिं श्याम तनु अति विस्तारयो । पटपटात टूटत अँग जान्यो शरण शरण अहिराज पुकारयो ॥यहवाणी सुनतहिं करुणामय तबहिं गये सकुचाये । यही वचन सुन द्रुपदसुताके दीनो वसन बढाये ॥ यही वचन गजराज सुनायो गरुड छांड तहँ धाये । यही वचन सुन लाक्षागृहमें पांडव जरत बचाये ॥ यह वाणी सहिजात न प्रभु पै ऐसे परमकृपाल । सूरदास प्रभु अंग सकोरयो व्याकुल देख्यो व्याल ॥ १३० ॥

वंदौं मैं चरण सरोज तिहारे । सुंदर श्याम कमल दल लोचन ललित त्रिभंग प्राणपति प्यारे ॥ जेपद पद्म सदाशिवको धन सिंधु-सुता उरते नाहिं टारे । जे पद पद्म तात रिस त्रासत मन वच क्रम प्रह्लाद सम्हारे ॥ जे पद पद्म फिरत वृंदावन अहि शिर धरि अगणित रिपु मारे । जे पद पद्म परस ब्रज युवती सर्वस दे सुत सदन बिसारे॥ जे पद पद्म लोकत्रयपावन सुरसरि दरश कटत अघभारे । जे पद पद्म परसि ऋषिपत्नी नृप अरु व्याध अमित खल तारे ॥ जे पद

पद्म फिरत पांडव गृह दूत भये सब काज सँवारे। ते पद पंकज सूरदास प्रभु त्रिविध ताप दुख हरण हमारे॥ १३१॥

श्याम कमल पद नख की शोभा। जे नख चंद्र इंद्र सुर परशें शिव विरंचि मनलोभा॥ जे नख चंद्र सनक मुनि ध्यावैं नाहिं पावत मर्माहीं। जे नख चंद्र प्रगट ब्रज युवती निरखि २ हर्षाहीं॥ जे नख चंद्र फणिंद्र हृदय ते एको निमिष न टारत। जे नख चंद्र महामुनि नारद पलक कहूं न बिसारत। जे नख चंद्र भजत खल तारत रमाहृदय नित पर्शत। सूर श्याम नख चंद्र विमल छबि गोपी जन मिल दर्शत॥ १३२॥

राग बिहाग।

अबकी राखि लेहु गोपाल। दशो दिशा ते दुसह दवागिनि उपजी है यहि काल॥ पटकट बांस कांस कुश चटकत लटकट ताल तमाल। उचटत अति अंगार फुटत फिर झपटत लपट कराल॥ धूम धुंधि बाढी धुर अंबर चमकत बिच २ ज्वाल। हरिन वराह मोर चातक पिक जरत जीव बेहाल॥ जिन जिय डरो नयन सब मूंदो हँसि बोले नँदलाल। सूर अनल सब बदन समानी अभय करे ब्रज बाल १३३॥

गोवर्द्धनलीला।

राग मलार।

देखो माई बादर की बरिआई। मदन गोपाल धरचो कर गिरिवर इंद्र ढींठ झर लाई॥ जाके राज्य सदा सुख कीनो ताको शमन बडाई। सेवक करै स्वामिसों सरवरि इन बातन पति जाई॥ इंद्र ढीठ बलि खात हमारी देखो अकिल गँवाई। सूरदास तिनको काको डर जिहिं वन सिंह कन्हाई॥ १३४॥

राग बिलावल।

राखि लेहु गोकुलके नायक। भीजत ग्वाल गाय गो सुत सब

विषम बूँद लागत जनु सायक ॥ वर्षत मूशल धार सैनपति महा-मेघ मघवाके पायक । तुम बिन ऐसो कौन नंदसुत यह दुख दुसह मेटिवे लायक ॥ अघमर्दन बकबदन बिदारन वकी विनाशन सब सुखदायक । सूरदास तिनको काको डर जिनको तुमसे सदा सहायक ॥ १३९ ॥

राग लावनी।

साँवरे शरणागत तेरी । इंद्र ने आय ब्रज घेरी ॥ देखोजी यह बादर मिल आये। दामिनी दमकत भरलाये ॥ मेघभर ओला वरसावें। भाग अब कहो कितको जावें ॥ कहोजि अब कैसे बनें परयो इंद्रसों वैर। कोप्योहै पृथिवीको पालक होगी किसविधि ठैर ॥ जुगत हम बहुतेरी हेरी ॥ साँवरे०॥ कहीं हम तुमरी सब मानी। भेट गिरिवर की मन ठानी ॥ इंद्रकी झूंठ सभी जानी। लखी हम तुमरी नादानी ॥ गोकुल राजा नंदजू जाघर कुँवर कन्हाय ॥ ब्रथा वचन अब होत तिहारो जनकी करो सहाय ॥ यतन में नहिं लाओ देरी ॥ साँवरे० ॥ कहत हम तुम्हरे गुण भारी । पूतना बालकपन मारी ॥ दुष्टनी माया विस्तारी । बनी आप सुंदर नारी ॥ कुच में जहर लगायके दियो कृष्ण मुखमाहिं। एक मासको रूप तिहारो जीवत छोडी नाहिं ॥ मारकर मारग में गेरी ॥ साँवरे०॥ जो निर्मल जल यमुना को कियो । तुरतही दावानल तैं पियो ॥ अभय ब्रजबासिन को करादियो। खैंच कर मन सबको हर लियो ॥ ब्रज तेरीको साँवरे करै इंद्र बेहाल। अबके सहाय करो नँदनंदन करुणासिंधु गोपाल ॥ शरण यह ब्रज मंडल तेरी। साँवरे०॥ अधर हरि आपन मुसुकाये। वचन यह मुखते बतलाये ॥ कहो तुम ह्यां कैसे आये। सबी मिल गिरिवर पै धाये ॥ नख पर गिरिवर धारके कियो कृष्णने खेल । गोवर्द्धनके शीश पर दियो सुदर्शन मेल ॥ अधर धर बंशीको टेरी ॥ साँवरे०॥ सोहे शिर पचरंगी चीरा । लगे

मुख पाननको बीरा। गले मोतिनाकि माल हीरा ॥ सोहै कटि पीतांबर पीरा। सात कोसके बीच में गोवर्द्धन विस्तार। सात वर्ष को रूप हरीको लीनो पुष्प समान ॥ अशीशां दे रही ब्रजसारी ॥ साँवरे ० ॥ इंद्रकर कोप कोप गरजे। नहीं जल गिरिवर पर बरसे ॥ दामिनी घन घन में चमके। कि मूशलधार परी बरसे ॥ वर्ष वर्षके हारचो सुरपति तब जान्यो जगदीश। दोनों हाथ पसारके धरचो चरण में शीश ॥ मेरी बुधि माया ने फेरी ॥ साँवरे ० ॥ अचंभव याको कछु नाहीं। इंद्र तो लाख कोटि ताईं ॥ बनावत पल छिनके माहीं। बिगारत देर कछू नाहीं ॥ उत्पति परलै जगतकी गिरिधारीको खेल। गंगाधर ब्रह्मा शिव ध्यावें इंद्र विचारो कौन ॥ नामते काटो यम बेरी ॥ साँवरे ॥ १२६ ॥

प्रथम सनेहलीला।

राग गौरी।

बूझत श्याम कौन तू गोरी। कहां रहत काकी है बेटी देखी नहीं कबहुँ ब्रज खोरी ॥ काहेको हम ब्रज तन आवत खेलत रहत आपनी पोरी॥सुनत रहत श्रवणन नँद ढोटा करत फिरत माखनकी चोरी ॥ तुम्हरो कहा चोर हम लीनो खेलन चलो संग मिल जोरी। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि बातन भुरै राधिका भोरी ॥१३७॥

राग धनाश्री।

प्रथम सनेह दोउअन मन मान्यो। नयन सैन बातें सबकीनी गुप्त प्रीति शिशुता प्रगटान्यो ॥ खेलन कभूँ हमारे आवो नंद सदन ब्रजधाम। द्वारे आय टेर मोहिं लीजो कान्ह है मेरो नाम ॥ जो जानो घर दूर हमारो बोलत लेहों टेर। तुम्हें सौंह वृषभानु बबाकी प्रात सांझ इक बेर ॥ सूधे निपट देखियत तुमको ताते करियत साथ। सूर श्याम नागर उत नागरि राधा हरि मिल गाथ ॥ १३८ ॥

राग आसावरी ।

खेलनके मिस कुँवरि राधिका नंदमहर घर आई हो । सकुच सहित मधुरे सुर बोली घर हैं कुँवर कन्हाई हो ॥ सुनत श्याम कोकिल धुनि वाणी निकसे अति अतुराई हो । माता सों कछु कलह करत हरि डारचो रिस बिसराई हो ॥ मैया री तू इनको चीन्हति वारंवार बताई हो । यमुना तीर काल्हि मैं भूल्यो बाहँ पकरि मेरी लाई हो ॥ अब तो यहां तोहिं सकुचति है मैं दै सौंह बुलाई हो । सूरश्याम ऐसे गुण आगर नागरि बहुत रिझाई हो ॥ १३९ ॥

कवित्त ।

कीरति महरानी वृषभानु आदि गोप गोपी कैसे या कलि माहिं धन्य कहलावते ॥ कौन तप करतो यहि ब्रज माहिं बसबेको कौन बैकुंठहूके सुख बिसरावते ॥ नागरिया जोपै श्री राधे प्रगट नहोती तो श्याम पर कामहूं के बिपती कहावते ॥ छायजातीजडता बिलाय जाते कवि सब जर जातो रस तो रसिक कहा गावते ॥

आँख मिचौनीलीला ।

राग गौरी ।

हो प्यारी लागे ब्रजकी डगर । लुक लुक खेलत आँख मिचौनी चरण पहारी बगर ॥ सात पांच मिल खेलन निकसीं कोकिला वन की डगर । परमानंद प्रभुकी छबि निरखत मोहि रह्यो ब्रजसगर ॥ १४१ ॥

राग आसावरी ।

गावैं देदे तारियांहो ब्रज की नारियां सुकुमार । नंदके नंदन हो ब्रजके चंदन रस गार ॥ मिलि बर्सानेकी गोरी । गारी गावैं नवल किशोरी ॥ तुम सुनो नंदके नंदा । तुमको पूछैं सब ब्रज चंदा ॥ तेरी बहन छैल छिनगारा । हमारे श्रीदामा ते यारी ॥ तेरी बडी बिनोदनताई । जाकी सब जग करत हँसाई ॥ नँदनंदन तेरी बूआ । सो करै झूठके पूआ ॥ नँदनंदन तेरी काकी । सो कामकला में पाकी ॥

नँदनंदन तेरी मौसी । सोरहत सदा मन हौसी ॥ नँदनंदन तेरी मामी । सो सब अवलन में नामी॥नँदनंदन तेरी नानी । वाकी बात न हमते छानी ॥ नँदनंदन तेरी दादी । सो सदा फिरै उन्मादी ॥ गोरे नंद यशोदा मैया । तुम कारे कौनके दैया ॥ सुध न्हाय यशोदा रानी । काहू कारे ते रति मानी ॥ अपनी यशुमतिको गहि आनो । सो आय मिलै वृषभानो ॥ यह नँद वृषभानु सनेही । यह एक प्राण द्वैदेही ॥ वे नंदगामकी वाला । यॉं बर्सानेके लाला ॥ गठ जोरे आनि करावो । हथरेलो हमें दिवावो ॥ यह रहस किशोरी गायो । सो वास सदा ब्रज पायो ॥ १४२ ॥

राग जंगला ।

यशोदा ने कारी अँधेरी में जायो । याते कारो रूप हरि पायो ॥ कीरति गोद गोपाल लिये मुख चूमत मोद बढायो । रूपकी राशि मयंक मुखी मेरी राधेको रूप लजायो ॥ नाम अनेक सुने घन-श्यामके जब से गर्ग गृह आयो । ना हमने वसुदेव सुने वासु-देव कहांते आयो ॥ कर्मकी रेख मिटै ना सजनी वेद पुराणन गायो । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको वेद विमल यशगायो ॥१४३ ॥

राग काफी ।

भूषण अपने लेरी मैया । मोरकि चंद्रिका कॉंच कि मणियां गुंजा फल मोहि देरी ॥ दुरादुरी में खेलत सखन सँग खेलन में नहिं पैहौं । मुख शशि प्रभा बारही राखों इन को कहां दुरैहौं ॥ आज सदन वृष-भानु गोपके खेलन में जो गयो ॥ सगरे सखा अगमने भागे मैं ही चोर भयो॥ जबहिं महरि वृषभानु गोपघर गहि अंचर मोहिं रोक्यो। वदन चूमि मिष्ठान्न हाथ धर अंग अंग अवलोक्यो ॥ तब वृषभानु सभा ते आये नंदकुमार न होई । परमानंद कुँवरि को दूलह कहत रहे सबकोई ॥ १४४ ॥

मैया मोहिं ऐसी दुलिहिन भावै । काहू गोपकी तनक ढोटनियां रुनक झुनक चलि आवै ॥ कर कर पाक रसाल अपने

कर मोहिं परोसि जिमावै । करअंचर पट ओट ववाते ठाढी ब्यार ढुरावै ॥ मोहिं उठाय गोद बैठारै कर मनुहार मनावै ॥ अहो मेरे लाल कहो बाबा ते तेरो ब्याह करावै ॥ नंदराय नँद-रानी दोउ मिलि मोद समुद्र बढावै । परमानंद दासको ठाकुर वेद विमल यश गावै ॥ १४५ ॥

बंशीलीला ।

राग गौरी ।

माई विधि हूं ते परम प्रवीन जिन जगत कियो आधीन ॥ लाल की बांसुरिया ॥ चारवदन उपदेश विधाता थापी थिरचर नीत । आठ बदन गर्जत गरबीली क्यों चलि है यह रीत ॥ एक बेर श्रीपतिके सिखये पायो विधि उर ज्ञान । याके तो ब्रजराज लाडिलो लग्योही रहत नित कान ॥ अतुल विभूति रची चतुरानन एक कमल करठाम । हरि कर कमल युगल पर राजत क्यों न बढै अभि-मान ॥ एक मराल बैठ आरोहन विधि भयो महा प्रशंस । इन तो सकल विमान किये गोपीजन मानस हंस ॥ श्रीवैकुंठनाथ पुरवासिन सेवत जापद रेन । याके तो मुख सुख सिंहासन कर बैठी निज ऐन ॥ अधर सुधा लग कुल व्रत टारे नहीं शिखा नहिं ताग । तदपि गदा-धर नँदनंदनको याही ते अनुराग ॥ १४६ ॥

राग कान्हरो ।

बँसुरिया विष भरी बाजी ।

दोहा—बंशी बंशी नामहै, काहू धर्यो प्रवीन । तान तानकी डोरसों, खैंचत हैं मनमीन ॥ अहो बांसकी बँसुरिया, तैं तप कीन्हों कौन । अधर सुधा पिय को पियै, हम तर्सत बिच भौन ॥ अरी क्षमाकर मुरलिया, परिहैं तेरे पाय । और सुखी सुन होतहैं, महा दुखी हम हाय ॥ अहो बांसकी बँसुरिया, निकसी पर्वत फोर । जोमैं ऐसी जानती, डारत तोर मरोर ॥ ऐ अभिमानी मुरलिया, करी सुहागिन श्याम ॥ अरी चलाये सबन पै, भले चामके दाम ॥

तू है व्रजकी मुरलिया, हमहैं व्रजकी नार ॥ तीन लोकमें गाइये, वंशी औ व्रजनार ॥ नयननके चल तीर तनु, रह्यो परत नहिं भौन ॥ तापर बंशी बाज मत, देत कटे पर लौन ॥ १४७ ॥

कवित्त।

बाँसुरी बजे तो ब्रज हम न बसेंगी बीर बाँसुरी बसावो लाल हमें बिदा दीजिये ॥ जेते राग तेते दाग जेते छेद तेते भेद जेतो शोर तेतो घोर रोम रोम छीजिये॥तानके तिरीछे बान लागतहैं मोहिंआन श्रवणन सुनत जाय वनमें बसीजिये ॥ बंशीको छोड़ो श्याम विनय करत ब्रजकि बाम ऐसी कीनी सूर प्रभु ऐसीहूं न कीजिये ॥

जा दिनते बंशी अवतंशी यहि गोकुलमें तादिन ते कीन्ह्यो श्याम अधर निवासुरी । कुंज २ डोलैं याहि सँगमों किलोलैं किये लीन्ह्यो सौति राग भाग सुखसों विलासुरी ॥ बंदीदीन दीन ह्वै रही हैं हम मोहन विन एक छिन पावत न बोलिबो सुपासुरी । बाँसुरी सुनत नैन आँसु आय जात पीर पाँसुरी समात औ पिरात गाँसु गाँसुरी ॥ १४८ ॥

राग परज ।

बँसुरी तू कवन गुमान भरी ॥ सोनेकी नाहीं रूपेकी नाहीं नाहीं रतन जरी । जात सिफत तेरी सब कोइ जाने मधुबनकी लकरी ॥ क्यारी भयो जब हरि मुख लागी बाजत विरह भरी । सूरश्याम प्रभु अब क्या करिये अधरन लागतरी ॥ १४९ ॥

राग भूपाली कल्याण ।

री बंशी कौन तप तैं कियो । रहत गिरिधर मुखहिं लागी अधरनको रस पियो ॥ श्याम सुंदर कमल लोचन तोहिं तन मन दियो । सूर श्रीगोपाल वश भये जगत में यश लियो ॥ १५० ॥

राग देस ।

श्याम तिहारी मदन मुरलिया तनक सी ने मन मोह्यो । यह सब जीव जंतु जल थलके नाद स्वाद सुर पोह्यो ॥ धरणी ते गोवर्द्धन धारचो कोमल प्राणअधार । अब हरि लटक रहत हैं

टेढ़े तनक मुरलिया भार ॥ हमें छुड़ाय अधर रस पीवे करे न रंचक कान । सूरदास प्रभु निकस कुंज ते चेरी सौत भइ आन ॥ १५१ ॥

राग दादरा ।

चोरो सखी बंशी आज दावँ भलो पायो है । यह उपकार प्यारी सदा हम मानेंगी गौरीराग रसिक साँवरो रिझायोहै ॥ बहुत अधरामृत चुवायो श्याम मुरली बीच दिन दिनकी कसक आज काढ़ पायो है । रसिक पीतम जोपै विनती करें हजारबार तौहू या बांसुरीको भेद ना बतायो है ॥ १५२ ॥

राग देस ।

सखी याकी बंशी लीजे चोर ॥ जिन गोपाल किये अपने वश प्रीति सभन सों तोर । अधरनको रस लेत मुरलिया हम तरसत निशिभोर ॥ छिनइक घर भीतर निशि बासर धरत न कबहूं छोर । कबहुँक कर कबहूं अधरनपर कबहूं कटि उर मोर ॥ नाजानूं कछु मेल मोहनी राखी सब अँग कोर । सूरदास प्रभुको मन सजनी बँध्यो है नादकी डोर ॥ १५३ ॥

कौन बसत या बृंदावनमें मो मुरलीको चोर ॥ जानी नहीं लई काहू करमें कटि में उरसी जोर । चोरी नहिं बरजोरी एरी प्यारी मो मुरलीको चोर ॥ राजाही को दिये बनेगी यही न्यावकी तोर । वृंदाबन हित रूप सुघर पिया बाट गँवाई ढूँढो कानन कै कछु देहु अकोर ॥ १५४ ॥

राग खमाच ।

किन लई देहु बताय मुरलिया राधा ॥ प्राणते प्यारी तिहारी सौंह मोहिं जीवत हों गुणगाय ॥ सत्त सुरन सुर नर मुनि मोहे बँसुरी नेक बजाय॥ यह विनती बलिहार सुनो क्यों ना प्यारीजी होत सहाय १५५

राग काफी ।

मुरलिया जो पाऊं तो मैं तेरोही गुणगाऊं । सुनहो कुँवरि किशोरी श्री राधे राधे राधे गाय सुनाऊं ॥ चरण छुवाय कहतहों

तुमसों तेरोहि ध्यान लगाऊं। यह विनती बलिहार बिहारन तेरे हि हाथ विकाऊं ॥ १५६ ॥

राग भूपाली।

बंसी मेरी प्यारी दीजे प्रात प्रान प्रान। यहि ठौर काल्हि भूल्यो री सुखदान दान दान ॥ नहिं कामकी तिहारी दीजे आन आन आन। जाते करूं मैं तेरारी गुण गान गान गान ॥ विनती सुनो हमारी देकान कान कान।कीजै कृपारसिक पै जन जानजानजान १५७

राग ईमन।

काल्ह सखी यहि ठौर बांसुरी भूल बिसारी। ले जोगई तुम धाम बात हम सुनी है तुम्हारी ॥ तुमरे काम न आवही बंसी हमरी देहु। हम आतुरहोय मांगते तुम नाहिं जु नाहिं करो ॥ बांसुरी दीजिये ब्रजनारि ॥ बंसी कैसी होत नहीं हम नयनन देखी। पिता तुम्हारे साधु लाल तुम कपट विशेखी ॥ इत उत खेलत तुम फिरो वाहीं भूलरही। सांच शपथ बाबा कीसों तेरी बँसुरी नाहिं लई ॥ बाँसुरी कैसी है ब्रजनाथ ॥ बंसी हमरी देहु काहेको रारि बढावो ॥ समझ बूझ मन माहिं काहेको लोग हँसावो ॥ लोग हँसैं चर्चा करैं प्यारी मनमें शोच विचार। यह बंसी मनमोहनी तुम देती क्यों न गवाँर ॥ बंसी दीजिये०॥ हमको कहत गँवारि आपनी करत बड़ाई। मारूं गुलचा गाल तोहूं बाबाकी जाई ॥ तुम से केते ग्वारिया मांगत हम पै आय। चतुराई तुम छांडिकै जाय चरावो गाय ॥ बंसी कैसी०॥ या बंसी की सार कहा तुम ग्वालिनि जानो। तीन लोक पटतार तासों मेरो मन मानो ॥ या बंसी खोजत फिरैं शिव विरंचि मुनिनाथ। परचावो परचैं नहीं तुम कहा नचावत हाथ ॥ बंसी दीजिये०॥नंद महरके कुँवर कान्ह तोहिं कौन पतीजे। भूल गये कहुँ अनत दोष हमको नाहिं दीजै ॥ ले लकरी मुखपै धरी बँसुरी याको नाम। जिन घर ऐसे पूत हैं उजरत तिनके गाम ॥ बंसी कैसी ०॥ बसो कि उजर जाउ तुझे क्या परी हमारी। तुमसींहैं लखचार नंद

घर गोवरहारी ॥ इकलख मेरे सँग चलें लखआवें लखजाँय ॥ लखठाढी दर्शन करैं लख खडी खडी ललचायँ ॥ वंसी दीजिये० ॥ सुघरसयानी नारि हाथगहि वंसीलाई । पूरण परमानंद साँवरे मुखहि बजाई ॥ लै वंसी ग्वालिन मिली घूंघट बदनछिपाय । सूरदास हारी गूजरिया जीते यादवराय ॥ बाँसुरी लीजिये ब्रजनाथ ॥ १५८ ॥

राग कल्याण ।

श्यामको वंसी वन पाई । उठो यशोदा मैया खोलो किंवरिया मैं वंसी गृह देनेको आई ॥ बहुत दिननके उनींदे मोहन सोनिंदे वृषभानुकि जाई । इतनी सुनत निकसि आये मोहन अंतर्यामी प्रभु कुँवर कन्हाई ॥ मुरलीके सँग पहुँची हमारी दे राधे वृषभानुकिजाई । हमजानी कछु मान बढ़ेगो तुम हरि हमको चोरी लगाई ॥ श्रवण न सुनी नयन नहिं देखी चलो ठौर हम देहिं बताई । सूरदास गुण कहँ लग वरणे दोनों में एकै चतुराई ॥ १५९ ॥

वेणीगूंथनलीला ।

राग कल्याण ।

वेणी गूंथ कहा कोइ जाने ॥ मेरीसी तेरी सौंह राधे ॥ बिच बिच फूल श्वेत पित राते को करसके एरी सौंह राधे ॥ बैठे रसिक सँवारन बारन कोमल कर कँगही सों साधे । हरीदासके स्वामी श्यामा नख शिखलौं बनाइ दे काजर नख ही सों आधे ॥ १६० ॥

राग दादरा ।

प्यारीको शृँगार करत नँदलाला । बार बार में मोती पोहे कन बिच झलके बाला ॥ कलीदार जरीको लहँगा ऊपर सुर्ख दुशाला । पुरुषोत्तम प्रभु रसिक शिरोमणि छबि निरखत ब्रजबाला ॥

राग गौरी ।

तेरो मुख नीको कि मेरो राधा प्यारी । दर्पण हाथ लिये नँदनंदन साँची कहो वृषभानु दुलारी ॥ हम का कहैं तुमहीं क्यों ना देखो मैं गोरी तुम श्याम विहारी । हमरो बदन ज्यों चंदा की उजारी

तुमरो बदन जैसे रैनि अँध्यारी ॥ तिहारे शीशपर मुकुट बिराजै हमरे शीश पर तुम गिरिधारी। चंद्र सखी भज बालकृष्ण छवि दोउ ओर प्रीति बढ़ी अति भारी॥ १६२॥

राग विहाग।

बेसर कौनकी अति नीकी। होड परी लालन औ ललना चौंप बडी अति जीकी॥ न्यावपरो ललताके आगे कौन ललित कौन फीकी। दामोदर हित बिलग न मानो झुकन झुकी प्यारीजीकी॥ १६३॥

राग श्यामकल्याण।

राधा प्यारी रूप उजारी मोतन नेक हेरो। मेरी प्यारी तन मन धन छवि ऊपर वारों नाम उचारों मैं तेरो॥ हँस मुसकाय बदन तन हेरो मोहिं करो चरणनको चेरो। अली किशोरी एक बार कहो लाल बिहारी मेरो॥ १६४॥

राग खेमटा।

तेरो मुख चंद्ररी चकोर मेरे नैना। पलहूं न लागे पलक बिन देखे भूल गये गत पलहूं लगैना। हर्बरात मिलबेको निशि दिन ऐसे मिलें मानो कबहूं मिलैना॥ भगवत् रसिक रसकी यह बातें रसिक बिना कोइ समझ सकैना॥ १६५॥

तू है मुख कमल नयन अलि मेरे। अति आरत अनुरागी लंपट हर्बरात इत फिरत न फेरे॥ पान करत मकरंद रूप रस भूल नहीं फिर इत उत हेरे। भगवत रसिक भये मतवारे घूमत रहत छके मद तेरे॥ १६६॥

प्रीतम तुम मो दृगन बसतहो। कहा भोरेसे ह्वै पूछतहो कै चतुराई कर जो हँसत हो॥ लीजै परख स्वरूप आपनो पुतरिन में तुमहीं जो लसतहो। वृंदावन हित रूपरसिक तुम कुंज लडावत हिय हुलसतहो॥ १६७॥

राग जंगला सवैया।

चैन नहीं दिन रैन परै जबते तुम नैनन नेक निहारे। काज

बिसार दिये वरके ब्रजराज मैं लाज समाज बिसारे ॥ मो विनती मनमोहन मानियो मोसों कहूं जिन हूजियो न्यारे ॥ मोहिं सदाचित सों अति चाहियो नीकेके नेह निबाहियो प्यारे ॥ १६८ ॥

गोरे ग्वालकी लीला।

ठुमरी ।

चंदा सों बदन जामें चंदन को बिंदा दिये चंदा तन चितवत चंदा छवि छाई प्यारी । चंदनकी सारी सोहै चंदनको हार हिय चंदनको लहँगा सोहै चंदा मुख भाई प्यारी ॥ चंदनकी कंचुकी चंदनकी बंदनी चंदनकी बँगली चंदा तनु भाई प्यारी । कहा कहूं कछु कहत न आवे तिहारो मुख देख चंदा गयोहै लजाई प्यारी ॥१६९॥

राग विहाग ।

यह कहिके प्रिय धाम गई । चौंक परे हरि जब यह जानी अब यह कहा भई ॥ दोप न होय कछू सखि मेरो उपमा चंददई । रिसन भरी नख शिख लौं प्यारी यौवन गर्व मई ॥ लावो वेगि मनाय सखीरी यामिनि जात बही । पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत लावो वेगि सही ॥ १७० ॥

राग गौड मलार ।

वृषभानु कुँवरि जब देखों । तब जन्म सफल करि लेखों ॥ मैं राधा राधा गाऊं । राधा हित वेणु बजाऊं ॥ मैं राधारमण कहाऊं काहे दूजा नाम धराऊं ॥ जहँ राधा चर्चा कीजे । तहँ प्रथमजान मोहिं लीजे ॥ जहँ, राधा राधा गावैं। तहँ सुनवेको हम आवैं ॥ श्री राधा मेरी संपति । श्रीराधा मेरी दंपति ॥ श्रीराधा मेरी शोभा । श्रीराधाको चित लोभा ॥ मैं राधाके सँग नीको । राधा विन लागत फीको ॥ १७१ ॥

राग खेमटा ।

देखी कहूं मलिनमें मो प्राण जीवनी । एहो सुजान प्यारी मम चूक कया विचारी क्यों दुरगई लतनमें दे दर्श आनंदनी ॥ जब

चलत चाल छबिसों तब हलत हार उरसों ठुम ठुम चरन धरन पै तू गति गयंदनी ॥ तेरी छटा चरणकी निंदत रवी किरणकी हाहा कुँवरि किशोरी तू है सुख समूहनी । यह सुनत वचन मेरो पाषाण द्रवत हेरो हित रूप लाल चेरो एहो दुख निकंदनी ॥ १७२ ॥

राग देश ।

बाधा दे राधा कित गई । वृंदा विपिन अछत प्यारी बिन सब विपरीत भई ॥ मेरे मंद भाग्य सों काहू पोच प्रकृति सिखई । व्यास स्वामिनी वेगि मिले तो बाढै प्रीति नई ॥ १७३ ॥

राग पीलू ।

मेरी सुध आन लियो प्यारी राधा । तनहूं लैडती गंध मनहूं लैड़ती हरत सकल दुख बाधा ॥ कुंजमहल में सदाही बसतहो सुख संपति लिये साधा । विट्ठल विपिन विनोद विहारन सर्वस प्राण अगाधा ॥ १७४ ॥

राग सोरठ।

श्रीराधा प्यारी देखी है चितकी चोर । लागी काहू ठौर मैंने देखीहै चितकी चोर ॥ चंद्रवदनि मृगलोचनि राधे जैसे चंद्र चकोर । नई प्रीति सों सबरस बाढ्यो जोबना करतही जोर ॥ पाँयनमें नूपुर धुनि बाजै गजगति चलती तोर । या छबि निरखके मगन भये गुण गावत दास किशोर ॥ १७५ ॥

राग विभास ।

मेरो तो जीवन राधा बिन देखे नाहिं चैन । मोसे तो कछु चूक परी ना कैसे रूठी सुखदैन ॥ पैयां परूं मैं तोरे ललता तोरे विशाखा तुम जैयो प्यारी लैन । धीरज प्यारीजूके देखे श्रीराधा जूके देखे शीतल होंगे मेरे नैन ॥ १७६ ॥

राग विहाग ।

तुम कहुँ देखी रे इत जात रूप गरविनी प्यारी राधा ॥ चंपक वरण गात मन रंजक खंजन चख कुरंग मद गंजन अमल कमल

मुख ज्योति विलोकत होत शरद शशि आधा ॥ अहो सुगंध मृग शावक नयनी कहुँ देखी प्यारी पिकबैनी सुषमा सिंधु अगाधा ॥ अहो मराल मानसर बासिक अहो अलिंद मकरंद उपासिक देहु बताय मोहिं दाया करि होत अपत अपराधा ॥ अहो कदंब अहो अंब निंब बट सोहत सुखद छाँह यमुना तट हरत तापकी बाधा ॥ संतत देत गोप गोधन सुख कबहूं नाहिं सहिसकत मेरो दुख उपकारी वपु बेद बखानत अबहिं मौन क्यों साधा ॥ आरत वचन पुकारत लालन मन जो फँस्यो विरहीके हालन मदन जाल सों बांधा ॥ अतिशय विकल देखि बनवारी प्रकट भई वृषभानु दुलारी सूरदास प्रभुको लगाय उर पुरवत रसकी साधा ॥ १७७ ॥

राग काफी ।

करविचार वृषभानु दुलारी । ग्वाल रूप धर छलन कृष्णको नंदगामकी ओर सिधारी ॥ जहँ हरि अपनी गाय चरावें तहां आप चल आई । देख रूप मोहे मुरलीधर भूलगये चतुराई ॥ अरे मित्र क्या नाम तिहारो बास कहां है तेरो । मैंतो तोहिं कभूं नाहिं देख्यो करत सदा ब्रज फेरो ॥ गोरे ग्वाल भानपुरके हम गोधन बृंद चरावें । रसिक विहारी गाय हमारी आई भज कहँ पावें ॥ १७८ ॥

राग देस ।

गुन सुन वृषभानु कुँवारि के ॥ जाके लाल तुम रहो अधीन । वह तो गृह से सटक वन रहत अटक नहिं मानत हटक इत उत ही फिरत ॥ ऐसी फिरे इतरात नहीं काहूको सुहात मन मानै जित जात नहीं नेकहू डरत । बेटी बड़े की कहावै दधि बेचबे को जावै ताहि लाजहू न आवे सब नाम धरत ॥ इक मेरी सुन लीजै ऐसी नारि ना पतीजै ब्याह कहूँ जासों कीजै तेरो चित्त हरत ॥ जाकी मुख उजियारी देख रीझोगे विहारी पियो वारि वारि पानी जब प्रीति करत ॥ १७९ ॥

राग प्रभाती ।

सखा तुम बोलो न बात विचारी । कहौ कौनसी बाल जगत में जैसी है भानुदुलारी ॥ भानुनगरके बसन हार तुम प्यारीकी अनुहारी ॥ रवि शशि कोटि मदन हूँ की छबि दीजै तुम पर वारी ॥ कहो कौनसे मैं ब्याह कराऊं रची कवन विधि नारी । करत बास हिरदै मेरे में कीरति कुँवरि दुलारी ॥ प्रेम विवस कछु सुरति रही ना तनु की दशा बिसारी । लिये लगाय वेग उर प्यारी तब हँसि रसिक बिहारी १८०

राग देस ।

सखी री मैं हूं नंद किशोर । मैं दधि दान लेत बृंदावन रोकतहूं बरजोर ॥ यह जो माननी मान कर बैठत विनती करूं कर जोर । पुरुषोत्तम प्रभु मैं हूं रसिक वर यह मेरी चितचोर ॥ १८१ ॥

रासलीला ।

राग गौड मलार ।

शरद निशि देख हरि हर्ष पायो । विपिन वृंदावनहिं सुभग फूले सुमन रास रुचि श्यामके मनहिं आयो ॥ परम उज्ज्वल रैनि चमक रहि भूमि पर सदा फल तरुन प्रति सुभग लागै । तैसोई परम रमणीक यमुना पुलिन त्रिविध बहै पवन आनंद जागै ॥ राधिका रमण वन भवन सुख देखके अधर धर वेणु सुर ललित गाई । नाम लै लै सकल गोप कन्यानके सबनके श्रवण यह ध्वनि सुनाई ॥ सुनत उपज्यो मयन परत ना काहू चैन शब्द सुन श्रवण भईं विकल भारी । सूर प्रभु ध्यान करके चलीं उठ सभी भवन जन नेह तज घोष नारी ॥ १८२ ॥

राग कल्याण ।

जब हरि मुरली नाद प्रकाश्यो । जंगम जड थावर चर कीन्हें पाहन जलज विकाश्यो ॥ स्वर्ग पताल दशोदिशि पूरण धुनि आच्छादित कीनो । निशि हरि कल्प समान बढाई गोपिनको सुख

दीनो ॥ भर्मत भये जीव जल थलके तनुकी सुध न सम्हार । सूर श्याम मुख वेणु विराजत उलटे सब व्यवहार ॥ १८३ ॥

राग झँझोटी ।

बंसी यमुना पे बाज रहीरे लाल छवि निरखन कैसे जाऊं री आज ॥ बंसीकी टेर सुनी मेरे श्रवणन तन मन सुधि बिसरीरे लाल ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहैं चंदन खौर लगीरे लाल । चंद्र सखी भजु बालकृष्ण छबि चरणन चेरी भई रे लाल ॥ १८४ ॥

राग यमन ।

वृंदावन सघन कुंज माधुरी लतान तरे यमुना पुलिन में मधुर बाज बांसुरी । जब से धुनि परीकान मानो लागे मयन बान प्राणनकी कहा चले पीर होत पांसुरी ॥ व्याप्यो जो अनंग तामें अंग सुध भूल गई कोई कछू कहो कोई करो उपहासुरी । ऐसे ब्रजाधीश जीसों प्रीति नई रीति बाढी जांके उर बस गई प्रेमपुंजगांसुरी ॥ १८५ ॥

कवित्त ।

एक उठ दौरी एक भूल गई पौरी एक राख भर कौरी सुध रही नाहिं तनमें ॥ एक खुले बार एक छतियां उघार एक भूषण को डार चली दामिनि ज्यों घनमें ॥ एक उजियारी गोपी-नाथ ने निहारी बारी एक भई बौरी डोले मदनके उमंगमें ॥ ऊधम भयो है घरी चार ब्रज मंडल में बांसुरी बजाई कान्ह जभी वृंदाबनमें ॥ १८६ ॥

बाजी घरआई बाजी देखबेको धाई बाजी मुरझाई तान सुनि गिरिधरकी ॥ बाजी हँस बोलें बाजी करत कलोलें बाजी संग लाग डोलें सुध बिसरी सभ घरकी ॥ बाजी ना धरें धीर बाजी ना सम्हारें चीर बाजिनके उठी पीर दावानल भरकी ॥ बाजी कहैं बाजी बाजी बाजी कहें कहां बाजी बाजी कहैं बाजी बंसी सांवरसुघरकी १८७

राग भैरव ।

बांसुरी बजाई आज रंगसों मुरारी । शिव समाधि भूल गई

मुनिजन की तारी ॥ वेद भनत ब्रह्मा भूले भूले ब्रह्मचारी । सुनत ही आनंद भयो लगी है करारी । रंभा सब ताल चूकी भूली नृत्यकारी । यमुना जल उलट बह्यो सुध ना सँभारी ॥ श्रीवृंदावन बंसी बजी तीन लोक प्यारी । ग्वाल बाल मगन भये ब्रजकी सभ नारी ॥ सुंदर श्याम मोहनी मूरत नटवर वपु धारी । सूर किशोर मदन मोहन चरणों बलिहारी ॥ १८८ ॥

राग जंगला ।

वृंदावन कुंज धाम विचरत पिय प्यारी । कातिककी शरद रैनि चंद्रकी उजारी ॥ पवन मंद मंद चलत फूली फुलवारी । विकसे सर कमल फूले शोभा अतिभारी ॥ झरना चहुँ ओर झरत यमुना सुखकारी । आनँदकी रैनि जान मुरली मुखधारी ॥ लै लैके नाम सकल टेरी ब्रजनारी । सुनके धुन भवन त्याग धाई सुध डारी ॥ उलटे तनुचीर पहर आई मिल सारी । वीणा मृदंग चंग बाजत करतारी ॥ दास सुखानंदप्यारे चरणनबलिहारी ॥ १८९ ॥

राग कल्याण ।

प्यारी में ऐसे देखे श्याम ॥ बांसुरी बजावत गावत कल्याण ॥ कबकी में ठाढी भैयां सुध बुध भूल गैयां छौने जैसे जादू डारा भूले मोंसे काम ॥ जब धुन कान पैया देहकी ना सुध रहिया तन मन हर लीनो विरहों वाले कान्ह ॥ मीरा बाई प्रेम पाया गिरिधर लाल ध्याया देह सों विदेह भैयां लागो पग ध्यान ॥ १९० ॥

राग विहाग ।

निशि काहेको वन उठ धाई । हँस हँस श्याम कहत हो सुंदरि की तुम ब्रज मारगहिं भुलाई ॥ गई रही दधि बेचन मथुरा तहां आज अवसेर लगाई । अति श्रम भयो विपिन क्यों आई मारग वह कह सजन बताई ॥ जाहु जाहु गृह तुरत युवति गण खीझत गुरु जन लोग लुगाई । की गोकुल ते गमन कियो तुम इन बातन कछु नाहिं भलाई ॥ यह सुनिकै ब्रज बाम चकित भई कहा करत गिरिधर

चतुराई । सूर नाम लैलै सबहिनको मुरलीवारंवारबजाई ॥ १९१ ॥

राग प्रभाती ।

सानूँ मुड घर वंजन कह्यो वे श्यामां । साईं साईं वे करें दया सारा जग वे ठगें दया असां माप्यां ते चोरी इक न्योहडा लगाया यमुना किनारे श्यामां ॥ वचन की तोई जब चीर हमारे हरे वे श्यामां ॥ यमुना किनारे श्यामां धेनु चराइया जब मुरली की धुनक सुनाइया वे श्यामां ॥ सूरके स्वामी प्रभु शरण तिहारी अब लज्जा हमारी राखो वे श्यामां ॥ १९२ ॥

राग कान्हरा ।

कैसे रास रस हि मैं गाऊं । श्री राधिका श्यामकी प्यारी तुम्हरी कृपा बास ब्रज पाऊं ॥ आनदेव स्वपने नहिं जानूं दंपतिको शिर नाऊं । भजन प्रताप चरण महिमा ते गुरुकी कृपा दिखाऊं ॥ वृंदावन बीथिन यमुना तट आनँदकुटी छवाऊं । सूरदास प्रभु तिहारे मिलनको वेद विमल यश गाऊं ॥ १९३ ॥

महारानी श्री राधे रानी । जाके बल मैंने सबते तोरी लोक वेद कुल कानी ॥ प्राण जीवन धन लाल विहारीको वार पीवत हैं पानी । भगवत रसिक अनन्य सहायक सब ऊपर सुखदानी ॥ १९४ ॥

परम धन राधे नाम अधार । जाहि श्याम मुरली में टेरत सुमिरत वारंवार ॥ यंत्र मंत्र और वेद तंत्रमें सभी तारको तार । श्रीशुक प्रगट कियो नहिं याते जानि सारको सार ॥ कोटिन रूप धरे नँदनंदन तऊ न पायो पार । व्यासदास अब प्रगट बखानत डार भारमें भार ॥ १९५ ॥

राग देस ।

रच्यो श्रीवृँदावन रास गोविंद । चलो सखी देखन चलिये नवल अनंद ॥ यमुनाके नीरे तीरे शीतल सुगंध । त्रिविध पवन डोलैं अति गति मंद ॥ खँजरी सरंगी बाजे ताल मृदंग । वीण उमंग मुरली मोहर मुहचंग ॥ भाल में तिलक सोहै मृगमद रेख । मुरली मनोहर जीको नटवर भेख ॥ ब्रह्मा देखें विष्णु देखें नारी नरेश ।

देखन आये शंभु गौरी गणेश ॥ वृंदावन माहिं रच्यो रास विलास। गुण गावें स्वामी माधुरी दास ॥ १९६ ॥

राग केदार।

सुन धुन मुरली बैन बाजे हरि रास रच्यो। कुंज कुंज द्रुम बेली प्रफुलित मंडल कंचन मणिन खच्यो ॥ निर्तत युगल किशोर युवति जन रास में राग केदाररच्यो । हरिदासके स्वामी श्यामा कुंज बिहारी नीकेही आज गोपाल नच्यो ॥ १९७॥

कवित्त।

तालन पैं ताल पै तमालन पै मालन पैं बृंदावन बीथिन बिहार बंसीबटपै। क्षितिपै छवाननपै छाजत छटाननपै ललित लताननपै लाडिलीकी लटपै॥ कहै पदमाकर अखंड रास मंडल पै मंडत उमंड महा कालिंदीके तट पै। कैसी छबि छाई आज शरद जुन्हाई आली जैसी छबि छाई या कन्हाईके मुकुट पै ॥ १९८ ॥

सवैया।

शूकर ह्वै कब रास रच्यो अरु बावन ह्वै कब गोपी नचाई। मीन ह्वै कौनके चीर हरे कछुवा ह्वैकै कब बीन बजाई ॥ होय नृसिंह कहो हरि जू तुम कौनकी छातिन रेख लगाई। वृषभानु सुता प्रगटी जबते तबते तुम केलि कलानिधि पाई॥१९९॥

राग पीलू।

ठाढी रहरी लाड गहेली मैं माला सुरझाऊं। नकबेसरकी ग्रंथ जो ढीली ताहू सुभग बनाऊं ॥ एरी टेढी चाल छाँड़ मैं सूधी चलन सिखाऊं। वृंदावन हित रूप फूलकी माल रीझ जो पाऊं ॥
प्रीतम रहे प्रिया मन लीये प्रिया रहे मन पीको । सखी रहैं दोउअन मन लीये रंग बढै नित हीको ॥ कानन छबि ते नये दिखावें प्राण बढे नित हीको। वृंदावन हित रूप विहारन सकल त्रियन शिर टीको ॥ २०१ ॥

सवैया ।

सोनजुही की बनी पगिया औ चमेलीको गुच्छ रह्यो झुकिन्यारो। दो दल फूल कदंबके कुंडल सेवतीको जामा घूम घुमारो ॥ न तुलसी पटुका घनश्याम गुलाब इजार चमेलीको नारो । फूलन आज विचित्र बन्यो देखो कैसो शृँगारयो है प्यारीने प्यारो ॥२०२॥

सारी सँवारी है सोनजुही अरु जूही की तापै लगाई किनारी। पंकजके दलको लहिंगा अँगिया गुलाबास की शोभित न्यारी ॥ चमेलीको हार हमेल गुलाबकी मौरकी बेंदी दै भाल सँवारी। आज विचित्र सँवारिकै देखिये कैसी शृँगारी है प्यारेने प्यारी॥२०३॥

राग पीलू ।

संग चलीं ब्रजबाल लाल कर तालन लै लै जोरी। लाई गति मृदंग उपजाईं झाईं वन घनघोरी ॥ ततथेई धुमकिट ततथेई यह धुन सुन ले जोरी । वल्लभ रसिक बिहारी प्यारी प्यारी तान झकोरी ॥ २०४ ॥

कवित्त ।

माथे पै मुकुट देख चंद्रिका चटक देख छबिकी लटक देख रूप रस पीजिये। लोचन विशाल देख गरे गुंजमाल देख अधर सुलाल देख चित्त चौंप कीजिये ॥ कुंडल हलन देख अलकैं वलन देख पलकैं चलन देख सरबस दीजिये । पीतांबर कि छोर देख मुरली की घोर देख साँवरेकी ओर देख देखबोही कीजिये ॥२०५॥

राग पीलू ।

भाग्यवान वृषभानु सुतासी को तिय त्रिभुवन माहीं । जाको पति त्रिभुवन मनमोहन दिये रहत गल बाहीं॥ ह्वै अधीन संगहि सँग डोलत जहाँ कुँवरि चल जाहीं। रसिक लख्यो जो सुख वृंदावन सो त्रिभुवन में नाहीं ॥ २०६ ॥

कबित्त ।

वृंदावन धाम नीको ब्रजको विश्राम नीको श्यामा श्याम नाम

नीको मंदिर अनंदको । कालीदह न्हान नीको यमुना पय पान नीको रेणुकाको खान नीको स्वादनीको कंद को ॥ राधा कृष्ण कुंड नीको संतनको संग नीको गौरश्याम रंगनीको अंग युग चंदको । नील पीत पट नीको बंसीवट तट नीको ललित किशोरी नीको नट नीको नंदको ॥ २०७ ॥

भ्रुकुटी तनीको नकबेसर बनीको लट नगन फनीको लखि फूल्यो कंज फीको है । मैनकी मनीको नयन बानकी अनीको चोखे सैन रजनीको हौंस हुलसन हीको है ॥ रूप रमनीको कैधों रमारमनीको गजगती गमनीको कैधों सिंधु मूर जीको है । बेनी बंदनीको मृदुहास फंद नीको मुख चंद हूसे नीको वृषभानु नंदनीको है ॥ २०८ ॥

छंद ।

जैसी है मृदु पद पटकन चटकन कटतारन की । त्रियतन मोर मुकुट की लटकन कल कुंडल हारन की ॥ साँवरे पिय संग निर्तत ब्रजकी चंचल बाला । मानो घन मंडल मंजुल खेलत दामिनि सी बाला ॥ २०९ ॥

सवैया ।

मंडल रास विलास महारस मंडन श्रीवृषभानु दुलारी । पंडित कोक सँगीत भरी गुण कोटिक राजत गोपकुमारी ॥ प्रीतमके भुजदंडमें शोभित संगमें अंग अनंगन वारी । तान तरंगन रंग बढ्यो ऐसे राधिका माधवकी बलिहारी ॥ २१० ॥ जामा बन्यो जरीतासको सुंदर लाल बंद अरु जर्द किनारी । झालर दार बन्यो पटुका अरु मोतिनकी छबि जात कहां री ॥ जैसी चाल चले गजराज कहै बलिहारी है मौज तिहारी ॥ देखत नयनन ताक रही झुक झाँक झरोखन बाँके बिहारी ॥ २११ ॥

कवित्त ।

सुंदर सुजान कान्ह सुंदर ही पगिया शीश सुंदरसे नयन अधर सुंदर बाँसुरिया।सुंदर भ्रुकुटी कमान सुंदर पलकनके बान सुंदर मुसकान मंद

चितवन चितहरिया॥सुंदर बाजू बिराजैं सुंदर वनमाल साजैं सुंदर गल हार मोती जामा जो केसरिया । सुंदर कंकन अमोल सुंदर कुंडल कपोल सुंदर नारायण बोल दीन दरद हरिया ॥ २१२ ॥ वारि डारों शरद इंदु मुख छबि गोविंद पर दिनेशहूको वारि डारों नखन छटान पर । कोटि काम वारि डारों अंग अंग श्याम लखि वारि डारों अलिन अली कुंचित लटान पर ॥ नयनन की कोरन पै कंज हूको वारि डारों वारि डारों हंस हू को चाल लटकान पर । देख सखी आज ब्रजराज छबि कहा कहूं कामधेनु वारि डारों भ्रुकुटी मटान पर ॥ २१३ ॥ नयनन चकोर मुख चंद्र हूको वारि डारों वारि डारों चित मनमोहन चितचोर पै । प्राण हूको वारि डारों हँसन दशन लाल हेरन कुटिल वाके लोचनकी कोर पै ॥ वारि डारों मैन रंग अंग अंग श्याम श्याम हिलन मिलन रस रासकी झकोर पै । अति ही सुघर बर सोहत त्रिभंगी लाल सर्वस वारि डारों ग्रीवाकी मरोर पै ॥ २१४ ॥ मुकुट के रंगन पै इंद्र को धनुष वारों अमल कमल वारों लोचन विशाल पर । कुंडलप्रभा पै कोटि प्रभाकर बारि डारों कोटिक मदन वारों बदन रसाल पर ॥ तनुकी तरुण पर नीरद सजल वारों चपला चमक उर मोतिन की माल पर । चाल पै मराल वारों मनहूको वारि डारों और कहा कहा वारों छबि नंदलाल पर ॥ २१५ ॥

राग जैजैवंती ।

आवरी बावरी ऊजरी पाग पै मेलके बाँध्योहै मंजन चोटा । चंचल लोचन चाल मनोहर आन्यो अबै गहि खंजन जोटा ॥ देखत रूप ठगोरी सी लागत ऐन मैन मानो कमल के जोटा । नंददास रस रास कोटिन वारों आज बन्यो ब्रजराजको ढोटा ॥ २१६ ॥

राग बिलावल ।

आली री रासमंडल मध्य निरतत मदन मोहन अधिक प्यारे लाडिली रूप निधान । चरण चारु हँसत भेद मिलवत गति

भाँति भाँति भ्रू विलास मंद हास लेत नयनन हीमें मान ॥ दोउ मिलि राग अलापत गावत होंडा होडी उघटत देकर तारी तान परमानंद निरख गोपी जन वारतहैं निज प्रान ॥ २१७ ॥

राग भैरव ।

निरतत गोपाल संग राधिका बनी। बाहुदंड भुजन मेलि मंडल मध्य करत केलि सरस गान श्याम करैं संग भामिनी ॥ मोर मुकुट कुंडल छबि काछनी बनी विचित्र झलकत उरहार विमल थकित चांदनी । परम मुदित सुर नर मुनि वर्षत सब कुसुममाल वारत तन मन प्राण कृष्णदास स्वामिनी ॥ २१८ ॥

राग झिंझोटी ।

गोपी गोपाल लाल रास मंडल माहीं । तत्ताथेई ता सुधंग निरतत गहि बाहीं ॥ द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम मृदंग छन नन नन रूप रंग दृगता दृगता लतंग उघटत रसनाई । बीच लाल बीच बाल प्रति प्रति अति द्युति रसाल अविगत गति अति उदार निरखि दृग सराहीं ॥ श्री राधा मुख शरद चंद पोंछत जल श्रम अनंद श्री व्रज चंद लटक करत मुकुट छाहीं ॥ तत्तत तत सुघर गात सरिगम पदनी ग ठाठ और पदहिं प्रलाद दांप दंपति अति सादहिं । गावत रस भरे अनंद तान तान सुर अभंग उमँगत छबि अति अनंद रीझत हरि राधाहिं ॥ छाये देवन विमान देखत सुर शक्र भान देवांगना निधान रीझि प्राण वारहिं । चकित थकित यमुना नीर खग मृग जग मग शरीर धन नँदके कुमार बलि बलि जाय सूरदास रास सुख तिहारहिं ॥ २१९ ॥

राग देश ।

लालको नाचन शिखवत प्यारी। जैसोइ सुभग बन्यो श्रीवृंदावन तैसी शरद उजियारी॥ मान गुमान लकुट लिये ठाढी डरपत कुंजबिहारी। थेईथेई करत लाल मनमोहन उरप तुरप गति न्यारी ॥ वंशीवट यमुना तट कुंजन रहस रच्यो गिरिधारी। कोऊ मृदंग कोऊ वीण

बजावत कोई हँसत देतारी॥ छबिसों गावत खडी नचावत रोम रोम बलिहारी । देख देख ब्रह्मादिक नारद अचरज शोच विचारी ॥ व्यास स्वामिनी सो छबि निरखत रीझ देत करतारी ॥ २२० ॥

राग काफी ।

देखो री या मुकुट की लटकन । निरतत रास लिये राधा सँग वैजंती बेसरकी अटकन ॥ पीतांबर छुटि जात छिनै छिन नूपुर शब्द पगनकी पटकन । सूरश्यामकी या छबि ऊपर झूठो ज्ञान योग को भटकन ॥ २२१ ॥

राग बिहाग ।

आज बनवारी बन्योहै मुरारी । सखी कुंजविहारी गिरिधारी सँग सोहे राधा प्यारी वृषभानुकी दुलारी ॥ दोनों मिलकर निरत करत हैं राधा अरु गिरिधारी । मोरको मुकुट धारी चंदनकी खौर न्यारी भ्रुकुटी कुटिल अलकें घूँघरवारी ॥ टेढी चितवन प्यारी नासिका मोती सँवारी मुरली अधर सप्त सुरन उचारी । मोहि लीनी ब्रजनारी देहकी दशा बिसारी दया सखी पाँयन परके लीनी बलिहारी ॥ २२२ ॥

राग रेखता ।

नाचे छली छबीलो नँदका कुमार है । गल बाँहिं दे प्रियाके सुंदर शृँगार है ॥ इत मंद मंद झीनी नूपुर अवाज है। उत पायजेब पायल घन कीसी गाज है॥ पगिया लसी कुँवरके शिरपेंच लालहै॥ भ्रुकुटी लगी ललोई प्यारीके भाल है॥ कटि काछनी सुचोली पटुका किनारका। कानों जड़ाऊ झुमका गल हीर हार है ॥ दामिनि सुरंगी सेला कीरति कुमारिका । मोतिनकी माल सुंदर शोभा अपार है ॥ गुंजा गले गुनीके तर गुंजमाल है । छतियां लगी लला सों वंसी रसाल है ॥ नासा बुलाक वेसर माथेपै मुकुट सोहै । दोनों झुके पर रूपर छबि वेशुमार है॥ प्यारीके नख छटापर रवि चंद्र कोटि मोहे । केशव खड़ा विलोके प्राणन अधार है ॥ २२३ ॥

मानलीला ।

राग सोरठ ।

चलो तो बताऊं विहारी जी म्हारे महलों फूलीछै केसर क्यारी । अति सुंदर बहुत अमोलक रंग रँगीली हैं छै बारी ॥ यों मत जानो झूठ कहत है म्हाने सौंह तिहारी । ब्रजनिधि तुम सों लगन लगी है प्रीतिपुरातन यारी ॥ २२४ ॥

राग कान्हरो ।

लालन मेरे ही आये आज सुहावनी रात । तन मन फूली अंग न समावत कुंजन करत बधाये ॥ इक रसना गुण कहँ लग वरणों नख शिख रूप मेरे हीय में समाये । गिरिवरधर पिया रस वश कर लीनो कृष्णदास बलिजाये ॥ २२५ ॥

राग कान्हरो ।

एजी अब तो जान न दूंगी शकुन भलेजी ॥ बहुत दिनन मेरे घर आये कर राखों उर हार । श्याम सुंदर पिया अतिही रँगिलवा साँची तो कहो तुम काके बसोजी ॥ २२६ ॥

राग कमोद ।

वारियां वे लाल वारियां ॥ तुसां आमनां फेरा पामनां कुंज हमारियां ॥ कौन सखीके तुम रँग राते हमसे अधिक प्यारियां ॥ ऊंची अटारियां ते लाल किवारियां तक रहियां बाट तिहारियां ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर या छबि पर बलिहारियां ॥ २२७ ॥

राग दादरा ।

सखी नँदलाल आवन नाहिं पावैं । भीतर चरन धरन जिन दीजो चाहे जिते ललचावैं ॥ ऐसेनको विश्वास कहां री कपटकी बात बनावैं । नारायण इक मेरे भवन बिन अंत चाहे जहां जावैं ॥ २२८ ॥

राग झिंझोटी ।

मोहिं मत रोकै तू एरी ब्रज नागरी । रूपकी निधानहै तू सभी

गुणखानहै तू तेरे सम कौन आज तेरो बडो भाग री ॥ कहे तो मैं नृत्य करूं बांसुरी में रागभरूं कान्हरो केदारो भैरव सोरठ विहागरी । तू तो सदा उपकारी हितहूकी करनहारी आज नारायण मोसों क्यों राखै लाग री ॥ २२९ ॥

सवैया ।

द्वारके द्वैरिया पौरिके पौरिया पाहरुवा घरके घनश्याम हैं ॥
दासके दास सखीनके सेवक पार परोसनके धन धाम हैं ॥
श्रीधर कान्ह कह्यो सुन भामिन मानभरी नहिं बोलत बाम हैं ॥
चूक अचूकहि माफकरौ वृषभानु ललीके गलीके गुलामहैं ॥ २३० ॥

राग पंचम ।

जागत जागत रैनि विहानी । कहि गये सांझ आवन मेरे गृह बसे अनत अनते रति मानी ॥ उर बिच नख क्षत प्रगट देखियत यह शोभा अति बानी । भाल महावर अधरन अंजन पीक कपोल निशानी ॥ निशि मग जोवत बीती मोको आये प्रात यह जानी । चतुर्भुज प्रभु गिरिधर सिधारो तहां जो तुम्हरे मन मानी ॥ २३१ ॥

राग ठुमरी खमाच ।

प्यारे तेरे जियाकी नजानी जात बात रे । कहूं तो सांझ आधी रात रहत कहूं पिछलीरात कहूं प्रात रे ॥उन हीं सों जाओ बतराओ सुख पाओ तुम जिन यह सिखाये दाँव घात रे । अब तोसों भूलके न बोलूं नारायण जहां लग अपनी बसातरे ॥ २३२ ॥

रागदेश ।

अब आये प्रात क्यों मेरे धाम । तुम जाओ जहां जाके जागेहो याम वश किये तुम्हें सो धन धन्य बाम ॥ पग धरत धरन पर डगमगात मुख वचन कहत तुतरात जात कत भूल परे इत कौन काम । अंजन अधरन पर पीक गाल जावक है भाल दोउ नयन लाल बिन गुनकि माल कहाँ पहरी श्याम ॥ तुम्हरे जिया भावत है जो बाल मैं परखी रसिक बिहारीलाल अब कीजे पिया वा घर अराम ॥ २३३ ॥

राग भैरव।

सांची कहो रँगीले लाल। जावक में कहां पाग रँगाई रँगरेजिन कोइ मिली है ग्वाल॥ बंदन रंग कपोलन दीये अरुण अधर भये श्याम तमाल। माला कहां मिली बिन गुनकी नख शिख देखत भई विहाल॥ जिन तुमरे मन इच्छा पुजई धन्य धन्य पिया धन वे बाल। सूर श्याम छबि अद्भुत राजत यही देख मोको जंजाल २३४

राग रामकली।

आज हरि रैनि उनींदे आये। अंजन अधर ललाट महावर नयन तमोर खवाये॥ शिथिलत वसन मरगजी माला कंकन पीठ सुहाये। लटपटी पाग अटपटे भूषण बिन गुन हार बनाये॥ शिथिल गात अरु चाल डगमगी भ्रुकुटी चंदन लाये। सूरदास प्रभु यही अचंभौ तीन तिलक कहाँ पाये॥ २३५॥

राग बिलावल।

नयननकी चंचलता कहा कीने भीने रंग कौनके हो श्याम हमसे कहा दुरावत। औरके बदन देखनको नेम लियो किधों पलकन मध्य राखी प्यारी ताके भार भये नहिं आवत॥ मधुप गंध लुब्ध सेज समीप निशि वसे संग लागे आवत रति कीरति गावत। सूरदास प्रभु मदनमोहन तनुकी प्रीति प्रगट भई है मुख नहिं बनत बनावत॥ २३६॥

राग भैरवी।

भोर भये उठि आये मोहन कहा बनावत बात। बिन गुन माल विराजत उर पर सब अँग चिह्न लखात॥ बंदन रंग कपोलन दीये सोहत चंद्र दुरात। धौंदी के प्रभु वाहीं जाओ तुम जहँ जागे सारीरात॥ २३७॥

राग जैजैवंती।

रंगरहे लाल उनहीं त्रियन संग छबि निरखत गति परत और और। ले दर्पण छबि वदन निहारो प्यारे अधरन अंजन लाग्यो

ठौर ठौर ॥ हमसों अवधि बद अनत विरम रहे करत फिरत प्रीति नई पौर पौर । जाओ जी जाओ तुम जहां सारी रैन जागे काहेको आवत प्रात मेरे दौर दौर ॥ २३८ ॥

राग बरवा ।

तुम जाओ जी जाओ जाके रहेहो रात । म्हारे काहेको आये जब भयो प्रभात ॥ लटपट पेच उनींदसे नयना डगमग डगमग डगमगात । कपटी कुटिल मैं तोही ते कहतहों मैं ना मानूंगी तोरी एक बात ॥ हाहा करतहों पैयाँ परत हों अबकीचूक मेरी करो जी माफ । जुगरामदास पिया मैं ना मानूंगी तुम वाहीके जावो जाके लगे हो गात ॥ २३९ ॥

राग प्रभाती ।

लाल तुम कहांसे आये जगे ॥ सगरी रैनके हमने पछाने थारी नजर खुमार भरी अँखियाँ ॥ नखन घुमावत लट लटकावत होठन बिन बोलन लगे। अधरन अंजन भाल महावर चरण धरत डगमगे ॥ आनँद घन पिया वाहीं जाओ तुम जहां तुम्हारे सगे ॥ २४० ॥

ठुमरी खमाच ।

प्यारे मेरे गरवा में जिन डारो बैयां । छूओ न लंगर मेरो पकरो ना कर तुम छांडो अब कपट बलैयां ॥ जाओ पिया वाही मन भाईके भवन में जाके निशि परत हो पैयाँ । झूठी झूठी सौहें क्यों खाओ नारायण जानूं मैं तिहारी चतुरैयां ॥ २४१ ॥

राग केदार ।

सीखे हो छल बल नट नागर ॥ मदन मोहनकी माधुरी मूरत सब गुणमें हो आगर ॥ ऐसी निठुराई काहू ना चदीयन चतुराई गुणसागर ॥ २४२ ॥

राग मलार ।

राधा जूकी सहज अटपटी बोलन । अहोपिया कौन बसत त्रिया उर पाई कहां बिन मोलन ॥ मोहूं सों गुण रूप आगरी नीले अंगन

चोलन । बडे बडे नयन अरुण कजरारे सुंदर अधर कपोलन ॥ उमग उमग पिया सन्मुख आवे मनभावत करत कलोलन । भगवत रसिक कहो क्यों ना साँची नाहिं करो अनबोलन ॥२४३॥

राग ठुमरी ।

प्यारी जी तिहारे बिन कलना परत है । मंदिर अटारी चित्रसारी और फुलवारी मोहिं कछू प्रिय ना लगत है ॥ घनो समझायो इत उत बहलायो पुनि तौहू मन धीरना धरत है । एतो हठ आगे कब कीयो नारायण जेतो हठ आज तू करत है ॥ २४४ ॥

राग जोगिया ।

सांची कहो किधों हांसी करोजी । आज कहा कारण जो मोसों बेर बेर कहो यहां से टरो जी ॥ कौन सखी कित में घर वाको तुम जाको मोहिं दोष धरोजी । नारायण यह अचरज मोको झूठ कहत नाहिं नेक डरो जी ॥ २४५ ॥

राग जंगला ।

राधा प्यारी तोहिं मनावन आयो । जबते तू निकसी मंदिर ते मोहिं न कछू सुहायो॥भीतर बाहर द्वार पौरि लौं राधा नाम न पायो। किशोरी गोपालकी यह इक विनती हाहा करत हरायो ॥ २४६ ॥

राग पीलू ।

राधा प्यारी बात सुनो इक मेरी । मैं आयो चाहतहों तुम पैं बीच लियो उन घेरी ॥ जतन अनेक विनती कर हारयो कैसे जात न फेरी । परवश परयो दास परमानँद काहि सुनावों टेरी ॥२४७॥

राग भूपाली ।

विनती कुँवरि किशोरी मेरी मान मान मान । बिन चूक मोते मान की मत ठान ठान ठान ॥ काहेको बैठी श्यामा भौंहैं तान तान तान। तूही तो मेरे जीवन धन प्रान प्रान प्रान॥मेरे हिया कि पीरको तू जान जान जान । जन जान रसिक लीजे दीजे दान दान दान ॥ २४८ ॥

राग विहाग ।

एतो श्रम नाहिंन तबहुँ भयो । सुन राधिका जेतो श्रम मोको तैं यह मान दयो ॥ धरणीधर विधि वेद उधारे मधु सों शत्रु हयो । द्विज नृप किये दुसह दुख मेटे बलिको राज्य लियो ॥ तोरयो धनुष स्वयंकर कीनो रावण अजित जयो । अघ बक बच्छ अरिष्ट केशि मथि दावानल अँचयो ॥ त्रिय वपु धरयो असुर सुर मोहे को जग जो न द्रयो । गुरुसुत मृतक ज्यायबे काजे सागर शोध लियो ॥ जानूं नहीं कहा या रिस में सहजहिं होत नयो । सूर सो बल अब तोहिं मनावत मोहिं सब बिसर गयो ॥ २४९ ॥

राग पूरवी ।

हम से रूठ रहत क्यों प्यारी । कित मुख फेर फेर हग बैठो कौन चूक वृषभानु दुलारी ॥ गयों सखन सँग मैं यमुना तट जहँ जल भरत रहीं ब्रजनारी । मोते कहन लगीं गागर भर लालन देहु उठाय हमारी ॥ मैं न सुनी जब कही सखन मिल लेंगी समझ तुम्हें बनवारी । देहैं मान कराय राधिका सो सब दई आय दरशारी ॥ जो वे कहत करतहो सोई तुम समझत नहिं भोरी भारी । एककी सात लगाय सुनावत झूठी ग्वालन रसिक विहारी ॥ २५० ॥

राग खमाच ।

इक अरज हमारी सुन भानकी दुलारी मान तज कीरति कुमारी प्यारीहो । ऐसी चूक क्या किशोरी मोते साँची कहदेवजी काहेको बैठी मुख मोरी जीकी ज्यारीहो ॥ कृपा अब कीजे लाय उर लीजे अधर रस पीजे दीजे दुख टारी हो । कहै रसिक विहारी चरण शिर धारी कुँवरि सुखकारी तू तो भोरी भारी हो ॥ २५१ ॥

राग भूपाली ।

हमते न प्राणप्यारी मुख मोरिवोकरो । वृषभानुकी दुलारी चित चोरिवो करो ॥ कछुदोष नाहिं मेरो री क्यों मान कीजिये । रजनी विहात सजनी री रिस छांड़ि दीजिये ॥ मोतन निहार गोरी

मैंतो हूं शरण तोरी। आननहै चंद्र तेरो री लोचन मेरे चकोरी॥ कीजै कृपा किशोरी दीजै अधर सुधारी। लीजै लगाय अपने री हिरदे रसिक विहारी॥ २८२॥

राग देश।

तुम सुनो राधिका विनय कान। नहिं सोहत मान तजिये सुजान॥ अब करो कृपा जन अपनो जान। ऐसी काहेकी रही हो मौन ठान॥ मेरे तूही है जीवन अधार अब वेगि मिलोनहिं जातप्रान॥ तुम देहु बात मोको बताय प्यारी जाते अब गइ रिसाय अपराध कौन कहो गुणनिधान। सुन रसिक विहारीजूकी बात मेरे आनँद उर में नहीं समात हँसि मिलिये कंठ में डारि पान॥२८३॥

राग धनाश्री।

सांची कहो कै प्यारी हांसी। काहेको इतनी रिसपावत कत तुम होत उदासी॥ पुनि पुनि कहत कहा तब हीं ते कहा ठगीसी ठाढी। इकटक चितै रही हिरदे तन मानो चित्र लिखि काढी॥ समझी नहीं कहा मन आई मदन त्रसै तू आगे। सूरश्याम अति भये आतुर भुजा गहन तब लागे॥ २८४॥

लावनी।

उठो अब मान तजो गोरी। रही है रैनि बहुत थोरी॥ सदा सों तुम मनकी भोरी। कहूं मैं शपथखाय तोरी॥ दोहा—औरन के बहँकाए ते, करि बैठतहो रोष। झूंठ साँच परखत नहीं, वृथा देत हो दोष॥ यही मोंहिं अचरज है भारी। तनक हँस चितवो सुकुमारी॥ शशि मुख पै हौं बलिहारी॥ दोहा॥ अपनी ओर निहारके, देहु अभय वरदान। क्षमाकरो सब चूक अब, जो कछु भई अजान॥ इती विनती मानो मोरी। तिहारे गुण नित प्रति गाऊं। बिना आज्ञा न कहूं जाऊं॥ दोहा—ताहू पै दृग अरुण कर, भ्रुकुटी लेत चढाय। जोरावर सों निबल की, काहू विधि न बसाय॥ हारेहू हार जीतेहूं हार॥ जिन्हें तुम समझो हितकारी।सोई

अति कपटी ब्रजनारी । दोहा—हम में फूट करायके, आप अलग मुसक्यात । नारायण तुमने करी, खरी न्यावकी बात ॥ भले को दंड बुरे पै प्यार ॥ २८६ ॥

राग विहाग ।

तनक हँस हेरो मेरी ओर । हम चितवत तुम चितवो नाहीं काहे भईहो कठोर ॥ निशिदिन तुमरोही नाम रटत हों चातक ज्यों घन घोर॥ कृष्ण प्रिया दर्शनके लोभी जैसे चंद्र चकोर॥२८६

सवैया ।

एक समय ब्रज कुंजन में री नाचत ग्वाली सभी दैतारी ॥ नाचत चंद्रभागा ललतादिक नयनकी सैन सों ताल विचारी॥ वा रिस धार लियो जिय में उन रूठ परी वृषभानु दुलारी ॥ मैं ना कह्यो कछु उन्हें जानकर लाओ मनायकै प्यारी हमारी॥२८७॥

गुर्जरीरागेण प्रतिमंठताले गीयते ।

मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधूनिचयेन ॥ सापराधतया मयापि न वारितातिभयेन॥ हरि हरि हतादरतया गता सा कुपितेव ॥ ध्रु० ॥ किं करिष्यति किंवदिष्यति सा चिरं विरहेण ॥ किं जनेन धनेन किं मम जीवितेन गृहेण ॥ हरि हरि० ॥ चिंतयामि तदाननं कुटिलभ्रु रोषभरेण ॥ शोणपद्म मिवोपरिभ्रमताकुलं भ्रमरेण ॥ हरि हरि० ॥ तामहं हृदि संगतामनिशं भृशं रमयामि ॥किंविनेनुसरामि तामिह किं वृथा विलपामि ॥ हरि हरि० । तन्वि खिन्नमसूयया हृदयं तवकलयामि ॥ तन्न वेद्मि कुतो गतासि न तेनतेनुनयामि ॥ हरि हरि०॥ दृश्यसे पुरतो गतागतमेव मे विदधासि ॥ किंपुरेव स संभ्रमं परिरंभणं न ददासि ॥ हरि हरि० ॥ क्षम्यतामपरं कदापि तवेदृशं न करोमि ॥ देहि सुंदरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि ॥ हरि हरि० ॥ वर्णितं जयदेव केन हरेरिदं प्रणतेन ॥ किंदुबिल्वसमुद्रसंभवरोहिणीरमणेन ॥ हरि हरि० ॥ २९८ ॥

राग देश सोरठ।

ललता राधा नेक मनायदे॥ मैं बलिजाउँ नाम तेरे पै दुखमें सुख सरसायदे॥ तू सजनी अति चतुर शिरोमणि मेरे मनकी प्रीति जतायदे। व्यास स्वामिनी रतिगुनगतिले सरबस पियाको रिझायदे॥

राग बरवा।

चलो री क्यों ना माननी कुंजकुटीर। तुम बिन कुँवर कोटि वनिता युत मथत मदनकी पीर॥ गदगद सुर विरहाकुल पुलकत स्रवत विलोचन नीर। क्वासि क्वासि वृषभानुनंदिनी विलपत विपिन अधीर॥ बंसी विशद व्यालमाला उर पंचानन पिक कीर। मलै जो गरल हुताशन मारुत शाखामृग रिपु चीर॥ हित हरिवंश परम कोमल चित चली चपल पियतीर। सुन भयभीत वज्रको पंजर सुरत शूर रणवीर॥ २६०॥

राग केदार।

जाके दरशको जग तरसतहै ताहि दरश तू दे मेरी प्यारी। जाकी मुरलीकी धुनि सुर मोहे ता तन नेक चितै मेरी प्यारी॥ शिव विरंचि जाको पार न पावत सो तेरे पगपरसैरीप्यारी। सूर-दास वश तीन लोक जाके सो तेरे वश हैं मेरी प्यारी॥ २६१॥

राग विहाग।

अलबेली लख लटक मुकुटकी। मान छाँड़ वृषभानुनंदिनी मान किये क्या नागर नटकी॥ है कछु सुरत तोहिं वा दिनकी जब वनमाल सों बेसर अटकी। करगह कमल कमल मुख मोहन सुर-झाई तब नेक न हटकी॥ सो मुखलियो छिपाय सुंदरी नयन ओट कर घूंघट मटकी। नख भौं लिखैं सिखै क्या सजनी कौन चहत कछु टोना टटकी॥ करगह बाहिं मनावत मोहन मानत नाहिं मान मद अटकी। युगल युगलको वदन विलोकत भुजभर भेट मेट तप घट की॥ २६२॥

राग बरवा ।

मान तज चल सजनी ब्रजचंदा बुलावें री । हाहा हठको काम नहीं है क्यों जीया तरसावे री ॥ जो हमरे सँग चलो न भामिनि वहतो आपहि आवे री । घन छाया सम जोबन जानो पल छिन में यह जावे री ॥ यमुना निकट कदमकी छैयां गोपीसंग नचावे री ॥ मुरलीधर तेरो ध्यान धरत है तेरो ही गुण गावे री ॥ २६३ ॥

राग केदार ।

छांडदे माननी श्याम संग रूठिबो । रहत तू अलीन जलमीन लौं सुंदरी करो किन कृपा नव रंग पर टूटिबो ॥ वेगि चल वेगि चल जात यामिनि घटत कुंज में केलिकर अमीरस घूटिबो ॥ बालकृष्ण दास नवनाथ नंदन कुँवर सेज चढ ललन सँग मदन गढ लूटिबो ॥ २६४ ॥

राग दश ।

तुम काहेको लाडिली मान करत । वाकी प्रकृति जैसी है तैसी तुम जानो वाके गुण अवगुण कत जियामें धरत ॥ ताहीसों कीजिये कोप कुँवरि बिन कारण बैठत लर लर तुमसे तो पिया प्यारो नितही डरत । व्यास स्वामिनी चतुर नारि में तोहिं मनावत गई जो हारि कब देखूंगी पियासे तोको अंक भरत ॥२६५॥

राग जिलेमें ।

तोसी त्रिया नहीं भवन भटूरी । रूपराशि रसराशि रसिक वर तोहिं देख नँदलाल लटूरी ॥ लेकर गांठ दई जो दृष्टि भर तेरी सुरंग चूँदरी वाको पीतपटूरी । नंददास प्रभु गिरिधर नागर तू नागरी वे नागर नटूरी ॥ २६६ ॥

रैनि गई री प्यारी छाँडो हठ री । सुन वृषभानु कुँवरि हरि तो वश निशिदिन तेरोहि नाम रटेरी ॥ मदनगुपाल निरख नयनन भर वेगि चलो अब काहे न टेरी ॥ दास गोविंद प्रभुकी छवि निरखे प्रीति करेसे तेरो कहा घटेरी ॥ २६७ ॥

कवित्त ।

हाहारी हठीली हठ छाँडदे छबीली अली भूले हू कान्ह आज पान हू न खात है ॥ तेरी चितवनको चाहत गोपाल लाल तजे सब ख्याल प्राण तोही में बसात है ॥ मेरो कह्यो मान प्यारी चल देख तू अटारी वे ठाढे बनवारी अब देर क्यों लगात है॥कर कर शृंगार तू उतारति है बार बार तू तो इतरात उत रात बीती जात है ॥२६८॥

राग जिलामें ।

तोसी नहीं कोऊ देखी री हठीली । ज्यों ज्यों मैं अब तोहिं मनावत त्यों त्यों तू होवै अति गरवीली ॥ ऐसे समय बल रोष न कीजे भौंहैं कमान तनक कर ढीली । नारायण उठ मिल प्रीतम सों तजदे मानकी बान छबीली ॥ २६९ ॥

राग रेखता ।

इतनो न मान कीजे वृषभानुकी दुलारी । तेरे मनायबे में मोहिं श्रम भयो है भारी ॥ इतनो० ॥ प्रीतमको आज तो बिन पल छिन न चैन आवे । नहिं जी लगे भवन में नहिं बन कि छवि सुहावे ॥ हँस बोलिबो कहांको नहिं खान पान भावे । हाथन में चित्र तेरो पुनि पुनि हिये लगावे ॥ अति विकल ह्वै रह्योहै वह साँवरो विहारी । इतनो० ॥ प्यारेके आगे अपने गुणकी मैं कर बडाई । तेरे मनायबे को बीरा उठाके आई ॥ बल बुद्धि मोमें जितनी तितनी मैं सभ लगाई । पै नेकहू न मेरी चतुराई काम आई॥ सब विधिसों राजनीती मैं कहके तोसों हारी ॥ इतनो० ॥ तेरी तो नित बडाई सभ सखी जन बखाने । प्यारी हियेकी कोमल सपनेहूं रिस न जाने ॥ यह आजका भयोहै वैठी हो भ्रुकुटी ताने । उन सखी जनको कहबो अब कौन साँच माने ॥ सब झूठही बडाई भामिन करे तिहारी ॥ इतनो०॥ लालनके साथ मिलके वन शोभा निरख प्यारी । कहुँ सघन ललित छाया कहुँ फूली फुलवारी ॥ जलसों भरे सरोवर झुकरहिं द्रुमन कि डारी । बोलत अनेक पक्षी वर्णत हैं छबि तिहारी ॥ बल वेगहीं

सिधारो यह लालसा हमारी ॥ इतनो० ॥ एरी सुघर सयानी मो विनती मान लीजै । तजके य मान मुद्रा प्यारे सों हेत कीजै ॥ नितही अधर सुधारस हँस हँसके दोऊ पीजै । फिर कर न उन सों रूठो बरदान यही दीजै ॥ नारायण याही कारण निज गोद में पसारी ॥ इतनो० ॥ २७० ॥

राग कान्हरा ।

देख री आज नव नागरी वेषधर ललीके छलन हित ललन कैसे सजे पहर भूषण बसन हगन कजरा दियो निरखि शृंगार सुरवधू मनमें लजे ॥ मंद मुसक्यान मग चलत गति ठुमकके मधुर धुनि किंकिणी चरण नूपुर बजे । रूप अभिराम नारायण लख श्यामको कौनसी मानिनी मान जो ना तजे ॥ २७१ ॥

राग कमोद ।

जयति नव नागरी सकलगुण सागरी कृष्ण गुण आगरी दिनन भोरी । जयति हरिभामिनी कृष्णघनदामिनी मत्तगज गामिनी नव किशोरी ॥ जयति सौभागमणि कृष्णअनुरागमणि सकल त्रिय मुकुटमणि सुयश लीजे । दीजिये दान यह व्यासकी स्वामिनी कृष्णसों बहुरि नहिं मान कीजे ॥ २७२ ॥

राग विहाग ।

कह्यो क्यों न मानत मेरो । मदन मोहन नव कुंजद्वार ठाढे पंथ निहारत तेरो ॥ झगरो करत सब रैनि गँवाई छिन छिन पल पल झेरो । साज शृंगार हार अपने ले प्राणदान दे तेरो ॥ अजहुं समझ शोचरी आली और नहीं कछु केरो ॥ गोविंद प्रभुके हृदय की कौन मेटे तो विन विरह अँधेरो ॥ २७३ ॥

राग कान्हरो ।

रहरी मानिनी मान न कीजे । यह जोबन अंजलिको जल है जो गोपाल माँगैं तो दीजे ॥ छिन छिन घटत बढ़त ना रजनी ज्यों ज्यों कला चंद्रकी छीजै । पूरब पुण्य सुकृत फल कीनो काहे न रूप

नयन भर पीजै ॥ सौंह करत तेरे पायँनकी ऐसे जिवन दश दिन जीजै। सूर सुजीवन सफल जगतको वैरी बाँध विवश करलीजै॥२७४॥

राग बिलावल ।

चलो री ऐसो मान न करिये मानिनी प्यारा आया तोरे घरे । तूही मान तूही दान तूही रोम रोम रम रही ऐसे नयन भये हेरे ॥ झूठी कहों मोहिं शपथ रामकी साँचकर वचन आली मान मेरे । छांड निठुराई अब मान मेरो कह्यो गुण अवगुण भये तेरे ॥ २७५॥

राग कान्हरा ।

तू है सखी बड़भाग भरी नँदलाल तेरे घर आवत हैं । निजकर गूंथ सुमनके गजरे हर्षि तोहिं पहरावत हैं ॥ तू अपनो शृंगार करत जब दर्पण तोहिं दिखावत हैं । आनँदकंद चंदमुख तेरो निरख निरख सुख पावत हैं ॥ जाके गुण सभ जगत बखानत सो तेरे गुण गावत हैं । नारायण बिन दाम आज कल तेरेहि हाथ बिकावत हैं ॥२७६॥

राग कान्हरा । (अंतर दोहा)

मनावत हार परी मेरी माई ॥ राधे तू बड़भागनी, कौन तपस्या कीन । तीनलोकके नाथ हरि, सो तेरे आधीन ॥ शिव विरंचि नारद निगम, जाकी लहत न डीठ । ता हरिसों प्यारी राधिके, दे दे बैठत पीठ ॥ अहो लड़ैते दृग किये, परे लाल बेहाल । कहुँ मुरली कहुँ पीत पीट, कहूँ मुकुट वनमाल ॥ बिछुरे होय सो फिर मिलैं, रूसे लेहि मनाय । मिल्यो रहै औ ना मिलै, तासों कहा बसाय ॥ तनक सुहागो डारके, जड कंचन पिघलाय । सदा सुहागिनि राधिका, क्यों न कृष्ण ललचाय ॥ मान कियो तैं भली करी, कैसो तेरो मान । जैसो मोती ओसको, तैसो तेरो मान ॥ तू चटते मट होत नहिं राधे उन मोहिं लेन पठाई । राजकुमारी होय सो जाने कै गुरु सीख सिखाई ॥ नँदनंदनको जान महातम अपनी राख बडाई । ठोडी हाथ दे चली दूतिका तिरछी भौंह चढाई ॥ परमानंद प्रभु करूंगी दुलहैया तो बाबा की जाई ॥ २७७ ॥

राग वसंत ।

गूंजेंगे भ्रमरा विराग भरे वन बोलेंगे चातकवा पिक गायके ॥ फूलेंगे केसू कुसुंभा जहांलौं मारेगो काम कमान चढायके ॥ बहेगी सीरी सुगंध मारुत जबहिं लगैगी साखसो साख मिल आयके ॥ मेरे कहे नचले बाबा की सौंह ऋतु वसंत लेय जायँगे मनायके२७८

राग विहाग ।

पहले तो देखो आय माननी की शोभा लाल पीछे तो मनाय लीजै प्यारे गोविंद ॥ कर पर धर कपोल रही है नयनन मूंद कमल बिछाय मानो सोयो है चंद ॥ रिस भरी भौंवाँमानो भौंरा बैठे अरबरात इन्दु तरे अरविंद भरयो मकरंद ॥ नंददास प्रभु प्यारी ऐसी न रुठैयेवल जाको मुख देखे ते कटत दुख द्वंद ॥ २७९ ॥

राग देस ।

कर नेह नयन लगायके फिर मान करना किन बदा । तज रोष दोष लगायबो सज मोद में मंगल मुदा ॥ अपराध विन अपराध धरबो सीख तोहे किन दई । धर ध्यान गह मुख मौन बैठी मनो कोइ जोगिन नई ॥ रस रीति प्रीति प्रतीति बिसरी कठिन कुच संगत किये । यह जान अब परसोनहीं लग जाय कहुँ मेरे हिये ॥ सुन बैन आतुर नयन फेरे रसिक भगवत यूं कही। हँस कंचुकी बँद खोल लिपटी मनो घन दामिनि गही ॥२८०॥

राग पीलू ।

तूतो मोहिं प्राणन हूंते प्यारी। भूले मान न कीजिये सुंदरि हौंतो शरण तिहारी ॥ नेक चितै हँस बोलिये सुंदरि खोलिये घूंघट सारी । कृष्णदास हित प्रीति रीति वश भरलिये अंकन बारी ॥ २८१ ॥

राग भूपाली ।

मन मोहनी मन मोहना मन मोहिबो करो। मुख चंद चख चकोरी सदा जोहिबो करो ॥ घनश्याम रसिक नागर तू है जो दामिनी । तज मान अधर पानकरो जात यामिनी ॥ कछु दोष ना पियाको

तू भूल क्यों गई । प्रतिबिंब देख आपनो तैं पीठ क्यों दई ॥ समझाय कही भगवत जब लाग कान सों । सुखदान उठी आतुर भेटी सुजान सों ॥ २८२ ॥

राग देश ।

कुंजन पधारो राधे रंग भरी रैन ॥ रंग भरी दुलहन रंगभरे पिया श्याम सुंदर सुखदैन ॥ रंग भरी सैनी बिछी सेज पर रंग भरचो उलहत मैन ॥ रसिक बिहारी पिय प्यारी जी दोऊ मिल करो सेज सुखशैन ॥ २८३ ॥

राग विहाग ।

अब पौढनको समयो भयो । इत ढुर गई द्रुमनकी छैयाँ उत ढुर चंद गयो ॥ पौढ रहे दोउ सुखद सेज पर बाढत रंग नयो । रसिक विहारी बिहारन दोऊ पौढे यह सुख दृगन लयो ॥ २८४ ॥

द्वितीय मानलीला ।

राग कान्हरा ।

रैन मोहिं जागत बिहानी मोहन सों मैं मान कियो ताते भई तनु अधिक तपत ॥ सेज सुगन्ध मलय विष लागत पावकहूं ते दाह सखी री त्रिविध पवन उडपत ॥ ऐसो अति व्याप्यो हो मन्मथ मेरोई जीया जाने मोहिं श्याम श्याम कह रैनि जपत ॥ वेग मिलावो सूरके प्रभुको भूल अभिमान करूं कबहूं नाहिं मदन बाण ते कँपत ॥ २८५ ॥

राग जैजैवंती ।

बनत बनाऊं कछु बन नाहिं आवे साँवरे सजन बिन तलफत प्राण हमारे । सोच किये क्या होत री सजनी वे हरि कठिन हृदय समझाऊं कैसे कारे ॥ तपोंगी ताप चहूं ओर अगन दे तनुको जराऊं तो मैं पाऊं पिया प्राणप्यारे । सूर सकल विधि कठिन भई है बीतत रैनि गिनत गई दई के तारे ॥ २८६ ॥

राग काफी ॥

सखी मोहिं मोहन लाल मिलावै । ज्यों चकोर चंदाको इकटक भृंगी ध्यान लगावै ॥ बिन देखे मोहिं कल न परेरी यह कह सभन सुनावै । बिन कारण मैं मान कियो री अपनेहि मन दुखपावै ॥ हाहा करि करि पाँयन परि परि हरि हरि टेरि लगावै । सूर श्याम बिन कोटि करो जो और नहीं जिय भावै ॥ २८७ ॥

राग रामकली ।

धन मेरे भागकी शुभ घरी । श्याम सुंदर मदन मोहन भुजा ले उर धरी ॥ जासु चरण सरोज गंगा शंभु ले शिरधरी । जासु चरण सरोज परसत शिला सुनियत तरी ॥ जाके वदन सरोज निरखत आश सगरी सरी । सूर प्रभुकी भेट ते मेरी सकल आपदाटरी २८८ ॥

राग विभास ।

कित श्वास उसास भई सजनी, उत दौर गई इत दौरके आई ॥ टीकी जो मिटी अलकैं जो छुटीं, प्यारी मैं तेरे लालके पाँयन पर आई ॥ अरुणाई कहां गई होंठनकी प्यारी मैं ब्रजनाथ ने बहुत बकाई ॥ कहा पलटयो पट प्रीतम को, प्यारी मैं तेरी प्रतीतिको लाई ॥ २८९ ॥

राग विहाग ।

आय क्यों न देखो लाल अपनी प्यारीको ख्याल चांदनी में पौढी जाते चंदा हू गयो लजाय ॥ मंडप पुहप हार बहु विधि नीले पट नाशिकाको मोती देख उडुगण सकुचाय ॥ आयेहैं निकट लाल देख रीझे ब्रजबाल बारबार मुखकी लेत बलाय ॥ नंददास प्रभु प्यारे अधरन बीरी धरी झझक उठी अकुलाय ॥ २९० ॥

नींद तोहिं बेचूंगी आली जो कोइ गाहक होय । आये मोहन फिर गये अँगना मैं बैरिरन रहीसोय॥ कहा करूं कछु वश ना मेरो आयो धन दियो खोय। लछीराम प्रभु अबके मिलें तो राखोंगी नयननसमोय २९१

मेरे कर मेहँदी लगीहै लट उरझी सुझाय जा । शिरकी सारी

सरक गई है अपने हाथ उढाय जा ॥ भालकी बेंदी मोरी गिर जो परीहै हाहा करत लगायजा । नीलांबर प्रभु गुणना भूलूं बीरी नेक खवायजा ॥ २९२ ॥

परस्पर मानलीला ।

राग कल्याण ।

श्याम तेरी बँसुरी नेक बजाऊं । जो तुम तान कहो मुरली में सोइ सोइ गाय सुनाऊं ॥ हमरे भूषण तुम सभ पहरो हौं तुमरे सभ पाऊं । हमरी बिंदरी तुमहि लगावो हौं शिर मुकुट धराऊं ॥ तुम दधि बेचन जाहु वृँदावन हौं मग रोकन आऊं । तुम्हरे शिर माखन की मट्टुकिया हौं मिल ग्वाल लुटाऊं ॥ माननी होकर मान करो तुम हों गहि चरण मनाऊं । सूर श्याम प्रभु तुम जो राधिका हौं नँदलाल कहाऊं ॥ २९३ ॥

राग देश ।

युगल छबि आज अनूप बनी । गोरे श्याम साँवरी राधा नख शिख द्युति कमनी ॥ खंजन नयन मैन मद गंजन अंजन रेख अनी । ललित किशोरी लाल रसिकवर मृदु मुसक्यान घनी ॥ २९४ ॥

राग पीलू ।

श्याम श्याम श्याम रटत प्यारी आपही श्याम भई । पूंछत फिरत अपनी सखियन ते प्यारी कहां गई ॥ बृंदावन बीथिन यमुना तट श्रीराधे श्रीराधे । सखी संगकी यह छबि निरखत रहीं सकल मौन साधे ॥ गरुवी प्रीति कहा न करावे क्यों न होय गति ऐसी । कहै भगवान हित रामराय प्रभु लगन लगे जो जैसी ॥ २९५ ॥

राग विलावल ।

नंदलाल निठुर होय बैठ रहे । प्यारी हाहा करत न मानत पुनि पुनि चरण गहे ॥ नहिं बोलत नहिं चितवत मुख तन धरणी नखन करोवत । आप हँसत पुनि पुनि उर लागत चकित होत

मुख जोवत ॥ कहा करत यह बोलत नाहीं पिय यह खेल मिटावो ॥ सूरश्याम मुख चंद्र कोटि छबि हँस कर मोहिं दिखावो २९६ ॥

राग विहाग ।

तनक हरि चितवो मेरी ओर । मेरे तो मोहन तुमही इक हो तुमको लाख करोर ॥ कबकी मैं ठाढी ठाढी अरज करतहों सुनिये नंद किशोर।कृष्णप्रियाके प्राण जीवन धन करुणानिधिचितचोर ॥२९७॥

राग परज ।

मृदु मुसुकन कीजे थोरी थोरी । हमसों कहा रूसनो हम तुम नेह कुंजके चंद चकोरी ॥ तजिये मान तनैनी भ्रुकुटी ढीली करिये ललित किशोरी । निठुराई सभ छांड छबीली वचन सुधा दीजै श्रुति ढोरी ॥ २९८ ॥

इत मत निकसे तू चौथके चंदा देखेते कलंक मोहिं लगजायगो रे । दूर ते गुलाल भरो छूओ जिन छैला मोहिं तेरो श्याम रंग मोहिं लग जायगो रे ॥ हाहा खाऊं पैया परूं नियरे न आओ छैला करन चवाव गाम लग जायगो रे । नागरिया लोभी फाग स्वार्थ हीको मीत मो मन निगोरो भूल लग जायगो रे ॥ २९९ ॥

कान्हरे बांसुरिया बारे रे तू ऐसे जिन बतराय । यों ना बोलिये एरे घर बसे मैं लाजन दबगई हाय ॥ मैं हारी तेरे खेलन हीं ते तू सहज चल्यो क्यों ना जाय । रसिक बिहारी जी सों नाम पायके क्यों एतो इतराय ॥ ३०० ॥

राग देश ।

हमसे न बोलो साँवलिया तू मतवारोरे । हट मोहन हटको नहिं मानै नट खट जात अहीर कहावै जाय कहूं यशुदा सों हटको वारोरे ॥ कुबिजा सौत भली मनभावै हमैं बघंबर योग पठावै छोड़ दियो हम नाहक जियरा जारोरे ॥ ३०१ ॥

राग कालिंगडा ।

अपनी डगर चल्यो जा रे ब्रजवासी । तू मेरे ढिग जिन ठाढ़ो

रह देखेंगे लोग करेंगे हांसी ॥ तुम ब्रजवासी अपनी गरजके नयना मिलाय गले डार गयो फांसी । पुरुषोत्तम प्रभु नीठ मिलेहो तू मेरो ठाकुर मैं तेरी दासी ॥ ३० ३ ॥

राग प्रभाती ।

मैंतो थांपै वारी वारी हो बिहारी जी मृदु मुसकन पर जावां बलिहारी जी । लोक लाज तज थारे लडलागी थैं काईं उर धारी गिरिधारी जी ॥ और तरां जिन जानोहो बिहारी जी लाखां भांति करो म्हाँसे प्यारी जी । ब्रजनिधि अरजी सुनो जी हमारी अनमोली अनतोली करो म्हाँ से यारी जी ॥ ३०३ ॥

दानलीला ।

दोहा—कछु माखनको बल बढ्यो, कछु गोपन करी सहाय ।
श्रीराधाजूकी कृपा सों, गोवर्द्धन लियो उठाय ॥

राग बिलावल ।

श्री वृंदाविपिन सुहावनो जहँ बंसीबट की छाँह हो । श्रीराधे दधिलै नीकसी कन्हैया रोंकत राह हो ॥ वृषभानु लड़ैती दानदे । नंदराय लला घर जानदे ॥ लाला सबही सयाने साथके अरु तुमहूं सयाने लालहो । लाला लिख्या दिखावो साँवरे कब दान लियो पशुपालहो ॥ नंदराय लला घर जानदे । प्यारी लिया है सो लेहिं गे नई रीति न करते आज हो ॥ वृषभानु ० ॥ लाला क्या लादे हम जातहो श्याम काह भरे हम बैलहो । लाला तुम टेढे ठाढे भये मोरी रोक मही की गैल हो ॥ नंदराय ० । प्यारी अँग अँग बसन सुहावने मानो भरेहैं रतन भूपाल हो । राधे नीके रूप लड़ैती ये कोइ जोबन लादे जायहो ॥ वृषभानु ० ॥ लाला याहीते कारे भये कोइ लैलै ऐसे दानहो । लाला कब छूटोगे भार सों सबरे तीरथ गंग नहायहो ॥ नंदराय ० ॥ प्यारी गोरज गंगा न्हात हौं और जपत गौअन के नामहो । प्यारी पावन पवित्र सदा रहों ऐसे दान ते ना सकुचात हों ॥ वृषभानु ० । लाला देश हमारे बापको

जाकी वाहँ बसे नँदराय हो । लाला घास जो राख्यो साँवरे याते सुख सों चरावो गाय हो ॥ नंदराय ० ॥ प्यारी देश तुम्हारे बाप को सो मैं ही दिया है बसाय हो । प्यारी सभ संकल्प्यो वा दिना जब पियरे कीने हाथ हो ॥ वृषभानु ० ॥ लाला दान ले दान ले दानले मन फूल्यो अति सुखपायहो । लाला लै रे मोहन दानलै कछु गाय बजाय रिझायहो ॥ नंदराय ० ॥ प्यारी नट ज्यों नाचे सांवरो कोइ पढत कबित जैसे भाटहो । श्री वृंदावन लीला रची यश गावत अलि भगवानहो ॥ ३०४ ॥

हमरे गोरस दान न होय मोहन लाडलेहो । हमारे मग मग फिरत ग्वाल ग्वालन दान देहो ॥ कबके तुम दानी भये लाल कब हम दीनो दान । गाय चरावो बाबा नंदकी तुम सुनो अनोखे कान्ह ॥ हम दानी तिहुँ लोकके तुम चारों युगकी ग्वार । दान न छाँडों आपनो तेरों राखों गहनो हार ॥ रत्न जटितकी ईंडुरी मेरी हीरा जडीहो हार । सो तुम राखन कहतहो कामरके ओढन हार ॥ ब्रह्मा तानो पूरियो हो बुनी हो बैठ महेश । सो हम ओढी कामरी जाको पार न पायो शेष ॥ भौहैं नचावत चातुरी ढोटा बोलत वड बड बोल । मेरो हार किरोरको तेरी सब गायनको मोल ॥ यह गाय तिहूं लोक तारनी चारों युग परमान । दूध दहीके कारणे तेरो हारलेहों रसदान ॥ काहेको बाद बदतहो ढोटा काहे करत अति सोर । जैसी बाजे तेरी बांसुरी मेरे नूपुर की घनघोर ॥ याबंसी की फूंक पै मैंने गिरिवर लियो है उठाय । ढीठ बहुत यह ग्वालिनी इनकी मटुकी लेहों छडाय ॥ हमहैं सुता वृषभानुकी तुम नंद महरके कान्ह । प्रेमप्रीति रुचिमान कै ढोटा अब जिन करो गुमान ॥ वृंदावन क्रीडाकरी हो कीनो रास बिलास । सुर नर मुनि जय जय करत गुण गावें माधुरी दास ॥ ३०५ ॥

राग भैरवी ।

देजा गुजरिये दधि माखन ॥ गूजरी ये गुजरेटरीये मेरे इतेक

मारग आउ री ॥ मैं हूं नंदमहरको ढोटा भरला मटुकी मैं मारूं सोटा तेरे विच विच धूम मचाऊं । मैं वृषभानु गोपकी बेटी मत जानो कोइ और सहेटी कंस राजाकी फौंजां लाऊं तेरे नंद समेत बँधाऊं ॥ ३०६ ॥

मोहन मैं गूजर वरसाने दी मोते नाहक मांडीरार ॥ पांच टकाकी कामर ओढे तापर करत गुमान ॥ गाय चरावत नंदकी मोपै मांगत दधिको दान ॥ रत्न जडित मेरी ईंडुरी हीरा लगे करोर ॥ एक हीरा गिरजाय गो तेरी सब गायनको मोल ॥ कृष्ण जीवन लछीरामके प्रभु प्यारे मोते नाहक मांडी रार ॥ नेक चितै बलि जाऊं सांवरे मेरो विमल विमल दधिखाय ॥ ३०७ ॥

राग बिलावल ।

ग्वालिन दान हमारो दे । हम दानी या माल के ॥ देहो लेहो तुम जात कहां हो लेहों चुकाय नित हाल कोरे ॥ सघन कुंज वन वीथिन गहवर सांकरी खोर कुआँ ताल कोरे ॥ पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरखत वार वार ब्रजबाल कोरे ॥ ३०८ ॥

याही मेरा प्यारा रे दान मांगे अरेहो हाथ लकुटिया कांधे कमरिया अरेहो गौअन रखवारा ॥ मोर मुकुट माथे तिलक विराजे अरेहो नयनों रतनारा ॥ कृष्ण जीवन लछीरामके प्रभु प्यारे जीवन प्राण हमारा ॥ ३०९ ॥

राग दादरा ।

हमरो दानदेहुब्रजनारी । मदमाती गजगामिनि डोलै तू दधि बेचनहारी ॥ रूप तोहिं विधनाने दीयो ज्यों चंदा उजियारी । मटुकी शीश कटीले नयना मोतिन मांग सँवारी ॥ हार हमेल गलेमें राजै अलकैं घूंघरवारी । या ब्रज में जेती सुंदर हैं सब हम देखी भारी ॥ नारायण तेरी या छवि पर नँदनंदन बलिहारी ॥ ३१० ॥

राग बरवा पीलूकाजिला ।

पहले मेरो दान चुकारी पीछे बतराइयो प्यारी । तो समान तूही देत

दिखाई नव जोवन नव सुंदरताई और कहां लौं करों बडाई मोहन को मन मोहन हारी ॥ अति बांके हैं नयन तिहारे सान धरे पैने अनियारे जिन हमसे घायल कर डारे इन समान नहिं बानकटारी । नारायण जिन भीर लगावो देहु दान अपने घर जावो क्यों मटुकी चौपट गिरवावो देख हैं सँगे पुर नर नारी ॥ ३११ ॥

राग मल्हार ।

जोबन की मदमाती डोले री गुजरिया । अंग अंग जोबन की उठत तरंग नई नयना कजरारे बाँके तिरछी नजरिया ॥ हाथन में चूरी नकवेसर करनफूल मुंदरी ललित छबि देत अँगुरिया । अबलों तोसी नहीं देखी नारायण दधिकी बेचनहारी नंदकी नगरिया ३१२॥

राग सोरठ ।

ठाढी रहरी गूजरी तू देजा मेरो दान । ढिग नहिं आवत वगद जात तुम फोरूं तेरी मटुकी लकुटिया तान ॥ कैसो दान माँगे लाला चतुर सुजान । या मारग हम नित प्राति आवत कबहूं नदीनो दधिको दान ॥ दानके काजहिं हम ब्रज आये छांड दियो वैकुंठ सो धाम । या गहवर में हमहीं बसत हैं ह्यां धौं कहा तिहारो काम ॥ क्या तुम ग्वालिन आँख दिखावो दावालनको कर गयो पान । सूरश्याम प्रभु तुम्हरे मिलनको मनमोहनको राख्यो मान ॥३१३॥

राग भैरव ।

देखतकी मुख ऊजरी गूजरी शीश विराजत बासन कोरो॥ दान बिना कहो कैसके जान द्यों तू इत भोरी कि मैं इत भोरो॥ गोरसकी सौंह सो रस छाँड़ देउँ तनक चखाय घनो है कि थोरो॥ जैसे तुम लाईहो याहि निहोरो कर तैसे इक मान लेहु मेरो निहोरो॥

अटपटी पाय मूंध बाबा कैसे रहो कान्ह कौने दान लायो जो दानको कहायो है ॥ किधौं शनी मंगल किधौं राहु केतु चौथ आये किधौं संक्रांति किधौं ग्रहणहूं लजायो है॥ अँचरा न गहो कहो कैसो दान मांगत हो कहा जगजीवन जू ऊधम मचायोहै ॥ देखो सखी कैसे नयन खंजनसे नाचतहैं जानेतो यशोदा मैया कहा खायजायोहै ३१५॥

राग जंगला ।

द्वार पौरियाको रूप राधेको बनाय लाई गोपी मथुरा ते वृंदावन की लतान में । कह्यो टेर कान्ह सों बुलायो तोहिं कंसजी ने कौनके कहेते दधि लूटत हो दान में ॥ संगके सखा सब डगर भुलायगये कृष्ण सों सयाने गये पकर भुजा पान में । छूट गयो छल तो छबीली अवलोकन में ढीलीभई भौंह वा लजीली मुसकानमें ३१६

राग बिलावल ।

एरी यह कोहै री याहे दान देत गोवर्द्धन केरी ग्वैंडे ॥ हारन खेतन गाम मड़ैया कान्हर ठाढो ऐंडे ॥ बाप भेरे कर कंस रजा को पूत जगाती पैंडे । या ब्रजकी अब रीति नई है औलाती को नीर बरैंडे ॥ पराये बगर जिन देहु अडीठन कान्हर छैंड़ो छैंडे । कृष्णदास बरजो नहिं मानत तोरत लाजकी मैंड़े ॥ ३१७ ॥

राग सोरठ

कांकड़ली ना घालो म्हारी फूटे गागडली । तू तो ठानो घर में ठाकड हौंभी ठाकडली ॥ आकड़ आकड़ बोलो कान्हा मैंभी आकड़ली । मोढे थानो कारी कामर हाथ में लाकडली ॥ नौलख धेनु नंद घर दुहिया एकन बाखडली । माखन माखन आपने खायो रहगई छाछडली ॥ जाय पुंकारूं कंसके आगे मारे थाप डली । बृंदाबन में रास रच्योंहै मोरकी पांखडली ॥ नरसींके स्वामी सामलिया दूधमें साकडली ॥ ३१८ ॥

राग परज ।

तुम टेढ़ो म्हारी टेढ़ी गगरिया । टेढी ढेढी चाल चलो त्रिभंगी काहे को दिखावे लाला टेढी पगरिया ॥ टेढी अलक में क्या बाँधूंगी कछु न सुहावे मोहिं थारी सगरिया । टेढो श्रीबृंदावन गोकुल टेढी वाहूसे टेढी वृषभानु नगरिया ॥ ठेढ़ो श्रीनंद बाबा मात यशोदा और टेढी वृषभानु दुलरिया । सूरदास टेढेकी संगत टेढे होकर पार उतरिया ॥

राग गुर्जरी ।

गिरिवर धरचो आपने करको । ताहीके बल दान लेतहो रोक रहतहो हमको ॥ अपनेही मुख बडे कहावत हमहूं जानत तुमको। यह जानत पुनि गाय चरावत नित प्रति जातहो बनको ॥ मोर मुकुट मुरली पीतांबर देखे आभूषनको । सूर कांध कमरी हूं जानत हाथ लकुटिया करको ॥ ३२० ॥

राग बिलावल ।

यह कमरी कमरी कर जानत । जाके जितनी बुद्धि हृदय में सों तितनी अनुमानत ॥ या कमरीके एक रोम पर वारों कोटिन अंबर ॥ सो कमरी तुम निंदत गोपी तीन लोक आडंबर ॥ कमरीके बल असुर सँहारे कमरी ते सब भोग । जात पाँत कमरी है मेरी सूर सबहि यह योग ॥ ३२१ ॥

अब तुम सांची बात कही । एते पर युवतिनको रोकत मांगत दान दही ॥ जो हम तुमहिं कह्यो चाहतही सो श्री मुख प्रकटायो ॥ नीकें जात उघारी अपनी युवतिन भले हँसायो ॥ तुम कमरीके ओढन हारे पीतांबर नहिं छाजत । सूर श्याम कारे तनु ऊपर कारी कामरि भ्राजत ॥ ३२२ ॥

मोसों बात सुनो ब्रजनारी । एक उपख्यान चलत त्रिभुवनमें सो तुम आज उघारी ॥ कबहूं बालक मोहन दीजे मोह न दीजे नारी ॥ जोमन आवै सोइ कर डारै मूंड चढतहैं भारी ॥ बात कहत अठिलात जात सब हँसत देत कर तारी । सूर कहा ये हमको जाने छौंछकी बेचन हारी ॥ ३२३ ॥

यह जानत तुम नंदमहर सुत । धेनु दुहत तुमको हम देखत जबहिं जात खरकाहिं उत ॥ चोरी करत यही पुनि जानत घर घर ढूंढत भांडे । मारग रोक भये अब दानी वे ढंग कबते छाँडे ॥ और सुनो यशुमति जब बांधे तब हम करी सहाय । सूरदास प्रभु यह जानत हम तुम ब्रज रहत कन्हाय ॥ ३२४ ॥

राग आसावरी ।

को माता को पिता हमारे । कब जनमत हमको तुम देख्यो हँसी लगत सुनि बात तुम्हारे ॥ कब माखन चोरी कर खायो कब बांधे महतारी । दुहत कौन गैयाको चारत बात कही तुम भारी ॥ तुम जानत मोहिं नंद ढटाना नंद कहांते आये । मैं पूरण अविगत अविनाशी मायासबनभुलाये ॥ यहसुनिग्वालिसबीमुसकानी ऐसेही गुण जानत । सूरश्याम जो निदरयो सभही मात पिता नहिंमानत ॥

राग सोरठ ।

तुम का जानोरी गूजर दधिकी बेचन हार । कौन पिता को मात हमारे जन्म अजन्म रूप रँग धार ॥ भुवके भार उतारन कारन लीन मनुज अवतार । मेरी माया जगत भुलानो मेरो कह्यो सत्यकर मानो गावत वेद पुराण भागवत यश गावत श्रुतिचार ॥ जो मेरो निज दास कहावे रसिक प्रीतम निज भक्ति पावे ब्रह्मादिक सनकादिक नारद शेष न पावत पार ॥ २२६ ॥

राग आसावरी ।

भक्त हेत अवतार धरों मैं ॥ कर्म धर्म के वश मैं नाहीं योग यज्ञ मनमें न करों मैं ॥ दीन गुहार सुनों श्रवणन भर गर्व वचन सुन हृदय जरों मैं ॥ भावाधीन रहों सभहीके और न काहू ते नेक डरों मैं ॥ ब्रह्मा आदि कीटलौं व्यापक सभको सुख दे दुखहिं हरों मैं॥सूर श्याम तब कह्यो प्रगट ही जहां भाव तहँते न टरों मैं२२७॥

लावनी ।

मैंही तो हूँ नंद को लाला मात यशुदा को कन्हैया मैंहीं तो हूं। धर धरके अवतार भूमिको भार हरैया मैंही तो हूं ॥ मथुरा में लियो जन्म ब्रज मंडलको बसैया मैंही तो हूं । प्रथम पूतना तृणावर्त शकटाको हनैया मैंहीं तो हूं ॥ कागाको मारके चोंचको फार फरैया मैंहीं तो हूं । ब्रजवासिनको प्रेम देख माखनको खवैया मैंही तो हूं ॥ यमला अर्जुन हेत ऊखल सों हाथ बँधैया मैंही तो हूं ।

मोहे गोपी ग्वाल बाल गौअनको चरैया मैंही तो हूं ॥ वत्सासु को पटक अघाके प्राण कढैया मैंही तो हूं । नौलख धेनु खिर मेरेमें तिनको दुहैया मैंही तो हूं ॥ दावानलको कियो पान कालीक नथैया मैंही तोहूं । चीर चोर चढ गयो कदम युवातिनको रिझैया मैंही तो हूं ॥ गोवर्द्धन नख धरयो इंद्रको गर्व हरैया मैंही तो हूं । वंसीवटके तट अधरन धर वंसीको बजैया मैंही तो हूं ॥ श्यामाके संग रास में नीको तो नचैया मैंही तो हूं । पकरूं कंसके केश देख ऐसो तो लरैया मैंही तो हूं ॥ उग्रसेनको राज्य मथुराको दिवैया मैंही तो हूं । सब खेलनको खेल खेल खेलनको खिलैया मैंही तो हूं ॥ भक्तन हितकारी बलदेवको भैया मैंही तो हूं । मंझधार के बीच टेर गजकी सुनवैया मैं ही तोहूं ॥ कुंदन विप्र यों कहत नाम राधाको रटैया मैं ही तोहूं ॥ ३२८ ॥

कवित्त ।

अंत ते न आयो याही गांवरेको जायो माई बाप री जिवायो प्याय दूध दधि बारे को ॥ सो तो रसखान तज बैठो पहिचान लोचन नचावत नचैया द्वार द्वारे को ॥ भैयाकी सौं सोच कछु मटकी उतारे को न गोरसके ढारे को न चीर चीर डारे को ॥ याही दुख भारी गहे डगर हमारी देखो नगर हमारे ग्वार बगर हमारे को ॥ ३२९ ॥

राग झिंझोटी ।

चल परे हटरे काहेको इतरावे । भूषण वसन दधि माखन चुरैया अब कैसी कैसी बात बनावे ॥ जिनके बसाये तुम उनहीं सों झगरत निलज न नेक लजावे । नित प्रति धेनुको चरैया नारायण आज तू भूप कहावे ॥ ३३० ॥

राग कल्याण ।

रजधानी तुम्हरे चित नीकी । मेरे दास दास दासनके तिनकें लागत है अति फीकी ॥ ऐसी काहे मोहिं सुनावत तुमको यह

अगाध । कंस मार शिर छत्र फिराऊं कहा तुच्छ यह साध ॥ तबहीं लग यह संग तिहारो जबलौं जीवत कंस । सूरश्यामके मुख यह सुन तब मनमें कीनो संस ॥ ३३१ ॥

राग रामकली ।

राधा सों माखन हरि माँगत । औरनकी मटुकिनको चाख्यो तुमरो कैसो लागत ॥ ले आई वृषभानु नंदनी सदलौंनी है मेरो । लै दीनो अपने कर हरि मुख खात अलप हँस हेरो ॥ सभहिन ते मीठो दधि है यह मधुरे कह्यो कन्हाई । सूरदास प्रभु सुख उपजाये ब्रज ललना मन भाई ॥ ३३२ ॥

राग कालिंगडा ।

अच्छा लेहु ब्रजवासी कन्हैया अच्छा लेहुरे ॥ बरसाने से चलीरे गुजरिया आगे मिले महाराजरे ॥ कोरी कोरी मटुकी में दहीरे जमाया चाख लेहु महाराजरे ॥ दधि मेरो खायो मटुकियारे फोरी इंडुरी कहां डारी लालरे ॥ हार शृंगार सभी मेरो तोरचो दुलरी कहां डारी लालरे ॥ जाय पुकारूंगी कंसके आगे न्याव करो महाराजरे ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल बलिहाररे ३३३

हिंडोरा झूलनलीला ।

राग मलार ।

ब्रज पर नीकी आज घटा । नान्ही नान्ही बूंद सुहावनी लागत चमकत बिज्जु छटा ॥ गर्जत गगन मृदंग बजावत नाचत मोर नटा । गावत सुरहि देत चातक पिक प्रगट्यो मदन भटा ॥ सब मिल भेंट देत नँदलालहिं बैठे ऊंची अटा । चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लाल शिर कसूमी पीतपटा ॥ ३३४ ॥

आज कछु कुंजन में बरसासी । बादर गण में देख सखी री चमकतहै चपलासी ॥ नान्ही नान्ही बूंदन कछु धुरवा सी पवन बहत सुख रासी । मंद मंद गर्जन सी सुनियत नाचत मोर सभा सी ॥ इंद्र धनुष में बग मिल डोलत बोलतहै कोकिला सी । इंद्रवधू

छबि छाय रहीहै गिरि पर श्याम घटा सी ॥ उमग महीरुह से मा
कंपत फूली मृगमाला सी । रटत व्यास चातककी रसना रसपी
वत हौं प्यासी ॥ २३५ ॥

आई बदरिया वरसनहारी । गरज २ दामिनि दमकावे ज्
चूंदरमें झलक किनारी ॥ मधुर मधुर कोयल वन बोले भव
भवन गावत ब्रजनारी । चलत पवन शीतल नारायण परत फुहा
लगत अति प्यारी ॥ २३६ ॥

देख युगल छबि सावन लाजै । उत घन इत घनश्याम लाडल
उत दामिनि इत प्रिय सँगराजै ॥ उत वर्षत बूंदनकी लरियां इ
गल मोतियन हार विराजै । उत दादुर इत बजत बांसुरी उ
गर्जत इत नूपुर बाजै ॥ उत रँगके बादर इतबागे उतै धनु
वनमाल इत साजै । उत घन घुमड इतै दृग घूमत नाराय
वर्षा सुख आजै ॥ २३७ ॥

श्याम सुन नियरे ही आयो मेहु । भींजिगी मेरी सुरँग चुनरि
ओढि पितांबर लेहु ॥ दामिनि सों डरपतहौं मोहन निकट आप
लेहु । कुंभनदास लाल गिरिधर सों बाढ्यो अधिक सनेहु ॥ २३८

राग रेखता ।

आयोहै मास सावन इक मान कह्यो प्यारी । चल झूलिये हिंडो
वृषभानुकी दुलारी ॥ यमुनाके तीर बंसीबट कैसी छबि छाई । शीत
सुगंध मंद पवन चलत अति सुहाई ॥ करतीहै शोर यमुना उठ
तरंग भारी । प्रति कुंज कुंज छाय रह्योहै परागरी ॥ लागत प
सुहाई अवलोकि नागरी । फूली लता द्रुमनकी धरणी झुकीहैं डा
जापै मलिंद घूमें मकरंद हेत छाये । नाचतहैं मोर वनमें ला
परम सुहाये ॥ माती कोयल पुकारे बैठी कदमकी डा
कालिंदियाके तट पै झूलतहैं सभ सहेली ॥ नवसत शृं
साजे इक एक ते नवेली । तुमहूं प्रिया सिधारो कीजे न
अवारी ॥ झूलें निकुंज अपनी अबही चलो पियारे । क

बिहार हमसों तुम नंदके दुलारे ॥ तब संग ले पियाको सुनि कुंज में सिधारी । बैठो कुँवर हिंडोरे अब मैं तुम्हें झुलाऊं । माऊं तुम्हें रिझाऊं छबि देख हम सिराऊं ॥ बैठो सुरंग पटली डोरीगहो सँभारी ॥ बाढे न रमक मोहन टुक मंदहीं झुलाओ । डरपे हियो हमारो पिया पेग ना बढाओ ॥ यह बात सुन प्रियाकी उरसों लई लगारी । भीजेगी लाल सारी कारीघटा जो आई ॥ लीजे उढाय मोको कामर कुँवर कन्हाई । तब हँस रसिकबिहारी कामर उढाई कारी । चल० ॥ ३३९ ॥

राग देश ।

आज बन्यो रसरंग हिंडोरो कदम तरें । सघन लता झुक सुमन सुगंधन अलि गण गुंज करें ॥ वर्ण वर्ण तनु भूषण चुंदरी श्यामा जू पहरें । लाल लडाय चाय हित चित सों रूप समुद्र भरें ॥ ३४० ॥

झूलो प्यारी आज निकुंज हिंडोरना । बोलत चातक मोर पवन झकझोरना ॥ सघन लता निधि वनकी आज सुहाई हैं । श्याम घटन सों परत बूंद सुखदाई हैं ॥ तैसीही दामिनी चमक चमक छबि छाई है । मनो डरत तुव तेज लाज दरशाई है ॥ हरित भूमि हुलसी तुव आगम जानके । मनो बिछौना कियो मदन मद भानके ॥ ३४१ ॥

चल झूलिये हिंडोरे श्री वृषभानुकी लली । तिहारे काज आज हेक मैंने विरची कुंज भली ॥ रत्न जडितको बन्यो हिंडोरो कैसी झला झली । ब्रजवनिता झूलत अनेक तहँ एक एक नवली ॥ शब्द करत जहँ कीर कोकिला गुंजत मोर बली । रसिक बिहारीकी सुन वाणी तुरतहिं कुँवरि चली ॥ ३४२ ॥

चलो इकेले झूलें वनमें प्यारी मेरे प्रान । तुम नइ नागर रूप उजागर सुखसागर छबिखान ॥ वर्ण वर्णके बादर छाये मानो गगन तान । वर्षत बूंद सोई मोतिनकी झालर शोभावान ॥ बोलत ॰ मृग डोलत इत उत सो नहिं जात बखान । रंग रंगके फूल

खिले हैं भ्रमर करत रसपान ॥ ऐसे समय विपिन सुख बिलसें एरी परम सुजान । नारायण उठ वेगि पधारो कुलदीपक वृषभान ३४३॥

राग खेमटा ।

झूलन चलो हिंडोरने वृषभानु नंदनी । सावनकी तीज आई नभ घोर घटा छाई मेघन झरी लगाई परें बूंद मंदनी ॥ सुंदर कद मकी डारी झूला परयोहै प्यारी देखो कुमर हहारी सभ दुख नि कंदनी । पहरो सुरंग सारी मानो विनय हमारी मुख चन्द्रकी उजारी मृदु हास फंदनी ॥ मम मान सीख लीजे सुंदर न देर कीजे हम तो विलोक जीजे तूहै गति गयंदनी । शोभा लखो विपिनकी फूली लता द्रुमनकी सुन अरज रसिक जनकी करों चरण वंदनी ॥ ३४४॥

राग सोरठ ।

झूलो मेरी राधा प्यारी रँगीलो हिंडोरना । डांडीचार सुदे बनाई हीराखम्भनझुम्मकलाई जगमग जगमग होय रवि शशि डोरना ॥ उमड़ी घटा घुमड़ घिरआई रिमझिम रिमझिम बूंद सुहा दमक दमक दामिनियां बोलें मोरना । गावत राग मलार अथा शीतल मंद सुगंध सुहाई तान तरंगन ललित भान तृण तोरना ३४

धवल महल चढ रत्न बंगला झूलो सुरँग हिंडोर । नवकिशोर सुकु मार छबीली नेह नवल भुज जोर ॥ सुरँग कसूमी सारी प्यारी हरी झगाली कोर । हित अली रूप लाल रुचि औरै पिया छबि उठत हिलो

राग मलार ।

तेरी झमक झूलन कटि लचक जात प्यारी रमक रँगीली अति सोहै । तू गुण रूप यौवन रंग रस भरी तेरी उपमा को कोहै हाथन चूरी महाउर मेहँदी चटक चौगुनी सोहै । रसिक गोवि अभिराम श्याम घन तू दामिनि मन मोहै ॥ ३४७ ॥

राग पीलू ।

चलो पिया वाही कदम्ब तरे झूलैं । झुकि रहिं लता अति स प्रफुल्लित कालिंदी के कूलैं ॥ बोलत मोर चकोर कोकिला अलि गुंजत भूलैं । ललित किशोरी मग चतरावें कहकह बतियाँ फूलैं ३४

राग मलार ।

हर्ष झुलाइये मनभावन । उघर परचो हिय हेत गह गह्यो झूटा दियो चित चावन ॥ यह जो कलपतरु यह रविजातट वह वन घन झुक आवन । वृंदावन हित रूप बलि गई वह हरियाली सावन ३४९

राग खेमटा ।

हिंडोरे आज झूलत रंग रयो । अचल सुहाग सुभग श्यामा को दिन प्रति होत नयो ॥ हरित भूमि बंसीबट यमुना सो सुख हगन लयो । रसिक प्रीतम मिल गावत भावत ब्रज सभ रीझरह्यो ॥

राग रेखता ।

झूलन युगल किशोरकी दिल में मेरे बसी । बैठेहैं रँग हिंडो-रना करते हैं रसमसी ॥ फहरात पीत पटुका दुपटा जो छोर दार। शिर पै सुरंग सारी प्यारीके क्या लसी ॥ बेसर बुलाक बेनी बेंदी जो भालपै । हीरोंका हार उरपै कटि काछनी कसी॥जोबनके जोर शोरसों रमकें बढावती । ललता किशोरी श्यामकी छबि देखके हँसी ३८१

राग मलार ।

झूलत तेरे नयन हिंडोरै । श्रवण खंभ भुहैं भई मयारी दृष्टि किरण डांडी चहुँ ओरै ॥ पटली अधर कपोल सिंहासन बैठे युगल रूप रति जोरै । बरुनी चमर दुरत चहुँ दिशिते लर लटकत फुँदना चित चोरै ॥ दुर देखत अलकावलि अलि कुल लेत है पवन सुगंध झकोरै । कच घन आड दामिनी दमकत इंद्र मांग वन करत निहोरै ॥ थकित भये मंडल युवतिनके युग ताटंक लाज मुख मोरै । रसिक प्रीतम रस भाव झुलावत विविध कटाक्ष तान तृण तोरै ॥ ३८२ ॥

राग खेमटा ।

युगल वर झूलत दे गल बाहीं । वादर बरसें चपला चमकें सघन कदम की छाहीं ॥ इत उत पैंग बढावत सुंदर मदन उमंगन माहीं । ललित किशोरी हिंडोरा झूलें बढ़ यमुना लौं जाहीं ॥ ३८३ ॥

राग देश ।

झूलत श्याम श्यामा संग । अतितरंग शोभाके मानो लहत यमुना गंग ॥ झलक भूषण चित्त चोरत श्याम गोर अंग । ललित किशोरी हिंडोरने पै आज बरसत रंग ॥ ३६४ ॥

राग जंगला सिंध ।

बलि बलि जाँदियां झूलन पर । प्यारी पहरे कुसुमल सारी प्यारे के मन भाँदियां ॥ चहूं ओर सब सखी झुलावें झुक झुक झूले खाँदियां । पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत तन मन नयनसराँदियां॥

राग मलार ।

आज हिंडोरे झूलें झूलन नवल कुँवर नव दुलहन दूलें । धादा किटता धादा किटता बजत मृदंग सखि सुघर तान गावें झननन नन नाचत मोर सघन बन प्रफुलित श्री यमुनाजीके कूलें कूलें ॥ नवल किशोरी वृषभानुकी कुँवरि भोरी भोरी संग जोरी रस राचो उरझी माल लटक नकबेसर अंग अंग भुज भूलें फूलें ॥ ३६६ ॥

राग देश ।

मनभावन हर्षावन आवन सावन तीज सुहाई ॥ चावन गावन रीझ रिझावन दंपति रति दरशाई ॥ चढे हिंडोरे नयनन जोरे चित चोरें सुखदाई । युगल चंद रसकंद कोरनी लख रूपलाल बलिजाई॥

राग रेखता ।

प्यारी पीतमके संग झूलें रंग हिंडोरना । दो खंभ हैं जडाऊ जडे चितके चोरना ॥ डाँडी मरुवे लमन लगी बेलन अमोलना । पटली संदलकी साफ देखो खूब है बनी । लागेहैं उस्के बीचमें हीरा चुनी मनी ॥ चुंदरी घूँघटकी ओटमें नयना विशाल है । खंजन भुलावनेके घेरनको जालहै ॥ मुझको रसिक गोविंदकी छविही में झूलना प्यारी अनूप रूपको दिलसे न भूलना ॥ ३६८ ॥

राग खेमटा ।

युगल बर झूलत डार गल बाहीं । रत्न जडितको बन्यो है

हिंडोरा सघन कुंजके माहीं॥ रेशम डोर पवन पुरवैया लख रति काम लजाहीं। सखी सखा दोउ ओर झुलावत मधुर मधुर सुर गाहीं॥ मध्य श्याम श्यामा दोउ हिल मिल पुनि पुनि हिय हर्षाहीं। ऊंची डार तोर कलियन दोउ निज निज कलिन सराहीं॥ या छबि निरख प्रियाकी प्रीतम मोहन मन न अघाहीं॥ ३८९॥

आज दोउ झूलत रंग भरे। झूटा खरे लेत कबहुंक सखि कबहूं हरे हरे॥ कर्णफूल कुंडल मिल भेटत मनु शशि मीन लरे। चंद्रमाल हलकत उर राधे हरि वनमाल गरे॥ बिहँसत दमक उठत दशनावलि अवनी सुमन झरे। ललित किशोरी टरत न लखि छबि दृग शिशु अरन अरे॥ ३६०॥

राग देश।

कहत श्याम श्यामाजू मोको दर्शन देत रहो जू। अंचल अलक पलक सुनिरंतर इक संकोच सहो जू॥ यह विनती मानिये जो श्रवण सुन नाहिंन वचन कहो जू। विहारन दास कहत रुख लीये यह सुख सहज लहो जू॥ ३६१॥

सुहावन सावन राधा सुख तिहारे बाट पर्यो। यह जो शत गुणो रूप अंग संग झूलनमें उघर्यो॥ यह जो चौगुनो चाव कौन विधि भागनते जो बढ्यो। बृंदावन हित रूप रसिक प्रीतमको लहनो सुकृत कर्यो॥ ३६२॥

राग मलार।

एहो लाल झूलिये तनक धीरे धीरे। काहेको इतनी रमक चढावत द्रुम उरझत चीरे चीरे॥ जो तुम झुक झुक झूटनके मिस आवतहो नीरे नीरे। नागर कान्ह डरात न काहू लेत भुजन भीरे भीरे॥ ३६३॥

राग यमन।

झोका दीजो सम्हारके मेरी सारी न लटके। सघन कुंज द्रुम डार कँटीली काहू छोर जिन अटके॥ उन बातन अब भेंट नहीं

कछु और धोखे जिन भटके । ललित किशोरी लाल जाओ घर काहेको चटके मटके ॥ ३६४ ॥

राग मलार ।

कैसे झूलों हिंडोरे बतियां माने नाहिं हरी । बरजो न मानत यह काहूको लोककी लाज टरी ॥ हाहा खात यह तो पैयां परतहै प्रेमके फंद परी । रसिक गोविंद अभिराम श्याम ने भुज भर अंक भरी ॥ ३६५ ॥

राग बड़हंस मलार ।

हिंडोलनामें काई छे झूलों राज ॥ म्हारा झूलतहिया लरजे ॥ रत्न जडितके खंभ जडाये अगर चंदनके पटा । रेशम डोर पवन पुरवैया जुरआई सावन की घटा ॥ श्यामा झूलें श्याम झुलावें कालिंदीके तटा । उड़ उड़ अँचरा परत भुजन पर निरखत नागर नटा ॥ ३६६ ॥

राग सारंग ।

फूलनके बँगले में राजें पिया प्यारी हो । फूलनके भूषण विचित्र सोहैं अंग अंग फूलनके वसन वदन छबि न्यारी हो ॥ फूल से मुखारविंद वचन फूलन सम फूली सखी तन मन शोभा लख भारी हो । जैसोही समाज साज आज नारायण मानो कुंज भवन में फूली फुलवारी हो ॥ ३६७

कवित्त ।

फूलनके खंभा पाट पटरी सुफूलनकी फूलनके फुँदने फँदे हैं लाल डोरे में । कहै पद्माकर वितान तने फूलनके ललनकी झालरें सु झूलत झकोरे में ॥ फूल रही फूलन सुफूल फुलवारी तहाँ फूल हीके फरश फबे हैं कुंज कोरे में ॥ फूलझारी फूल भरी फूल जरी फूलन में फूल ही सी फूल रही फूलके हिंडोरे में ॥

राग कान्हरा ध्रुपद ।

फूलनकी चंद्रकला शीश फूल फूलनको ललनके झुमका

श्रवण सुकुमारीके। फूलनकी बंदनी विशाल नथ फूलनकी फूलन को बेंदा भाल राजत दुलारी के॥ फूलनकी चंपाकली हारगले फूलनके फूलनके गजरा ललित कर प्यारी के। फूलनकी पगमें पायल नारायण फूले फूले भाग सदा लाडिली हमारीके॥ ३६९॥

कवित्त।

फूलन चँदोआ तने फूलन फरश बिछे फूलनकी सेज और फूलन छबिछे रही॥ फूलनकी गरे माल फूलन करनफूल फूलन को टीको मांग फूलन भरे रही॥ फूलनके वस्त्र औ शृँगार सब फूलनके विक्रम मृगेश मन उपमा बनै रही॥ फूली फुलवारी जामें बैठी प्राणप्यारी आज देखत बसंत या वसंतऋतु ह्वै रही ३७०

राग पीलो।

सो तू राखलै री झूटा तरल भये। इत नव कुंज कदम लौं परसत उत यमुना लौं गये॥ आवत जात लता निरवारत कुसुम वितान छये। कल्याणके प्रभु रीझ विवस भये झूलत नयेनये ३७१

मेरो छांडदे अँचरवा मैं तो न्यारी झूलोंगी। झूटन मिस मोहन लँगरैयाँ अजहूं टहोकत ना भूलोंगी॥ ललता संग रँगीले झूलें झूल झूल मनहीं मन फूलोंगी। ललित किशोरी तरल पैंग कर लालन तो सँग सम तूलोंगी॥ ३७२॥

राग दादरा।

सुन सखी आज झूलन नाहिं जैहों॥ श्यामसुँदर पिया रस लंपट है अतिही ढीक्यो देत। झूटा तरल करे पाछे ते धाय भुजनभर लेत॥ चितवन चपल चुरावत अनतै हमैं जनावत नेह। रसिक गोविंद अभिराम श्याम सँग क्यों न जाय रस लेह॥ ३७३॥

राग सोरठ।

कौन समय रूठनको प्यारी झूलो ललित हिंडोरे। रंग बरंग घटा नभ छाई बिच बिच चपला चमक सुहाई परत फुहार परम सुखदाई चलत समीर झकोरे॥ विविधभाँति पक्षी वन बोलें

मृगिन सहित मृग विहरतडोलें जीवजंतु मिल करत कलोलें यहीं अचरज मन मोरे । कुसुमचीर पहरे ब्रजनारी साज समाज आज है भारी नारायण बलिजाउँ तिहारी प्रीतम करत निहोरे॥३७४॥

राग मलार ।

या ऋतु रूस रहन की नाहीं । बरसत मेघ मेदिनीके हित प्रीतम हरष बढाहीं ॥ जे बेली ग्रीषमऋतु जरहीं ते तरुवर लपटाहीं । उमडी नदी प्रेम रस माती सिंधु मिलनको जाहीं ॥ यह संपदा दिवस चारककी शोच समझ मनमाहीं । सूर सुनत उठ चली राधिका दै दूती गलबाहीं ॥ ३७५ ॥

राग गौरी ।

झूलनहार नई कौनहै ॥ श्यामाके सँग रंग भरी सोहत सखी नवेल । अति सुंदर तनु सामरी मानो नील मणिनकी बेल ॥ श्वेत कंप रोमांच हो जान परत कछु और । झुक झुक झूटन में मिले हँस कुँवर लजोंई होत ॥ निरखो झूलन नेहकी सखी चतुर शिरमौर । हम जानी जानी सभी सखि यह झूलन कछु और ॥ सभी छकाई नागरी दृगन सुधारस प्याय । कपट रूप धर मोहनी प्रगट भई ब्रज आय ॥ ३७६ ॥

राग यमन ।

झूलत को श्यामाके सँग सखी सामरी प्यारी है । कजरे नयन सैन सों बतियाँ अँखियन कोर कटारी है ॥ जोबन जोर मरोर भौंह की ललित किशोरी वारी है । ललता करि परिहास कही यह नागर नंददुलारी है ॥ ३७७ ॥

राग झँझोटी ।

श्यामाजी झूलें पीरी पोखर पार । गावत है ऊँचेस्वर कोकिल रही मौन मुख धार ॥ रमकनकी दमकन नग भूषण शोभा विपिन निहार । चोकाकी चमकन पर डारूं श्वेत दामिनी वार ॥ थरकत है अतरस अतरोटा शिर पर सूही सार।खुमक बनी उर पीत कंचुकी

मुख पर श्रम कण बार ॥सजनीरी इक सांवरि आई झूलनको रिझवार । ताके संग झुलत हैं प्यारी करत अधिक मनुहार ॥ कौन गाम क्या नाम तिहारो कहिये कृपा विचार । तरुणिन में अति सुंदर प्यारी चतुरन में वरनार ॥ ललता कहै बोलरी सामर नातर देहुँ उतार । राजसुता सँग झूलन आई दियो ढीठ डर डार ॥ डोरी गह लीनी ललता ने दोऊ दिये उतार । हँस पुनि चपल बलैयां लेवें कोउ पीवत जल बार ॥ सैननमें समझावत मुखसे वचन न सके उचार । नंदगामकी ओर बनावे ऊँचे हाथ पसार ॥ अँचरा की सरकन में कौस्तुभमणिकी परी चिन्हार । हर हर हँसत सकल ब्रज सुंदरि यह वोही खिलवार ॥ नई पाहुनी आई झूलन बैठी घूंघट मार । वृंदावन हित रूप बलिगई छदम न सकत उघार ॥ ३७८ ॥

बांकी छबि झूलत प्यारी । बांकी आप विहारी बांके बांकी संग सुकुमारी ॥ बांकी घटा घिरी इत चमकन चपलाहू की न्यारी । ललित किशोरी बांकी मुसकन बंक पैंग पर वारी ॥ ३७९ ॥

राग पीलू खेमटेकी राहमें ।

कौन चढे पहले सुरँग हिंडोरे । सोई करत मनुहार हिये हित रमकदेत जोराजोरे । गावत राग तान मधुरे स्वर कोटि काम चित चोरे । रसिक प्रीतम यह होड पिया परी रीझ देत तृण तोरे ॥ ३८० ॥

राग सोरठ ।

गाय चरायके गिरि धारयो तुम्हें झूलन समझ कहांहे । अति सुकुमार प्रिया गौरांगी तासँग झूलोहि चाहे ॥ हम जो सिखावें तैसेहि सीखो कहा फिरत हो भरे उमाहे । वृंदावन हित रूप बलिगई ह्यां पायोके वां हैं ३८१ ॥

राग बरवा सारंग ।

तेरी झूलन अति रस सानी सुखदानी श्रीराधा वल्लभ लाडले । गावत बजावत रिझावत प्रियाको तान तरंगन सभ मिल आवरे ॥

सभ शृंगार हार फूलनके प्यारीको पहरावत मनमें चावरे । राधे बर कृष्ण याही कृपा कर विपिन बसावो अनत न जावरे ॥ २८२ ॥

राग मलार ।

झूले तो सुरंग हिंडोरे झुलाऊं । मरुवे बयार करूं हित चित दे तन मन खंभ बनाऊं ॥ सुध पटली बुध डांडी बेलन नेह बिछोना बिछाऊं । अति अवसेर धरूं टुक कलसा प्रीति ध्वजा फहराऊं ॥ गरजन कुहक किलक मिलवेकी नेह नीर बरसाऊं । श्रीविठ्ठल गिरिधरन लालको जो इकले कर पाऊँ ॥ २८३ ॥

भीगत कब देखूं इन नयना । राधाजूकी सुरँग चूनरी मोहन को उपरैना ॥ श्यामा श्याम कुंज तन चितयो यत्न कियो कछु मैना । श्रीभटके प्रभु नयनन निरखत जुर आई जल सैना ॥३८४॥

भीगत कुंजनमें दोउ आवत । ज्यों ज्यों बूंद परत चुनरी पर त्यों त्यों हरि उर लावत ॥ अधिक झकोर होत मेघनकी द्रुम तर छिन बिलमावत । वे हँस ओट करत पीतांबर वे चुनरीजु ओढावत ॥ तैसेहि मोर कोकिला बोलत पवन बीच घन धावत । ले मुरली कर मंद घोर स्वर राग मलार बजावत ॥ भीजे राग रागिनी दोऊ भीजे तनु छबि पावत । सूरदास हरि मिलत परस्पर प्रीति अधिक उपजावत ॥ ३८५ ॥

होरीलीला ।

राग जंगला ।

प्यारी पिया दोउ खेलत होरी । नंदनँदन ब्रजराज सांवरो श्री वृषभानु किशोरी ॥ परमानंद प्रेम रस भीने लिये अबीर भर झोरी । करत मनमें चित चोरी ॥ भुजभर अंक सकुच तज गुरुजन बिचरतहैं मिल जोरी । छूटी अलकां उरझीं कुंडल सों बेसर पीत फँस्योरी ॥ चलो सुझावो गोरी ॥ कर कंकण कंचन पिचकारी केसर भर लै दौरी । छिरकत फिरत हुलस लिये हर्षत निरखत हँस मुख मोरी ॥ चलो क्यों होइयो बौरी ॥ धनि गोकुल धनि धनि श्री

वृंदावन जहँ यह फाग रच्योरी। श्रीरसरंग रीझरहे ब्रज पर वारों वैकुंठ करोरी ॥ मुक्ति काशी जहँ थोरी ॥ ३८६ ॥

राग होरीसारंग।

श्यामा श्याम सों होरी खेलत आज नई। नंदनँदनको राधे कीनो माधव आप भई ॥ सखा सखी भये सखी सखा भईं यशुमति भवन गई। बाजत ताल मृदंग झांझ डफ नाचत थेइ थेई ॥ गोरे श्याम सामरी राधे या मूरत चितई। पलट्यो रूप देख यशुमतिकी सुध बुध बिसर गई॥ सूर श्यामको वदन विलोकत उघरगई कलई॥

राग जंगला।

या ब्रजमें कैसी धूम मचाई ॥ इत ते आई कुवँरि राधिका उत ते कुवँर कन्हाई। खेलत फाग परस्पर हिल मिल या छबि वरणि न जाई ॥ घरे घर बजत बधाई ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ मंजीरा सहनाई। उडत गुलाल लाल भये बादर केसर कीच मचाई ॥ मनो मघवा झर लाई ॥ राधे सैन दई सभ सखियन यूथ यूथ मिल धाई। पकरोरी पकरो श्याम सुंदरको गृह अब जान न पाई ॥ करो अपने मन भाई ॥ छीन लियो मुख मुरली पितांबर शिर पर चुनरी उढाई। बेंदी भाल नयनमें काजर नकबेसर पहराई॥ मनो नई नारि बनाई ॥ कहां गये तेरे पिता नंदजी कहां यशोमति माई। कहां गये तेरे सखा संगके कहां गये बल भाई ॥ तुझे अब लेत छुड़ाई ॥ फगवा लिये बिन जान न दूंगी करियो कोटि उपाई। लेहों चुकाय कसर सभ दिनकी तुमहो चोर चुराई ॥ छीन दधि माखन खाई ॥ धनि गोकुल धनि धनि श्रीवृंदावन धनि यमुना यदुराई। राधा कृष्ण युगल जोरी पर नंददास बलिजाई ॥ प्रीति उर रही न समाई ॥ ३८८ ॥

राग सारंग।

रसिया को नारि बनावोरी। कटि लहँगा गल माँहि कंचुकी चुंदरी शीश उढावोरी ॥ गाल गुलाल दृगन में अंजन बेंदी भाल लगावो री। नारायण तारी बजायके यशुमति निकट नचावो री ३८९

राग जंगला सिंध ।

श्याम मोसे खेलो न होरी पालागों कर जोरी ॥ गैयां चरावन मैं निकसीहूं सास ननँदकी चोरी । सगरी चुँदरिया न रंग भिजोवो इतनी सुनो बात मोरी ॥ छीन झपट मोरे हाथसे गागर जोर से वहियां मरोरी । दिल धडकत मेरो सांस चढत है देह कँपत गोरी गोरी ॥ अबिर गुलाल लिपट गयो मुखसे सारी रंगमें बोरी । सास हजारन गारी देवे अरु बालम जीती न छोरी ॥ फाग खेलके तैंने रे मोहन क्या कीनी गति मोरी । सूरदास आनंद भयो डर लाज रही कछु थोरी ॥ ३९० ॥

राग जंगला ।

थारे करूंगी कपोलन लाल जी म्हारी अँगिया न छूओ ॥ यह अँगिया नहिं धनुष जनकको छुअत टुटो ततकाल । नहिं अँगिया गौतमकी नारी छुअत उडी नँदलाल ॥ कहा विलोकत भृकुटी कुटिल कर नहीं पूतना खाल । यह अँगिया काली मत समझो जा नाथ्यो पाताल ॥ गिरिवर उठाय भयो गिरिधारी लाला नहीं जानो ब्रजबाल । जाओजी खाओ सुदामाके तंदुल गौवनके रख-वाल ॥ इतनी सुन मुसकाय सांवरे लीनो अबिर गुलाल । सूरश्याम प्रभु निरख छिरक अँग सखियन कियो निहाल ॥ ३९१ ॥

राग भूपाली जंगला ।

डगर मोरी छाँडो श्याम बिंधजावोगे नयननमें । भूल जाओगे सब चतुराई लाला मारूंगी सैनन में॥जो तोरे मनमें होरी खेलन की तो ले चल कुंजन में॥चोआ चंदन और अरगजा छिरकूंगी फागनमें ॥ चंद्रसखी भज बालकृष्ण छबि लागीहै तन मनमें ॥ ३९२ ॥

राग जंगला ।

जनि जाओरी आज कोऊ पनियाँ भरन ॥ ठाढो मग में मोहन इक इकको मारत पिचकारी तक तक ॥ जिनको चाहत तिनको रँगमें भिगोय डारे गारियां देन लागो न्यारो बकबक ॥ उनको

देखके उलटी दौर आई मुख अपनो इक शारी ढक ढक ॥ शीश कँपन लागो पाँय थकन लागे छतियां करन लागीं न्यारी धक धक॥ आई बसंत बिरहौंकी मौज सों सभ रंग रह्यो बनवारी छक छक ॥ मौज हरी तिहारो यही रंग रहैगो संग चलनको मैं रही तक तक२९३

राग गजल ।

मची है आज बंसीवट पै होली । खडा नट गैल में भर रँग कमोली ॥ गईथी मैं अभी दधि बेचवे को, झपट मोहन मली मुख मेरे रोली ॥ पटक मटकी झपट अंचल झटक कर, लपट दरकाई चूनर और चोली ॥ अजब नटखट है नँदका हँस मटक कर, लगा बातोंमें मेरी नीवी खोली ॥ ये लख मैं ढीठता उस नंदके की, कहा मैं क्यों जी यह क्या है ठठोली ॥ अटकतेहो जो हरदम हमसे मगमें, चलो अब माफ कीजे होली होली । नहींहूं दासी मैं कछु कृष्ण तेरी, बस अब हमसे न बोलो टेढी बोली ॥ २९४ ॥

राग बरवा होरी ।

मोको रंगमें बोर डारीरे इस नंदके छैल विहारी । ले बूका मेरे सन्मुख आवे भर पिचकारी मेरे मुख पर डारे ले करवा ऊपर ढरकावे ऐसो ढीठ विहारी ॥ कहा करूं कहाँ जाऊं मोरी आली या वन में अब भई कुचाली चितवन हँसन फांस गल डारे एंचतहै मोरी सारी । जे कर पाऊं पकरूं वाको होंभी कसर कछू ना राखों ब्रह्मदास हियमें अभिलाषों मुख मीडों गिरिधारी ॥ २९५ ॥

राग होरी ।

छैल रँग डार गयो मोरी बीर । भीगगयो अति अतलस रोटा हरित कंचुकी चीर ॥ घालत कुंकुम ताक कुचन पर ऐसो निपट बेपीर। ललित किशोरी कर बरजोरी मुखसों मलत अबीर ॥२९६॥

रंगन भीग गई हो मोहन सारी सुरख नई । बरजत ननदी पहिरत निकसी अबहीं मोल लई ॥ नेक अनोखी गारी गावे या माते किनहूं दई । दयासखी या गोकुल बसके ऐसी कभूं नभई २९७॥

राग परज ।

होरीरे मोहन होरी रंग होरी । काल्ह हमारे आँगन गारी दे आयो सो कोरी ॥ आय अचानक भुज भर पकरी गहि बैयां जे मरोरी । दया सखी यह निठुर नंदको कीनी मोंसे जोरा जोरी३९८॥

रंग होरी में प्रीतम पाया मेरा दाँव लगा । सुनरी सखी तोहिं सांची कहत हौं तैं मेरा लाल बताया ॥ बहुत दिनन पाछे मोरी सजनीसुहाग भाग मैं पाया । दया सखी या गोकुल बसके किया अपना मनभाया॥

राग जंगला ।

या मोहना मोहिं आन ठग्योरी । सखीको रूप धरचो नँदनंदन आयो हमारी पौरी ॥ मैं जान्यो कोइ परम सुंदरी आई हमारी ओरी । धायके मैं चरण गह्योरी ॥ चरण पखार मंदिर लै आई हँस हँस कंठ लग्योरी । सुंदर वर्ण मधुर स्वर सजनी तब मेरा जिया वश भयो री ॥ प्रेम तन होरही बोरी ॥ मोहिं लिवाय गई कुंजनमें कर छल बल बहुतेरी । निपट इकेली मोहिं जान मेरो तन मन आन गह्यो री ॥ ढीठ छलिया नँदको री ॥ ऐसो री यह कुंज-विहारी याते कोउ न बच्योरी । सूरदास ब्रजकी सखियनमें पारब्रह्म प्रगट्यो री ॥ जाने सभको री ॥ ४०० ॥

अनुरागलीला

राग खंमाच ।

दर्शन देना प्राण प्यारे । नंद लला मेरे नैनोंके तारे ॥ दीनानाथ दयाल सकल गुण नव किशोर सुंदर सुख बारे । मनमोहन मन रुकत न रोक्यो दर्शनकी चित चाह हमारे ॥ रसिक खुशाल मिलनकी आशा निशि दिन सुमिरन ध्यान लगारे ॥ ४०१ ॥

राग सोरठ ।

तोहिं डगर चलत का भयोरी बीर । कहूं पगकी पायल कहूं शिरको चीर ॥ भई बावरी न कछु सुध बुध शरीर । तेरे मतवारन सम झूमत नयन । मुख भाषत है तू अति विरहके बैन ॥ मानो

घायल काहू ने करी दृगन तीर ॥ मोसों नारायण जिन रख दुराव । जो तू कहेगी सोई मैं तेरो करूं उपाव ॥ जासों रोग हू घटे हटे सकल पीर ॥ ४०२ ॥

राग पीलू ।

आली री तू क्यों रही मुरझाय । पनिघट गई यमुनाजल भरने आई है रोग लगाय ॥ केशो कारो चंद्र उजारो टोना डार गयो । करो उपाय सखी अब मेरो ब्रजनिधि वैद मँगाय ॥ ४०३ ॥

राग रामकली ।

मैं श्याम दिवानी मेरा दरद न जाने कोय । शूली ऊपर सेज पियाकी किसविधि मिलना होय ॥ घायल घायलकी गति जानै जिस तनुलागी होय। मीराके प्रभु गिरिधर नागर वैद समलिया होय४०४

राग देश ।

नारी हू न जाने बैदा निपट अनारी रे । बूटी सभ झूठी परी औषध न कारीरे ॥ जाउ वैद घर अपनेको मेरे पीर भारीरे । यमुना किनारे ठाढी ओढ कसूमी सारीरे ॥ नंदजूके ढोटा मोहि नयना भर मारी रे । गोकुल में वैद बसै साँवरो विहारी रे । वाहीको बुलायकें दिखाओ मेरी नारी रे ॥ पुरुषोत्तम प्रभु बैद हमारे वाही छबीले ते लगी है मेरी यारी रे ॥ ४०५ ॥

सवैया ।

काहेको बैद बुलावत हो मोहिं रोग लगाय जिन नारी गहोरे ॥
वह मधुआ मधुरी मुसकान निहारे बिना कहो कैसे जियोरे ॥
चंदन लाय कपूर मिलाय गुलाब छिपाय दुराय धरोरे ॥
और इलाज कछू न बने ब्रजराज मिलें सो इलाज करोरे ॥ ४०६ ॥

कवित्त ।

कोऊ कहो कुलटा कुलीन अकुलीन कोऊ कोऊ कहो रंकन कलंकन कुनारी हूं ॥ कैसो देवलोक परलोक तिरलोक मैं तो लीनो हैं अलोक लोक लीकन ते न्यारी हूं ॥ तन जाओ धन जाओ देव

गुरुजन जाओ जीव क्यों न जाओ नेक टरत न टारी हूं ॥ बृंदावन वारी गिरिधारीके मुकुट वारी पीत पटवारी वाकी मूरति पै वारीहूं ॥ ४०७ ॥

घर तजों बन तजों नागर नगर तजों बंसी वट तट तजों काहू पैं न लजहों ॥ देह तजों गेह तजों नेह कहो कैसे तजों आज काज राज बीच ऐसे साज सजहों ॥ बावरो भयोहै लोक बावरी कहत मोको बावरी कहेते मैं काहू ना बरजहों ॥ कहैया सुनैया तजों बाप और भैया तजों दैया तजों मैया पै कन्हैया नाहिं तजहों ॥ ४०८ ॥

गले तौक पहिरावो पांव बेरी ले भरावो गाढे बंधन बँधावो औ खिंचावो काची खाल सों ॥ विष ले पिलावो तापै मूठ भी चलावो मांझधारमें बहावो बांध पत्थर कमालसों ॥ बिच्छू लै बिछावो तापै मोहिं लै सुतावो फेर आग भी लगावो बांध कापर दुसालसों ॥ गिरिसे गिरावो कालीनागसे डसावो हाहा प्रीति ना छुडावो गिरिधारी नंदलालसों ॥ ४०९ ॥

सवैया ।

मोरपखा मुरली वनमाल लगी हियमें हियरा उमग्योरी ॥
ता दिनते निज वैरनको मैं बोल कुबोल सभी जो सह्योरी ॥
अबतो रसखान सों नेह लग्यो कोऊ एक कहो कोऊ लाख कहोरी॥
और ते रंग रहो न रहो इक रंग रँगीले ते रंग रहोरी ॥ ४१० ॥

कवित्त ।

निज जानो वेद तेतो वादकी विदित होय जिन जानो लोक लोक लीकन पर लरमरो ॥ जिन जानो तप तीनो तापन सों तप तप पंच अगन संगले समाधि धर धर मरो ॥ जिन जानो योग तेतो योगी युग युग जिये जिन जानो जोत सोऊ जोत ले जरमरो॥ हों तो देव नंदके कुमार तेरी चेरी भई मेरो उपहास कोऊ कोटिन कर कर मरो ॥ ४११ ॥

सवैया ।

सुंदर मूरति दृष्टि परी तबते जिय चंचल होय रहा है ॥

शोच सँकोच सभी जो मिटे और बोल कुबोल सभी जो सहाहै ॥ रैनि दिना मोहिं चैन न आवत नयनन ते जल जात बहाहै ॥ तापै कहैं सखी लाज करो अब लाग गई तब लाज कहा है ॥ ४१२ ॥

राग भैरवी ।

लाग गई तब लाज कहारी । जे दृग लागे नँदनंदनसों औरन सों फिर काज कहारी ॥ भर भर पियें प्रेमरस प्याले ओछे अमल को स्वाद कहारी । ब्रजनिधि ब्रज रस चाख्यो चाहै या सुख आगे राज कहारी ॥ ४१३ ॥

राग पीलू ।

लागीरे लगनियां मोहना सों ॥ सुंदर श्याम कमल दल लोचन नंदजूको छैल छकनियां । कछु टोना सा डार गयोरी कैसे भरन जाऊँ पानियां ॥ कृष्ण दासकी प्यास मिटे जब निरखों गिरिके धरानियां ॥ ४१४ ॥

राग गिरिनारी सोरठ ।

मैंने देखी री आज मोहन की हँसन । अधरन पै अद्भुत अरुणाई मोतियनकी लर पांति दशन ॥ वा शोभाके दृग रहे प्यासे पीने लगे भर भरके पसन । नारायण तब सों मोहिं सजनी सुध न रही निज बदन वसन ॥ ४१५ ॥

राग कान्हरो ।

आज ब्रजराजकी देख शोभा नई गई तनु भूल सुध भई हौं बावरी ॥ अधर रंग पान मुसक्यान जादू भरी ताहूपै चित हरन दृगनके भाव री ॥ कुंडलनकी हलन छलन मन मदनकी चलत गज चाल वश करनके चाव री ॥ निरखके रूप नारायण हरष्यो हियो कौनसे भाग्यसों लग्यो है दाँवरी ॥ ४१६ ॥

राग खट ।

आज नंदलाल मुख चंद नयनन निरख परम मंगल भयो भवन मेरे ॥ कोटि कंदर्प लावण्य एकत्र कर वारों तबहीं जबहिं नेक

हेरे ॥ सकल सुखसदन हर्षत वदन गोपवर प्रबलदल मदन जनो संग घेरे । कहो कोउ कैस हूं नाहिं सुध बुध रहे गदाधर मिश्र गिरिधरन टेरे ॥ ४१७ ॥

मुकुट माथे धरे खोर चंदन करे माल मुक्ता गरे कृष्ण हेरे ॥ पीतपट कटि कसे कर्ण कुंडल लसे निशि दिना उर बसे प्राण मेरे ॥ मुरलिका मोहनी कर कमल सोहनी ले कनक दोहनी खिरक नेरे ॥ लाल लोचन बने ललित रस में सने सैनसे अनगिने ग्वाल टेरे ॥ किंकिनी काछनी देत शोभा घनी देख कौस्तुभ मनी सुर छकेरे ॥ प्रभु छबीलो रंगीलो रसीलो आली लग्न से मग्न मनमें बेसेरे॥

राग विलावल ।

माईरी आज और काल्ह और ।दिन प्रति और और देखिये रसिक गिरिराज धरन ॥ दिन प्रति नई छबि वरणे सो कौन कबि नितही शृंगार बागे वरन वरन ॥शोभासिंधु श्याम अंग छबिके उठत तरंग लाजत कोटिक अनंग विश्वको मनहरन॥चतुर्भुज प्रभु श्रीगिरिधारीको स्वरूप सुधा पान कीजिये जीजिये रहिये सदाही शरन।

माईरी आजको शृंगार सुभग साँवरे गोपालजी को कहत न बने कछु देखेही बन आवे ॥ भूषण बसन भांति भांति अंग अंग अद्भुत कांति लटपटी सुदेश पाग चित्तको चुरावे ॥ मकर कुंडल तिलक भाल कस्तूरी अति रसाल चितवन लोचन विशाल कोटि काम लजावै ॥ कंठ श्रीवनमाल फेंटा कटि छोरन छबि हरष निरख त्रियनके धीरज मन न आवे ॥ मेरे संग चल निहार ठाढे हरि कुंज द्वार हित चितकी बात कहत जो तेरे जिया भावै ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधारी को स्वरूप सुधा पीवत नयनन पुट तृप्त हूं न आवै ॥ ४२०॥

राग भैरवी ।

छबि आछी बनी बनवारी की । मोर मुकुट मकराकृत कुंडल अलकां घूँघरवारी की ॥ मृदु मुसुकान आन नयनन की को बरणे गिरिधारी की । कृष्णदास युगल जोरी पर तन मन धन सभ वारी की ॥ ४२१ ॥

राग कान्हरा ।

री हौं तो या मग निकसी आय अचानक कृष्ण कुँवर ठाढेरी अपनी पौर । दृष्टि हूं से दृष्टि मिली रोम रोम शीतल भई मन में दीखत कछु काम रौर ॥ लाल पाग लिपटी भाल परी री भुजन पर पान खात मुसकरात और किये चंदन खौर । सूरदास मदन मोहन बाँके बिहारी लाल मनमें आवत कब मिलूंगी दौर ॥ ४२२ ॥

राग सिंदूरा ।

एरी मैं तो सहज स्वभाव गई नंदजूके तहां देख्यो सुख और । इकले श्याम नईकी धज सों ठाढे भवनकी पौर ॥ रतन शृंगार बहार हँसनकी माथे केसर खौर । नारायण सो छबि दृग छाई रही न काजर ठौर ॥ ४२३ ॥

राग कालिंगडा ।

भवन ते निकसे नंदकुमार । पँचरंगी चीरा शिर सोहै चितवन पै बलिहार ॥ कानों में मुतियनको चौकडा गल फूलनको हार । नारायण जे आपहि सुंदर तिनको कहा शृँगार ॥ ४२४ ॥

राग विहाग ।

सुपने में दरश दिखाय मोहन मन हरलीनो प्यारे । रैनि दिना मोहिं कल न परत है तलफत जिया अकुलाय ॥ ललित त्रिभंगी माधुरी मूरत नयनन में रही छाय । कृष्ण प्रिया छबि देख मनोहर विन दामन गई हौं बिकाय ॥ ४२५ ॥

राग देश ।

हँसके मारी मेरो मन लैगयो बडी बडी आँखनवारो कारो ॥ भौंह कमान बान जाके लोचन मेरे हियरे मारे कसके । रेजा रेजा भयो री कलेजा मेरा भीतर देखो धसके ॥ यत्न करो यंतर लिख ल्यावो औषध ल्याओ घसके । रोम रोम विष छायरहो है कारे खाइयां डसके ॥ जोकोइ मोहन मोहिं आन मिलावे मोहन गल मिलूंगी हँसके । चंद्रसखी भज बालकृष्ण छबि क्यारीकरूं घरवसके॥

राग खंमाच।

सुंदर मुख सुख सदन श्यामको निरख नयन मन थाक्यो। बारिक होय बीथिन सों निकस्यो उचक झरोखे झाक्यो॥ लालने इक चतुराई कीन्हीं गेंद उछाल गगन मिस ताक्यो। बहुरो लाज वैरन भई मोको मैं ग्वारन मुख ढाक्यो॥ कछू करगये प्रेम चितवन सों ताते रहत प्राण मद छाक्यो। सूरदास प्रभु सर्वस लैगये हँसत हँसत रथ हाँक्यो॥ ४२७॥

राग देश।

अपने गृहसे निकसीं अबलासी दूजको चांद चढ्यो॥ कोऊ कहे काहूकी सुंदर कोऊ कहे काहूकी दासी। आगे मिले नंदजूके नंदन मारत गेंद मचावत हांसी॥ घूंघटको पट छूट गयो री दूज की होगई पूरणमासी॥ ४२८॥

राग प्रभाती।

मोर मुकुट बंसीवारे ने मन मेरा हरलीना। हौं जो गई यमुना जल भरने आगे मिले रसभीना॥ मुझको देख मुसकात सांवरा चितवन में कछु टोना। विवस भई जल भरन बिसर गयो घड़ा धरणि धर दीना॥ लोक लाज कुलकान बिसर गई तन मन अर्पण कीना। कृपा सखी भई रूप दिवानी अधर सुधारस पीना॥ श्रीगोपाल धार उर अपने जन्म सफल करलीना॥ ४२९॥

राग अडाना।

हौंगई यमुना जल लेन माईहौं सांवरे से मोही। सुरँग केसरी खौर कुसुमकी दाम अभिराम कंठ कनककी दुलरी ढुलकत पीतांबर की खोही॥ नान्हीं नान्हीं बूंदन में ठाढोरी बँसुरिया बजावे गावे मालाकरी मीठीतान ने तोला की छवि नेकहू न जोही। सूरश्याम सुर मुसक्यान छवि री अँखियन में रही तब न जानौं हौं कोही४३०

राग रेखता।

मन हरलियोहै मेरा वा नंदके दुलारे। मुसकाय के अदासों

नयनोंके कर इशारे ॥ इक दृष्टिही में वाने जाने कहा कियो है । नहिं चैन रैन दिनमें वाके बिना निहारे ॥ चीरेके पेच बांके शिर मुकुट झुक रह्यो है। कटि किंकिणी रतन की नूपुर बजत हैं प्यारे । बेसर बुलाक सोहै गले मोतियोंकी माला । कंकन जडाऊ करमें नख चंद्रसों उजारे॥ छबि देत आरसी में सुंदर कपोल दोऊ । बरछी समान लोचन नई सान पै सँवारे ॥ फूलोंके हाथ गजरे मुख पानकी ललाई । कानों में मोती वाले कुंडल हू झलकें न्यारे ॥ लख श्यामकी निकाई सुध बुध सकल गँवाई । बौरी बनाय मोको कित गये बंसी वारे ॥ जंतर अनेक मंतर गंडा तवीज टोना । स्याने तबीब पंडित कर कोटि यत्न हारे ॥ नारायण इन दृगन ने जबसे व रूप देखा । तबसों भयेहैं ध्यानी उघरत नहीं उघारे ॥ ४३१ ॥

दिल ले गयो हमारो नँदलाल हँस्ते हँस्ते । बृंदाविपिन की कुंजों जाती थी रस्ते रस्ते ॥ वह आगयो अचानक जूरेको कस्ते कस्ते । चित छुट पडा बदन पर बालों में फँस्ते फँस्ते ॥ मुशकल से बची नागिन अलकों से डस्ते डस्ते । प्यारीके सँग खडाथा वह सांवरा बिहारी । दृग कोर मार मेरे सैनों जडी कटारी ॥ सुध बुध रही न तनकी सब भुलगई हमारी । यमुनाके तीर सुंदर जहँ फूली फुलवारी ॥ कछनी कमर से काछे सुंदर सलोना ढोटा । कस पीत बसन आछे कटि बांधे वह कछोटा ॥ गैयान हूके पाछे दृग देखनेमें छोटा । चितवनके बाण मारे सभ भांतिसे है खोटा ॥ गोकुलकी गैल मुझसे हँस पूँछे आ बिहारी । थी संग उसके सुंदर वृषभानुकी दुलारी॥क्याहंस कीसी जोडी आँखों लगी पियारी ।मैं होगई दिवानी जबसे वह छबि निहारी ॥ बृंदा विपिन कि गलियों दो चांद से खडेथे॥ मुसकाके करत बातें नयनों से दृग लडेथे ॥ मद रूप छबि छकेसे टलते नहीं अडेथे । सखियोंके यूथ केते बेहोश हो पडेथे ॥ आई ललित किशोरी ब्रजबाल हँस्ते हँस्ते ॥ कुंजोंमें लेगया छल गोपाल हँस्ते हँस्ते ॥ कछु जादूकी सी पुडिया पढ डाल हँस्ते हँस्ते ॥ वह करगयो बेदरदी बेहाल हँस्ते हँस्ते ॥ ४३२ ॥

सुंदर अनूप जोडी अति मनकी भावती । देखी मैं आज मगमें कुंजन सों आवती ॥ अँग अंग देत शोभा भूषण जडाऊ आली। नयनन में सोहै कजरा अधरन पै पान लाली ॥ प्रीतमके कांधे कर धर प्यारी अनंद सों । हँस हँसके करत बातें मुख ललित चंद सों ॥ पग धरत हौरे हौरे गति देख हंस लाजैं । नूपुर परम मनोहर अति मधुर मधुर बाजैं॥या भांति सों मगन ह्वै क्रीडा करत हैं दोऊ। नारायण रसिकजन बिन यह रस न जानै कोऊ ॥ ४३३ ॥

राग देश सोरठ ।

राधा नंदकिशोररी सजनी जो मिले कुंजन में दोऊ री ॥ शीतल सुगंध तीर यमुनाके बोलत शुक पिक मोर । ज्यों तमालसे मिली है माधुरी ज्यों सावन घन घोर ॥ रसिक बिहारी बिहारन दोउ मिल नीर क्षीर इकठौर ॥ ४३४ ॥

राग भैरवी ।

भलारे रँगीले छैला तैं जादू मोपैडारा । रसभरी तान सुनाय मुरली में मोह लियो प्राण हमारा ॥ तांडी आन मोरे जीयामें बस- गई जानत है जग सारा । बिट्ठल बिपिन विनोद बिहारन इक पल होत न न्यारा ॥ ४३५ ॥

गजल ।

तैंने बंसी में जो गाया मेरा जी जानताहै ॥सैकडों बंसी सुनी और हजारों ताने वह मजा फेर नहीं पाया मेराजी० ॥ नाथ ने कूदके नाथ लिया कालीको । श्यामला श्याम कहाया मेराजी० ऐसे भार को कौन उठावे मोहन ।डूबता ब्रजको बचाया मेराजी०॥जब द्रौपदी को चीर खींचा दुशासन ने । अंबरको ढेर लगाया मेराजी०॥कहांतक सिफत करूं करुणाकर तेरी। कृष्णदासके मन भाया मेराजी ०४३६।

याद आताहै वही बंसी का बजाना तेरा। छा गया दिल पर मेरे तानका लगाना तेरा ॥ जिस दिनसे दिलमें समाया क्यों नजर आता नहीं । मैं पता कैसे लगाऊं चोर का ठिकाना तेरा ॥खुशनुमा

आवाज शीरीं सुनके मायल दिल हुआ। अब कहूं लगता नहीं फिरताहूं दीवाना तेरा ॥ कानों में कुंडल शिर मुकुट ज़ुलफें तेरी क्या खूब हैं। यह अदा जीसे न भूले झलकें दिखाना तेरा ॥ दाम में ऐसे फँसे ग्वाल और गोपी सभी । यह बयां किस से करूं गउओं का चराना तेरा ॥ नाग नाथन केशी मथन इंद्र का तोडा गरूर । सात वरसके सिन में गोवर्द्धन का उठाना तेरा ॥ हों गुनहगार रोशन मुद्दत से दरपै पडा । यह सिफत जाहिर जहां में पार लगाना तेरा ॥ ४३७ ॥

राग भैरव ।

श्रीकृष्णजीको ध्यान मेरे निशिदिनारी माई। माधुरी मूरत सोहनी सूरत चित्त लियोहै चुराई ॥ लाल पाग लटक भाल चिबुक बेसर कंठ माल कर्णफूल मंदहास लोचन सुखदाई । मोरपंख शीश धरे मोतिनको हार गरे बाजूबंद पहुँची कर मुद्रिका सुहाई ॥ क्षुद्रघंटिका जेहर नूपुर बिछिया सुदेश अंग अंग देखत उर आनंद नसमाई। मुरलीधर अधर श्याम ठाढे ब्रज युवती माहिं सप्त सुर-न तान गान गोवर्द्धन राई ॥ निरख रूप अति अनूप छाके सुरनर विमान वल्लभ पद किंकर दामोदर बलिजाई ॥ ४३८ ॥

साँवरे सों ध्यान मेरो निशिदिना री माई । मनके महल प्रीति कुंज तामें यादवराई ॥ कोमल चरण श्याम वरण नख शिख चख चोंहदी होत पाँयन पर पैजनी सो विधना ने बनाई। दाहने पद पद्म ताते टेढो कर धरत आली ऐसे चरण दुखके हरण हैं सदा सुखदाई ॥ लालसी इजार तामें कंचनको तार सखी काछनी पच-रंगी तापै किंकिणि छबि छाई। गुंजमाल मुक्तमाल कंठ बनी कौस्तुभमणि पीतांबरकी चटक तामें दामिनि द्युति पाई ॥ बाजू-बंद पहुँची मुंदरी नगनको अति चमत्कार अरुण अधर मुरली मधुर मधुर सुर बजाई। कमल नयन कुंडल कांति गंडन प्रतिबिंब होत आनँद सों मुख सम्हार रह्योरी मुसकाई ॥ मोर मुकुट अति

चटकत घूंघरवारी अलक झलक केसरको खौर उमँग चली सुंदरताई । कहै भगवान हित रामराय प्रभुको निहार श्री गुपाल श्री गुपाल रसना लव लाई ॥ ४३९ ॥

राग जंगला ।

बट तर सांवरो ठाढो । पीत दुकूल गले बिच सेली चंद्र चीर बाढो ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहै फेंटा कस गाढो । पुरुषोत्तम प्रभु तुम्हरे मिलनको मोहित अति बाढो ॥ ४४० ॥

राग टोडी ।

जब ते मोहिं नंदनँदन दृष्टि परो माई । कहा कहूं वाकी छबि वरणी नहिं जाई ॥ मोरनकी चंद्रकला शीश मुकुट सोहै । केसर को तिलक भाल तीन लोक मोहै ॥ कुंडलकी झलक कपोलन पर छांई । मनो मीन सुरवर तजि मकर मिलन आई ॥ ललित भ्रुकुटि तिलक भाल चितवन में टोना । खंजन औ मधुप मीन भूले मृगछौना ॥ सुंदर अति नासिका सुग्रीव तीन रेखा । नटवर प्रभु वेष धरे रूप अति विशेखा ॥ हँसन दशन दाडिम द्युति मंद मंद हासी । दमक दमक दामिनि द्युति चमकी चपलासी ॥ क्षुद्रघंटिका अनूप वरणी नहिं जाई । गिरिधर प्रभु चरण कमल मीरा बलिजाई ॥ ४४१ ॥

राग लावनी ।

सखि कैसे करूं मैं हाय न कछुवश मेरो । विन देखे सांवरो चंद्र दृगन में अँधेरो ॥ सखि ऐसो सुंदर नाहिं कहूं मैं सभ जग हेरो । वाकी जो लिखै तसवीर सो कौन चितेरो ॥ सखि कठिन छैल को विरह आन मोहिं घेरो । सगरी निशि तारे गिनतहि होत सबेरो ॥ सखि जो तू मिलावे आज वो रूप उजेरो । जबलौं जीवोंगी गुण न भूलोंगी तेरो ॥ सखि नारायण जो नाहिं मिलैगो वह मनको लुटेरो । तौनंद द्वारपै जाय करूंगी मैं डेरो ॥ ४४२ ॥

राग काफी ।

बेदरदी तोहिं दरद न आवै । चितवनमें चित वशकर मेरो अब काहेको आंख चुरावै ॥ कब सों परी तेरे द्वारेपै बिन देखे जियरा घबरावै । नारायण महबूब साँवरे घायल कर फिर गैल बतावै४४३॥

नयनां रे चितचोर बतावो । तुमहीं रहत भवन रखवारे बांके बीर कहावो ॥ तिहारे बीच गयो मन मेरो चाहे जिती सौंह खावो । अब क्यों रोवतहो दइ मारे कहूं तो थांग लगावो ॥ घरके भेदी बैठ द्वार पै दिनमें घर लुटवावो । नारायण मोहिं वस्तु न चहिये लेन हार दिखावो ॥ ४४४ ॥

बिन देखे मन मान न मेरो । श्याम वरन चित हरन लाडिलो रूप सुधानिधि जगत उजेरो ॥ चाल मराल मनोहर बोलन चपल नयन मोतन हँसि हेरो । नारायण त्रिभुवनको स्वामी श्री वृषभानु कुँवरिको चेरो ॥ ४४५ ॥

राग मलार ।

नहीं बिसरत सखी श्यामकी सुरतियां । हँसन दशन द्युति दामिनी सी दमकन चंदसे वदन सों अति मृदु बतियां ॥ कुंडल झलक लख लगना पलक नकवेसरकी हलन चलन गजगतियां । नारायण जब निरखूं लालको सफल नयन शीतल ह्वै छतियां ॥ ४४६ ॥

राग देवगंधार ।

प्यारे तेरे बैन अमीरस बोरे । ब्रज बनितन कानन में लग लग छिनमें मानहिं छोरे ॥ सुनत बनतहैं कहत बनत नहिं प्रेम प्रीति केडोरे । श्रीरघुराज सुनावो निशिदिन मांगों यह करजोरे ॥ ४४७ ॥

कमलसी अँखियां लाल तिहारी । तिनसों तक तक तीर चलावत वेधत छतियां हमारी ॥ इन्हें कहा कोउ दोष लगावत यह अजहूं न सम्हारी । श्रीविट्ठल गिरिधरन कृपानिधि सूरत ही सुखकारी ॥ ४४८ ॥

राग बिलावल ।

लाल तेरे चपलनयन अनियारे । नंदकुमार सुरत रस भीने प्रेम

रंग रतनारे ॥ कछु अस रीझे चकित चहूँ दिशि नव बर जोबन-वारे । मानो शरद कमल पर खंजन मधुप अलक घुँघरारे ॥ एजो मीन घनश्याम सिंधुमें बिलसत लेत झुलारे । गोवर्द्धन धर जान मुकुट मणि कृष्णदास प्रभु प्यारे ॥ ४४९ ॥

राग खमाच ।

तोरे जी नयना कारे अनियारे मतवारे प्यारे । रतनारे कजरारे मीन मृग छौना वारे अंजना सँवारे खंजन वार डारे॥ नंदके दुलारे मोह लीनो बंसीवारे प्यारे ऐसे जी अनोखे नयना काहेसे सँवारे । कृष्ण दास बलिहारे तन मन धन वारे विधना सँवारे टरत हूं न टारे ॥ ४५० ॥

राग विभास ।

जादूगर रे थारे नैन । भवां कमान बान कर तैंने तिरछी मारी सैन ॥ लगत कलेजे में बरछी सी घायल कीनी ऐन । देखी अजब गजब तेरी चितवन मोनेकन नांहि रुकैन ॥ युगल बिहारीके बिन देखे रंचक परत न चैन ॥ ४५१ ॥

राग भैरवी ।

जादूगर नयन नयन बडे विशाला । मोर मुकुट मकराकृत कुंडल गल बैजंती माला ॥ पीतांबर कटि कछनी काछे नंद यशोमति लाला । नाम लिये जाके पाप कटत हैं मेटत कालको ताला ॥ सूर बसत उर मोहनी मूरत टेढी बिरहों वाला ॥ ४५२ ॥

कवित्त ।

टेढी कला चंद्रकी सकल जग वंदित है टेढी तान मोहतहै मन्मथके जालकी ॥ टेढी कमान बान लागत ही बेध जात श्रीपति न चूके चोट टेढी करवालकी ॥ टेढी लकडीको कोऊ वन में न काटि सकै टेढी काशीपुरी जामें शंका नहीं कालकी ॥ टेढी जरकसी भाल टेढी उर वनमाल मेरे मन बसी टेढी मूरत गोपालकी ॥ ४५३ ॥

टेढे सुंदर नयन टेढे मुख कहत बैन टेढो मुकुट बात टेढी कछु कहगयो ॥ टेढे घुँघुरारे बाल टेढी गल फूल माल टेढो बुलाक मेरे

चित्तमें बसै गयो ॥ टेंढे पग ऊपर नूपुर झनकार करैं बांसुरी बजाय मेरे चित्तको चुरै गयो ॥ ऐसी तेरी टेढीको ध्यान धरै मयाराम लटपटी पागसे लपेट मन लैगयो ॥ ४५४ ॥

राग भैरव।

देखोरी यह नँदका छोरा बरछी मारे जाताहै। बरछी सी तिरछी चितवनकी सैनो छुरी चलाता है ॥ हमको घायल देख बेदरदी मंद मंद मुसकाताहै। ललित किशोरी जखम जिगर पर नोन पुरी बुरकाताहै ॥ ४५५ ॥

राग कालिंगडा।

अँखियां लागीं सामलिया प्यारे सों। जब बरज्यो बरजी नहिं मानी अब क्या होत पुकारे सों ॥ मोरमुकुट मकराकृत कुंडल लगरही सांझ सवारेसों। मधुरअली दरशन विन तरसत नेह लगा वंसीवारे सों ॥ ४५६ ॥

राग रामकली।

लोचन भये श्यामके चेरे। एते पर सुख पावत कोटिक मोतन फेर न हेरे ॥ हाहा करत परत हरि चरणन ऐसे वश भये उनहीं। उनको वदन विलोकत निशिदिन मेरो कह्यो न सुनहीं ॥ ललितत्रिभंगी छबि पर अटके फटके मोसों तोरी। सूरदास यह मेरी कीनी आपुन हरिसों जोरी ॥ ४५७ ॥

नयना मान अपमान सह्यो। अति अकुलाय मिले री वर्जत यद्यपि कोटि कह्यो ॥ जाकी बान परी सखि जैसी तेही टेक रह्यो। ज्यों मर्कट मूठी नहिं छांडत नलिनि सुबास गह्यो ॥ जैसे नीर प्रवाह समुद्रहिं मांझ बह्यो सो बह्यो। सूरदास इन तैसइ कीनी फिर मोतन न चह्यो ॥ ४५८ ॥

राग विहाग।

ललित छबि निरखे अघात न नयन। रोम रोम प्रति जो चख होते तऊ न पावत चैन ॥ हाहा रूप दिखाय रसिकवर करुणा-

निधि सुखऐन । कृष्ण प्रिया छिन विलम न कीजै कल न परै दिन रैन ॥ ४५९ ॥

राग विभास ।

अँखियन यह टेव परी । कहा करूं बारिज मुख ऊपर लागत ज्यों भ्रमरी ॥ चितवत रहत चकोर चन्द्र लौं नहिं बिसरत मोहि एक घरी । यद्यपि हटक हटक हौं राखत त्यों त्यों होत खरी ॥ चुक जो रही वा रूप जलधि में प्रेम पियूष भरी । सूरदास गिरिधर तनु परसत लूटत निशि सगरी ॥ ४६० ॥

राग भैरव।

आंखन में दुराय प्यारी काहू देखन न दीजिये । हिंये लगाय सुख पाय सब गुणनिधि पूर्ण जोई जोई मन इच्छा होय सोई सोई क्यों न कीजिये ॥ मधुर मधुर वचन कहत श्रवणन सुख दीजिये । निर्मल प्रभु नंद नँदन निरख निरख जीजिये ॥ ४६१ ॥

राग विहाग ।

श्यामा मोरी आंखन बीच बसो लोक जानन कजरो । दुरत नहीं घूंघट पट उरझ्यो प्रेम प्रीतिको झगरो ॥ जित देखूं तित माधुरी मूरत पीत बसन बनमाल गरे । बलि बलि जाऊं छबीली छबि पर मदन गोपाल लला के ॥ वरज रही वरज्यो नहिं मानत दिन दिन को अगरो । सूर सुधा सम रूप श्यामको याही परचोधगरो४६२

राग रेखता ।

चकोरी चख हमारे हैं तिहारे चांदसे मुख पर । छुटे बिखरे से बालोंको सँभालोगे तो क्या होगा ॥ नहीं कछु हमको है शिकवा अगर तुम प्रीति बिसराई । जरा टुक नयन ऊंचे कर निहारोगे तो क्या होगा ॥ तुम्हारे होचुके वारी हमारे हो न हो प्यारे । भला मुखपान का बीरा जो धारोगे तो क्या होगा ॥ ललित किशोरी करजोरी हहा यह है विनय मोरी । तडफते मुझ विचारेको पुकारोगे तो क्या होगा ॥ ४६३ ॥

राग बरवा।

सुंदर सांवरे सलोने ढोटा। तेरी सानूं डाढी लगन लागी हाथ लकुटी कांधे कमरी काछनी बांधे कछोटा॥ निशि दिन ही लागो रहत गोपिन के पाछे भर भर पीवत छाछा महरीके ढोटा। पुरुषोत्तम प्रभुके निरखनको फिर फिर खावत प्रेमकी चोटा॥ ४६४॥

तेरी हँसन बोलन लाल मेरे मन बसियां। चलते मृगराज चाल कांधे सोहे रुमाल केसरके तिलक ऊपर फरकत मोर पखियां॥ मुरली अधरान धरे गुंजमाल सोहे गरे हरी हरी कुंजन में संग लिये सखियां। अरजी जुगरामदास सुनियें महाराज श्याम निरख निरख नयननकी कोर मांझ रखियां॥ ४६५॥

राग देश।

सांवरे दी भालन माये सानूं प्रेम दी कटारियां। सखी पूछें दोऊ चारे व्याकुल क्यों भैयां नारे रंगके रँगीले मोसें दृग भर मारियां॥ व्याकुल बेहाल भैयां सुध बुध भूल गैयां अजहूं न आये श्याम कुंज बिहारियां। यमुनाकी घाटी बाटी असां तेरी चाल पछाती बँसिया बजावीं कान्हा भैयां मतवारियां॥ मीराबाई प्रेम पाया गिरिधर लाल ध्याया तू तो मेरा प्रभुजी प्यारा दासी हौं तिहारियां॥४६६॥

ठुमरी।

इस साँवलियाकी लटक चाल जियमें मोरे बसगई रे॥ मुकुट पितांबर अधिक सुहावे ले मुरली घढ फूंक बजावे लटकारी नागिनसी लपटें तन मन डसगई रे॥ बिन देखे नहिं परत चैन अब विरहन कैसे कटत रैन कहा करूं मेरी गोइयां बिन दरश तरश गईरे॥ लिखी ललाट मिटत नहिं मोहन भयो उचाट जिया किहि कारण अब आन फँसी मधुवन कुंजन परवश होय फँसगई रे॥ मधुसूदन पिया प्यारा आवे तिरछी बांकी छबि दिखलावे डार गले बैयां सजनी सब कसक निकस गई रे॥ ४६७॥

राग जंगला।

कभी गली हमारी आवेरे मोरे जियाकी तपन बुझावेरे नंदजूके

मोहन प्यारे लाला । तेरे सांवरे बदन पै कई कोटि काम वारे॥ तेरीयां जुलफा दिलदियां कुलफां जी दोऊ नैन हैं सतारे । तेरी खूबीके दरश पै लाल नयन तरसते हमारे ॥ पिया पिया करे पपी हरारे निशिदिन सो याद तेरी । मेरे सांवरे सलोने मोहन आश दर्शन केरी ॥ घायल फिरूं दरशकी पीर जाने नहीं कोई । मोहि लागी चोट प्रेमकी जिन लाई जाने सोई॥ जैसे जलके सोख हुए मीन क्या जीवे विचारे । कृपा कीजो दरशन दीजो मीरामाधो नंददुलारे॥

राग रेखता ।

दिलदार यार प्यारे गलियोंमें मेरे आजा । आंखें तरस रही हैं सूरत इन्हें दिखाजा ॥ चेरी हूं तेरी प्यारे इतना तू मत सतारे । लाखोंही दुख सहारे टुक अबतो रहम खाजा॥तेरेही हेत मोहन छानी है खाक बन बन । दुख झेले शिर पै अनगिन अबतो गले लगाजा ॥ मनको रहूं मैं मारे कबतक बतादे प्यारे । सूखे विरहमें तारे पानी इन्हें पिलाजा ॥ सब लोक लाज खोई दिन रैन बैठ रोई ।जिसका कहीं न कोई तिसका तू जी बचाजा ॥ मुझको न यूं भुलाओ कछु शरम जीमें लाओ । अपनोंको मत सताओ ऐ प्राण प्यारे राजा ॥ हरिचंद नाम प्यारी दासी है जो तुम्हारी । मरती है वह विचारी आकर उसे जिलाजा ॥ ४६९ ॥

राग जंगला झिझोटी ।

गली वे हमारी क्यों नहीं आमदा विहारी प्यारे । दर्श दिखाय निहाल करोगे सुंदर रूप उजारे प्यारे॥तेरी याद मेरे मन पर रहिंदी श्याम स्वरूप आंखनके तारे । पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि निरखत तन मन धन सब वारे ॥ ४७० ॥

राग काफी ।

मिलना वे महबूब बिहारी । भोर भये वृंदावन कुंजों जाना होकर गली हमारी ॥ मृदुमुसकन सानूं दिल विच भांदी झमक चलन नूपुर धुन प्यारी । ललित किशोरी सांवरी सूरत घुंघरी अलकों पर बलिहारी ॥ ४७१ ॥

मिलनावे दिलदार साँवरे। हुसन तुसाडे चूर हुआ दिललीता तैं नकबका दावरे। बांकी अदा चशमों बसदी दीठा परे न दूजा ठांव रे॥ ललित किशोरी नूं लख समझावो एक नहीं मेरे मन भाव रे॥ ४७२॥

रागदेश।

मेरे नयनों का तारा है मेरा गोविंद प्यारा है॥ व मूरत उसकी भोलीसी व शिर पगिया मठोली सी। व बोलीमें ठठोलीसी बोल दृग बाण मारा है॥ व घूँघरवारियां अलकें व झोकेवारियां पलकें। मेरे दिल बीचमें हलकें छुटा घर बार सारा है॥ दरश सुख रैन दिन लूटे न छिनभर तार यह टूटे। लगी अबतो नहीं छूटे प्राण हरिचंद वारा है॥ ४७३॥

राग रामकली।

एक गामको बास धीरज कैसे कै धरों। लोचन मधुप अटक नाहिं मानत यद्यपि यत्न करों॥ वे याभग नित प्रति आवत हैं हौं दाधि लै निकरों। पुलकत रोम रोम गदगद स्वर आनँद उमँग भरों॥पल अंतर चलजात कल्पभर विरहा अनल जरों। सूर सकुच कुल कान कहां लग आरज पंथ डरों॥ ४७४॥

राग गौरी।

अबतो प्रगट भई जग जानी। वा मोहन सों प्रीति निरंतर क्यों न रहेगी छानी॥ कहा करों सुंदर मूरत इन नयनन माँझ समानी। निकसत नहीं बहुत पचहारी रोम रोम उरझानी॥ अब कैसे निर्वार जात है मिले दूध ज्यों पानी। सूरदास प्रभु अंतर्यामी ग्वालिन मनकी जानी॥ ४७५॥

राग काफी।

या साँवरे सों मैं प्रीति लगाई। कुल कलंक ते नाहिं डरोंगी अवतों करों अपने मन भाई॥बीच बजार पुकार कहूं मैं चाहे करो तुम कोटि बुराई। लाज मरजाद मिली औरनको मृदु मुसकान मेरे

बट आई ॥ बिनदेखे मन मोहनको मुख मोहिं लागत त्रिभुवन दुख दाई ।नारायण तिनको सब फीको जिन चाखी यह रूप मिठाई॥४७६॥

राग रामकली ।

मेरे जिया ऐसी आन बनी । बिना गुपाल और नहिं जानूं सुन मोसों सजनी ॥ कहा काँच संग्रहके कीने हीरा एक कनी । मन बच क्रम मोहिं और न भावे अब मेरे श्याम धनी ॥ सूरदास स्वामीके कारण तजी जात अपनी ॥ ४७७ ॥

राग सोरठ ।

मेरे गिरिधर गुपाल दूसरो न कोई । जाके शिर मोर मुकुट मेरो पति सोई ॥ शंख चक्र गदा पद्म कंठ माल सोही । तात मात भ्रात बंधु आपनो न कोई ॥ छाँड दई कुलकी कान क्या करैगा कोई । संतन सँग बैठ बैठ लोक लाज खोई ॥ अबतो बात फैल गई जाने सब कोई । अँसुअन जल सींच सींच प्रेम बेलि बोई ॥ मीरा प्रभु लगन लगी होनी होसो होई ॥ ४७८ ॥

राग बरवा ।

मैं गिरिधर सँग राती ग्वैयां ॥ पँचरंग चोला रँगादे सखी मैं झुरमट खेलन जाती । ओही झुरमट मेरो साँई मिलेगा खोल तनी गलगाती॥चंदा जायगा सूरज जायगा जायगी धरन अकाशी । पवन पानी दोनोंही जायँगे अटल रहे अविनाशी ॥ सुरत निरत का दीउडा सँजोले मनसा की करले बाती । प्रेमहटी का तेल मँगाले जग रह्या दिन ते राती ॥ जिनके पिया परदेश बसत हैं लिख लिख भेजें पाती । मेरे पिया मेरे माहिं बसत हैं ना कहूं आती न जाती ॥ पीहरे वसूं ना बसूंगी सास घर सद्गुरु शब्द सुनासी । ना घर तेरा ना घर मेरा कहगई मीरा दासी ॥ ४७९ ॥

राग सोरठ ।

रानाजी तैं जहर दीनी मैं जानी । जबलग कंचन कसिये नाहीं होत न बारा बानी ॥ लोक लाज कुल कान जगतकी बहाय दीनी

जैसे पानी ॥ अपने घरको परदा करले मैं अवला बौरानी । तरकश तीर लग्यो मेरे हियरे गरकगयो सनकानी ॥ मीराप्रभुजीके आगे नाची चरण कमल लपटानी ॥ ४८० ॥

राग जंगला ।

मैं नूं बरज न भोलडी मां पीया नाल मैं रत्ती यां ॥ ना तकीया ना आसरा माए ना कोई राह गली । मैं शौहर ढूंडा आपना माए कर कर बाहिं खली ॥ साईं फूल गुलाब दा मेरी झोलडी टूट पया । बेसर भोले सुंघया मेरे रोम२रच गया ॥ शाह सरफा मींहदी रंगुली माए लाई कुल्ह जहान । इकनां नूं रंग चढ गया इक रह गए अमना मान ॥ ४८१ ॥

राग विहाग ।

मन अटक्या बेपरवाहे नाल ॥ नयन फँसे दिल मिलया लोडे मूरख लोक असानूं मोडे मेरा हरदम जांदा आहे नाल ॥ मुल्लां काजी नमाज पढावन हुकम शरादा भय दिखलावन साडे इशक नूं की इस राहे नाल ॥ नदियों पार सजन दा ठाना कीते कौल जरूरी जाना कुछ करलै सलाह मलाहे नाल ॥ आशिक सोई जेहडा इशक कमावे जितबल प्यारा उतेबल जावे बुल्लेशाहजामिल तू अलाहे नाल॥

राग पहाड ।

मैंनू हरदम रींहदा चा सज्जन दे शोक नजारे दा ॥ जब तैं कीता असांवल फेरा हार शृंगार पया भट मेरा सीने रडके सांग गुझडा इशक प्यारे दा ॥ रल मिल सैयां मारन बोली ओह मेरा साहिब मैं ओहदी गोली रखदींहां जान पछान जामिन हशर दिहाडेदा ॥ ना आदम ना हव्वा आई ताते जाता अपना माही आया साहब आप बनके रूप सतारेदा ॥ मीरांशाह विभूति रमावां सांवरे दे दर अलख जगावां ओही है सिरताज आजज नीच नकारे दा ॥ ४८३ ॥

राग देवगंधार ।

बसे मेरे नयनन में नँदलाल । सांवरी सूरत माधुरी मूरत

राजिव नयन विशाल ॥ मोरमुकुट मकराकृत कुंडल अरुण तिलक दिये भाल । अधरन बंसी करमें लकुटी कौस्तुभमणि वनमाल ॥ वाजूबंद अभूषण सुंदर नूपुर शब्द रसाल । दास गोपाल मदन मोहन पिय भक्तनके प्रतिपाल ॥ ४८४ ॥

बसे मेरे नयनन में दोउ चंद । गौर वर्ण वृषभानु नंदनी श्याम वरण नँदनंद ॥ गोलक रहे लुभाय रूपमें निरखत आनँद कंद । जय श्रीभट्ट युगल रस वंदों क्यों छूटे दृढ फंद ॥ ४८५ ॥

राग परज ।

या ब्रजमें कछु देख्योरी टोना । लेमटुकी शिर चली गुजरिया आगे मिले बाबा नंदके छोना ॥ दधिका नाम बिसर गयो प्यारी लेलेहुरी कोऊ श्याम सलोना । वृंदावनकी कुंज गली में आंख लगाय गयो मनमोहना ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर सुंदर श्याम सुघर रस लोना ॥ ४८६ ॥

राग मलार ।

कोऊ माई लैहै री गोपालहिं । दधिको नाम श्यामसुंदर घन मुख चढ्यो ब्रजबालहिं ॥ मटुकी शीश फिरत ब्रज बीथिन बोलत वचन रसालहिं । उफनत तक्र चहूं दिशि चितवत चित लाग्यो नँदलालहिं ॥ हँसत रिसात बुलावत बरजत देखो उलटी चालहिं । सूरश्याम बिन और न भावत या विरहिन बेहालहिं ॥ ४८७ ॥

राग भैरव ।

नयननकी कोरैं कोऊ लेहै । है कोइ ऐसी रसिक रँगीली प्राण निछावर देहै ॥ नूतन मधु मैं मेल लेआई छुवत खुमारी ऐहै । ललित किशोरी तताछिन जियरा टूक टूक ह्वै जैहै ॥ ४८८ ॥

राग बरवा ।

हमीं को प्यारे दरश दिखायदे ॥ लपट झपट कर मटुकी फोरी कर मोर मुकुट की छेयां ॥ मोहन प्यारे नंददुलारे तुम लीजो कांधे धर उनको ॥ सुन यशुमति इक न्याउ सुन्यो प्रीतिहिं इन मोहनकी ॥

हमीं को० । हौं बृंदावनजात हती शिर धर मटुकी माखन की । वेयां आन झकोरत मोहन सब सखियां मुसकाय घरको सरकी ॥ हमींको० ॥ यह मटुकी अनवेध मोतिनकी मोल जो लागे नंद यशोदा दोऊ बिकैंगे ॥ सूरदास कहा ब्रजको बसबो नित उठ मांगत दान ॥ हमींको० ॥ ४८९ ॥

राग विहाग ।

तुम्हें कोऊ टेरतहेरे कान्ह । गोरी सी भोरी थोरे दिनन की वारी सी वैस उठान ॥ छूटी अलक लाल पट ओढे नागरी परम सुजान । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिन धीर धरत नाहिं प्रान॥४९०॥

राग गौरी ।

ग्वारन क्यों ठाढी नँद पौरी । बेर बेर इत उत फिर आवत विजया खाय भई बौरी ॥ सुंदर श्याम सलोने से ढोटा उन दधि लेन कह्यो री । हमको कह गयो नेक खडी रह आपुन बैठ रह्यो री ॥ नौखल धेनु नंद बाबा घर तेरोही लेन कह्यो री । जोबन माती फिरत ग्वारनी तैं मेरो लाल ठग्यो री ॥इतनी सुनत निकस आये मोहन दधिको मोल कहो री। परमानंद स्वामी रूप लुभाने यह दधि भलो बिक्यो री ॥ ४९१ ॥

राग जिला ।

श्रीबृंदावन रज दरशावे सोई हितू हमारा है । राधा मोहन छबी छकावे सोई प्रीतम प्यारा है ॥ कालिंदी जलपान करावे सो उपकारी सारा है । ललित किशोरी युगल मिलावे सो अँखियों का तारा है ॥ ४९२ ॥

राग देश ।

नीको लगे राधावर प्यारो । मोर मुकुट पियरो पटरा है लकुटी कर मतवारो ॥ रोकत गेल छैल अलबेलो नटवर वेष सँवारो । ललित किशोरी मोहन रसिया जीवन प्राण हमारो ॥ ४९३ ॥

राग खेमटा ।

सखी राधावर केसा सजीला । देखोरी गोइयां नजर नहीं लागे

कैसा खुला शिर चीरा छबीला ॥ वार फेर जल पियो मेरी सजनी मत देखो भर नयन रँगीला । हरीचंद मिल लेहो बलैयां अँगुरिन कर चटकाय चुटीला ॥ ४९४ ॥

राग देश ।

दंपति दर्पण हाथ लिये । निरखत मुख अरविंद कपोलन मेल मुदित गल बाहिं दिये ॥ ललित किशोरी मदन तरंगें पर्श अंग सरसात हिये । छिनहूं यह छबि जिन न विलोकी कहा कोटि शत कल्प जिये ॥ ४९५ ॥

राग देवगंधार ।

निरख सखि चार चंद्र इक ठोर । बैठे निरखत पिया तिया दोउ सूर सुताकी ओर ॥ द्वै विधु नील श्याम घन जैसे द्वै विधुकी गति गौर । ताके मध्य चार शुक राजत द्वै फल आठ चकोर ॥ शशि शशि संग प्रवाल कुंद अलि तहँ उरझ्यो मन मोर । सूरदास प्रभु उभय रूपनिधि बलि बलि युगलकिशोर ॥ ४९६ ॥

राग खेमटा ।

तू मेरा मनमोहा सामालिया । भौंह कमान तान कानन लौं नयन बान हँस मारे छलबलिया ॥ ठुमक चलन बोलन मुख पंकज मधुरे हँसन कर डारे बेकलिया । जन रघुनाथ इतेपर मोहन अब न बजा प्यारे लाल मुरलिया ॥ ४९७ ॥

राग रेखता ।

लगाहे इश्क तुम सेती निबाहोगे तो क्या होगा । मुझे है चाह मिलनेकी मिलाओगे तो क्या होगा ॥ हुसन चश्मोंके प्यालेभर पिलाओगे तो क्या होगा । चमन बिच आन कर मुखडा दिखाओगे तो क्या होगा ॥ भरम धर्ता है कुल आलम हँसाओगे तो क्या होगा । सजन तुमविन तड़फता जी जिवाओगे तो क्या होगा ॥ मेरे इस दिल दिवानेको सताओगे तो क्या होगा ।

अजब दीदार रोशन है छिपाओगे तो क्या होगा ॥ चुराकर दिल परायेको दिलाओगे तो क्या होगा । जिगरके दर्द की दारू बताओगे तो क्या होगा ॥ रसिक गोविंद सीने से लगाओगे तो क्या होगा ॥ ४९८ ॥

लावनी ।

हम तेरे इश्क में श्याम बहुत दिन भटके । अब मिला हमें तू सनम खुले पट घटके ॥ किये रंजो अलम मंजूर जरा नहिं भटके । सब दाहिशत दिलकी निकल गई छट छट के ॥ कई लाख वजाके सनम दिये तूने झटके । पर गिरे न हरगिज कदम पकड हट हट के ॥ कइ बार गया शिर तेरे इश्क में कटके । फिर पाया हमने नाम तुम्हारा रटके ॥ जब नाम बनाकर फांद जानकर लटके । तब मिला हमें तू सनम खुले पट घटके ॥ ४९९ ॥

गजल ।

किया बिस्मिल मुझे उसकी अदाके हाथ क्या आया । तड-पता छोडकर तेगे कजाके हाथ क्याआया ॥ दिखाकर टुक जमाल अपना मुझे तो कर दिया शैदा । भला पूछे कोई उस महलकाके हाथ क्या आया ॥ मेरे इस गुंचये दिलको कभी उसने न आ खोला । गई बालाई बाला उस सबाके हाथ क्या आया ॥ लगाना खून दिल चाहाथा मैंने उसके पाऊं से । वले इस पेश कदमी से हिनाके हाथ क्या आया ॥ फिरा शहरो बिया बां तालबे दीदार नारायण । बिठाया उसको परदे में हयाके हाथ क्या आया ॥५००॥

जहां ब्रजराज कल पाये चलो सखि आज वा वनमें । बिना वा रूपके देखे विरहकी दौ लगी तनमें ॥ न कल पडतीहै बेकल को न जी लगता है बिन जानी । भई फिरती हूं योगिन सी सरे बाजार गलियन में ॥ करूं कुर्बान जी उसपर जनम भर गुण न भूलूंगी । मेरा महबूब जो लाकर बिठादे तेरे आंगन में ॥ नहीं कुछ गर्ज दुनिया से न मतलब लाज से मेरा । जो चाहो सो कहो

कोई बसा अब तो वही मनमें ॥ तेरी यह बात सांची है नहीं शक इसमें नारायन । जो मूरत का है मस्ताना वह परचे कैसे बातनमें॥

राग नट ।

कान्हर कारो नंददुलारो मोनयननको तारो री । प्राणपियारो जग उजियारो मोहन मीत हमारो री ॥ हगमें राजत हिय में छाजत एक छिना नहिं न्यारो री । मुरली टेर सुनावत निशि दिन रूप अनूपम वारो री ॥ चरण कमल मकरंद लुब्ध है मन मधुकर गुंजारो री । रस रँग केलि छबीले प्रभु सँग हित सों सदा बिहारो री॥

राग भैरव ।

प्यारा नयना लगाय छिप जामदा । यादतां रहिंदी हरदम तेरी मुखडा क्यों नहीं दिखलामदा मेरा जीया तर्सामदा ॥ जबते लग्न लगीहै मनमें गृह अँगना न सुहामदा । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश को मन बिच क्योंना बस जामदा ॥ ८०३ ॥

राग देश ।

मन मोह लिया श्यामने बंसीको बजाके । बेखुद किया दिल-दार ने जुलफोंको दिखाके ॥ पट पीत मुकुट मोर लकुट लटपटी पगिया । चलते हैं लटक चालसे भ्रुकुटीको नचाके ॥ अलमस्त किया दममें ब्रजनारि को मोहन । मुरलीके साथ किंकिणी नूपुर को बजाके ॥ कुर्बान सनम् तुझ पै दिलो दीन हमारा । राखो ललित किशोरीको गरेसे लगाके ॥ ८०४ ॥

ठुमरी ।

कोई दिलबर की डगर बताय दे रे । लोचन कंज कुटिल भ्रुकुटी कर कानन कथा सुनायदेरे ॥ जाके रंग रँग्यो सभ तन मन ताकी झलक दिखायदे रे । ललित किशोरी मेरी वाकी चितकी सांट मिलायदे रे ॥

राग कान्हरो ।

श्याम भुजाकी सुंदरताई ॥ चंदन खौर अनूपम राजत सो छवि कही न जाई ॥ अति विशाल जानूं लौं परसत इक उपमा मन आई।

मनो भुअंग गगन सों उतरचो अध मुख रह्यो झुलाई ॥ रत्न जडित पहुँची कर राजत अँगुरी सुंदर भारी । सूर मनो फणि शिर मणि सोहत फण फणकी छबि न्यारी ॥ ५०६ ॥

राग सारंग ।

जाको मन लाग्यो गोपाल सों ताहि और नहिं भावै । लेकर मीन दूध में राख्यो जल बिन सचु नहिं पावै ॥ जैसे शूरमा घायल घूमत पीर न काहु जनावै । ज्यों गूंगो गुड खाय रहत है स्वाद न काहू बतावै ॥ जैसे सरिता मिली सिंधु में उलट प्रवाह न आवै । तैसे सूर कमलमुख निरखत चित इतउत न चलावै ॥५०७॥

राग देश ।

गौर श्याम बदनारविंद पर जिसको वीर मचलते देखा । नयन बान मुसक्यान संग फँस फिर नहिंनेक सँभलते देखा ॥ ललित किशोरी युगल इश्क में बहुतों का घर चलते देखा । डूबा प्रेम सिंधु का कोई हमने नहीं उछलते देखा ॥ ५०८ ॥

साँवरेकी जिन निरखी मुसक्यान । सोतो भई घायल ताही छिन बिन बरछी बिन बान ॥ कल नहिं लेत धरत नहिं धीरज तडफत मीन समान । नारायण भूली सुध तनुकी बिसर गयो सब ज्ञान५०९

राग काफी ।

राधारमण मनोहर सुंदर तिनके सँग नित रहते हैं । छके रहत छबि ललित माधुरी और नहीं कछु चहते हैं ॥ चितवन हँसन चौट दशनन की निशि दिन हिय पर सहते हैं । ललित किशोरी करैं न ओटैं फरी नहीं कर गहते हैं ५१० ॥

राग धनाश्री ।

सभसे ऊंचो प्रेम सगाई । दुर्योधनकी मेवा त्याग्यो साग विदुर घर पाई ॥ जूठे फल शबरीके खाये बहु विधि प्रेम लगाई । प्रेम के वश नृप सेवा कीनी आप बने हरि नाई ॥ राजसू यज्ञ युधिष्ठिर कीनो तामें जूठ उठाई । प्रेमके वश अर्जुन रथ हांक्यो भूल गये

ठकुराई ॥ ऐसी प्रीती बढी बृंदावन गोपिन नाच नचाई । सूर क्रूर इस लायक नाहीं कहँलग करौं बडाई ॥ ५११ ॥

कवित्त ।

चढे गजराज चतुरंगिनी समाज सह जीत क्षितिपाल सुरपाल सों सजत हैं ॥ विद्या अपार पढ तीरथ अनेक कर यज्ञ और दान बहु भांति सों करत हैं ॥ तीन काल में नहाय इंद्रियों को वश लाय कर संन्यास विषय वासना तजत हैं ॥ योग और जप और तप को अनेक करैं विना भगवंत भक्ति भव ना तरत हैं ॥ ५१२ ॥

चाहे तू योग कर भ्रुकुटी मध्य ध्यान धर चाहे नाम रूप मिथ्या जानके निहार ले ॥ निर्गुण निर्भय निराकार ज्योति व्याप रह्यो ऐसो तत्त्व ज्ञान निज मनमें तू धार ले ॥ नारायण अपनेको आपही बखान कर मोते वह भिन्न नहीं या विधि पुकार ले ॥ जौलों तोहिं नंदको कुमार नहीं दृष्टि परे तौलों तू भलेही बैठ ब्रह्मकोविचारले।

सवैया ।

चारोही वेद पुराण अठारहो चौंसठ तंत्रके मंत्र विचारे ॥
तीन सौ साठ महाव्रत संयम मंगल यज्ञपुरी पुर सारे ॥
योग वियोग प्रयोग उपासन मैं हरिदत्त सभी निरधारे ।
तीनोंही लोकनके सगरे फल मैं हरि नामके ऊपर वारे ॥ ५१४ ॥

राग भैरव ।

कृष्ण नाम रसना रटत सोई धन्य कलि में । ताके पद पंकज की रेणुकी बलि में ॥ सोई सुकृत सोइ पुनीत सोई कुलवंता । जाको निशि बासर रहै कृष्ण नाम चिंता ॥ योग यज्ञ तीरथ व्रत कृष्ण नाम माहीं । विना कृष्ण नाम कलि उद्धार और नाहीं ॥ सब सुखको सार कृष्ण कबहूं न बिसरिये । कृष्ण नाम लेले भवसागर को तरिये ॥ श्री गोवर्द्धन धरन प्रभु परम मंगलकारी । उधरे जन सूरदास ताकी बलिहारी ॥ ५१५ ॥

राग माँझ।

हर हर जिनके मुखसों निकसे वारे तिन्हांदे जाइयेजी । धूड तिन्हांदे चरणांदी लै मस्तक अपने लाइयेजी ॥ दुर्मति दूर करे निहकेवल शिव घर बासा पाइयेजी । दुनीदास हर साधु संगति मिल निर्मल महल समाइयेजी ॥ ८१६ ॥

राग आसा।

हर हर हर हर हर हर हरे ॥ हर सुमिरत जन बहु निस्तरे ॥ हरि के नाम कबीर उजागर । जन्म जन्मके काटे कागर ॥ जन रमदास राम सँग राता । गुरूप्रसाद नरक नहिं जाता ॥ गोविंद गोविंद संग नामदेव मन लीना । आठ दामको छीपरो होयो लाखीना ॥ बुनना तनना त्यागके प्रीति चरण कबीरा । नीच कुला जोलाहरा भयो गुणी गहीरा ॥ सैन नाई बुतकारिया ओह घर घर सुनिया । हिरदे बस्या पारब्रह्म भक्तन में गिनिया ॥ रामदास अधम ते बाल्मीकि तिन त्यागी माया । परघट होय साध संग हरि दर्शन पाया ॥ यह विधि सुनके जाटरो उठ भक्ती लागा । मिले प्रत्यक्ष गुसाइयां धन्ना बडभागा ॥ ८१७ ॥

राग मलार।

प्रभुके ऊंच नीच नहिं कोई । प्रेम भक्ति कर जो जन ध्यावे उत्तम कहिये सोई ॥ कुलवंता राजा दुर्योधन तिस गृह पग ना धारचो । जाय विदुरके भाजी अरपी जात न जन्म विचारचो ॥ ब्राह्मण एक करत नित पूजा ताको भोग न लीना । धन्ने जाटके शौच न काई होय प्रगट दुध पीना ॥ ऊंचे जन्म कर्मके तपसी ना किसे मंदिर धावे । महा कुचील भील दे कर ते ले जूँठे फल खावे ॥ जाय पंडे सब आगे बैठें ना किसे देत दिखाई । नामदेवको देहरा फेरचो लीनो कण्ठ लगाई ॥ पारब्रह्मपूरण अविनाशी सब घटकी मति जानै। दुनीदास प्रभुभक्त वछल है कपट हेतु नहिं मानै ॥ ८१८ ॥

राग कान्हरा ।

माधव केवल प्रेम पियारा । गुण अवगुण कछु मानत नाहीं जान लेहु जो जाननहारा ॥ व्याधाचर्ण अवस्था ध्रुवकी गज ने शास्त्र कौन विचारा । भक्त विदुर दासी सुत कहिये उग्रसेन कछु बल नहिं धारा ॥ सुंदर रूप नहीं कुब्जाको निर्धन मीत सुदामहुँ तारा । कहँलौं वरणि सकौं सबहिनको मोपै पायो जात न पारा ॥ सुन प्रभु सुयश शरण हों आयो मोसे दीनको काहे बिसारा । भक्त राम पर वेग द्रवो क्यों ना कहिये दासन दास हमारा ॥ ५१९ ॥

राग जंगला काफी ।

मन मानेकी बात नहीं कछु जातिको कारन ॥ कुब्जा कर्मा और भीलनी पूतना और निषाद । गति पाई जिन यशुमति जैसी भये भुवन विख्यात ॥ वाल्मीकि रयदास विदुर औ केशव कबीर किरात । सैन भक्त और सदन कसाई कहु इनकी क्या जात ॥ जप तप योग दान व्रत संयम नहिं इनसों हर्षात । रसिक नाथ प्रभु इक रस साँचो भाव भक्ति पतियात ॥ ५२० ॥

राग जिला झिंझोटी ।

गोपी प्रेमकी धुजा । जिनन गुपाल किये वश अपने उरधर श्याम भुजा ॥ शुक मुनि व्यास प्रशंसा कीनी उद्धव संत सराहीं । भूरि भाग्य गोकुलकी वनिता अति पुनीत जग माहीं ॥ कहा भयो जो विप्र कुल जन्म्यो सेवा सुमिरण नाहीं । श्वपच पुनीत दास परमानँद जो हरि सन्मुख जाहीं ॥ ५२१ ॥

राग विहाग ।

प्यारो पैये केवल प्रेम में । नहीं ज्ञान में नहीं ध्यान में नहीं करम कुल नेम में ॥ नाहिं भारत में नाहिं रामायण नाहिं मनु में नाहिं वेद में ॥ नाहिं झगरे में नहीं युक्ति में नहीं मतनके भेद में ॥ नाहिं मंदिर में नाहिं पूजा में नाहिं घंटा की घोर में । हरीचंद वह बांध्यो डोलै एक प्रेमकी डोर में ॥ ५२२ ॥

मुँदरियालीला.

ठुमरी।

माथेपै मुकुट श्रुति कुंडल विशाल लाल अलक कुटिल सो अलिन मद गंजनी ॥ काछनी कलित कटि किंकिणी विचित्र चित्र पीत पट अंग सो विराजै द्युति वैजनी ॥ दिये गलबाहीं प्रिया प्रीतम विहार करें अति अनुराग भर आईं नई द्वै जनी ॥ कहै जैदयाल प्रभु मेरो मन मोहि लियो मंद मंद बाजत गोविंद पायँ पैंजनी ॥५२३॥

राग कान्हरा।

कहां करते मुँदरिया डारी। मैं बलि जाऊं बताय किशोरी तैं कबते न निहारी ॥ आवतहैं भुज अंशन दीने एहो छैल बिहारी। जो देखी तो कहिये मोते मुदित होत कह भारी ॥ चोरी चपल लगावत मोको न्याव करो तुम प्यारी। वृंदावन हित रूप दरश पडी लाल फेंट जब झारी ॥ ५२४ ॥

राग प्रभाती।

गहनो तो चुरायो तैंने केशो यादोरायको। हाथकी अँगूठी लीनी तोरा लीनो पांयको ॥ माथेको शिरपेंच लीनो रतन जराय को। गाम तो बरसानो कहिये श्री सुखधाम को ॥ लालजी को सासरो श्रीराधेजू को माय को। लेके तो भाग आई फेर नहिं पायगो। सूरश्याम मदन मोहन नयो गढवायगो ॥५२५॥

राग आसावरी।

मोहनि. रूप बनायो हरि बाना। बाहिं बरा बाजूबंद सोहे छला छाप दस्ताना ॥ मुखभर पान सींक भर सुरमा लै दर्पण कान्हा मन मुसकाना। माय यशोदा यों उठबोली तू क्यों भयो जनाना। मोहिं छलिगई वृषभानु किशोरी ताहि छलबेको बरसाने मोहिं जाना ॥ बरसानेकी कुंज गलिन में कान्हा फिरे दिवाना। भानराय की पौंर बूझके काहू गूजरिया सों जाय बतराना ॥ ५२६ ॥

राग दादरा ।

तुम या ग्राम कहांरहो आली । हम कबहूं देखी न सुनीहै यह शोभा छबि रूप निराली॥नख शिख लौं शृंगार मनोहर अधर रची पानन की लाली । नारायण कहो प्रगट खोलके बात न राखो बीच बिचाली॥

सवैया ।

मनमोहन लाल बडो छलिया सखि बारूकी भीति उठावतहै॥
करतोरतहै नभ की तरियाँ चट चंदमें फंद लगावत है॥
जहां पौन नजाय सकै मुरली धुन की तहां दूती पठावत है॥
कहुँ चोर कहूँ दधिदानी बने कहुँ शाह लली बनिआवत है ॥५२८॥

कवित्त ।

कौन रूप कौन रंग कौन शोभा कौन अंग कौन काज महाराज त्रिया वेष कीयो है॥ नाकहूमें नत्थ हत्थ चूरिन भरे है लाल काननमें कर्णफूल बेंदी भाल दीयोहै ॥ चंद्रहार उर बिराजै चंपकली कंठसाजै मुकुटको उतार ओढ चूनरी को लीयोहै॥ नारायण स्वामी देख चीन्ह गई प्यारी भेख खिल खिल खिल हँसत राधे अँचरा मुख दीयो है ॥ ५२९ ॥

छद्म.

मालिनलीला.

राग कालिंगडा ।

प्यारी इक मालिन पौर तिहारी ॥ टेक ॥ रंग साँवरो वा मालिन को नील मणिन अनुहारी । ठाढी है वृषभानु पौरिपै पूछत नाम दुलारी ॥ बेंदी भाल नयन बिच काजर बेसरकी छबि न्यारी। चलत चाल चपला ज्यों चमकत झूमत झूम घटा री ॥ यह सुनके वृषभानु नंदनी बोली तब मुसकाई । ले आवो तुम वा मालिनको कैसी है वह आई ॥ लै आज्ञा प्यारीकी तबहीं सखी वेग उठधाई । चलरी मालिन याद करी तू दास चरण बलिजाई ५३०

मालिन मधुभरे नयन रसीले ॥ टेक॥ कहो कौन है तात तुम्हारो

कौन तुम्हारी माई। क्या है सुंदरि नाम तिहारो कौन गाम ते आई॥ अचल प्रेम है तात हमारो भक्ति हमारी माई। श्याम सखी है नाम हमारो धुर गोकुल ते आई॥ तुम्हरो रूप देख मन उमग्यो सुन मालिनकी जाई। हम लेंगी सभ वस्तु तिहारी क्या क्या सौदा लाई॥ चंपाकली हमेल चमेली फूलन हार बनाई। सेवती गुलाब सुमनके झुमका तिहारे कारण लाई॥ कित मथुरा कित गोकुल नगरी कित बरसाने आई। कौन बतायो नाम हमारो किन यह ठौर बताई॥ तीन भुवनमें सुयश प्रकट है अरु तुमरी ठकुराई। राधे नाम रूपकी आगरि श्रीवृषभानुकी जाई॥ चंचल चतुर सुघर तू मालिन हम जानी चतुराई। फूलन हार बने अति सुंदर और कहो क्या लाई॥ सुंदर तेल फुलेल उबटनो अतर सुगंध मिलाई। जो रुचि होय सो लै मेरी प्यारी बेर भई मोहिं आई॥ बेर बेर तू जनि कर मालिन दैहौं माल अघाई। हीरे लाल रत्न मणि माणिक भूषण बसन मँगाई॥ बडे घरनकी मालिन हूं मैं धनकी रुचि कछु नाहीं। मैं सौदागर प्रेमरतनकी और न कछू सुहाई॥ फूल फुलेल कि बेचन हारी कहा अधिक इतराई। लेहु लेहु फूल करत कुंजन में हमपे करत बडाई॥ सुकृत जन्म के फल ते भामिनि यह मेरे फूल सुहाई। पच पच हार रहे सुर नर मुनि ऐसे फूल नपाई॥ जिन फूलनको खोजि थकित भये सुर नरपति मुनिराई। ऐसे फूल कहो मृगनयनी कौन बाग सों लाई॥ त्रिभुवन पति जग-दीश दयानिधि नंद कुँवर यदुराई। वा मोहनके बाग सों प्यारी नवल फूल चुनलाई॥ यह सुनके वृषभानु नंदनी तन मन सुख अधिकाई। आज कि रैन रहो घर हमरे भोर भये उठ जाई॥ सांची प्रीति देख प्यारेकी रैन की शैन ठहराई। यह छबि निरख मगन भये सुर नर दास चरण बलिजाई॥ ८३१॥

मनिहारीलीला

राग गौरी।

मिठ बोलनी नवल मनिहारी। भौंहें गोल गरूर हैं याके नयन

चुटीले भारी ॥ टेक ॥ चूरी लख मुख ते कहै घूंघट में मुसकात। शशि मनु बदरी ओट ते दुर दर्शत यहि भांत ॥ चूरो बड़े जो मोल को नगर न गाहक कोय । मोफेरी खाली परी आई घर घर सभ उ टटोय ॥ चुरी नील मणि पहरबे नाहिन लायक और । भागवान कोइ लैचलो मोहिं दीसत है इक ठौर ॥ जिहिं नगरी रिझवार नाहिं सौदागर क्यों जाय । वस्तु घनेरी गांठ में विन गाहक सो पछिताय॥ रंग सांवरी गुण भरी धन मुन्यार कुल ओप । मुदित होत सभ देखके री यह पुर गोपी गोप ॥ काहू पै न ठगायहै तेरी बुद्धि विशाल। लाभ अधिक कर जायगी भटू बेच बडे घर माल ॥ मेरे मालहिं लेहि सो जो मुहँ मांग्यो देय । ऐसी है कोउ भामिनी ताको नाम प्रगट किन लेय ॥ बेचन हारी काँच की कहा अधिक इतराय । पौंर भूप वृषभानुकी लाखनकी वस्तु बिकाय ॥ पुर बजार पेखे नहीं है गर्वीलि नार । व्यापारिन अबहीं बनी कछु बात न कहत विचार ॥ तोहिं लै चलिहों नृप घरैं क्यों जिय होत उदास । लेहिं लाडिली राधिका जो सौदा तेरे पास ॥ यह सुनके ठोढी गही सुखित भई अँग अंग । भलो जो तेरो मानहों लैचल अपने संग ॥ लैगइ पौरी भानु की बात कही समझाय । गुणन प्रगट कर साँवरी तोहिं लैहैं वेग बुलाय॥ हौं जो मुन्यारी दूरकी आई राजद्वार । बेचों चूरी चूरला कोउ बोल लेहु रिझवार ॥ सुन आई चित्रा चतुर तू चल रावर मांझ । प्रात चूरी पहराइये अब बसरह पर गइ सांझ ॥ अलभ लाभसों पायके हिय जिय पायो चैन । रूखे से मुख सों कहै गौं गर्जिन रच रच बैन ॥ पर घर बसत जुबलिगई खिझै सकल परिवार । बड़े भोर ही आयहों मैं यह मन कियो विचार ॥ एक बार भीतर जुचल प्यारी सों बतराय । भली लगै सो कीजियो लगलाडली के पाय ॥ चली जो झूमत झुकतसी बेनी रुरकत पीठ । घूंट अमी को सो भरचो जब मिली दीठ सों दीठ ॥ बहुत हँसी नव नागरी देखी परम अनूप । कै बेंचत चूरीसखी तू कै बेचत है रूप ॥ मोहिं खिलौना जिन करो राजकुँवरि बलि जाउँ । तनथाक्यो बासरगयो

मोहिं फिरत फिरत सब गाउँ ॥ मुख दीखत तेरो डहडह्यो लगत चीकनो गात। थाकी कौन बतावही कछु ऊपर की सी बात ॥ हौं तो सूधे जीयकी घट बढ समझत नाहिं। तुम्हें कछू दरइयो कहा प्यारी कपट मेरे हिय माहिं ॥ रँग पहराऊं चूरला चोखो बणिज कमाउँ। चोखीप्रीति जु आदरों नहिं कपटी जन पतियाउँ ॥ मेरे जिय यह टेक है कहे देतहौं सांच। हौं भूखी सन्मानकी नहीं सहों झूंठकी आंच ॥ आउ आउ री निकट तू देखों वदन निहार। एक बातहीमें चिरी तू गुस्सा हिय ते डार ॥ शीतल हो व्यापारिनी तेरो ऐसो काम। तमक नई यह बैस की तज तोहिं फिरनो सब धाम ॥ हौं आई तक राज घर करन प्रथम पहचान। मणि लीयेही विन करी यह हांसी होय हितकी हान ॥ कासों है तैं हित कियो अबलग परी न दृष्टि। बात कहत उरझै सखी तू रची कौन विधि सृष्टि ॥ अब अपनी कर हित कहो भूषण युवति समाज। सभ विधि पूरण होय तो प्यारी मोमन बांछित काज ॥ मणि चौकी बैठी कुँवरि दीनी भुजा पसार। काढ चुरी अति सोहनी पहराई सुघर मुन्यार ॥ भुजा कढत मुन्यारि दृग फूल्यो मनो वसंत। मन छुट चल्यो जु हाथते धीरज बांधत गुणवंत ॥ जबही करसों कर गह्यो शिव अरि कियो प्रताप। तनु गति बेपथु जानके कछु मधुरे कियो अलाप ॥ तुम लायक चूरी कुँवरि भूल जुआई गेह। निरख निरख प्यारी कह्यो तेरी क्यों कांपतिहै देह ॥ सरस्यो प्रेम हिये बली उत्तर देह जुकौन। रूप अमल तापै चढयो लाल क्यों न गहै मुख मौन ॥ ललता कह यह प्रेम है कोऊ परस्यो रोग। यत्न करो तनु पेखके सखी कौन दई संयोग ॥ परम गुणीलो नंदसुत मैं देख्यो टकटोय। अहो प्रिया प्रीतम बिना बल ऐसो प्रेम न होय ॥ सींचे नीर गुलाब दृग प्रिया चिबुक कर लाय। प्रेम गहर ते काढके सखी पुनि पुनि लेत बलाय ॥ यश दीयो सभही कुलन वनिता रूप बनाय। कौन बडाई कीजिये यश वर्द्धन गोकुलराय ॥ कौतुक रूपी खेलमें रजनी वाढी शोभ। रासिकन हिये बढावनी यह नवल प्रेमकी

गोभ ॥ युगल प्रीति गाढी निरख भयो हिये अहलाद । वरणी लीला मोहनी यह श्री हरिवंश प्रसाद ॥ बलहित रूप चरित्र यह जो विचार है नित्त । वृंदावन हित भीजहै दंपति रस ताको चित्त॥८३२॥

विसातनलीला.

राग परज ।

गली गली में कहत फिरत कोइ लालहिं लेहु मुल्याई । यों कहत बिसातन आई ॥ टेक ॥ जबहिं गई वृषभानु पौंर तब ऊंची टेर सुनाई । श्याम पोत अरु श्याम नगीना या घर लायक लाई ॥ द्वारे उझक उझक फिर आवे आगे जात सकाई । तनु ढँपे पुनि घूंघट मारै लाज जुभीजत जाई ॥ भीतर खबर भई तब प्यारी बोल निकट बैठाई । कौन अपूरब वस्तु पास तोहिं कहु मोसों समुझाई ॥ कौन नगर तू बसत बिसातन अबहीं दई दिखाई । तोसी भटू बडे घर चहिये धनि विधि जिन जुबनाई ॥ सबही भाँति ऊजरी तनुकी किहि मुख करों बडाई । तोहिं बसाऊँ राजद्वार जो मनमें होय सचाई॥ कैसी चुन्नी कैसे मोती कीमत देहु बताई। है लघु बैस कौन पै सीखी परखन की चतुराई ॥ काँख माहिं ते गांठ काढ कर श्यामजू लरी गहाई । बडे मोलके नग यह मेरे तुम रिझवार महाई ॥ जो जो रुचै वस्तु सो राखो बडे गोपकी जाई। औरो बात कहत सकुचत हों प्रीति जुदेख बिकाई ॥ नाना विधिकी डिबिया छल्ला आरसी मणिन जडाई । श्रीराधाके आगे धरके बोली मैं भेंट चढाई ॥ तुम नृप अति लडी हो जुबिसातन देखत कृपा अघाई । हौं भूखी याहीकी चाहों द्रव्य न बहुत कमाई ॥ श्याम पोतको गुंजा सुन्दर मो घर धरयो दुराई । मोसों प्रीति करै जो भामिनि ताहि देहुँ पहराई ॥ हौं हित करों वचन मन क्रम कर रह मोपास सदाई । प्राणनहूंते प्यारी मोको भाग्य बडे ते पाई ॥ बटुवा खोल दिखाई बेंदी नागरि के मन भाई । सुघर बिसातन अपने करलो माथे कुँवरि लगाई ॥ पुनि झोरी ते दर्पण काढ्यो मुख शोभा दरशाई । उदित भालपर

मनु सुहाग मणि लख श्यामा मुसक्याई ॥ हर्ष अंक भर ताही बैठी मन खोल जबै बतराई । परशत अंग दशा बदली तब प्यारी मन में धरी भुराई ॥ बूझत अरी डरी कै तोकों छाया आय दबाई । तबलग परगई सांझ कहूं मोहिं बासो देहु बताई॥बिसर न सकत प्रीति अति बढगई ब्यारू संग कराई । रजनी गुण उघरे जब शय्या अपने ढिग पौढाई ॥ जबहिं स्वरूप प्रकाश्यो अपनो जान परी लँगराई । वृंदावन हित रूप छद्म तज सुखकी लब्धिमनाई ॥ ८३३ ॥

योगिनलीला.

राग देश ।

देखियत गुणन गरूर तेरो अति चटकीलो रूप । छकन और हौंसी लगत काहू सुता बडेकी भूप ॥ टेक ॥ चलरी चल घर लैचलों तूकहदे मनकी लाग । योग लियो किहि कारणे दृग दरशत है अनुराग ॥ श्रीराधा नृप लाडिली मन आवत भाषत सोय । अंत लेत तपसीनको नहिं योष खिलौना होय ॥ तन साधैं मन वश करैं हम बन फल करैं अहार । क्यों ग्रेहिनेके घर बसैं जिन तर्क तज्यो संसार ॥ भोजन भूखी हौं नहीं कछु मन न बासना और । प्रीति सहित आदर जहां हम बिलमैं ताही ठौर ॥आदर देहों अधिक तोहिं गुणहिं करों परकास । गिरि गहबर वन सेइये बरसानो निकट निवास ॥ गाम निकट ग्रेही बसैं योगी रमैं वन खंड । जिनके जप तप से थमैं सात द्वीप नौखंड ॥ हम जो सुनी यह शेश शिर तू कहत अनेती बात । सत्य बोल नहिं जानही विधि रचे जो साँवल गात ॥ प्रीति प्रतीति न वचन की करो बैस सुता पुनि राज । दूर बैठो घर जायके तुम्हें योगिन से कह काज ॥ गोपनके गोधन परख तुम तिन गुण करो बखान । योगिनके घर दूर हैं अति दुर्लभ पद निर्वान ॥ राजसुता तुम करतिहो योगिन संग विवाद । सेवा कीने फल मिलै चर्चा उपजै विषाद ॥ हम सेवा बहुविधि करैं जो तुम मन थिरता होय । यह पुर बसै बड़ भागिनी

ब्रज सम लोक न कोय ॥ क्यों न बडाई कीजिये लायक कुल वृषभान । अब हौं निश्चय चाल हौं पायों मन वांछित सन्मान । बाँहपकरके लेचली बैठारी जाय निकेत । अब छिन पास न छाँडिहौं समझ्यो उर अंतरको भेद ॥ पलँग देहु मोहिं बैठना मन मिलनी सजनी पास । यहि विधि मोहिं बिलमाइये मैं कबहूं न होउँ उदास ॥ भूमि शयन योगी करैं तू कहत वचन विपरीत । भूलि न आदर पाइये तप मारग की रीत ॥ तुम मन मृदु कीरति लली यह सजनीको हियो कठोर । तपसिन को शिक्षा करै कलु आयो कलिको जोर ॥ भुज भरलीनी कुँवरि ने तू जिय जिन पावै खेद । वृंदावन हितरूप छद्मको समझ परचोहै भेद ॥ ८३४ ॥

वीणावारीकी लीला.

राग गौरी ।

छबि आगरी कोविद राग । वीणा अंक विराजही बैठी बावाके बाग ॥ टेक॥ ऊंचो जामें बंगला कमनी सरवर तीर । जाके अंग सुबास ते जहां ह्वैरही भँवरन भीर ॥ पक्षीहू कौतुक ठगे ऐसी शोभा अंग॥आभा नील मणी मनो अस तनुको दरशत रंग॥जे देखन तरुणी गई ते जो विलोई प्रेम ।बींध गई रस नादमें सब भूली नित कृतनेम॥ तुम चलि लावो नगर में मिले अधिक सुख होय । भूखी वह जो सनेहकी प्यारी मैं देखी टकटोय॥गुणी न ऐसी देश यह रीझोगी सुन गान । औरन को जो छकावही वह आप छकै लैतान॥ कोमल परम स्वभाव हो जानत प्रीति बिकाय । जो अब आदर देहुगी तो फिर आवैगी धाय ॥ सरिता जल थिर ह्वै रहै जाको सुनत अलाप। शिव समाधि टारे बली विधि को टारतहै जाप ॥ ब्रज मंडल ऐसी नहीं नहीं भरत के खंड । अति गुणवंती भामिनी यह आई परचंड ॥ यह सुन अति अकुलाय कै चली सखी लै संग । रूपसिंधु उमँग्यो मनो तामें नाना उठत तरंग ॥ उठ सन्मानत साँवरी फूली सरवस पाय । दृग सों दृग मनसों जो लखि उरझे सहज सुभाय ॥

अहो कुशल मति नागरी तुम गुण भये प्रशंस । राग अलाप सुनाइये सखी बीणा धरके अंस ॥ चपल करज नख द्युति बडी गोरी गाई बाल । रीझी अति लली भूपकी दई ताहि आप हिय माल ॥ मान बडी तानन बडी बढी रूप लहि लाह । प्रगटकरो सब चातुरी जाके मनमें विपुल उमाह ॥ विद्या निपुण उजागरी धन तुम शिखवन हार । कोऊ दिन बर्साने बसो अब चलो हमारे लार ॥ सुनत कछू मोरचो बदन चुप ह्वै रही सुजान । वीणा धर दियो कंध ते रूखी ह्वै गई निदान ॥ ललता बूझत ममझके का कारण बलि-जाउँ । तुम उदास अतिही भई सुन धाम हमारे नाउँ ॥ मेरे छक है गुणन की सुनो खोलके कान । परघर गये जो को सहै सखी जो न होय अपमान ॥ तुम्हें प्राण सम राखहैं लाड नयो नित होय । अहो गुणीली भामिनी यह संशय मनते खोय ॥ गुणगाहक विरचे नहीं दूर करो संदेह । जे गुणको समझैं नहीं परहरिये तिनके ग्रेह ॥ यह सुन भई जो डहडही सखी सांवरी गात । चंपक वरणी धन्य तू कही निपट समझकी बात ॥ अब हौं निश्चय चलोंगी जान तुम्हारो हेत । तो मन थाह मिली भटू नृपसुता न उत्तर देत ॥ कहा न्याव सो करतहो कहत अतिलडी बैन । सुख पावो तो विरमियो नहीं करजैयो गौन ॥ मसक उठी कर बीण लै लगी कुँवरिके साथ । निपट मंद गमनी भई गह प्यारीजू को हाथ ॥ गोपनके मंदिर जिते सबको बूझत नाम । तनु श्रम अधिक जनावही कहै कितक दूर तुम धाम ॥ हम जो चढैं रथपालकी अतिही आदर योग । गुणी रीझ जानैं कहा ये ब्रजके भोरे लोग ॥ कहौ मँगाऊं अश्वरथ कहौ पालकी रंग । आज्ञा पहले करी नहिं योंहिं उठ लागी संग ॥ हम जान्यो ।नियर भवन यह तो निकस्यो दूर । याते खबर परी नहीं तुम नेह रह्यो उर पूर ॥ और सुनो मों बीणको नीके धरियो साज । मेरो जीवन प्राण है मेरो याही सों रंग समाज॥तुम मानतहो खेल सो सुन मो मुख रसरीत । नारद शारदके सदा अति या बाजे सों प्रीत ॥ हौं सीखी उनकी कृपा सों हिय की गाढी लाग । ता प्रताप ते करतहो

सखी तुम मोसों अनुराग॥लाई न्यारे भवन में बहुत करत सन्मान।
अब एकांत सुनाइये सखी सुघर साँवरी गान॥ बीणाके सुर साधके
अंक लाय मुसकाय। गायो चित की चोप सों जिन लीनो सभन
रिझाय॥ जैसिहि रजनी ऊजरी तैसोइ हिये हुलास। चपल करज
तैसे चलैं भयो तैसोई परकाश ॥ अहो सहेली साँवरी कर इहि
नगर निवास। असन वसन करहो सखी चल रह नित मेरे पास॥
मोहिं अंशा यह नगर घर यामें शंक न कोय।आवत जात रहौं सदा
जो रावर हित होय॥ सखिन और बाजे लिये प्यारी लई कर वीन।
ग्रीव ढुराई साँवरी अस गायो कुँवरि प्रवीन॥ जब उघरी संगीत गति
प्यारी दे करताल। छदम बिसर गई साँवरी लगी निरतन गति नँद-
लाल॥ह्वै त्रिभंग ठाढी भई कर मुरलीको भाव। फूंक चलै अँगुरीचलै
गई भूल कपटको दाव॥ राधा राधा रट लगी अधरन हीके माहिं।
समझ समझ ललता कही प्यारी यह तो भामिन नाहिं॥भुजा अंश पर
धरन को झुकी प्रियाकी ओर। सावधान होय साँवरी कह कौतुक
रचत जुजोर॥ राजभवन में आयके भूल न आदर पाय। स्यानी
है कै बावरी तू अपनो रूप बताय॥ यासों प्रीति न तोरिये हौं लाई
जुबुलाय। भेद हियेको बूझके देहु सादर वेग पठाय॥ प्रीतमको
देख्यो कहूं इन लीनी गति चोर। परम चातुरी सीव यह गुण आछे
लेत टटोर॥ कान लाग चित्रा कह्यो है यह नंदकिशोर। मैं लक्षण
नीके लखे दृग चालत गौहीं कोर॥ भटू बहुरि नीके परख बात न
भाँडो फोर। लायकसों समझे बिना अति गरुवो नेह न तोर॥ भरी
कटोरी अतरकी लाई सखी सुजान। सबकी चोली लगायके तिहिं
चोली परसे पान॥ वह अधरन ही में हँसी यह जो हँसी मुख खोल।
है यह दूत शिरोमणि कह्यो सब सखियन सों बोल॥ मेरीही भूलन
सखी तब तुम लियो विलोक। प्रेमसिंधु उमँगन जहाँ कह छद्म
जो तिनको रोक॥ कबहुँ दूर कबहूं प्रगट आवत भान निकेत।
मधुप अनत बिरमैं नहीं दृढ कियो कमल सों हेत॥ वरण्यो कौतुक
प्रेमको नेम नहीं मरयाद। लखी जुरसिकन की गली श्रीहरिवंश

प्रसाद ॥ यह रस रसिक जो विलसैहैं जामें अतिही चोज । वृंदावन हित बलिरुचै दंपति केलि मनोज ॥ ८३५ ॥

राग भैरव ।

यह रसरीत प्रिया प्रीतमकी दिव्य दृष्टि जल जैसेरी । विषयी ज्ञानी भक्त उपासक प्राप्त सबनको तैसेरी ॥ कदली खंभ पपीहा सीपी स्वाति बूँद जल जैसेरी । भगवत् कछू विषमता नाहीं भूमि भाग फल तैसेरी ॥ ८३६ ॥

दोहा—जय जय जय ब्रजचंदकी, जय जय जय सुखरास ।
निज चरणन में राखिये, एक तुम्हारी आश ॥

इति श्रीरागरत्नाकर प्रथमभाग समाप्त १.



इति

रागरत्नाकर प्रथमभाग

समाप्त ।

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ रागरत्नाकर ।

द्वितीय भाग २.

मथुरागमन लीला.

राग विहाग ।

अब नँद गैयां लेहु सँभार । हौं जो तिहारे आन प्रगट्यो गैयां चराईं दिन चार ॥ दूध दही तेरो बहुतही खायो बहुतहि कीनी रार । मातु पितु तेरे चरित उरसों डारिहौं न बिसार ॥ कोकिला सुत काग पाले अंत होत परार । तिहारे यशुमति आन बिलमें द्दग मत आंसू डार ॥ को पिता को पुत्र काको देखु मनहिं विचार । सूरके प्रभु चले ब्रजताजि कपट कागज फार ॥ १ ॥

राग सोरठ ।

यशुमति बार बार यह भाखै । है कोऊ ब्रज हितू हमारो चलत गोपालहिं राखै॥कहा काज मेरे छगनमगनको नृप मधुपुरी बुलाये । सुफलक सुत मेरे प्राण हरणको काल रूप हो आये ॥ बरु यह गोधन कंस लेय सब मोहिं वंदी लै मेलै । इतनो मांगत कमल नयन मेरि आँखन आगे खेलै ॥ को कर कमल मथानी गहिहै को दधि माखन खैहै । बहुरो इंद्र बरसि है ब्रज पर को गिरि नख पर लैहै ॥ बासर रैनि विलोकत जीयों संग लागि हुलराऊं । हरि बिछुरत जो रहों कर्मवश तो किहि कंठ लगाऊं ॥ टेर टेर धर परत यशोदा अधर बदन बिलखानी । सूर सो दशा कहां लम वरणौं दुखित नंदकी रानी ॥ २ ॥

राग विहाग ।

उठ चले ग्वाँढों यार । रब्बा हुन की करीये उठ चल्ले हुन रहिंदे नाहीं होया साथ त्यार ॥ चारों तरफ चलन दी चरचा केही पडी

पुकार । डाढ कलेजे बल बल उठदी बिन देखे दीदार । बुल्लाशाह प्यारे बाझो ना रहसां घर बार ॥ ३ ॥

राग सोरठ ।

उलट पग कैसे दीनो नंद । छांडे कहां उभय सुत मोहन धृग जीवन मतिमंद ॥ कै तुम धन जोबन मदमाते कै तुम छूटे बंद । सुफलक सुत वैरी भयो मोको लै गयो आनँदकंद ॥ राम कृष्ण बिन कैसे जीवों कठिन प्रीतिको फंद । सूरदास अब भई अभागन तुम बिन गोकुलचंद ॥ ४ ॥

राग बड़हंस ।

सांझ परी घर आये न कन्हैया । गोपी पूछे ग्वालनसों कहां गये मोरे ब्रजके बसैया॥घर रहे बछरू बन रहीं गैयां यमुना किनारे ठाढी यशुमति मैया । जाय षताल कालीनाग नाथ्यो फण ऊपर प्रभु निरत करैया ॥ लालदास प्रभु कह कर जोरे चरण कमल पर चितको धरैया ॥ ५ ॥

राग धनाश्री ।

ऊधो मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं । हंससुताकी सुंदर कलरव अरु कुंजन की छाहीं ॥ वे सुरभी वे बच्छ दोहनी खरिक दुहावन जाहीं । ग्वाल बाल सभ करत कुलाहल नाचत गहि गहि बाहीं ॥ यह मथुरा कंचनकी नगरी मणि मुक्ता जिहि माहीं । जबहिं सुरत आवत वा सुखकी जिय उमगत सुधि नाहीं ॥ अनगिन भाँति करी बहु लीला यशुदानंद निवाहीं । सूरदास प्रभु रहे मौन गह यह कह कह पछताहीं ॥ ६ ॥

राग विहाग ।

ऊधो ब्रजको गमन करो । मेरे बिना विरहनी गोपिका तिनके दुःख हरो ॥ योग ज्ञान परबोधि सभनको ज्यों सुख पावें नारि । पूरण ब्रह्म अलख परचो करि डारें मोहिं बिसारि ॥ सखा प्रबीन हमारे हो तुम याते थापि महंत । सूरश्याम कारण यहि पठवत ह्वै आवे गो संत ॥ ७ ॥

कवित्त ।

कामरी लकुट मोंहि भूलत न एक पल घुँघची ना बिसारों जाकी माल उर धारे हैं ॥ जा दिन ते छाकें छूट गई ग्वालन की तादिन ते भोजन न पावत सकारे हैं ॥ भनै यदुवंश जो पै नेह नंदवंश हू सों वंसी ना बिसारों जो पै वंश विस्तारे हैं ॥ ऊधो ब्रज जैयो मेरी लइयो चौगान गेंद मैयाते कहियो हम ऋणियां तिहारे हैं ८

कौन विधि पावे यह कर्म बलवान उदय छाछ छछिया की ब्रज भामिन को भातहैं ॥ मुक्तिहू पदारथ सो देचुके बकी को अब देंहि जननीको कहा याते पछतात हैं ॥ विधि जो बनाई आहि कौन विधि मेटें ताहि ऐसे कर शोचत रहत दिन रात हैं॥ ऊधो ब्रज जैयो मेरी कहियो समुझाय मैया जापै ऋण बाढै सो विदेश उठ जात हैं ९

परम पवित्र तुम मित्रहो हमारे ऊधो अंतर विथा की कथा मेरी सुन लीजिये ॥ ब्रज की वे बाला जपैं मेरी जप माला बाढी विरहकी ज्वाला तामें तन मन छीजिये ॥ मेरो विसवास मेरी आस रस रास मेरी मिलबेकी प्यास जान सावधान कीजिये ॥ प्रीति सों प्रतीति सों लिखी है रस रीति सों सो पत्रिका हमारी प्राण प्यारिनको दीजिये ॥ १० ॥

जैसे तुम दीनो तन मन धन प्राण मोंहि तैसेही समाधि साध ध्यान धरवावोगी ॥ अलख अनाथ घट घटको निवास मोंहि जान अविनाशी योग युगत जगावोगी ॥ आसनके प्राणायाम साधि ध्यान धारणा ते ब्रह्मको प्रकाश रस रास दरशावोगी ॥ ऐसे चित लावोगी तो सुख में समावोगी औ मुक्ति पद पावोगी हमारे पास आवोगी ॥ ११ ॥

भेजा तुम योग हम लीया धर शीश पर बड़ोही परखो चेरी कौन की कहावेंगी ॥ अँसुअनकी माला लेके जपैं नित राम नाम लोचनके खप्पर ले भिक्षाको धावेंगी ॥ पहरेंगी कंथा गल डारेंगी सेली माल मरघट पै बैठके मशानहू जगावेंगी ॥ ऊधोजी एती बात हरि जीसों कहियो जाय एती ब्रजबाला मृगछाला कहां पावेंगी ॥ १२ ॥

राग देश ।

श्याम का सँदेशा ऊधौ पाती लैकै आयोरे । पाती तो उठाय लीनी छाती सों लगाय लीनी घूंघटकी ओट देके ऊधौ समुझायो रे ॥ बसती उजाड दीनी उजडी बसाय लीनी कुब्जा पटरानी कीनी मोहिं न सुहायोरे । सूरश्याम जू के आगे ऐसे जाय कहियो ऊधो जीवत खसम किन भसम रमायो रे ॥ १३ ॥

राग टोडी ।

पाती सखि मधुबन से आई । ऊधो हाथ श्याम लिख पठई तुम सुनहो मोरी माई ॥ अपने अपने गृहसे दौरीं ले पाती उर लाई । नयनन नीर निरखे नहिं खंडित प्रेम विथा न बुझाई ॥ कहा करूं सूनो यह गोकुल हरि बिन कछु न सुहाई । सूरदास प्रभु कौन चूक ते श्याम सुरति बिसराई ॥ १४ ॥

राग जंगला होरी ।

साँवरे सों कहियो मोरी ॥ शीश नवाय चरण गह लीजो कर विनती कर जोरी । ऐसी चूक कहा परीमोसों प्रीति पाछली तोरी ॥ सुरति ना लीनी बहोरी ॥ भूषण वसन सभी तज दीने खान पान बिसरो री । विभूति रमाय योगिन होय बैठीं तेरोही ध्यान धरचो री ॥ अब मैं कैसे करों री ॥ निशि दिन व्याकुल फिरत राधिका विरह व्यथा तनु घेरी । बार कलेजा जार दियो है अब मैं कैसे करों री ॥ वेग चल आवो किशोरी ॥ रोम रोम विष छाय रहोहै मधु मेरे वैर परचो री । श्याम तुम्हें ढूंढत कुंजन में शीश लटा गह झोरी ॥ कहो हरि हो हरि होरी ॥ जादिन गमन कियो मथुरा में गोपिन सुध बिसरचो री । हमको योग भोग कुब्जाको कहा तकसीर है मोरी ॥ कहा कछु कीनी चोरी ॥ सूरदास प्रभु सों जाय कहियो आय अवधि रही थोरी । प्राणदान दीजो नँद नंदन गावत कीरति तोरी ॥ प्रीति अब कीजै बहोरी ॥ १५ ॥

सवैया।

जो हरि मथुरा जाय बसे हमरे जिय प्रीति बनी रही सोऊ॥
ऊधो बडो सुख ये हू हमैं और नीके रहैं वे मूरत दोऊ॥
हमारेहि नाम कि छाप परी और अंतर बीच अहै नहिं कोऊ॥
राधाकृष्ण सभी तो कहैं पर कूबरी कृष्ण कहै नहिं कोऊ॥१६॥

कवित्त।

जाकी कोख जायो ताको कैद करवाय आयो धाय कर मारी नारी निठुर मुरारी हैं॥ जेती ब्रजनारी तेती मिल मिल मारी अनमिल हूं मारी जो मिलिहैं ताहि मारिहैं॥ सुनरी ए चेरी मैं तेरी सौंह कहत हौं वे तो हरि सरस नयन आंसुहू न ढारि हैं॥ बडे हैं शिकारी पर इन्हें न सँभारी नारी मारबेको नवल कन्हैया तलवारि हैं॥१७॥

याही कुंज कुंजन तर गुंजरत भँवर भीर याही कुंज कुंजनतर अब शिर धुनत हैं॥ याही रसना ते करी रसकी रसीली बातें याही रसना ते अब गुणगण गनत हैं॥ आलम बिहारी बिन हृदय हूं अचेत भये एहो दई हित कहत कैसेके बनत हैं॥ जेही कान्ह नयनन के तारे हुते निशि दिन तेही कान्ह कानन कहानी सी सुनतहैं॥१८॥

आयो आयो भयो ऊधो अब ब्रज मंडलमें राय मैं कुराय योग रीत कह सुनायो है॥ झोली झंडा गूदडी औ भस्म मुद्रा कानन में हाथन में खप्पर यह स्वांगलै दिखायो है॥संयम नियम ध्यान धारणा दृढासन हो ब्रह्मको प्रकाश रस रास दरशायो है॥ कूबरी पै पढ आयो वेदको भुलाय आयो रथ चढ आयो अनरथ गढ़ लायो है॥१९॥

योगी तजे जगत हम जगत योग दोऊ तजे योगी लावें छार हम छारहूके मटिहैं॥योगी बेधें कान हम हीये और प्रान बेधे योगी कहैं नाथ हम नाथ नाथ रटि हैं॥ योगी कान मुद्रा हम भूषण बनाय राखे हमरे शिरकेश बहु योगी शिर जटिहैं॥ जानके अजान आज कहा भयो ऊधोजी योगी की युगत सों वियोगी कहा घटि हैं॥२०॥

श्याम तन श्याम मन श्यामही हमारो धन आठों याम ऊधो

हमें श्यामही सों काम है ॥ श्याम हीये श्याम जीये श्याम विन नाहिं तीये आंधे कीसी लाकरी अधार श्याम नाम है ॥ श्याम गति श्याम मति श्यामही हैं प्राणपति श्याम सुखदाई सों भलाई शोभाधामहै ॥ ऊधो तुम भये बौरे पातीलैके आये दौरे योग कहाँ राखें यहाँ रोम रोम श्याम है ॥ २१ ॥

राग मलार ।

जित देखों तित श्याम मई है । श्याम कुंज वन यमुना श्यामा श्याम गगन घन घटा छई है । सभ रंगन में श्याम भरोहै लोग कहत यह बात नई है । मैं बौरन के लोगन हीकी श्याम पुतरिया बदल गई है ॥ चंद्र सार रवि सार श्याम है मृगमद श्याम काम विजई है । नीलकंठ को कंठ श्याम है मनो श्यामता वेलि बई है ॥ श्रुति को अक्षर श्याम देखियत दीप शिखा पर श्याम तई है । नर देवन की मोहर श्यामा अलख ब्रह्म छवि श्याम भई है ॥ २२ ॥

राग देश ।

कुब्जाने जादू डारा जिन मोह्यो श्याम हमारा री । निशिदिन चलत रहत नहिं राखे इन नयनन जलधारा री ॥ अबयह प्राण कैसे हम राखैं बिछुरे प्राण अधारा री । ऊधो तबते कल न परतहै जबते श्याम सिधारा री ॥ अबतो मधुबन जाय ले आवो सुंदर नंददुलारा री । सूरदास प्रभु आन मिलावो तन मन धन सभ वारा री ॥ २३ ॥

राग नट ।

ऊधो धनि तुमरो व्यवहार । धन वे ठाकुर धन तुम सेवक धन धन परसन हार ॥ आम को काटि बबूर लगावत चंदन झोकत भार । शाहको पकर चोरको छोरत चुगलनको अधिकार ॥ हमको योग भोग कुब्जाको ऐसी समझ तिहार । हंस मयूर शुकपिक त्यागत कागनको इतबार ॥ तुम हरि पढे चातुरी विद्या निपट कपट चटसार । सूरश्याम कैसे निबहैगी अंध धुंध सरकार ॥ २४ ॥

राग रामकली ।

ऊधो कर्मनकी गति न्यारी । सभ नदियां जल भर भर रहियां सागर किस विधि खारी ॥ उज्ज्वल पंख दिये बकुलाको कोयल कित गुणकारी । सुंदर नैन मृगाको दीने वन वन फिरत उजारी ॥ मूरख मूरख राजे कीने पंडित फिरत भिखारी । सूरश्याम मिलबे की आशा छिन २ बीतत भारी ॥ २५ ॥

राग आसा ।

ऊधो सो मूरत हम देखी । शिव सनकादि सकल मुनि दुर्लभ ब्रह्म इंद्र नहिं पेखी ॥ खोजत फिरत युगो युग योगी योग युगत ते न्यारी । सिद्ध समाधि स्वप्न नहिं दरशी मोहनी मूरत प्यारी ॥ निगम अगम विमला यश गावें रहत सदा दरबारी । तिल भर पारवार नहिं पायो कहि कहि नेति पुकारी ॥ नाथ यती अरु योगी जंगम ढूंढ रहे वन माहीं । वेष धरे धरती भ्रमि हारे तिनहूँ दरशी नाहीं ॥ सो हम गृह गृह नाच नचाई तनक तनक दधि देके । रामदास हम रँगी श्माम रँग जाहु योग घर लेके ॥ २६ ॥

राग सारंग ।

विलग जिन मानो ऊधो प्यारे । यह मथुरा काजरकी कोठरी जे आवैं ते कारे ॥ कारे भँवर सुफलक सुत कारे कारे रत्न पवारे । यहां ज्ञानकी कौन चलावे सूर श्याम गुण न्यारे ॥ २७ ॥

राग देश ।

ऊधो कारे सबै बुरे । कारेकी परतीत न करिये कारे विषके भरे ॥ कारो अंजन देत दृगनमें तीखी सान धरे । नाग नाथ हरि बाहर आये फण फण निरत करे ॥ कोयलके सुत कागा पाले अपनोहि ज्ञान धरे । पंख लगे जब उडने लागे जाय कुटुंब रले ॥ सूर श्याम कारो मतवारो कारे से काल डरे ॥ २८ ॥

उरमें माखन चोर गडे । अब कैसे निकसत हैं ऊधो तिरछे हो जो अडे ॥ यदपि अहीर यशोदा नंदन तदपि न जात छडे । वहां कहत

यदुवंश महाकुल हमाहिं न लगत बडे ॥ को वसुदेव देवकीहै को जो
माने सो बूझे। सूर श्याम सुंदर विन देखे और न कोऊ सूझे ॥ २९ ॥

राग बड़हंस ।

हो गये श्याम दूजके चंदा। मधुबन जाय भये मधुबनियां हमपै
डारो प्रेमको फंदा ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर अवतो
नेह परचो कछुमंदा ॥ ३० ॥

राग जिला ।

चले गये दिलके दामनगीर । जब सुधि आई प्यारे तो
दरशकी उठत कलेजे पीर ॥ नटवर वेष नयन रतनारे सुंदर
श्यामशरीर । आपन जाय द्वारका छाये खारी नदके तीर ॥
ब्रजगोपिनको प्रेम बिसारचो ऐसे भये बेपीर । बृंदावन बंसीवट
त्याग्यो निर्मल यमुना नीर ॥ सूरश्याम ललता तब बोली
आखिर जात अहीर ॥ ३१ ॥

राग वसंत ।

ऊधो माधो सों कहियो जाय । जाकी चपल बुद्धि तासों क्या
बसाय ॥ उडियोरे भ्रमरा जइयो वादेश मेरे पिया से कहियो सुख
सँदेश सखी फागुनके दिन बीते जात मेरी अँगिया तडक गई
योवन भार । इक तो सतावे मोहिं ऋतुवसंत दूसरा सतावे मोहिं
बाला कंत तीजी कोइल बोले अंबकी डार चौथा पपीहा पिया
पिया करे पुकार ॥ इक बन फूल सकल बन फूले जैसे चंद्र चको-
रन हूले तीया तरन तेज मोपै सह्यो न जाय जब मैं तजूंगी प्राण
फिर क्या करोगे आय ॥ ३२ ॥

राग धनाश्री ।

हरिके संग मैं क्यों ना गई । हरि सँग जाती कंचन बन आती
अब माटी के मोल भई ॥ बरजो न कोई इन दूतिन को जाती बेर
मोहिं रोक लई । हरि बिछुरन इक मरन हमारा नई दासी सँग प्रीति
भई ॥ छल गयो काल वहुरि नहिं आवे अपने हाथसे मैं विदा दई ।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको पिछली प्रीति अब नई भई ॥ ३३ ॥

राग वसंत ।

जा जा रे भँवरा दूर दूर । तेरो सो अंग रंग है उनको जिन मेरो चित कियो चूर चूर ॥ जब लग तरुन फूल महकत है तबलग रहत हजूर जूर । सूर श्याम हरि मतलब मधुकर लेत कली रस घूर घूर ॥ ३४ ॥

राग विहाग ।

मधुकर श्याम हमारे चोर । मन हर लियो माधुरी मूरत निरख नयनकी कोर ॥ पकरे हुते आन उर अंतर प्रेम प्रीतिके जोर । गये छुडाय तोर सभ बंधन देगये हँसन अकोर ॥ उचक परों जागत निशि बीते तारे गिनत भई भोर । सूरदास प्रभु हरि मन मेरो सरवसले गयो नंदकिशोर ॥ ३५ ॥

राग केदार ।

नाहिन रह्यो मनमें ठौर । नंदनंदन अछत कैसे आनिये उर और ॥ चलत चितवत दिवस जागत स्वप्न सोवत रात । हृदय ते वह श्याम मूरत छिन न इत उत जात ॥ श्याम गात सरोज आनन ललित गति मृदु हास । सूर ऐसे रूप कारण मरत लोचन प्यास ३६

राग सारंग ।

विन गोपाल वैरन भईं कुंजें । तब ये लता लगत अति शीतल अब भईं विषम ज्वाल की पुंजें ॥ वृथा बहत यमुना खग बोलत वृथा कमल फूलत अलिगुंजें । सूरदास प्रभुको मग जोवत अँखियां भईं अरुण ज्यों गुंजें ॥ ३७ ॥

राग मलार ।

निशिदिन बरसत नयन हमारे । सदा रहत पावसऋतु हम पर जब सों श्याम सिधारे ॥ अंजन थिर न रहत अँखियनमें कर कपोल भये कारे । कंचुकि पट सूखत नहिं कबहूं उर बिच बहत पनारे ॥ आंसू सलिल भये पग थाके बहे जात सित तारे । सूरदास अब डूबत है ब्रज काहे न लेत उबारे ॥ ३८ ॥

हरि परदेश बहुत दिन लाये । कारीघटा देख बादरकी नयन नीर भर आये ॥ पालागों तुम बीर बटाऊ कौन देशते धाये । इतनी पतियां मोरी दीजो जहाँ श्याम घन छाये ॥ दादुर मोर पपीहा बोले सोवत मदन जगाये । सूरदास स्वामीके बिछुरे प्रीतम भये पराये ॥ ३९ ॥

राग देस ।

नाथ अनाथनकी सुध लीजै । तुम बिन दीन दुखित हैं गोपी वेगहि दर्शन दीजै ॥ नयनन जल भर आये हरि बिन ऊधो को पतियां लिख दीजै । सूरदास प्रभु आश मिलनकी अबकी बेर हरि आवन कीजै ॥ ४० ॥

राग विहाग ।

पिया बिन नागिन कालडी रात । कबहूं याम्मिन होत जुन्हैया डस उलटी ह्वै जात ॥ यंत्र न फुरत मंत्र नहिं लागत आयु सिरानी जात । सूर श्याम बिन बिकल बिरहिनी मुर मुर लहरी खात ॥ ४१ ॥

राग भैरव ।

अँखियां हरि दर्शनकी प्यासी । देख्यो चाहत कमल नयनको निशिदिन रहत उदासी ॥ केसर तिलक मोतिनकी माला वृन्दावनके वासी । नेह लगाय त्यागगये तृण सम डार गये गलफांसी ॥ काहूके मनकी को जानत लोगनके मन हासी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिन लेहौं करवँट कासी ॥ ४२ ॥

ठुमरी खमाच ।

बतादे सखी कौन गली गये श्याम । रैनि दिवस मोहिं तलफत बीती बिसर गये धन धाम ॥ गोकुल ढूँढ बृँदाबन ढूंढ्यो मथुरामें होगई शाम ॥ ४३ ॥

राग आसावरी ।

कहीं देखेरी घन श्यामा ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहे कुंडल झलकैं

काना । सांवरि सूरत पर तिलक विराजै तिससों लगे मोरे प्राना ॥ बरसाने सों चली गुजरिया नंदगामको जाना । आगे केशो धेनु चरावें लगे प्रेमके बाना ॥ सागर सूख कमल मुरझाना हंसा कियो पयाना । भौंरा रहगये प्रीतिके धोखे फेर मिलनको जाना ॥ वृंदा बनकी कुंज गली में नूपुर रुनझुन लाना । मीरा बाई को दरशन दीजो ब्रज तज अनत न जाना ॥ ४४ ॥

कृपाकर दरशन दीजो हरी । नित प्रति ठाढी अपने द्वारे निरखों पंथ खरी ॥ छिन छिन अंतर बाहर आवां शांत न होत घरी । विरहों अगिन रची प्रति रोमन दाहा दग्ध करी ॥ तेरी लगन लगी मोरे अंतर नाहिन जात जरी । दुनीदास प्रभु तुमरे दरश बिन लोटत धरणि परी ॥ ४५ ॥

ऐसी है कोई सखी हमारी मेरे हरिजीको आन मिलावेरी । तन मन धन मैं तिसपर वारूं जो इक पल नजरी आवे री ॥ कर शृंगार मैं सेज बिछावों सो मोहिं कछु न सुहावेरी । अहनिशि या तनु संकट उपजे तलफत रैनि बिहावे री ॥ क्या करूं मन कहूं न लागत मैं फिरतीहूं प्रेम प्यासी री । दुनीदास धीरज ना होवे बिन देखे अविनाशी री ॥ ४६ ॥

सुंदर श्याम देखन दी आशा नयनन बानपरी । चार याम मोहिं तलफत बीते रहगई एक घरी ॥ भूषण बसन भवन नहिं भावै विरह वियोग भरी । दया सखी अब वेग मिलो क्योंना हौं अकुलात खरी ॥ ४७ ॥

ठुमरी ।

छतियाँ लेहु लगाय सजन अब मत तरसावो रे । तुम बिन तलफत प्राण हमारे नयनन सों बहें जलकी धारे बाढी है तनु विरह पीर सूरत दिखलावो रे ॥ हरीचंद पिया गिरिवर धारी पैयां परूं जाऊं बलिहारी अब जीया नहिं धरत धीर जलदी उठ धावो रे ४८

राग खमाच ।

सजन मुखडा दिखलाजारे । तेरे दरशनको तरसैहैं नयन ॥

बालेपन की लागी लगन छूटत नाहीं करों कोटि यतन दिखलाजा सूरत मोहन जरा बँसिया बजाजा रे ॥ ढूंढ फिरी सारा वन वन में तऊ न पाये नंदके नँदन बिरमाय राखे काहू सौतन रसिया महाराजा रे ॥ लेकर भसम रमाई बदन सब छाँड उतारे भूषण वसन तेरे कारण मैं भई योगिन कुलकी तज लाजा रे ॥ जो कछु चूक परी हमपै अब माफ करो नँदके नंदन श्रीधर पिया आजा जलदी से मोहिं गरवा लगाजा रे ॥ ४९ ॥

राग विहाग।

मिलजाना हो प्यारे नंद किशोर। देख नजर भर घायल कीनो बांके नयनादी कोर ॥ तेरे दरश बिन फिरां दिवानी ढूँढती चहुँ ओर। जानकीदास तुसीं देख हर्षां जैसे चंद चकोर ॥ ५० ॥

राग परज।

कबलग तरसाये रहिये पलक ॥ नँदनंदन ब्रजराज साँवरो दरशन दीजे तनक तनक। बिन दरशन मोहिं नींद न आवे जबते सुनी मुरली की भनक ॥ श्यामसुंदर बांकी माधुरी मूरत आउ मेरे अँगना छनक छनक। जानकीदास बसो जो दृगन में कर राखों उर नयन पलक ॥ ५१ ॥

राग खेमटा।

रे निरमोही छवि दरशायजा। कान चातकी श्याम विरह घन मुरली मधुर सुनायजा ॥ ललित किशोरी नयन चकोरन द्युति मुख चंद दिखायजा। भयो चहत यह प्राणबटोही रूसे पथिक मनायजा ॥ ५२

राग बडहंस।

विरहों ने नोकां झोकां वे लाइयां कौन असांवल रोके ॥ सो गल मेरी झोली पैंदी जो मैं कहिंदी लोके ॥ अजानी सल ला वे असानूं तिखीयां नोक चभोके ॥ वंज वे राही बंज माही वल खडी उडीकां वाटां ॥ मैं जातासी इशक सुखाला मुसकल इस दीयां घातां ॥ मुख देखन नूं फिरां दिवानी दर दर दनीहां होके ॥ आंखीं माहीं गल

नाहिं तुसाडे अरज करां मैं खलोके॥ इशक तुसाडे ने घायल कीती एह गल ऑखीं रोके॥सूरत सोहनी दसके मेराली तोई मनमोहके ॥ आपे टुंब जगायाई मैनूं हँसके मुख दिखलाके ॥ जां मैं मोही तां तूं छिप्या विरहोंनूँ मोड़भुवाके ॥ इस विरहों मैं वल वल कुट्टी हसदाहैं पास खलोके ॥ कैदर कूकां कूक सुनावां लाया नेह मैं आपे ॥ जां मैं जग विच रोशन होइयां रहन नदेदे मापे ॥ दुःखां सूलांदा हार मैं पहिदा हत्थीं आप परोके ॥ मैं दरमांदी दरश तेरे दी मुख दिखला इक बारी ॥ तैं मुख डिठियां सभ दुख जाँदे तू तबीब है भारी ॥ मुख देखन नूं फिरां दिवानी तैं डी सुहागन होके ॥ वखश रब्बा वे मैं अवगुण हारी तूही वखश अलाही ॥ एकोनजर तुसाडी काफी दुःख न रहिंदा काई॥ बरकत नाल साहिब दे बुल्लिया देई दीदार खलोके ९३

राग पीलू ।

सुरतिया रे लागरही हरि सों । आवन कह गये अजहूं न आये बीत गैयां बरसां ॥ यहतो जोबन चार दिहाडे आज कल्ह परसों । अंबुआ मौले केसू फूले और फूली है सरसों ॥ ९४ ॥

कवित्त ।

योग देन गयो हौं वियोग वारि बारिधि में बूडत बच्यो हौं नाथ नारि नयना यूं बहे ॥ गंगा हू सहस्र धारा अधिकही सुधारा जान वर्षा नहोय जो रहोगे गिरिहू गहे ॥ एतो जल अवनी न समाये कहूं वारिधि में मुनी पै न अच्यो जात कानखोल हौं कहे ॥ कवि प्रह्लाद जो मिलाप पाल बांधो नाहिं बटके वटूक पात साँवले भले रहे॥९५॥

राग खमाच।

बहुत दिनान में विदेश ह्वै आये मेरे प्यारे मनमोहन बधाये सभ गावोरी ॥ नाचो रस राचो नीकी नीकी गति लैलै कर नीकी नीकी भांतिन सों भावन बतावोरी ॥ ताल कठताल औ तमूरा मुहचंगन सों घुंघुरू बजायके मृदंग सों मिलावो री ॥ नंदके कुमार रिझवारको रिझावो आज सकल समाज कर रंग सरसावोरी ॥ ९६ ॥

विनयके पद.

दोहा ।

कदम कुंज ह्वै हों कबै, श्रीवृंदावन माँह । ललित किशोरि लाडिले, विहरैंगे तिहि छाँह ॥ कब हौं सेवा कुंज में, ह्वैहों श्याम तमाल । लतिका करं गहि विरमि हैं, ललित लडैतीलाल ॥ सुमन वाटिका विपिन में, ह्वै हों कब हौं फूल । कोमल कर दोउ भावते धर हैं बीन दुकूल ॥ कालींदह कबकूल की, ह्वैहौं त्रिविध समीर युगल अंग अँग लागि हौं, उडि है नूतन चीर ॥ मिलि है कब अँग छार ह्वै, श्रीवन बीथिन धूर । परि है पद पंकज युगल, मेरी जीवन मूर ॥ कब गहबर की गलिन में, फिरि हौं होय चकोर। युगल चंद मुख निरखि हौं, नागरि नवल किशोर॥ कब कालिंदी कूल की, ह्वै हौं तरुवर डार । ललित किशोरी लाडिले, झूलें झूला डार ॥ श्यामा पद दृढ गह सखी, मिलिहैं निश्चय श्याम । नामाने दृग देखवे श्यामा पद बिच श्याम ॥ ५७ ॥

कवित्त ।

दीनबंधु दीनानाथ ब्रजनाथ रमानाथ राधानाथ मोअनाथ कै सहाय कीजिये । तात मात भ्रात कुलदेव गुरुदेव स्वामी नाथ तुमहीं सों प्रभु विनय सुन लीजिये ॥ रीझिये निहाल देर कीजिये न झीनी कहूं दीन जान दास मोहिं अपनाय लीजिये । कीजिये कृपा कृपालु साँवरे बिहारी लाल मेट दुख जाल वास बृंदावन दीजिये ॥ गिरिकीजै गोधन मयूर नव कुंजनको पशुकीजै महाराज नंदके बगर को ॥ नर कीजै तौन जौन राधे राधे नाम रटै तट कीजै बर कूल कालिंदी कगर को ॥ इतने पै जोई कछु कीजिये कुँवर कान्ह राखिये न आन फेर हठीके झगर को ॥ गोपी पद पंकज पराग कीजै महाराज तृण कीजै रावरेई गोकुल नगर को ॥ ५८ ॥

सवैया ।

मानुषहौंहुँ वहीं रसखानि बसौं मिलि गोकुल गावँके ग्वारन

जो पशु होउँ कहा वश मेरो चरौं पुनि नंदकि धेनु मँझारन ॥
पाहन होहुँ वही गिरिको जो कियो ब्रज छत्र पुरंदर धारन।
जो खग होउँ बसेरो करौं वहि कूल कालिंदी कदंब कि डारन ॥५९॥

राग चैतीगौरी।

यमुना पुलिन कुंज गहबरकी कोकिल ह्वै द्रुम कूक मचाऊं। पदपंकज प्रिय लाल मधुप ह्वै मधुरे मधुरे गुंज सुनाऊं॥ कूकर ह्वै बन बीथिन डोलों बचे सीथ रसिकनके पाऊं। ललित किशोरी आश यही मम ब्रज रज तज छिन अनत न जाऊं॥ ६०॥

राग देश।

अब विलंब जिन करो लाडिली कृपादृष्टि टुक हेरो। यमुना पुलिन गलिन गहबरकी विचरूं सांझ सबेरो॥ निशि दिन निरखों युगल माधुरी रसिकन ते भट भेरो। ललित किशोरी तन मन अकुलत श्री वन चहत बसेरो॥ ६१॥

राग यमन।

प्यारीजी मोतनहूं टुक हेरो। श्री वन द्रुमन लतनके नीचे रसमय चहूं गान गुण तेरो॥ आन न जानों अन्य न मानों तूही कृपापद साधन मेरो। ललित माधुरी आश पुरावो अब जिन करो हहा अवसेरो॥ ६२॥

कवित्त।

एक रज रेणुका पै चिंतामणि वारि डारों वारि डारों विश्व सेवा कुंजके विहार पै॥ लतनके पतन पै कोटि कल्प वारिडारों रंभाहूको वारि डारों गोपिनके द्वार पै॥ ब्रजकी पनिहारन पै शची रचीं वारि डारों वैकुंठहूको वारिडारों कालिंदी की धार पै। कहै अभयराम एक राधा जूको जानत हों देवन को वारि डारों नंदके कुमार पै॥ ६३॥

राग झिंझोटी।

जो कोउ वृंदावन रस चाखै। भवन चतुर्दश तिहूँ लोक लों

सुपनेहुँ नहिं अभिलाखै ॥ ललित किशोरी परे कोन में श्याम राधिका भाखै।युगल रूप बिन पलक न खोलै लोभ दिखावो लाखै६४

राग धनाश्री ।

हमारे श्रीवृंदावन उर ओर । माया काल तहां नहिं व्यापै जहां रसिक शिरमोर ॥ छुट जात सत्य असत्य वासना मनकी दौरा दौर । भगवत रसिक बतायो श्रीगुरु अमल अलौकिक ठौर ॥ ६५ ॥

ऐसे वसिये ब्रजकी वीथन । साधुनके पनवारे चुन चुन उदर जो भरिये सीथन ॥ पैंडेके सभ वृक्ष विराजत छाया परम पुनीतन । कुंज कुंज प्रति लोट लोट कर रज लागे रँगरीतन ॥ निशिदिन निरख यशोदा नंदन अरु यमुना जल पीतन । परशत सूर होत तनु पावन दर्शन करत अतीतन ॥ ६६ ॥

राग बिलावल ।

कहा करूं वैकुंठहिं जाय । जहँ नहिं नंद जहां न यशोदा जहाँ न गोपी ग्वाल न गाय॥ जहां न जल यमुनाको निर्मल और नहीं कदमन की छाय । परमानँद प्रभु चतुर ग्वालिनी ब्रज रज तज मेरी जाय बलाय।

राग गौरी ।

ब्रजरज मोहनी हम जानी । मोहन कुंज मोहन श्रीवृंदावन मोहन यमुना पानी ॥ मोहनी नारि सकल गोकुलकी बोलत अमृत वानी । श्रीभटके प्रभु मोहन नागर मोहनी राधारानी ॥ ६८ ॥

राग सहानो ।

धनि धनि श्रीवृंदावन धाम । जाकी महिमा वेद बखानत सब विधि पूरणकाम ॥ आश करत हैं जाकी रजकी ब्रह्मादिक सुर ग्राम । लाडिली लाल जहां नित विहरत रति पति छबि अभिराम ॥ रसिकन को जीवन धन कहियत मंगल आठों याम । नारायण बिन कृपा युगल वर छिन न मिलै विश्राम ॥ ६९ ॥

राग दादरा ।

ऐसो कब करिहै मन मेरो । कर करवा गुंजनके हरवा

कुंजन माँहिं बसेरो ॥ ब्रजवासिनके टूक जूँठ अरु घर घर छाँछ महेरो । भूख लगे तब मांग खाय हों गिनों न सांझ सबेरो ॥ इतनी आश व्यासकी पुजिये मेरो गाँव न खेरो ॥ ७० ॥

राग परज ।

भजो मन वृंदावन सुखदाई । अवनी कनक सुहाई ॥ अवनी कनक सुरंग चित्र छबि कालिंदी मणि कूलें । लतन रहे भर पाय सखी यह कंचनके द्रुम मूलें ॥ जलज थलज रहे विकस जहां तहँ वरण वरण छबि छाई । सहज रैन सुखदैन विराजत वृंदावन सुखदाई ॥ भजो० ॥ राजत नवल निकुंजहिं लालन निरख होत सुख पुंजहिं । निरख होत सुख पुंज कमल दल रची है सुंदर सैन । बहत समीर त्रिविध गुण लीने आकर्षत मन मैन डोलत केक कीर पिक बोलत जित तित मधुपन गुंजहिं । रत्न खचित फूलन सों फूलीं राजत नवल निकुंजहिं ॥ भजो ० ॥ करत निकुंज विहार । सखियन प्राणअधार ॥ सखियन प्राण अधार रसिक बर नवल किशोर किशोरी । हँस मुर चित चोरत प्यारे को सभ अँग नागर गोरी ॥ अति विलास नव नव रुचि उपजत बल किंकिणि झंकार । अति प्रवीन रति कोक कलन में करत निकुंज विहार ॥ भजो ० ॥ निर्खं निर्खं बल जाईं । श्रम जल कण झलकाईं ॥ श्रम जल कण रहे झलक बदन बिब कहुँ कहुँ पीक जो सोहै । हँस मुर चित चोरत प्यारेको ऐसी को जुन मोहै ॥ चितहिं चिह्न रजनी के सजनी नयनन में मुसकाईं । जैश्रीहित ध्रुव सखी सरस रँग भीनी निर्खं निर्खं बल जाईं ॥ भजो ॥ ७१ ॥

राग बहार ।

वृंदावन विपिन सघन बंशीवट पुलिन रमन निधि वन कोकिलावन मोहन मन भावै । सेवा कुंज सुखको पुंज जहां राजत पिया प्यारी ललतादिक संग लिये उमग उमग गावै ॥ यमुना जल अति गँभीर कदमन की जहां भीर ललित लता कुसुम भार अपने

बरसावैं। हंस मोर कोकिला पपीहा जहाँ शब्द करैं पशु पक्षी दास कान्हर राधा कृष्ण राधा कृष्ण राधा कृष्ण गावै ॥ ७२ ॥

राग धनाश्री।

नमो नमो वृंदावनचंद। आदि अनंत अनादि एक रस पियप्यारी विहरत स्वच्छंद ॥ सत चित आनँद रूप घन खग मृग द्रुम बेली और वृंद। भगवत रसिक निरंतर सेवत मधुप भये पीवत मकरंद॥७३॥

कवित्त।

नंदके आनंद हो मुकुंद परमानंद हरि काटो जमफंद मोहिं भय सों बचाइये। नहीं जानों ज्ञान ध्यान योग यज्ञ नाहिं कियो भरचो मान ते हँकार प्रभु कैसे तोहिं ध्याइये॥ सुनो कृष्ण हरी जैसी करीसो करी दयालु तैसे दीन जान मेरी पीरको मिटाइये। सुखके निधान दान दीजै प्रेम भक्ति हू को अपने चरणारविंदमें चित्त मयारामको लगाइये ॥ ७४ ॥

तारो पतित जानके सुधारो विरद आनके काढो भुजा तानके कहाँ देर डारी है॥ सुदामा यार तारचोहै प्रह्लाद तैं उबारचोहै द्रौपदी की लाज राखी सभादेख सारी है॥ गज ने ध्यायो प्रभु गरुड छोंड धायो ब्रज को बचायो ताते नाम गिरिधारीहै॥ दास तो पुकारे प्रभु काटिये कष्ट कोटि भारे अरजी हमारी आगे मरजी तिहारीहै ॥ ७५ ॥

आप सब नेरे और दूरकी पहँचानतहो छिपी नाहिं कूर की और साहिब शऊर की॥ निकुता निवाजी कर राजी छिन ही में होत करत इतराजी नाहिं सुनके कसूर की। तुमसों न दूसरो दयालु श्री विहारी लाल जाहि लाज आवे निज जन के जरूर की॥ गरजी विचारे को तो अरजी कियेही बनै माननी न माननी यह मरजी हुजूर की ॥ ७६ ॥

दीनानाथ दयासिंधु आरत हरण भारी द्रौपदी उबारी तैसे मोहू को उबार ल्यो। गणिका उबारी गज संकट निवारी प्रहलाद हित

कारी दुख दारुण निवार ल्यो ॥ गौतम तिय तारी चरणांबुज रज धारी गो ब्राह्मण हितकारी भवसागर उधार ल्यो । टेरत प्रभु नंदलाल दीनबंधु भक्तपाल करुणामय कृपालु लाल विरदको सम्हार ल्यो ॥ ७७ ॥

मैं तो हूं पतित आप पावन पतितनाथ पावन पतित हो तो पातक हरोईंगे ॥ मैं तो महादीन आप दीनबंधु दीनानाथ दीनबंधु हो तो दया जीमें धरोईंगे ॥ मैं तो हूं गरीब आप तारक गरीबन के तारक गरीब हो तो विरद बरोईंगे ॥ मेरी करणी पै कछु मुकर न कीजे कान्ह करुणानिधान हो तो करुणा करोईंगे ॥ ७८ ॥

श्याम घन तन पर बिज्जुसे दशन पर माधुरी हँसन पर खिलत खगी रहै ॥ खौर वारे भाल पर लोचन बिशाल पर उर वनमाल पर जुगत जगी रहै ॥ जंघ युग जानु पर मंजु मुरवान पर श्रीपति सुजान मति प्रेम सों पगी रहै ॥ नूपुर नगन पर कंजसे पगन पर आनँद मगन मेरी लगन लगी रहै ॥ ७९ ॥

जौन हाथ वामन हो बलि द्वारे दान मांग्यो जौन हाथ कूबरी मिलाई गह गात सों ॥ जौन हाथ प्रह्लाद तात सों उबार लीनो जौन हाथ कंस मार्‌यो बलभद्र साथ सों ॥ जौन हाथ गोपनको गिरिवरकी ओट कीनो जौन हाथ कालीनाग नाथ्यो परजात सों ॥ हौंतो कहूं बार बार सुनो नाथ एक वार वही हाथ गहो मोको हाथी वाले हाथ सों ॥ ८० ॥

सवैया ।

दीनदयालु सुने जब ते तबते मनमें कछु ऐसी बसी है ॥
तेरो कहायके जाऊं कहां तुमरे हितकी पट खैंचि कसी है ॥
तेरो ही आसरो एक मलूक नहीं प्रभु सों कोउ दूजो यसी है ॥
एहो मुरार पुकार कहो अब मेरी हँसी नहिं तेरी हँसी है ॥ ८१ ॥

कवित्त ।

मोरमुकुट वारो धरे वेष नटवारो छुटी लोल लट वारो सोतो

जगत उज्यारो है ॥ सांवरे वरण वारो मुरली धरण वारो संकट हरण वारो नंदजूको प्यारो है ॥ दानव दलनवारो छबिको छलन वारो मंदसी चलन वारो पोखी उर धारो है ॥ कंज से चखन वारो भृगु लता लख वारो मोरपक्ष वारो सो हमारो रखवारो है ॥ ८२ ॥

देव हग तारे तोहिं ध्यावें देवतारे तैंने एते पतित तारे जेते नभ में न तारे हैं ॥ तारे रतनारे जिन कई कोटि दीननके दुःखन बिदारे कहे श्रीपति पुकारे हैं ॥ नीरदवरन तनु कारे छबिशोभधारे राधाके प्राणप्यारे यशुदाके बारे हैं ॥ नंदके दुलारे धराधर के धरन हारे मोरपक्षवारे सो हमारे रखवारे हैं ॥ ८३ ॥

राग जंगला ।

श्याम सुंदर मनमोहनी मूरत सुंदर रूप उजारी रे । चरण कमल पिंडुरी जंघन पर सोहत कटि लचकारी रे ॥ नाभि गँभीर हृदय अति कोमल कृपासिंधु बनवारी रे । भुज आजानु करन बिच बंसी लकुट लिये गिरिधारी रे ॥ ग्रीव चिबुक मृदु हँसन मनोहर हौं लखि छबि बलिहारी रे । नाशा नयन भौंह अति बांकी जिन मोही ब्रज-नारी रे॥ श्रवण कपोलन पर छूटी वे नागिनि लट बलदारी रे । भाल विशाल पेच शिर जूटा मुकुट झुलन सुखकारी रे ॥ युगल किशोर मोरपख धारी अब क्यों सुरत बिसारी रे ॥ ८४ ॥

राग भैरवी ।

मेरी तो विहारी जी प्यारे तोहिं लाज । माया फंद गले में डारयो जग भर्मायो बे काज ॥ भवसागरके पार जानको पायो नाम जहाज । बलिहारी का बेडा पार उतारो अपनो जान ब्रजराज ॥ ८५ ॥

राग बिलावल ।

माधोजू जो जन ते बिगरै । सुन कृपालु करुणामय कबहूं प्रभु नहिं चित्त धरै ॥ ज्यों शिशु जननि जठर अंतरगत शत अपराध करै । तऊ तनय तनु तोष पोष चित विहँसत अंक भरै ॥ यदपि विटप जर हतन हेत कर कर कुठार पकरै । तदपि स्वभाव सुशील

सुशीतल रिपु तनु ताप हरै॥ कारण करन अनंत अजित कह किहिंविधि चरण परै।यहकलिकाल चलत नहिं मोपै सूरशरणउबरै॥

राग भैरवी।

जेजन शरण गयेते तारे। दीनदयालु प्रगट पुरुषोत्तम सुनिये नंद-दुलारे॥ माला कंठ तिलक माथे दे शंख चक्र वपु धारे। जितने रवि छायाके कनका तितने दोष हमारे॥ तुमरे दरश प्रताप तेज ते तत्क्षण ते सभ टारे। मानिकचंद प्रभुके गुण ऐसे महा पतित निस्तारे॥ ८७॥

राग बरवा।

शरण गये प्रभु को न उबारे। जित जित भीर परी भक्तन को चक्र सुदर्शन तहां सम्हारे॥ महाप्रसाद बैठ अंबरीषहिं दुर्वासा को कोप निवारे। ग्राह ग्रसत गजको जल डूबत नाम लेत वाको दुख टारे॥सूर श्याम बिन करै और को रंगभूमि में कंस पछारे॥८८॥

राग बिलावल।

अबके माधो मोहिं उधार। मगन होत भवसिंधु में कृपासिंधु मुरार॥नीर अति गंभीर माया मोहलहर तरंग। लिये जात अगाधको वर गहे ग्राह अनंग॥ मीन इंद्रिय अतिहिं काटत पेट अघ शिर भार। भूमि पाइ न जात जितकित उरझ मोह सिवार॥ क्रोध दंभ भयान तृष्णा पवन अति झकझोर। नाहिं चितवत देत सुत त्रिय नाम नौका ओर॥ परचो बीच विहाल विह्वल सुनहु करुणामूल। श्याम भुज गह काढि डारहु सूर जन ब्रजकूल॥ ८९॥

राग धनाश्री।

कबहूं नाहिंन गहर कियो। सदा स्वभाव सुलभ सुमिरण वश भक्तन अभय दियो॥ गाय गोप गोपी जन कारण गिरि कर कमल लियो। अघ अरिष्ट केशी काली मथ दावा अनल पियो॥ कंसवंश वध जरासन्ध हति गुरुसुत आन दियो। कर्षत सभा द्रुपदतनयाको अंबर आन छियो॥ काकी शरण जाउँ यदुनंदन

नाहिंन और वियो । सूर श्याम सर्वज्ञ कृपानिधि करुणा मृदुलहियो ९०

अब हौं नाच्यो बहुत गुपाल । काम क्रोध को पहर चोलना कंठ विषयकी माल ॥ महा मोहके नूपुर बाजत निंदा शब्द रसाल । तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधिकी ताल ॥ मायाको कटि फेटा बांध्यो लोभ तिलक दियो भाल । कोटिक कला नाच दिखराई जल थल सुध नहिं काल ॥ सूरदास की सबी अविद्या दूर करो नँदलाल ॥ ९१ ॥

राग कल्याण ।

तुम्हारे आगे हौं बहुत नच्यो । सुनिये दानि दयालु देव मणि बहु बड़ रूप रच्यो ॥ कियो स्वांग जल हूँ थल हूँ में एकौ तौ न बच्यो । शोध सबै गुण गूढ़ दिखाये अंतर हो जु सच्यो ॥ रीझत नाहिं गोविंद गुसांई कह कछु जाय जच्यो । इतनी तो कहो सूर पुर्गेदै काहे मरत पच्यो ॥ ९२ ॥

राग टोडी ।

दीनन दुख हरन देव संतन हितकारी । अजामील गीध ब्याह इनमें कहो कौन साध पक्षीहूं पद पढात गणिका सी तारी ॥ ध्रुव के शिर छत्र देत प्रहलादको उबार लेत भक्त हेत बांध्यो सेत लंक पुरी जारी । तंदुल देत रीझ जात साग पात सों अघात गिनत नाहीं जूठे फल खाटे मीठे खारी ॥ गजको जब ग्राह ग्रस्यो दुःशासन चीर खस्यो सभा बीच कृष्ण कृष्ण द्रौपदी पुकारी । इतने हरि आयगये वचनन आरूढ़ भये सूरदास द्वारे ठाढ़ो आँधरो भिखारी ॥

मोसम कौन कुटिल खल कामी । जिन तनु दियो ताहि बिसरायो ऐसो निमक हरामी ॥ भर भर उदर विषयको धावों जैसे शूकर ग्रामी । हरि जन छांड हरी विमुखनकी निशिदिन करत गुलामी ॥ पापी कौन बडो है मोते सब पतितन में नामी । सूर पतितकी ठौर कहां है सुनिये श्रीपति स्वामी ॥ ९४ ॥

राग झिंझोटी।

मोसम कौन अधम जग माहीं। भ्रमत रहत नित विषय वासना तज निधि वन द्रुम बेलिन छाहीं॥ चिंतन करत न ललित किशोरी युगल लाल दीने गर बाहीं। निरतत नवल नागरी ललना लालन करत मुकुट परछाहीं॥ ९५॥

राग धनाश्री।

मेरी सुध लीजो श्री नंदकुमार। अधम उधारन नाम तिहारो मैं अधमन सरदार॥ अजामील गज गणिका तारी दुर्जन और अपार। शोभन जनकी तारन बिरियां लाई एती बार॥ ९६॥

मेरी सुध लीजो श्री ब्रजराज। और नहीं जग में कोउ मेरो तुमहिं सुधारन काज॥ गणिका गीध अजामिल तारे औ शबरी गजराज। सूर पतित तुम पतित उधारन बांह गहेकी लाज॥ ९७॥

राग बिलावल।

तुम गुपाल मोसों बहुत करी। नरदेही सुमिरणको दीनी मो पापीसे कछु न सरी॥ गर्भवास अति त्रास अधोमुख ताहि न मेरी सुधि बिसरी। पावक जठर जरन नहिं दीनो कंचन सी मेरी देह करी॥जग में जन्मि पाप बहुकीने आदि अंत लौं सब बिगरी। सूर पतित तुम पतित उधारन अपने विरद कि लाज धरी॥ ९८॥

राग पीलो।

टुक नजर मिहर दी देख असांवल सांवरो गिरिधारी। चरण सपरश अहल्या तारी द्रुपदसुता की लज्जा राखी पाप करंती गणिका तारी सोच कहा मेरी बारी॥ भक्त सुदामाके दरिद्र विदारे जल डूबत गजराज उबारे अजामील से पापी तारे हमरी कहा विचारी। सकल धरणिको भार उतारे लंकापति रावण तैं मारे हरणाकुश नख उदर विदारे महादुष्ट बलकारी॥ भीर समय प्रभु लेत बचाई वाहन तज पाँयन उठ धाई निज भक्तनके सदा सहाई सुध लेहु वेग हमारी॥ नाम सुजानराय तेरो कहिये निशि

दिन चरण शरण तेरी रहिये मनकी व्यथा सब तुमहिं सुनैये सूरदास बलिहारी ॥ ९९ ॥

राग देश सोरठ ।

हमारे प्रभु अवगुण चित न धरो ॥ समदरशी है नाम तिहारो चाहे तो पार करो ॥ इक नदिया इक नाले कहावत मैलो नीर भरो । जबमिल करके एक वर्ण भये सुरसरि नाम परो ॥ इक लोहा पूजा में राख्यो इक गृह वधिक परो । पारस गुण अवगुण नहिं चितवे कंचन करत खरो ॥ यह माया भ्रम जाल निवारो सूरदास सगरो॥अबकी बेर मोहिं पार उतारो नहिं प्रण जात टरो१००

राग सोरठ ।

म्हाने पार उतारो जी थाने निज भक्तनकी आन । हमरे अवगुण नेक न चितवो अपनो ही कर जान॥काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह वश भूल्यो पद निर्वान । अबतो शरण गहीं चरणनकी मत दीजो मोहिं जान ॥ लाख चुरासी भरमत भरमत नेक न परी पछान। भवसागर में बह्यो जात हौं रखिये श्याम सुजान ॥ हौं तो कुटिल अधम अपराधी नहिं सुमिरचो तेरो नाम । नरसीके प्रभु अधम उधारन गावत वेद पुरान ॥ १०१ ॥

राग बडहंस ।

कहोजी कैसे तारोगे मेरो औगुण भरचो शरीर ॥ रंका तारचो बंका तारचो तारचो सदन कसाई । सुआ पढावत गणिका तारी तारी मीराबाई ॥ धन्ने भक्तका खेत जमाया नामे छान छवाई । सैन भक्त कीविपति निवारी आप भये प्रभु नाई ॥ वृंदावनकी कुंज गलिन में लगीश्याम से डोर।अबकी बेर उबारो प्यारे लीनी कर्धीरा ने ओट१०२

राग देश सोरठ ।

सुन लीजे विनती मोरी । मैं शरण गही प्रभु तोरी ॥ तैं पतित अनेक उधारे । भवसागर पार उतारे ॥ मैं सब का नाम न जानूं । मैं कोइ कोइ भक्त बखानूं ॥ अंबरीष सुदामा नामा ।

पहुँचाये हैं निज धामा ॥ ध्रुव पांच बरस का बाला । तैं दर्श दियो नँदलाला ॥ धन्ने का खेत जमाया । कबीर घर बैल ल्याया ॥ शबरीके तैं फल खाये । सभ काज किये मन भाये ॥ सदना ते सैना नाई । तैं बहुत करी अपनाई ॥ कर्माकी खिचडी खाई । तैं गणिका पार लगाई ॥ मीरा तुमरे रँग राती । यह जानत हौं सब भाँती ॥ चरणदास तेरो यश गावे । फिर जन्म मरन नहिं पावे ॥ १०३ ॥

राग कान्हरो ।

ऐसी कब करिहो गोपाल । मनसा नाथ मनोरथ दाता हो प्रभु दीनदयाल ॥ चित चरणन जु निरंतर अनुरत रसना चरित रसाल । लोचन सजल प्रेम पुलकित तनु कर कंजन दल माल ॥ ऐसी रहत लिखत छिन छिन यम अपनो भायो भाल । सूर सुयश रागी न डरत मन सुन यातना कराल ॥ १०४ ॥

राग झिंझोटी ।

राधा रमण चरण जो पाऊं। शुक समान दृढ कर गह राखों नलिनी सम दुलराऊं ॥ सौरभ युत मकरंद कमल बर शीतल हीय लगाऊं । विरह जनित दृग तपत किशोरी सहजे निरख नशाऊं १०५

राग सारंग ।

आनंद कंद सुख निधान दीनानाथ भक्तपाल शोभासिंधु राखो मान अनेक विघन टारियेजी ॥ जहां जहां परी भीर तहां तहां धरी धीर गरुड छोड वेग धाये ऐसी कृपा धारिये जी ॥ द्रौपदीको दिये चीर काटत प्रभु जनकी पीर भक्त हेतु रूप धार अपनो जन तारिये जी ॥ कहत है महीधर दास चाहत प्रभु पद निवास जन्म जन्म शरण तेरी भवसिंधुसे उबारिये जी ॥ १०६ ॥

राग प्रभाती ।

नाम की पैज राखो धनी । संकट काट निवाजे केते गिनत न जाय गिनी ॥ खंभा ते प्रह्लाद छुड़ाये द्रौपदी के पुनि चीर बढाये

गज के फंदन काट निकाले सुनतहि टेर कनी । नामदेव की गऊ जिवाई धन्नेके दुध पीया जाई सुदामाके मंदिर ऊंचे साजे सुरत सों सुरत बनी ॥ कबीर राख गैयर से लीने सूर भक्तको दर्शन दीने पीपा बीच सभा कर सांचा दियो मिलाय जनी । जयदेवकी अष्ट-पदी विचारी मीराबाई की जहर निवारी रामदासको कनक जनेऊ दीना ऐसे दयालु प्रनी ॥ भीलनी ते लै वन फल खाये त्रिलोचन के व्रतिया हो धाये अंबरीष भक्तको बरत रखायो चक्रकी फेर अनी । कर्माबाई की खिचडी लीनी सैनेकी जाय प्रतिज्ञा दीनी धुरू राख्यो अटल द्वारे लागी प्रीति घनी ॥ सुवा पढावत गणिका तारी अहल्या चरणन लाय उधारी नानक वेदी कियो हजूरी राख्यो लायतनी । दुनीदास प्रभु संतसहाई असुर सँहारत वेगहि आई ताको नाम हृदय में राखो सुमिरो एक मनी ॥ १०७ ॥

राग भूपाली जंगला ।

गजकी वाणी सुनके सिंहासन तजि उठ धाये महाराज । श्री श्री श्री चकृत भई सुनके खगपति पार न पाये महाराज ॥ कटिको पीतांबर कहूं गिरोहै तनुकी सुध बिसराये महाराज ॥ ग्राह मार गजराज उबारचो सुरन सुमन झर लाये महाराज ॥ रत्न हरी प्रभु शरण तिहारी नाम तिहारो नित गाये महाराज ॥ १०८ ॥

राग विहाग।

दीन भयो गजराज हीन भयो बलहूंते टूट गयो मान टेरचो हरी हरी करके ॥ पौढे प्रभु रमा संग पीतपट राते रंग सोये उठ धाये नाथ नयन आये भरके ॥ आधीरात धाये नाथ चक्र सुदर्शन लिये हाथ तोड दीने तंदुवाको जरी जरी करके॥तुलसीदास त्रिलोकी नाथ भक्तनके सदा साथ गरुड छोड धाये नाथ करी करी करके १०९

चौपई छंद ।

द्रौपदि धारचो ध्यान जबहिं मन आतुर होई । तुम विन श्रीनँद लाल और मेरो नहिं कोई॥बूडत हों दुखसिंधु में, शरण द्वारकानाथ ।

त्राहि त्राहि सुध लीजिये, अब मैं भई अनाथ ॥ हाय हाय यदुनाथ हाय गोवर्द्धन धारी। हाय हाय बलवीर हाय श्रीकुंजविहारी ॥ हाय हाय राधारमण, हा श्रीकृष्ण मुरार। हाय हाय रक्षा करो, श्री ब्रजराज दुलार ॥ शरन शरन सुखधाम शरन दुख भंजन स्वामी। शरन शरन रछपाल शरन प्रभु अंतरयामी ॥ शरन परी मैं हारके, शरणागत प्रतिपाल। लज्जा राखो दासकी, दीनानाथ दयाल ॥ भीर परी प्रह्लाद रूप नरसिंह बनायो। गज ने करी पुकार पांय प्यादे उठ धायो ॥ दुर्बासा अंबरीष हित, निज जन करी सहाय। कौन अवज्ञा दास की, विलम करी यदुराय ॥ युग युग भक्त सहाय पैज तिनकी तुम राखी। सभही कहत पुराण वेद स्मृति मुनि साखी ॥ मैं तो दासी चरणकी, जानत सभ संसार। विरद आपनो जानके, लज्जाराख मुरार ॥ अंतर्यामी श्याम बेर इतनी क्यों लाई। कापै करूं पुकार ताहि तुम देहु बताई ॥ तुम माता तुम पिता तुम, बांधव सुहृद सुबीर। तुम बिन मेरो कौन है, जाहि सुनाऊं पीर ॥ नगर द्वारका माहिं सार खेलत गिरिधारी। जानी श्री बलबीर दीन होय दासि पुकारी ॥ नयन रहे जल पूरके, पासा डार अनंत। पचहारी सैना सकल, चीर न आयो अंत॥नग्न न होई द्रौपदी, रक्षा करी मुरार। पुष्प देव वर्षा करी, जय जय शब्द उचार ॥ ११० ॥

राग धनाश्री।

लज्जा मोरी राखो श्याम हरी। कीनी कठिन दुःशासन मोसे गह केशों पकरी ॥ आगे सभा दुष्ट दुर्योधन चाहत नग्न करी। पांचो पांडव सब बल हारे तिनसों कछु न सरी ॥ भीषम द्रोण विदुर भये विस्मय तिन सब मौन धरी। अब नहिं मात पिता सुत बांधव एक टेक तुमरी ॥ वसन प्रवाह किये करुणानिधि सैना हार परी। सूर श्याम जब सिंह शरणई स्यालों को काहि डरी ॥ १११ ॥

राग भैरवी।

पति राखो मोरी श्याम विहारी। बनवारी गिरिधारी श्रीकृष्ण

मुरारी ॥ शूर समूह भूषण सब बैठे भीष्म द्रोण कर्ण व्रत धारी। कहि न सकैं कोउ बात परस्पर इन पतितन मेरी अपत विचारी॥ बल विहीन पांडव सुत डोलैं भीम गदा कर सों महि डारी। रही न पैज प्रबल पारथकी जबसे धरणि धर्मसुत हारी॥ लाक्षा गृह ते जरत उबारयो नाथ तुम्हें छोड काहिं हौं पुकारी। अब लग नाथ नाहिं कछु बिगरयो उबरत माथ अनाथ पुकारी॥ छूटत लाज दास दासिनि की बहुरि आय का करिहो मुरारी। सूरके स्वामी वेगि दरश देव फिरि पछितैहौ देख उघारी॥ ११२॥

भजन ।

जब पट गह्यो दुःशासन कर सों। इत उत चितै सकुच कमठी जिमि करत पुकार राधिकाबर सों॥ हो यदुनाथ अनाथ होतहौं कुल परिवार सभापति घर सों। बूडत वेग बांह गह राखो दीनानाथ दुःखके सरसों॥हो भगवंत अंत पछितैहौ बहुरि मिलोगे आय नरहरि सों। युगल करी मानो वसन पूतरी लई लपेट शीश पद करसों॥११३॥

कवित्त ।

दुर्जन दुशासन दुकूल गह्यो दीनबंधु दीन ह्वैके द्रुपददुलारी यों पुकारी है॥ आपनो सबल छाँड ठाढे पति पारथ से भीम महा भीम ग्रीवा नीचे कर डारी है॥ अंबर लौं अंबर पहाड़ कीनो शेश कवि भीषम करण द्रोण सभी यों विचारी है। सारी मध्य नारी है कि नारी मध्य सारी है कि सारी है कि नारी है कि नारी है कि सारी है॥ ११४॥

राग देश ।

मेरे माधोजी आयों हौं सरे। तेरा बार बार यश गाऊं साँवरे आयों हौं सरे॥ करुणा करे लिखे गुणवंती यह मन में उचरे। लिख पतियां द्विज हाथ पठाऊं द्वारका गमन करे॥ लगन लिखाय चँदेरीको भेजा कागज मेल धरे। रुकमैया जब मानत नाहीं कूडे

वचन करे ॥ दल जोडे शिशुपाल जो आये लंगर घेर खडे । पदम के स्वामी वेग पधारो रुक्मिणि यादकरे ॥ ११५ ॥

राग धनाश्री ।

म्हारी सुध लीजो हो त्रिभुवन धनी । छोनी दल शिशुपाल ले आयो तुम अजहूँ न सुनी ॥ कुंडिनपुरको घेर लियो है गाढी विपति बनी । हौं हठ ठान रही अपने जिय खाय मरूंगी कनी ॥ ताके सँग जीवत नहिं जैहौं यह निश्चय मति ठनी । थोरी से बहुती कर जानो और कहांको धनी ॥ विष्णुदास पर कृपा कीजिये रख लीजै रुकमनी ॥ ११६ ॥

राग आसावरी ।

संतन प्रतिपाल राखो लाज हरि मेरी । पिता कहै में व्याहूं द्वारका भैया कहत चँदेरी ॥ लिख लिख पतियां रुक्मिणि भेजै दासी तडफ रही तेरी । इतदल जोड शिशुपाल आयो व्याहनको कर जोरी ॥ जब शिशुपाल बेदीपर बैठे जल बल हो जाऊं ढेरी । सिंहको शिकार स्यार लिये जात है यह गति भई अब मेरी । जो मेरेको बरले जावै क्या पति रहजाय तेरी ॥ कुंडिनपुरमें अंबिका देवी पूजन जात सबेरी । पदमके स्वामी अंतर्यामी वेग खबर लीजे मेरी ॥ ११७ ॥

राग सोरठ ।

सुन अलकां वाले कृष्णजी मेरे मनमें आन बसो । जरद बाना पहरके शिर मुकुटको कसो ॥ चलतेहो टेढ़ी चाल मत घायल मुझे करो । शिवागिरिकी अरज मानिये दीनानाथ हरे । महाराज तेरी कृपा से कई कोटि पतित तरे ॥ ११८ ॥

राग झपताल ।

मोमन बसो श्यामा श्याम । श्याम तन मन श्याम कामर माल की मणि श्याम ॥ श्याम अंगन श्याम भूषन वसन हैं अति श्याम । श्यामा श्यामके प्रेम भीने गोविंद जन भये श्याम ॥ ११९ ॥

राग आसावरी ।

संकट काट मुरारी हमरे संकट काट मुरारी । संकट में इ
संकट उपज्यो अरज करै मृग नारी ॥ इक ढिग बावर जाय ग
रिया इक ढिग श्वान विहारी॥इक ढिग जा अग साडी इक ढिग
बैठ्यो फंद कारी ॥ उलटी पवन बावरको लागी श्वान गयो स
कारी । बरनी से भुवंग जो निकस्यो तिन डस्यो फंदकारी
नाचत कूदत हरनी निकसी भली करी गिरिधारी । सूरदास प्र
तुमरे दरशको चरण कमल बलिहारी ॥ १२० ॥

बंधन काट मुरारी हमरे बंधन काटमुरारी । ग्राह गजराज लडैं ज
भीतर ले गयो अंबु मँझारी ॥ गजकी टेर सुनी यदुनंदन त
गरुड असवारी । पांचाली कारण प्रभु मोरे पग धारयो गिरिधारी
पट शठ खैंचत निकसत नाहीं सकल सभा पचहारी । चर
सपर्श परम पद पायो गौतम ऋषिकी नारी ॥ गणिका शबरी
गति पाई बैठे विमान सिधारी ॥ सुन सुन सुयश सदा भक्तन
सुख सों भज्यो इक बारी । विधीचंद दर्शनको प्यासो लीजि
सुरत हमारी ॥ १२१ ॥

राग कान्हरा ।

दीजे दरश मोहिं चतुर भुजन कर । शंख चक्र गदा पद्म धारि
पीतांबर ओढंबर साजे गल मोतियन की माल मनोहर ॥ १२

राग टोडी ।

तुम विन श्री कृष्ण देव और कौन मेरो । कई अनेक ऐरा
ऐसो बल मेरो ॥ मैंतो अभिमानी नाम जान्यो नहिं तेरो । भ्र
भ्रमत प्यास लगी चाह्यो चित मेरो ॥ सभी कुटुंब छोड नाथ
पद गेरो । जल में पग बोरत ही आन ग्राह घेरो ॥ मैं तो बल
नाथ वाहि बल घनेरो । मात पिता भाई बंधु कुटुंब तो घनेरो
दशो दिशा हेर हेर शरण गह्यो तेरो । केते गज ग्राह
अतुलित बल श्रीमुकुंद काटो भव फंद प्रभू जरा नजर फेरो

डूबत गजराज जान टेरत श्रीकृष्ण नाम दीनबंधु दीनानाथ विरद जात तेरो । लडत लडत देर भई आयो अंत मेरो ॥ जब लग मैं जीवों नाथ जपों नाम तेरो । गोपीनाथ मदन मोहन करुणा कर हेरो ॥ सूरदास गरुड छोड करदिये निबेरो ॥ १२३ ॥

राग कान्हरा ।

आये आयेजी महाराज अपने भक्तके काजसारे । तज वैकुंठ तज्यो गरुडासन पवन वेग उठि धाये॥जबके दृष्टिपरे नँदनंदन भक्तहेतु रूप धारे । मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरणकमल चितलाये ॥ १२४ ॥

राग देश ।

म्हारो काँई बिगरेगो थारोई विरद लजेगो । रुकमैया बंधू जो बैरी कूडी साख भरेगो ॥ जरासन्ध शिशुपाल जो आये भूप से भूप अडेगो । पदमके स्वामी अंतर्यामी करता कौन कहेगो ॥ १२५ ॥

राग देश सोरठ ।

पाती मेरी द्वारका लेजाय । विप्र तुम वेग धायो जाय ॥ लिख लिख भेजूं चीठियां जी मैं लिखां दुराय दुराय । है कोई हितकारी हमरो सुनत ही उठ धाय॥कुंडिनपुरमें आश्चर्य देखो सिंह घेरी गाय । भाग राख्यो हंस कारण काग पहुँचे आय॥लग्न जोर बरात आई दिये खंभ गडाय । रुकमैया शिशुपाल आये जरासंध सहाय ॥ अंबिका पूजन चली है रुक्मिणि संग सहेलियां नाल । जे अंबे बर देत हैं श्रीकृष्ण देहु मिलाय ॥ अंबिका पूजके आई है रुक्मिणि श्रीकृष्ण पहुँचे आय । अपने विरदकी लाज राखी सूर बलिबलिजाय ॥१२६॥

कवित्त दण्डक ।

कैसे तुम गणिकाके औगुण न गिने नाथ कैसे तुम भीलनीके झूंठे बेर खाये हो ॥ कैसे तुम द्वारका में द्रौपदीकी टेर सुनी कैसे तुम गजके काज नंगे पग धाये हो ॥ कैसे तुम सुदामाके छिन में दारिद्र हरे कैसे तुम उग्रसेन बंदी ते छुडायेहो । मेरी बेर एती देर कान मूँद रहे नाथ दीनबंधु दीनानाथ काहेको कहायेहो ॥ १२७ ॥

राग बिलावल ।

किन तेरो गोविंद नाम धरचो । लेन देनके तुम हितकारी मोते कछु न सरचो ॥ विप्र सुदामा कियो अयाची तंदुल भेट धरचो ॥ द्रुपदसुताकी तुम पति राखी अंबर दान करचो ॥ संदीपनके तुम सुत लाये विद्या पाठ पढ्यो । सूरकी बिरियाँ निठुर ह्वै बैठे कानन मूँद धरचो ॥ १२८ ॥

राग धनाश्री ।

पतित पावन हरी नाम तिहारो कौनेहूं धरचो । हौं तो दीनदुखित संसृत रत द्वारे रटत परचो ॥ गज गणिका नृग गीध व्याधते मैं घट कहा करचो । ना जानों यह सूर महाशठ कौनदोषबिसरचो ॥

राग देश सोरठ ।

हरि हौं बडी बेर को ठाढ़ो । जैसे और पतित तुम तारे तिनहीं में लिख काढो ॥ युग युग विरद यही चल आयो टेर कहत हौं ताते । मरियत लाज पंच पतितन में हौं घट कहो कहांते ॥ कै अब हार मान कर बैठो कै कर विरद सही । सूर पतित जो झूठ कहत है देखो खोल बही ॥ १३० ॥

राग धनाश्री ।

नाथ मोहिं अबकी बेर उबारो । तुम नाथनके नाथ स्वामी दाता नाम तिहारो ॥ करम हीन जन्मको अंधो मोते कौन नकारो । तीन लोकके तुम प्रतिपालक मैं तो दास तिहारो ॥ तारीजात कुजात प्रभूजी मोपर कृपा धारो । पतितन में इक नायक कहिये नीचनमेंसरदारो ॥ कोटि पापी इक पा सँग मेरे अजामील कौन विचारो । नाठो धरम नाम सुन मेरो नरक कियो हठतारो ॥ मोको ठौर नहीं अब कोऊ अपनो विरद सम्हारो । क्षुद्रपतिततुम तारे रमापति अबनकरु जिय गारो ॥ सूरदास साँचो तब माने जो होय मम निस्तारो ॥ ३३१ ॥

ग़ज़ल ।

जहां देखों वहीं मौजूद मेरा कृष्ण प्यारा है । उसी का सब है

जलवा जो जहां में आशिकारा है ॥ भला मखलूक खालिककी सिफ़त समझे कहां मुमकिन । उसी से नेत नेत ऐ यार वेदों ने पुकारा है ॥ न कुछ चारा चला लाचार चारों हार कर बैठे। विचारे वेद ने प्यारे बहुत तुझको विचारा है ॥ जो कुछ कहते हैं हम यह भी तेरा परकाश है वरना । किसे ताक़त जो मुँह खोले यहां हर शख्स हारा है ॥ तेरा है तेज हर शै में काह से कोह तक प्यारे । उसी से कहके हर हर तुझको सब जग ने उचारा है ॥ कोई तुझको पुकारे ब्रह्म कर्त्ता एक कहते हैं । कहैं निर्लेप इक ज्ञानी ध्यानी ध्यान धारा है ॥ करो किरपा रसाई दो सजन अपनेही चरणों में । भला है या बुरा है जैसा है आखिर तुम्हारा है ॥ बहुत दुस्तर है भवसागर न पारावार कुछ सूझै । कहै कर जोड राधानाथ इक तूही सहारा है ॥ १३२ ॥

वह नाथ अपनी दयालुता तुम्हें यादहो कि न याद हो । वो जो कौल भक्तोंसे था किया तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ सुनि गजकी ज्यूंहीं आपदा न विलंब छिन का सहा गया । वहीं दौड उठके पियादे पा तुम्हें० ॥ य जो चाहा दुष्टों ने द्रौपदी से कि शर्म उसकी सभा में लें । बढाया वस्तर को आप जा तुम्हें० ॥ अजामील एक जो पापी था लिया नाम मरने पै बेटे का । वह नरक से जो बचा दिया तुम्हें० ॥ जो गीध था गणिका जो थी जो व्याध था मल्लाह था । उन्हें तुमने ऊंचों का पद दिया तुम्हें० ॥ खाना भीलनी के व जूठे फल कहीं साग दास के घर पै चल । यूहीं लाखों किस्से कहूं मैं क्या तुम्हें० ॥ जिन वानरों में न रूप था नतो गुण ही था न तो जात थी । तिन्हैं भाइयों का सा मानना तुम्हें० ॥ वह जो गोपी गोप थे ब्रजके सभ उन्हें इतना चाहा कि क्या कहूं । रहे उलटे उनके ऋणी सदा तुम्हें ० ॥ कहो गोपियों से कहा था क्या करो याद गीता की जरा । वैदा भक्त उद्धार का तुम्हें० ॥ यह तुम्हारा ही हरीचंद है गो फसाद में जग के बंद है । है दासजन्म से आपका तुम्हें ० ॥ १३३ ॥